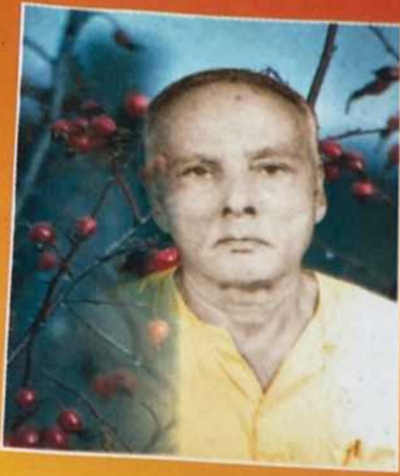
# शेखर प्रसंग



डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'



शेखरजी साहित्यक विविध विधामे अपन मौलिक कृति द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं मातृभाषा मैथिलीमे विशिष्ट योगदान देलनि। मैथिलीक कुशल गद्य शिल्पीक रूपमे एक विशिष्ट उपन्यासकार, सफल नाटककार, प्रखर आलोचक एवं कुशल सम्पादकक रूपमे पत्रकारिताके ँ नव दिशा प्रदान कएलनि। ओ व्यक्ति नहि एकगोट संस्था छलाह, परवर्ती साहित्य ओही भव्य प्रासाद पर टिकल अछि। हुनक साहित्य चिर नवीन आ चिर शाश्वत अछि। हुनक साहित्य जनसामान्यक साहित्य थिक। जाधरि मानव हृदयमे राग-विराग, दुःख, द्वन्द्व आ अनुभूति जीवित रहत ताधरि हिनक साहित्य अजर-अमर आ अक्षुण्ण रहत। हिनक समस्त रचना सामाजिक चेतनासँ अनुप्राणित अछि। हिनक साहित्यिक कृति मानवताक अचल भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित अछि। मिथिला मिहिरक सम्पादकक होएबाक कारणे ँ ई जनसामान्यक सहयोग पाबिकऽ मैथिली भाषा आओर साहित्यके ँ समृद्धिक सोपान पर चढ़ौलनि। ई एहि पत्रिकाक माध्यमे मैथिली भाषा आ साहित्यक कायाकल्प कएलनि तथा ओकर उन्नयन आ प्रचार-प्रसारमे व्यापक सहयोग देलनि। जा धरि ओ मिथिला मिहिरक सम्पादक रहलाह, सभ साहित्यकारके ँ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ प्रभावित कएलनि। मैथिलीक हेतु ई स्तुत्य कार्य कएलनि।

# शेखर प्रसंग

# शेखर प्रसंग

डा. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'



शेखर प्रकाशन
पटना

शेखर प्रसंग
डा. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'
एल. 2/333, पी.आइ.टी. कालोनी
कंकड़बाग, पटना-800020
दूरभाष-0612-2351976

| | |
|---|---|
| प्रथम संस्करण | : 2008 |
| स्वत्वाधिकार | : लेखक |
| शब्द संयोजन | : अभय कुमार |
| मूल्य | : 250/- टाका |
| मुद्रक/प्रकाशक | : शेखर प्रकाशन, 2ए/39, इन्द्रपुरी, पटना-24 |
| आवरण | : अभय कुमार झा |

**SHEKHAR PRASANG**

by **Dr. Premlata Mishra 'Prem'**

Price : Rs.250/-

ई पोथी
पूज्य बाबूजी
पं. दीनानाथ झा
एवं
पूज्यनीयां माता
वृन्दा देवीक
पावन स्मृतिमे समर्पित

– प्रेमलता

## कलाकारक साहित्य-यात्रा

एक समय रहय जखन अपटु, अव्यावहारिक आ अवढङाह भेनाइ साहित्यकारक परिचय-जकाँ भऽ गेल छल। आब से स्थिति नहि अछि। आइ साहित्यकारक लक्षण होइत अछि नीक सन्तान, नीक दम्पति, नीक माय-बाप आ नीक सामाजिक होयब। माने ई जे आजुक समयमे भुच्च लोक उच्च साहित्यकार नहि भऽ सकैत अछि। उदाहरणीय साहित्यकार बनबाक लेल दृष्टान्त व्यक्तित्वक लोक होयब जरूरी अछि। मैथिली समाजमे किछु लोक, किछुए लोक, एहन छथि जे एहि तरहेँ सोचबाक लेल कहताह। हमर सूचीमे 'शेखर-प्रसंग'क रचनाकार प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' नव प्रविष्टि छथि।

प्रेमलता मिश्र कलाकार छथि। रंगमंचक कलाकार। कलाक सम्बन्ध सौन्दर्य-बोधसँ छैक। मिथिलाक बेटीक सौन्दर्य-बोध परिवार आ समाजमे विकसित होइत अछि। गीत गयबाक आ अरिपन देबाक लूरि जाहि सांस्कृतिक चेतनाक साक्षी थिक से मिथिला आ ओहिठामक बेटी-दुनूकेँ बेछप बनबैत अछि। प्रेमलता मिश्र जखन स्कूलमे पढ़ैत रहथि तखने गायन आ अभिनयमे पटुताक पुरस्कार भेटलनि। घोषित कलाकार बनलीह 1964मे। आकाशवाणी कलाकार। आयु रहनि सोलह वर्षक। ओही वर्ष पतिक संग पटना आयल रहथि। अभिभावक रहथिन यात्रीजी। हुनके प्रोत्साहन आ सहयोगसँ आकाशवाणीक नाटकक कलाकारक रूपमे कला-संसारसँ सम्बद्ध भेलीह। पटनाक मैथिल कला-प्रेमी सेहो हिनकासँ परिचित भेलाह। चेतना समिति, पटना, द्वारा आयोजित नाटकमे (1973 ई.) ई पहिल बेर अभिनय कयलनि। मैथिली रंगमंचकेँ पहिल बेर नियमित अभिनेत्री भेटलैक।

कहि सकैत छी जे एहीठामसँ प्रेमलता मिश्रक जीवनमे पहिल मोड़ आयल। कुमारिसँ विवाहिता होयब

कि रहिकासँ पटना आयब जीवनक सामान्य प्रक्रियाक अंग छल, मुदा व्यक्तिसँ कलाकार होयब, पारिवारिकसँ सामाजिक होयब आ सम्बन्ध-बन्धसँ राग-बन्ध धरि व्यापक बनब एकरा बादे गति पकड़लक। कला कोना जीवनकेँ सकारात्मक दिशा प्रदान करैत छैक, ओकरा उदार आ मानवीय बनबैत छैक से देखबामे आयल। सभसँ पैघ बात ई भेल जे कलाकार बनलाक बाद हिनका अपना पर विश्वास बढ़ि गेलनि। यैह आत्म-विश्वास हिनका रंगमंचक कलाकारक रूपमे आदर्श बनौलकनि। कतेक बेटी-पुतहुकेँ कलाकार बनयबामे सफलता दिऔलकनि। एतेक नाटकमे अभिनय कयलनि, ओतेक पुरस्कार पौलनि, रंगमंचसँ फीचर फिल्म, धारावाहिक धरि पहुँचलीह, मैथिली भाषिए नहि, भोजपुरी आ हिन्दी-भाषी समाजमे सेहो परिचित-प्रतिष्ठित भेलीह- ई सभ आँकड़ा उपलब्धिक विवरणसँ बेसी हिनक संघर्षशील व्यक्तिक कोला सभ अछि। प्रेमलता मिश्र लिखने छथि जे ओ जखन अठमामे पढ़ैत रहथि तखने बिआह भेलनि। मुदा, आइ एम.ए., पी-एच.डी. कऽ, इन्टर कक्षाक शिक्षिका बनि सेवा-निवृतिक बादक सुख-लाभ पाबि रहलीह अछि। निश्चित रूपसँ एकर श्रेय प्रेमलता मिश्रक कलाकारकेँ छैक, कलाकारक संघर्ष-चेतना आ आत्म-विश्वासकेँ छैक।

प्रेमलता मिश्रक संघर्षपूर्ण चेतन जीवनक आयामक विराम एतहि नहि होइत अछि। पत्रिका सभमे हिनक लेखन पाद-टिप्पणी जकाँ पहिनहुँ अबैत रहय, मुदा साहित्यकार-समुदायक ध्यान ओहि दिस नहि गेलैक। तीन वर्ष पहिने, 2005मे, 'जखन-तखन' एक्के बेर जखन हिनक दूटा पोथी प्रकाशित कयलक तखन पाठक-वर्गमे सुगबुगी आयल। दुनू पोथी पढ़लाक बाद लगैत अछि जे एकर लेखनक मूलमे प्रेमलता मिश्रक कलाकारे अछि। कलाक जन्म सौन्दर्य-बोधसँ होइत अछि। गायन, चित्रांकन अथवा अभिनयमे कला बाह्य-स्तर पर प्रकट होइत अछि आ लोक कलाकारितासँ कलाकारक

सौन्दर्य-बोधसँ आनन्द प्राप्त करैत अछि। मुदा, साहित्यक कलापक्ष ओकर बहिरंग होइत अछि, अन्तरंग होइत अछि बोध-पक्ष। साहित्यक अन्तरंग अर्थात् बोध-पक्ष जखन संवेदनाकेँ छुबैत अछि तखने ओकर मर्म बुझाइत अछि। प्रसन्नता होइत अछि। कहबाक आशय ई जे संगीत आ अभिनय कलानन्द दैत अछि आ साहित्यसँ भेटैत अछि ज्ञानानन्द। किन्तु, एकर ई अर्थ नहि जे साहित्यमे कलापक्षक महत्व नहि अछि। लेखनकेँ उत्कृष्ट बनयबामे कलापक्षक नियामक भूमिका छैक। साहित्यक बोध-पक्षक काज कलापक्षकेँ सार्थकता प्रदान करब अछि। दुनूक तादात्म्येसँ रचना शिखर धरि पहुँचैत अछि। उदाहरणक रूपमे प्रेमलता मिश्रक 'ओ दिन ओ पल' नामक संस्मरण-संग्रहक एकटा रचनाक अंश देखल जाय। प्रसंग अछि यात्रीसँ प्रेमलता मिश्रक गपशप :

'एकबेर भंगिमाक गप्प चलल तऽ पुछलनि- 'बटुक भाइक हाल-चाल कहऽ। हुनक आवास कतऽ छनि ?
हम- 'वीकर सेक्सन-119, कंकड़बाग' कहलियनि।
ओ कनेक चुप रहलाह। फेर हँसैत बजलाह- एकर माने हुनक पाँजि भेल 'दुर्वल झा पाँजि।'

यात्रीक्र गपशपमे सेहो साहित्यिकता रहैत छलनि, एहि प्रकारक साहित्योमे कलापक्ष आ ज्ञान-पक्षक संतुलन होइत छल- ई सभ बात हुनका सम्बन्धमे ततेक बेर कहल गेल अछि जे आब ओहि मादे किछु कहबाक प्रयोजन नहि अछि। एहिठाम प्रयोजन एहि तथ्यकेँ रेखांकित करब अछि जे प्रेमलता मिश्रकेँ यात्रीसँ बहुत गप भेल हेतनि, ताहिमे एही उक्तिकेँ लिखबाक आवश्यकता किएक बुझयलनि ? यैह प्रसंग उल्लेखनीय किएक लगलनि ? कारण अछि प्रेमलता मिश्रक कला-दृष्टि। सौन्दर्यबोध। वीकर सेक्सनकेँ दुर्बल झा पाँजि बना कऽ यात्री जे कहलनि अछि तकरा प्रेमलता मिश्र पकड़लनि, लिखलनि। ई साहित्य-संस्कार ओ अपन कला-चेतनासँ अर्जित कयलनि अछि।

'शेखर-प्रसंग' समीक्षाक पोथी अछि। शोधपरक

समीक्षा–पोथी। एहन शोध–ग्रन्थमे रचनाक विश्लेषणसँ बेसी जोर ओकर ऐतिहासिकता तथा प्रामाणिकता पर रहैत अछि। रचनाकारक जीवन–वृत्तक खोज आ ताहि आधार पर रचनाक व्याख्या ग्रन्थकर्त्ताक मुख्य ध्येय होइत अछि। सुधांशु 'शेखर' चौधरी अनेक विधामे लिखलनि, मुदा मूलतः ओ कलाकार छलाह। नाट्य–कलाकार। रंगमंचसँ प्राप्त ज्ञानक आधार पर नाटक लिखनिहार। प्रेमलता मिश्रकेँ सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जीवन आ लेखनक प्रति आकर्षण होयब सर्वथा स्वाभाविक अछि। दुनू गोटेक जीवनक गतिविधिमे अनेक साम्य अछि। आर्थिक आ सामाजिक मोरचा पर जहिना शेखरजी लड़लाह आ बहुत दूरि धरि सफलता प्राप्त कयलनि तहिना प्रेमलता मिश्रक जीवन–संघर्ष सेहो सार्थक भेल अछि। नाटक आ रंगमंचसँ दुनू गोटेक अटूट सम्बन्ध जगजाहिर अछि। यैह सभ कारण होयत एहि पोथीक लेखनमे।

कारण जे हो, मैथिलीक पाठककेँ सुधांशु 'शेखर' चौधरी पर एकटा व्यवस्थित आ सुरुचिपूर्ण पोथी भेटल अछि से धरि निश्चित। शेखरजीक मैथिली–हिन्दी, प्रकाशित–अप्रकाशित रचनाक खोज करब आ तखन ओकर सांगोपांग विश्लेषण करब कठिन काज अछि। प्रेमलता मिश्र अपन प्रयासमे सफल भेलीह अछि। शेखरजीक जीवनमे साहित्य आ हुनक साहित्यमे जीवनक खोज तँ करबे कयलनि अछि, दुनूक अन्तस्सम्बन्धकेँ सेहो रेखांकित कयलनि अछि। एहिसँ रचना स्पष्ट भेल अछि, खुजल अछि। मुदा, ई काज आत्मीय ढंगसँ, आदरपूर्वक कयल गेल अछि। तेँ पुस्तक–परीक्षामे गहनता कम, भावुकता बेसी अछि। एकरा स्वाभाविके मानबाक चाही। कलाकार प्रेमलता मिश्रक साहित्यकार रूप ताहूमे समीक्षक रूप, पाठककेँ आह्लादित करतनि से विश्वास अछि।

दीपावली
28.10.2008

**–मोहन भारद्वाज**

# दू शब्द

जीवनक यात्रामे मात्र प्रशस्त राजमार्गे नहि भेटैत छैक अपितु उभड़-खाभड़ बाट, काँट-कुशसँ भरल आरि-धूर, सघन-विरल, तिक्त-मधुर अनुभूति सेहो आ यैह सभ संग लऽ लोक जीवन जीबाक हेतु बाध्य होइत अछि। यैह तिक्त-मधुर अनुभूति जीवनक बाटकेँ सुगम बनयबाक हेतु पाथेय होइत छैक।

हमरो जीवनमे एहने सभ अनुभव शोध करबा लेल प्रेरित कएलक आ कतेको विघ्न-बाधाकेँ पार करैत आइ सम्पूर्णताक दिश अग्रसर भऽ रहल अछि। मुदा प्रारम्भक किछु अन्तर्कथाकेँ बिसरल नहि जा सकैत अछि। किछु व्यक्त कयल जा सकैत अछि आ किछु तऽ अव्यक्ते रहि जाए सैह उचित। सभसँ पहिल प्रेरणाक स्रोत छथि आदरणीय स्व० डा० कपिलेश्वर झा जे एहि दिशामे आगाँ बढ़बाक आशीर्वाद देलनि। जखन हम अपन अस्त-व्यस्त जीवनक चर्चा कएल तऽ ओ तत्काल विचार प्रकट कयलनि जे 'अहाँ तँ रंगकर्मी छी। आकाशवाणी आ मंच दुनू ठाम शेखर जीक नाटक करैत आयल छी। शेखरजीक व्यक्तित्व बहुआयामी छनि। ओ नाटककार, पत्रकार, कथाकार, उपन्यासकार, कवि, कलाकार, की नहि छथि! भरिसक एखन धरि हुनका पर केओ शोध नहि कएलनि अछि। तँ अहाँ शेखर जीसँ सम्पर्क करू आ हुनकेसँ आशीर्वाद लऽ कार्य प्रारम्भ कऽ दिअऽ। हुनकासँ पूर्ण सहयोग भेटत।'

पराते हम मनेमन हर्षित होइत शेखर जीसँ भेंट करबाक हेतु हुनक आवासपर गेलहुँ। हमर प्रस्ताव सुनि किछु काल गुम्म रहि ओ कहलनि जे अहाँ कार्य प्रारम्भ करू। जेना-जे बेगरता होएत से हमर नाति मन्नू (मनोज पाठक, रंगकर्मी) मदति करत।

जेना कोनो कार्य लोक सोचैत अछि तेना ओकरा

कार्यरूप देब सम्भव नहि होइत छैक। हमरा संग तँ एहने सन घटना सभ घटैत गेल आ विलम्ब-पर-विलम्ब होइत गेल। रजिस्ट्रेशन कतऽसँ कराओल जाए। कोन गुरुदेव 'शोध-प्रबन्ध' पूर्ण करएबामे बेसी सहयोगी होएताह आदि पर विचार होइत रहल आ किछु आचार्य लोकनिसँ सम्पर्को कएल, मुदा जनिका लोकनिकेँ हम सहयोगी बुझैत छलहुँ ओ लोकनि तऽ नाक पर माँछियो नहि बैसय देलनि आ टहला देलनि। एहि प्रकारेँ समय बीतैत गेल। विलम्ब होइत गेल। शेखर जी सेहो कए बेर जिज्ञासा कयलनि जे कार्य कतेक आगाँ बढ़ल अछि? हम 'हँ-हूँ'मे जवाब दऽ अंपन दुर्भाग्य पर अपनाकेँ दुत्कारैत रहलहुँ। एहि दुर्गम मार्गमे अनेक व्यक्ति सहयोगी भेलाह। ओहिमे सर्वप्रथम जे आगाँ बढ़ि सहर्ष अपन कान्ह आगू कएलनि से छथि- डा० अमरनाथ झा, अध्यक्ष, मैथिली विभाग, ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, बी० आर० अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर। मिथिलामे ई कहबी खूब प्रचलित छैक जे- 'तुलसी पात जेहने छोट तेहने पैघ'। तहिना लिखबा-पढ़बाक ने कोनो वयस होइत छैक आ ने कोनो सीमा। अहाँ कखनहुँ कोनो नान्हिटा बच्चोसँ किछु सीखि सकैत छी! आ सैह भेला हम अपन पुत्रवत जनिका मानैत छी आ ओहो माताराम कहैत छथि, तनिकेँ हम अपन शोध-प्रबन्धक गुरु बनाओल। आ, हमर कार्य मंथर गतिसँ आगू बढ़ैत गेल। एहि बीच बेस पैघ रोड़ा सभ एहि मार्गमे आएल- जेना पारिवारिक दुर्घटना, पति (श्री महेश्वर मिश्र) आ छोट बेटा नन्हा (सत्यजीत) क अस्वस्थता, जेठ बेटा मुन्ना (मनमोहन) आ माझिल बेटा मन्टू (रवि रंजन) क व्यस्त कार्य शैली आदि।

अस्तु, जेना-तेना ई कार्य जे सम्पूर्णता दिस पहुँचल अछि, ओहिमे सबसँ अधिक सहयोगी भेलाह अछि श्री शरदिन्दु चौधरी, आदरणीय स्व० सुधाशु 'शेखर' चौधरीजीक बालक। हुनक सहयोग जँ नहि भेटैत तऽ यज्ञ पूर्ण

होएब कठिन छल। हम अभारी छी अपन अनुजश्री डा0 विभूति आनन्दक, जे हमर कोनो रचनात्मक कार्यमे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ अवश्य सहयोगी रहलाह अछि। एहि पोथीक प्रकाशनमे डा0 अभय कुमारक अथक प्रयास आ अजित कुमार आजादक बेर-बेर तगेदा करबाक भूमिका सराहनीय रहल अछि।

हम कृतज्ञता ज्ञापित करैत छी साहित्य मर्मज्ञ, आलोचक, विचारक आ मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठित विद्वान प्रवर श्री मोहन भारद्वाजक प्रति जे मात्र एक छोट सन आग्रहपर अपन महत्वपूर्ण भूमिका लीखि एहि शोध-प्रबन्धक पुस्तकाकार स्वरूपकेँ पूर्णता धरि पहुँचओलनि।

एहि ग्रन्थकेँ प्रस्तुत करबाक क्रममे आनो मार्गदर्शक सभक आशीर्वाद, सहयोग तथा शुभकामना रहल अछि। यथा-पं० श्री गोविन्द झा, डा0 रमानंद झा 'रमण', श्री छत्रानंद सिंह झा (बटुक भाइ) आदि अपन अरिजन-परिजनक प्रोत्साहन सेहो नहि बिसरल जा सकैत अछि। जखन कखनो कार्य बेसी अबूह लागल वा नाभरोस होमए लगलहुँ तखन हमर पति बोल-भरोस देथि जे कार्य जहिया होएबाक होएत तहिये होएत, चिन्तासँ किछु होमए बला नहि।

हमर जेठ बालक मनमोहन मिश्र, केन्द्रीय सरकारक गृह मंत्रालयाधीन मह्‌ (इंदौर) स्थित कार्यालयक प्रभारी, माझिल बालक श्री रविरंजन मिश्र, वरीय प्रबंधक, आई. एल. एफ. एस. (केन्द्रीय सरकारक प्रतिष्ठान) नई दिल्ली, बेटी श्रीमती अनुपमा मिश्र, जमाय डा० चंद्रनाथ मिश्र, संगीत विभागाध्यक्ष, महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल महाविद्यालय दरभंगा, छोट बालक श्री सत्यजीत मिश्र, नातिन शालू (ईशानी), लीली (शिवानी) पूजा तथा पौत्री शुचि (सृष्टि), मेघा आ पौत्र सोनू बाबू (मानवेन्द्र) आदि लोकनिक स्नेहिल सान्निध्य एहि कार्यमे ऊर्जा प्रदान करैत रहल। सभसँ अन्तमे अपन पिता श्रद्धेय स्व० पं० दीनानाथ झा (वैद्यजीक नामसँ विख्यात) आ अपन माता पूजनीया स्व० वृन्दा देवी, जे नान्हिटामे आँगुर धऽ चलब

आ बाजब सिखओलनि से आइयो सदतिकाल हमरा संग प्रेरणाक स्रोत बनल ठाढ़ रहैत छथि। जखन कखनहुँ हतोत्साहित भेलहुँ तँ हुनका लोकनिक हाथ अपन पीठपर साक्षात् अनुभव करैत अपन काज दिस आगाँ बढ़ैत रहलहुँ।

अस्तु, जाहि व्यक्तित्वक 'व्यक्तित्व आ कृतित्व' पर शोध करबाक हम साहस कयलहुँ, ओहि व्यक्तित्वकेँ हमरा सदृश अल्पबुद्धि वला व्यक्ति अपन कलमसँ किन्नहुँ नहि बान्हि सकैत अछि। जे मैथिली साहित्याकाशमे सदा-सर्वदा शरद पूर्णिमाक सदृश भाषा-प्रेमीकेँ अपन साहित्यसँ शीतलता प्रदान करैत रहताह। ओ नाटककार, उपन्यासकार, कवि, पत्रकार, कथाकार, निबंधकार आदि सभकेँ मार्गदर्शकक रूपमे सदा-सर्वदा प्रेरणाक स्रोत बनल रहताह। हमर सौभाग्य अछि जे विलम्बे किएक ने भेल हो मुदा मैथिली साहित्यक एहि शिखर पुरुषकेँ हम अपन शोधक विषय बनाओल।

एहिमे कतेक प्रकारक त्रुटि भेल होएत, कतेक वस्तु छुटि गेल होएत। आशा करैत छी जे मैथिली साहित्यक आलोचक, विद्वान, भाषा-प्रेमी आदि हमरा क्षमा. करताह।

पुनश्च एक विषय आओर, एहि लीलामय संसारमे प्रेसक लीला अपरम्पार अछि। एहि लीलासँ बाँचब कठिन। तँ एहि प्रकारक त्रुटिक हेतु सेहो हम अपन गुरुजन, शुभचिंतक आ सुधी-समाजसँ क्षमाक अपेक्षा रखैत छी। सुधीजन ओकर सुधार करताह-

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः।।

**चलनिहार संयोगवश पथ पर पिछड़ि खसैछ।**
**सुजन सम्हारथि हाथ धय, दुर्जन देखि हँसैछ।।**

**प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'**

# विषय-क्रम

प्रथम अध्याय

## व्यक्तित्व ओ कृतित्व

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जन्मक समय भारतीय जनता पराधीनताक बेड़ीमे जकड़ल छल। स्वतंत्रता प्राप्तिक हेतु कछमछा रहल छल। यवनक अत्याचार ओ अराजकतापूर्ण शासनसँ नीक अंग्रेजक शासन शुरूमे नीके बुझैलैक मुदा इहो शासन पूर्ववते जकाँ छल। फलतः जनजीवन अकुलाहटसँ भरल छल। हृदयमे विद्रोहक आगि पजरि रहल छल। शेखर जीक जन्मसँ छः साल पूर्व सन् 1914 ई0मे प्रथम विश्वव्यापी युद्धक श्रीगणेश भेल जे 1918 ई0 धरि चलल। एहि मे किछु आशासँ भारतीय जनता ब्रिटेनक संग देलक। एही समयमे भारतक राजनीतिक मंचपर महात्मा गाँधी प्रवेश कएलनि तथा सम्पूर्ण देश मे घूमि-घूमि युद्ध पीड़ितक सहायताक कार्य कएलनि। भारतीय जनतासँ शासनकेँ तँ मनोनुकूल परिणाम भेटल किन्तु एकर पश्चात ओ क्रूर एवं अमानुषिके बनल रहल। परिणामस्वरूप गाँधी जीक नेतृत्वमे देशक कोन-कोनमे विद्रोहाग्नि पसरि गेल तथा ब्रिटिश सत्ताकेँ पुनः राष्ट्रीय स्तर पर चुनौती देल गेल।[1] सन् 1919 ई0मे ब्रिटिश सरकार रॉयल एक्ट लागू कयने छल, जकर विरोधमे जनता प्रदर्शन कऽ रहल छल। 1919मे जालियावाला बागमे निहत्था भारतीय जनता पर निर्मम रूपेँ गोली चलाओल गेल छल। ओहि समय राष्ट्रीय स्वतंत्रताक मुख्य मुद्दा छल- विदेशी सरकारसँ असहयोग, बाढ़िसँ बचबाक हेतु रिलीफ कार्य, हिन्दू-मुस्लिम एकताक अभियान एवं छुआछूत हटएबाक आन्दोलन। सन् 1919 ई0मे कॉउन्सिलक चुनाव भेल आओर महात्मा गाँधी छपरा आएल छलाह।[2] इहो सौभाग्य मिथिलेकेँ भेटलैक

जे विश्ववंद्य बापू अपन स्वतंत्रता संग्रामक श्रीगणेश एतुके पुण्यभूमि चम्पारणसँ शुरू कएलनि।

गाँधी जीक संगहि कतेको क्रान्तिकारी नेता लोकनि भारतकेँ स्वतंत्र करबाक मार्ग दिस अग्रसर भऽ रहल छलाह। एहि हेतु सुभाषचन्द्र बोस, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद प्रभृतिक नाम उल्लेखनीय अछि। आर्थिक विषम परिस्थितिक समाधानक हेतु गाँधीजी रचनात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत कयने छलाह। लघु उद्योग ओ चरखाक प्रचार-प्रसार पर जोर देल गेल छल। विदेशी वस्तुक प्रयोगक निषेध आ स्वदेशी वस्तुक उपयोगक आग्रह भेल।

धार्मिक स्थिति शोचनीय अवस्थामे छल। अन्धविश्वास, छल-कपट, जादू-टोना तथा भूत-प्रेतमे विश्वास धर्मसँ जुटल छल। धर्मक नामपर विभिन्न प्रकारक अधर्म भऽ रहल छल। समाजमे विभिन्न प्रकारक कुरीति सभ विद्यमान छल। बाल-विवाह, दहेज प्रथा, जाति-पाति प्रभृतिसँ समाज अवनतिक दिशामे छल।

ब्रिटिश शासन रहलोपर अंग्रेजी शिक्षाक संगहि देशी भाषा सभक विशेष विकास भेल। अंग्रेजी शिक्षाक माध्यम रहितहुँ मातृभाषा (जनभाषा)क उपेक्षा नहि कयल गेल तथा किछुए दिनक अनन्तर शिक्षा पद्धति द्विभाषित भऽ गेल। पाश्चात्य सभ्यताक सम्पर्कसँ जाहि नवीन भावना एवं चेतनाक जन्म भेल से विभिन्न भाषाक लेखक लोकनि द्वारा ओहि भाषाक मध्य अवतरित कयल गेल।[3] एकर स्मृतिमे फोर्ड विलियम कॉलेजक स्थापना आ कलकत्ताक सिररामपुरमे बाप्टिस्ट मिशन प्रेसक स्थापनाक नाम लेल जा सकैत अछि।

एहि प्रभावसँ मिथिलांचलो बाँचल नहि रहल। अपन मातृभाषा ओ मातृभूमिक अधोगतिकेँ देखि एतुका साहित्यकार लोकनि ओकर नवोत्थानक संकल्प लऽ साहित्यक सृजनमे लागि गेलाह आ एकरे परिणामस्वरूप मैथिलीमे क्रमशः 'मैथिल हित साधन' 'मिथिला मोद' आ 'मिथिला मिहिर' सन पत्रिकाक आविर्भाव भेल। सर्वत्र

मिथिला तथा मैथिलीक वन्दना ओ सामाजिक जागरणक तूफान आबि गेल। खास कऽ तत्कालीन युवा साहित्यकार लोकनि पर एकर प्रभाव खूब नीक जकाँ पड़ल।

देशक एही प्रकारक पृष्ठभूमिमे मिथिलाक प्रकृतिक डाँट-दुलार आ मातृभाषाक अधोगतिक वातावरणमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक प्रादुर्भाव भेल।

**जन्म**

ईश्वरीय प्रयोजनक पूर्तिक लेल समय-समयपर जीवनमुक्त आत्मा एहि पृथ्वी पर पदार्पण करैत छथि आ अपन कर्त्तव्य पूर्ण कए पुनः चलि जाइत छथि। मनस्वी-तपस्वी, साधक, चिन्तक, मनीषी, विदुषी प्रायः एही स्तरक होइत छथि। तेँ हिनका लोकनिकेँ महामानवक संज्ञा देल गेल अछि। एहि प्रकारक व्यक्तिकेँ अपन कोनो महत्वाकांक्षा नहि होइत छनि, लोभ-मोहसँ ओ मुक्त रहैत छथि आ अपन लक्ष्यक पूर्तिमे अहर्निश लागल रहैत छथि। प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय जीवन-प्रक्रिया पूर्ण करैत छथि। एहन महामानव जाहि देश आ युगमे जन्म लैत छथि ओ धन्य भऽ जाइत अछि।

अनादि कालसँ मिथिला एहि प्रकारक महामानव लोकनिक प्रस्रविनी रहलीह अछि। मिथिलाक ख्याति, यश-प्रतिष्ठा एवं एकर महत्त्वक यैह कारण अछि। जनक, याज्ञवल्क्य, उदयन, वाचस्पति, कपिल, कणाद, कालिदास, विद्यापति, गोविन्ददास, लक्ष्मीनाथ, घनानन्द दास, चन्दा झा, लालदास, सीताराम झा, यात्रीजी, मधुपजी, सुमनजी, हरिमोहन झा, मणिपद्मजी प्रभृति शतशः एहन नाम गनाओल जा सकैत अछि जे साहित्य, दर्शन, तन्त्र-मन्त्र आदिक क्षेत्रमे अद्वितीय-अप्रतिम मानल जाइत छथि। एक दिस जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, गंगेश, मंडन, वाचस्पति, उदयन आदि सरस्वतीक वरदपुत्र सभक माध्यमसँ कर्कश तर्क विद्याक गूढ़ रहस्यकेँ कोटि-कोटि जिज्ञासु कंठक संगीत रूप मे परिणत कऽ भारतीय दर्शनक इतिहासकेँ पूर्ण

करैत रहल अछि तँ दोसर दिस पक्षधर, गोवर्द्धन, कवि कोकिल विद्यापति, गोविन्ददास, उमापति, लोचन, मनबोध, कवीश्वर चन्दा झा, कविवर सीताराम झा, यात्रीजी, सुमनजी, व्यासजी प्रभृति साहित्य-महारथी लोकनि कोमल-काव्य-कल्पना द्वारा भारतीय साहित्यमे सेहो वसन्त अनैत रहलाह।[4] एतहि लक्ष्मीनाथ गोसांइ, सन्त साहेब रामदास, मेंहीदास प्रभृति नैष्ठिक साधक लोकनि अपन गूढ़ ज्ञानसँ कठिन समस्याकेँ देशवासी लोकनिक हेतु सुलभ कऽ देलनि। एतहि सीता, गार्गी, मैत्रेयी, भारती ओ लखिमा सन पतिव्रता एवं विदुषी भेलीह। संसारक अभ्युदय आनि श्रेयसक मार्ग पर पूज्य विभूति लोकनिक दर्शन जतय-जतय होइत अछि, ओहि विभूतिक प्रति श्रद्धा भावनाकेँ मानव अनादि कालसँ अभिव्यक्त करैत चलि आबि रहल अछि। शाश्वत गुणसँ परिप्लावित मनुष्य विश्वमे समादृत होइछ। ई सौभाग्य कोनो-कोनो धरा-धामकेँ उपलब्ध होइत छैक जकर भूमि पर सद्गुण सम्पन्न व्यक्ति अवतरित होइछ तथा ओ महापुरुष अपन यश-कीर्ति-ध्वज चतुर्दिक प्रसारित कऽ अपना संग-संग मातृभूमिक नाम उजागर करैत छथि।[5] एहि दृष्टिएँ मिथिलाक इतिहास अत्यन्त गौरवपूर्ण रहल अछि आ आधुनिक काल सेहो कतिपय दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण आ उल्लेखनीय मानल जा सकैत अछि। स्व0 सुधांशु 'शेखर' चौधरी एहि कालक एक गोट महामानव छलाह।

सन् 1920 ई०क कातिक मास, कृष्णपक्षक त्रयोदशी, जन-जनमे दियाबातीक उल्लास, घर-आङन नीपल-पोतल, ढेउरल, खेतमे धानक शीश देखि प्रमुदित सगर जहान छल। लक्ष्मी घर औतीह ताहि हेतु गृहिणी लोकनि अपस्याँत छलीह। कातिक मास मिथिलाक हेतु अति प्रसिद्ध होइछ, कारण एहि मासमे प्रातः स्नान, दीपदान, आङन-आङनमे रामायण; कातिक माहात्म्य प्रभृति धार्मिक ग्रन्थ-वाचन, श्रवण ओ स्मरण स्वाभाविक रूपेँ होइछ। वसुन्धराक कण-कणमे शरद ऋतुक साम्राज्य पसरि रहल छल, अस्तु

प्रकृतिक एहि रम्य वातावरणक बीच स्वनामधन्य स्व० पं० बद्रीनाथ चौधरीक पत्नी कौशल्या देवी सुधांशु 'शेखर' चौधरीकेँ जन्म देलनि। पिता बद्रीनाथ चौधरी सरस्वतीक वरदपुत्र शेखरजीकेँ पाबि कृत-कृत्य भऽ अपन गार्हस्थ्य जीवनकेँ सफल बुझलनि।

शास्त्रीय विधानक मुताबिक सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जन्मक समय कार्तिक कृष्ण त्रयोदशीकेँ धनतेरस सेहो कहल जाइत अछि। कहबाक अभिप्राय ई अछि जे शेखर जीक जन्म दियाबातीसँ पूर्व धनतेरस दिन दरभंगा नगरक मिसरटोलामे भेल छलनि।

पंजी प्रबन्धक मुताबिक हिनक मूल नरौने वत्सवार आ गोत्र पराशर अछि। हिनक पूर्वज दरभंगाक पंचकोसी पौना गामसँ आबि मिसरटोला महल्लामे बसि गेलाह आ ओही समयसँ पंडित काशीनाथ चौधरीक वंश परम्परा एतहि चलय लगलनि।

## परिवार एवं शिक्षा-दीक्षा

'मुखं किमस्यासीत्कि बाहु हि गुरू पादा उच्येते।
ब्राह्मणोस्य मुखमासीत बाहूराजन्य कृतः ।।
उरूतदस्य यद्वश्यः पदम्यो शूद्रा अजायतः ।
चन्द्रमामनसोजातश्यक्षाः सयाजायतः ।।[6]

अर्थात् विराट् पुरुषक मुँहसँ ब्राह्मण, भुजासँ क्षत्रिय, उरूसँ वैश्य आओर पैरसँ शूद्र उत्पन्न भेल। आ तहिना पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण, मार्कण्डेय पुराण आ स्कन्ध पुराण आदि धर्म ग्रन्थ सभक अवलोकनसँ सेहो इएह स्पष्ट होइत अछि।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिल ब्राह्मण छलाह। उपलब्ध सामग्रीक आधारपर ई ज्ञात होइत अछि जे हिनक बीजी पुरुष पंडित काशीनाथ चौधरी छलाह। पंडित काशीनाथ चौधरी दरभंगा पंचकोसीक पौना गामसँ उपटि दरभंगा नगरक मिसरटोला महल्लामे बसि गेलाह। भरल-पुरल परिवारक डाँट-दुलारमे शेखर जीक 'दिन दिन बाढ़े

सुपुरुष नेहा, अनुदिन जइसन चान्दक रेहा' जकाँ बढ़य लगलाह। कौलिक संस्कारमे जीवन परिवर्ब्धित होमय लागल।

हिनक पितामह, पिता ओ पित्ती लोकनि अपन कुलक परम्पराक रक्षा करैत देश-कोसमे पसरैत आधुनिकतासँ परिचित छलाह। हिनका लोकनिमे युगनवीनक स्वरमे स्वर मिलबैत प्राचीनताक प्रति पूज्य भावक निष्ठा रहनि। मिथिलाक माटि-पानि, सभ्यता-संस्कृतिक प्रति अखण्ड आस्था सेहो छलनि। ई शेखर जीक कौलिक परम्परा एवं वंशक विशेषता रहलनि।[7]

हिनक पिता चारि भाइ रहथिन- बद्रीनाथ चौधरी (पिता), मुक्तिनाथ चौधरी, शशिनाथ चौधरी एवं सिद्धिनाथ चौधरी। स्वयं हिनक पिता बद्रीनाथ चौधरी दारोगाक संग-संग साहित्यानुरागी सेहो छलाह। बेगूसरायमे प्रचलित मैथिलीमे एक उपन्यास सेहो लिखलनि। ई स्वाभिमानी व्यक्तित्वक लोक छलाह। स्पष्टवादी आ उच्च महत्त्वाकांक्षी होएबाक कारणेँ बद्रीनाथ चौधरीकेँ अपन अधिकारीसँ नहि पटैत छलनि एवं एहि क्रममे ओ अपन सेवासँ त्यागपत्र दऽ देलनि। ताहि समयमे अंग्रेजक राज रहैक। अंग्रेज हाकिम सभ अपनासँ कनीय भारतीय पदाधिकारी लोकनिकेँ कहियो मोजर नहि दैत छल। परिणामस्वरूप बद्रीबाबू अपन नौकरीक संगहि घर सेहो छोड़ि जकाँ देलनि। साधु-संतक संसर्गमे रहलाक कारणेँ एक यशस्वी तान्त्रिक एवं कुशल वैद्य बनि गेलाह। एहिसँ जे किछु आय होइत छलनि ताहिसँ कोनो तरहेँ एक गोट पैघ परिवारक भरण-पोषण करैत रहलाह आ एक तान्त्रिक रूपमे जनकल्याणमे लागल रहलाह।

पितृव्य शशिनाथ चौधरी अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्क संस्थापक सदस्य, पहिल महासचिव तथा मैथिलीक विशिष्ट लेखक छलाह।

हिनक दोसर पित्ती मुक्तिनाथ चौधरी 'ट्रेण्ड ग्रेजुएट' छलथिन, जे डिप्टी इन्सपेक्टर ऑफ स्कूलक पदपर

कार्यरत छलाह।

हिनक सभसँ छोट पित्ती सिद्धिनाथ चौधरी सेहो स्नातक रहथिन। प्रारंभमे ओहो साधु-संन्यासीक संगतिमे चल गेलथिन मुदा 45 वर्षक अवस्थामे आपस भेलथिन, तकरा बाद सी. एम. कॉलेज दरभंगामे लेखा विभागमे अवकाश प्राप्ति धरि कार्यरत रहलथिन।

शेखरजीक नाना रखवारी गाम (मधुबनी)क प्रसिद्ध बाबूसाहेब नामसँ ख्यात छलाह। हिनक बाल्यकालक अधिकांश समय मातृकेमे बितलनि। शेखरजी वाल्यावस्था गौरवर्णपर लालिमा नेने मुखमंडलक स्वामी छलाह। जेहने आकर्षक, तेहने तेजस्वी लगैत छलाह। किछु गोटे हिनक एहि रूपसँ प्रभावित भऽ हिनका 'लाला' कहय लागल। पछाति चलिकऽ टोल-परोसक लोकमे ई 'लाला' नामसँ लोकप्रिय भेलाह। परिवारमे सेहो हिनका लालभैया, लालकका नामसँ लोक सम्बोधित करय लगलनि। हिनक अपन संतान सेहो सभ दिन 'लालकका' कहि संबोधित कयलथिन।

छः भाइक भैयारीमे शेखरजी तेसर छलाह। हिनक पिताक दू गोट विवाह रहनि। पहिल सौराठ आ दोसर रखवारी। पहिल पत्नीसँ हुनका एक मात्र संतान भेलथिन- चन्द्रशेखर चौधरी (सभसँ ज्येष्ठ) जे टाटामे लेखा पदाधिकारीक रूपमे कार्यरत छलथिन। शेखरजी दोसर पत्नीक दोसर सन्तान छलाह। हिनक परिवार विद्यानुरागी छल।

शेखरजीकेँ पाँच गोट सन्तानमे चारि गोट पुत्री एवं एक गोट पुत्र जे शरदिन्दु कुमार चौधरीक नामसँ ख्यात छथि।

शेखरजीक पिता बदरीबाबू वैद्यसँ अधिक तान्त्रिक छलाह। लाल वस्त्र धारण करैत छलाह तेँ हिनका लोक लालबाबा सेहो कहैत छलनि।

एहन भरल-पुरल आधुनिक शिक्षा सम्पन्न परिवारमे शेखरजी पालित-पोषित ओ परिवर्द्धित भेलाह। तेँ शेखर जी पर आधुनिकताक रंग-टीप आ साहित्यिक प्रभावक

छाप पड़ब स्वाभाविके छल। यैह कारण छल जे ई स्वयं उच्च कोटिक साहित्यकारक रूपमे ख्यात भेलाह।

शिक्षा शब्दक अर्थ होइत अछि उत्तम ज्ञानकेँ प्राप्त करब आ तेँ प्रत्येक मानवक हेतु शिक्षा अनिवार्य आवश्यकताक एकगोट कड़ी बूझल जाइत अछि। पशु आ मानवमे यैह अन्तर अछि। अशिक्षित मनुष्य पशु तुल्य होइत अछि। ईश्वर प्रदत्त मानवक प्रत्येक अंगक विकास करब शिक्षासँ सम्भव थिक। शिक्षा मनुष्यक कर्त्तव्याकर्त्तव्यक ज्ञान करबैत अछि। अस्तु शिक्षाक महत्त्व सर्वविदित अछि। शिक्षाक सम्बन्धमे प्रो० राधा कृष्ण चौधरी लिखैत छथि जे – 'मानवीकरणक प्रश्न शिक्षण शास्त्रहुमे लागू होमक चाही।'...शिक्षा सबहिक लेल कमसँ कम आगाँ जेहन रुचि। एहि सिद्धान्तकेँ मानि जँ पद्धतिक एकमात्र उद्देश्य मानवकेँ मानव बनायब हो। शिक्षित व्यक्ति स्वतंत्रता एवं शान्तिक उपासक एवं पुजारी होथु।'[४]

आधुनिक रहितहु शेखरजीक वंशज किंवा पिताक कौलिक परम्पराक पृष्ठपोषक छलाह। मिथिलाक संस्कृति हुनक नस-नसमे रसल-बसल छल। अस्तु, कौलिक परम्पराक अनुसार पाँचम वर्षमे शेखरजीकेँ अक्षरारम्भ कराओल गेल। स्कूलमे 'ओ ना मा सी धं (ओम नमः सिद्धम्)क अपभ्रंस रूप प्रचलित छल। मुदा शेखर जी 'ऑ जी सिद्धरस्तु' तिरहुतामे विधिपूर्ति कएल। मातृभाषासँ हुनका अटूट प्रेम छलनि। ओकर उत्थान ओ सम्वर्द्धना ओ हृदयसँ चाहैत छलाह। माएक भाषासँ बढ़ियाँ अभिव्यक्तिक माध्यम दोसर नहि होइछ। अंग्रेजी तँ पेट पोसैक भाषा भऽ सकैछ। एहि बातकेँ शेखर जी सेहो बुझैत छलाह। आ तेँ तिरहुतामे अक्षरारम्भक विधिपूर्ति कएलनि- से सर्वथा स्वाभाविके।

ताहि समयमे कवीश्वर चन्दा झाक रामायण मिथिलाक आङनमे जन-जनक कण्ठहार भेल छल- उपहार साँठल जाइत छल। श्रवण-स्मरण आ दिनचर्याक रूपमे पाठ करैत छल-

"की दिव्यभूमि मिथिला हम आबि गेलौं।
देखैत मात्र मन लक्ष्मण तृप्त भेलौं।।
की दिव्य फूलफल वृक्ष अनन्त धाम।
पक्षी विलक्षण रम्य गान।।"[१]

प्रभृति पाठ सुनल जाइत छल।

आधुनिक समय जकाँ शेखरजीक समयमे स्कूलक भरमार नहि छलैक। प्रमुख शहर आ गाममे बिरले स्कूलक नाम सुनल जाइत छल। अधिकांश व्यक्तिक प्रारम्भिक शिक्षा गामहिमे निजी शिक्षक लोकनिक संरक्षण मे देल जाइत छलैक। हनुमान चालीसा, रामायण ओ विभिन्न प्रकारक श्लोक रटाओल जाइत छलैक। खाँत-बिटगरहा- सवैया, ड्योढ़ा, पौना, अढ़ैया घोंकाओल जाइत छलैक। चटिया लोकनि अपन सुखहरा (पाटी)कें पोतनासँ पोति आ कपड़ासँ रगड़ि-रगड़ि चमकाएब आ ताहि पर पथलखड़ी किंबा भट्ठा (गाबिस माटि) सँ लिखए जाहिसँ अक्षर-खाँत खूब चमकैक। शेखरजी सेहो शिक्षाक एहि प्रकारक परिपाटीसँ बाँचल नहि छलाह। ओ हनुमान चालीसा कऽ टऽ कए पढ़य लगलाह। आ लगले रामायणक चौपाइ, दोहा पढ़ब प्रारंभ कऽ देलनि। विभिन्न प्रकारक श्लोक रटि लेने छलाह। बहुत दिन धरि हिनक शिक्षाक क्रम खानगीये रहल।

शेखर जीक पिता दारोगाक पदसँ त्यागपत्र दऽ देने छलाह आ वैद्यसँ विशेष ओ तान्त्रिक भऽ गेल छलाह। एहिसँ जे आय होइत छलनि ताहिसँ परिवारक भरण-पोषण होइत छलनि। गामपर कहियो काल अबैतो छलाह तँ शेखरजी पिता अछैत पितृविहीने जकाँ छलाह। परिवार पैघ छलनि तें शेखरजीक शिक्षा-दीक्षा कोनो दृढ़ पृष्ठभूमिक परिणाम नहि छल। हिनक पित्ती आ परिवारक अन्य लोक सभ अंग्रेजी पढ़ल-लिखल, मास्टरी ओ ओकालति करैत छलाह। बदरी बाबू शेखरजीकेँ संस्कृत पढ़ाए पंडित बनबए चाहैत छलाह। पूर्वकालमे मिथिलामे शिक्षाक विषय छल संस्कृत। गाम-गाममे चटिसार आ

चौपाड़ि छलैक। छात्र लोकनि अपन-अपन गुरुसँ संस्कृत शिक्षा ग्रहण करैत छल। शिक्षाक माध्यम रहैत छलैक मैथिली आ अक्षर रहैत छलैक तिरहुता। पहिने बच्चाकेँ देवाक्षर नहि सिखाओल जाइत छलैक। तहिना, आन कोनो विषय नहि पढ़ाओल जाइत छलैक। प्रतिदिन साँझमे, प्रत्येक दलानपर एकटा डिबिया जरैत रहैत छलैक। पुरुष लोकनि बैसल वा पड़ल रहैत छलाह। हुनका लग घरक सभ नेना-भुटका सभ जुटल रहैत छल। पुरुष जोरसँ पढ़बैत छलाह आ नेना समवेत रूपेँ पढ़ैत छल। अपन नाम-गाम रटैत छल, कौलिक परिचयक अभ्यास करैत छल। प्राथमिक अंकगणित घोकैत छल। लोक संस्कृत अर्थसहित रटैत छल।''[10] जेना ई श्लोक-

'बालोऽहं जगदानन्द न मे वाला सरस्वती ।
अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्रयम्।।'

समय बदललैक। उच्च वर्गमे अंग्रेजक समयमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार बढ़य लगलैक। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ नहि रहलाक कारणेँ शेखरजीक शिक्षाक माध्यम संस्कृते रहलनि। अध्यापक पं० वासुदेव झाक देखरेखमे श्यामा पाठशाला (मिर्जापुर) दरभंगामे नाम लिखाओल गेलनि। ताहि दिनसँ शेखर जी संस्कृत पढ़य लगलाह। व्याकरणक परीक्षा ओही श्यामा पाठशालासँ पास कएलनि। शेखरजी अपन शिक्षाक क्रम स्वयं अपने कएलनि आ सहायक भेलथिन पंडित वासुदेव झा।

प्रथमामे उत्तीर्ण भेलापर अपन पित्तीक कहलापर अंग्रेजी शिक्षा दिस प्रवृत भेलाह मुदा आर्थिक मदद नहि भेटबाक कारणेँ बाध्य भऽ कऽ हिनका पुनः संस्कृतक शरणमे जाए पड़लनि। सन् 1940 ई०मे ई रमेश्वरलता महाविद्यालयसँ व्याकरण साहित्यमे मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण भेलाह। मुख्य रूपसँ स्कूली शिक्षाक क्रम हिनक एतय धरि रहलनि। कालेजमे नाम नहि लिखाओल गेलनि। हँ, मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद हिनक पिता पटनाक आयुर्वेदिक कालेजमे जी.ए.एम.एस. करबाक हेतु

नामांकन करा देलथिन- कारण ओहिठाम (बाकरगंज पटनामे) ओ एकटा आयुर्वेदिक औषधालय खोलने छलाह। मुदा शेखरजीकेँ ओहिठाम मन नहि रमलनि, दबाइ कुटब पसिन्न नहि पड़लनि। तँ कोनो स्थिर आ व्यवस्थित स्कूल-कालेजक शिक्षा शेखरजी नहि प्राप्त कऽ सकलाह। हिनका लग प्रमाणपत्रक नामपर मात्र मध्यमा परीक्षोतीर्णक छलनि आ अन्ततः पारिवारिक स्थिति सुदृढ़ नहि रहबाक कारणेँ बाध्य भऽ कऽ हिनका जीविकोपार्जनक क्षेत्रमे अग्रसर होमए पड़लनि।

शेखरजीक शिक्षा-दीक्षाक क्रम तँ इएह रहलनि मुदा हुनक प्रतिभा कोनो उच्च योग्यताधारीसँ कम नहि छलनि, जे हिनक रचनासँ स्वतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि। हिनकामे मणिकांचन योग्य प्रतिभा छलनि- ई गागरमे सागर भरि देबाक क्षमता रखैत छलाह।

अभ्यासक बदौलति ई हिन्दी तथा अंग्रजीक ज्ञान प्राप्त कएलनि। तँ हुनक कैक गोट हिन्दीक रचना बेस ख्याति प्राप्त कयलकनि। बादमे तँ अंग्रेजी आ बंगलाक सेहो बेस अध्ययन कयलनि। साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करबा काल अंग्रेजीमे साक्षात्कार देब आ अंग्रेजी संभाषण सुनि उपस्थित लोक छगुन्तामे पड़ि गेल छल।

## स्वरूप ओ स्वभाव (व्यक्तित्व)

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक व्यक्तित्वक सम्बन्धमे लिखबासँ पूर्व 'व्यक्तित्व' ककरा कही, ताहि प्रसंग किछु विचार कऽ लेब आवश्यक। व्यक्तित्व व्यक्तिक अन्तर्गत ओहि मनःशारीरिक गुण सभक गतिशील संगठन थिक, जे पर्यावरणमे अपन असाधारण समायोजनकेँ निर्धारित करैत अछि।[1] व्यक्तित्वमे मानसिक ओ शारीरिक दुनू प्रकारक गुणक महत्त्व छैक। एकरा संगहि इहो आवश्यक थिक जे व्यक्तित्वमे एहि गुण सभक योग नहि समन्वय होइत छैक। समन्वय अथवा समाकलनक अर्थ थिक परस्पर सम्बन्धित ओ निर्भर होएब। व्यक्तित्वक विभिन्न

गुण एक दोसरासँ सम्बन्धित एवं संगठित होइत छैक। गुण सभक संगठन प्रत्येक व्यक्तिमे एक विशेष ढंगसँ होइत छैक, जकर फलस्वरूप ओहि व्यक्तिमे एक विशेष प्रकारक व्यक्तित्वक विकास होइत छैक।

व्यक्तित्वमे जे विभिन्न गुण सभक संगठन होइत छैक तकर ई अर्थ नहि जे ओ गुण सभ एके रूपमे स्थिर रहैत छैक। एहिमे समय ओ परिस्थितिक अनुसार परिवर्त्तनो होइत रहैत छैक। एके व्यक्ति एक परिस्थितिमे ईमानदार ओ साधु रहैत अछि ओ दोसर परिस्थितिमे ओ ठक-बेईमान बनि जाइत अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे मनुष्यक मानसिक तथा शारीरिक गुण सभक संगठन समयानुसार परिवर्तित होइत रहैत अछि, एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे व्यक्तित्वक कोनो गुण थोड़बो टिकाउ नहि होइत छैक, ई सतत् परिवर्तित होइत रहैत छैक। किन्तु गतिशील संगठनसँ उपर्युक्ते विश्लेषण-समयानुसार परिवर्तित होएबाक क्षमता बुझबाक चाही।

प्रत्येक व्यक्तिक व्यवहार-वातावरणमे अपनाकेँ समायोजिते करबाक हेतु होइत छैक। एके परिस्थितिमे चारि व्यक्ति चारि प्रकारक व्यवहार कऽ अपनाकेँ समायोजित करैत अछि। घरमे आगि लगला उत्तर केओ मिझेबाक प्रयास करैत अछि, केओ कनैत अछि, केओ चिचिआ कऽ लोकक सहायता करऽ चाहैत अछि तँ केओ 'किंकर्त्तव्यविमूढ़' भऽ ठाढ़े रहि जाइत अछि। तँ प्रत्येक व्यक्तिक समायोजन ओकर जीवनशैलीक परिचायक थिक।[12]

व्यक्तित्व, व्यक्ति आओर समाजक मध्य संघर्षक परिणाम थिक। व्यक्ति ओ समाजमे (वातावरणमे) अविनाभाव सम्बन्ध छैक। अतः व्यक्तित्व निर्धारणक कारको दू प्रकारक होइत छैक- एक व्यक्ति शरीर सम्बन्धी जकरा जैविक वा आनुवंशिक कहि सकैत छी तथा दोसर पर्यावरण सम्बन्धी।

व्यक्तित्वक मौलिक रूप जैविक निर्धारक वा कारक पर निर्भर करैत अछि। दोसर कारक पर्यावरण तीन प्रकारक होइत अछि- सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक।

जहाँ धरि जैविक कारकक प्रश्न अछि, शेखरजीक जन्म एक मैथिल ब्राह्मण कुलमे भेल छलनि। हुनक पिता शिक्षित परिवार मध्य पालित-परिवर्द्धित व्यक्ति छलाह तथापि अन्धविश्वाससँ ग्रसित रूढ़ि ओ कुरीति तँ हुनकामे रहब स्वभाविके छल, तखन हुनकासँ कोनो तेहन दिव्य कारकक कल्पना नहि कएल जा सकैत अछि।

सामाजिक पर्यावरण प्रथमतः माय-बापक समुचित स्नेह व्यक्तित्वक समुचित विकासक हेतु आवश्यक छैक। बच्चा अपन छोट-छोट इच्छा सभकेँ माएसँ कहैत अछि एवं माइक ममता ओकरा प्रोत्साहन दैत छैक। मुदा शेखरजीक शिशु-सुख तेहन नहि रहलनि। पिता शक्ति ओ ज्ञानक प्रतीक होइत छैक। बच्चा अपन पिताक स्नेह ओ प्रेम पाबि अपनाकेँ विशेष सुरक्षित बुझैत अछि। फलतः ओकरामे सुन्दर गुण सभक विकास होइत छैक। मुदा बालक शेखरजी एहि लाभसँ वंचिते जकाँ रहलाह। एहि नेनाकेँ काँच वयसमे कटु वास्तविकताक सामना करए पड़लनि, समुचित स्नेहक अभाव शेखरजीकेँ खूब नीक जकाँ खटकलनि।

व्यक्तित्वक समुचित विकासक लेल परिवार मध्य पारस्परिक सम्बन्ध नीक होएब नितान्त आवश्यक होइछ। नेना स्वभावसँ अनुकरणीय होइत अछि। ओ गुरुजनक व्यवहारक अनुकरण करैत अछि। मुदा परिवारक सदस्य लोकनिक अभिवृत्ति नीक नहि रहबाक कारणेँ शेखरजीक जीवन उपेक्षित आ तिरस्कृते रहलनि। फलतः साहस ओ विश्वासक अभाव होएब स्वाभाविके।

शेखरजीक शिक्षा-दीक्षा कोनो तेहन पाठशालामे नहि भेलनि। नेनामे ई संस्कृतक अध्ययन कएलनि। परिस्थितिक अनुसार हिनक संस्कृत शिक्षा दरभंगेमे भेलनि। ओहि समयमे मिथिलामे निर्धन छात्र लोकनिकेँ सहायता देल जाइत छल। शेखरजीकेँ पंडित वासुदेव झाक सहयोगे श्यामा पाठशालामे नाम लिखाओल गेलनि। ई शेखरजीक हेतु एक नवीन विषय जकाँ छल।

व्यक्तित्वकेँ प्रभावित करबामे आर्थिक स्थितिक कम महत्त्व नहि होइत छैक। अर्द्धविकसित ओ विपन्न परिवारक सदस्य रहबाक कारणेँ खयबा-पीबा ओ रहबामे सेहो कष्ट होइत छैक। जाहि परिवेशमे अनिवार्यो आवश्यकताक पूर्ति नहि भऽ पबैत छैक, ताहिमे उन्नत व्यक्तित्वक की आशा कएल जा सकैत अछि ? मनोविज्ञानक अध्ययनसँ ज्ञात होइत अछि जे शराबी, चोर, लुच्चा, लफंगा वा वेश्या बनबाक एक प्रमुख कारण आर्थिक विपन्नतो थिकैक। शेखर जीक पिता गामसँ अधिक बाहरे रहथि तेँ ओ एक गृहस्थ जकाँ परिवारक नीक संचालक कहियो नहि भऽ सकलाह। तकर कारण ई छल जे तन्त्र मार्गसँ जे किछु आमद होइत छलनि तकरा ओ ओही मार्गमे लगा दैत छलाह आ वैद्यगिरीसँ जे आमद होइत छलनि से गाम पठाबथि। एहन परिस्थितिमे शेखरजी अपन विकासक क्रमक एक प्रकारेँ अपने उपक्रम कएलनि।

बाल्यावस्थासँ तरुणावस्था मे प्रवेश करिते शेखर जीक जीवन करोट फेरए लागल। एक दिस ओ खेल-कूदमे रमय लगला तँ दोसर दिस काव्य-सर्जनामे। एही मध्य हुनका पिताक लग पटना जाए पड़लनि। पटना आयुर्वेद कॉलेजमे हुनक नामांकन कराओल गेलनि। तंदरुस्त शरीरक स्वामी शेखर जी बॉलीबॉलक टीममे शामिल भेलाह। ओ बॉलीबॉलक नीक खेलाड़ी बनि गेलाह। एही मध्य हुनक दहिना हाथ टूटि गेलनि। एहि ठाम शेखरजीक जीवनमे नया मोड़ आएल। ओ लिखबाक बड़ बेसी अभ्यासी छलाह। बिनु लिखने चैन नहि होइनि। ओ बामा हाथे लिखब शुरू कएलनि, से हाथसँ पट्टी खुजलाक बादो बामे हाथे लिखैत रहि गेलाह। दृढ़ निश्चयी शेखरजी एहिसँ प्रमाणित कऽ देलनि जे अभ्याससँ मनुष्य किछुओ कऽ सकैत अछि– ''अभ्यासे नराः''। जहिना ओ अभ्यास आ अध्यवसायसँ ज्ञानार्जन कएलनि तहिना बमरोटिया बनि ई देखा देलनि जे बामो हाथसँ ओ विलक्षणसँ विलक्षण काज कऽ देखएबाक क्षमता

रखैत छथि। आइ जे हमरा लोकनि शेखरजीक साहित्यक अमार लागल विविध विषय पढ़ैत छी आ गुनैत छी, से हुनक बामे हाथक खेल छलनि, किएक तँ ओ खेलेमे अपन दहिना हाथकेँ विश्राम दऽ देने छलाह।

शेखर जीक जीवनमे साधनाक विशिष्ट स्थान रहलनि अछि। ओ उद्दाम जीवनक समर्थक नहि छलाह। हुनक आग्रह रहलनि जे जहिना सुघर संगीतक लेल कण्ठ-साधना ओ उद्यानक सुन्दरताक लेल घेरा आवश्यक छैक, तहिना सुघर जीवनक निर्माणक लेल बन्धन ओ साधना आवश्यक-

"साधल नहि जायत कंठ स्वर
संगीत सुघर ता होयत कोना ?
बेढ़ल नहि जायत काँट लगा
उद्यान सुघर होयत कोना ?

दुःखक ज्वाला केर ताप बिना
जीवन-सोना नहि शुद्ध होअय"[13]

शेखर जीक जीवनक अधिकांश समय कष्टमे बितलनि। मुदा ओ कहियो परिस्थितिक पराधीन नहि भेलाह। संघर्ष करैत रहलाह। जीवनक केहनो दुःस्थितिमे नोर चुअएबाकेँ पुरुषार्थक विरूद्ध बुझलनि।

वस्तुतः नोर ओकर नाम नहि छैक जे कोनो परिस्थितिसँ पछाड़ खा कऽ आहिस्तेसँ चूबि जाइत अछि। नोर थिक ओ जे परिस्थितिक पहाड़सँ लड़ि-भिड़ि कऽ सफलता प्राप्त करैत अछि-

"नोर विवशता नहि थिक,
लपकैत आगि थिक नोर
किछु करबा ले भिड़ि जाइत अछि
लड़ि जाइत अछि नोर।"[14]

जेँ शेखर जीक जीवन संघर्षसँ भरल रहलनि आ ओ ओहिसँ जुझैत रहलाह तेँ ओ साधना आ संघर्षक बल पर लक्ष्य प्राप्त करबामे सफल भेलाह एवं अपन

अनुभूतिक आधार पर ''दुःखक ज्वाला क्रेर ताप बिना, जीवन सोना नहि शुद्ध होअय'' कहलनि।

बिडम्बनासँ टकराइत मनुष्य यदि विजयी होइत अछि तँ यूनानी नाट्य परम्परानुसार ओ 'ट्रेजडी' थिक। यदि ओ परास्त होइत अछि आ भीतरसँ टूटि जाइत अछि तँ ओ ट्रेजडी थिक, जाहि परिस्थितिक दबावसँ टुट्लैक अछि ओहिमे कतेक सामर्थ्य छलैक?

शेखरजी आर्थिक कठिनताक कष्ट भोगने छलाह। आत्मसम्मानक भावनाकेँ गम्भीर चोट लागल छलनि तथापि ओ स्वाभिमानी बनल रहलाह। हिनक पिता बद्रीबाबू अपन स्वाभिमानकेँ नहि बेचलनि आ एही कारणेँ ओ दारोगाक पदसँ त्यागपत्र दऽ तान्त्रिक भऽ गेलाह। तेँ शेखरजीमे स्वाभिमानी प्रवृत्ति पैतृक रूपमे प्राप्त होएब स्वाभाविके छल।

स्वाभिमानी प्रवृत्तिक सुधांशु 'शेखर' चाधरीक व्यक्तित्व इन्द्रधनुषी छटाक समान मनोमुग्धकारी छल। हुनक दोहरा शरीर, पैघ कदकाठी, प्रशस्त ललाट, तेजस्वितासँ भरल आँखि सुडौल नाक, धनुषाकार भौंह लोककेँ अपना दिस आकर्षित करैत छल। हुनक व्यक्तित्व जतबे सुन्दर छल, अन्तरंग ओहूसँ अधिक सुन्दर। हुनक तेजस्वी व्यक्तित्व पर संयम, अनुशासन आ गम्भीरताक स्पष्ट छाप छल। आन्तरिक रूपसँ ओ कर्मठ, दृढ़ आ आत्मविश्वासी रहथि। हुनकामे आत्मसम्मानक भावना अत्यधिक छलनि। हुनक व्यक्तित्वक सर्वोपरि वैशिष्ट्य हुनक विलक्षण बौद्धिक प्रतिभा छलनि। अपन एहि प्रतिभाक बल पर आ अपन स्वाध्यायक बल पर ओ विपुल साहित्यक सर्जन कऽ कयलनि। अध्यवसायी ओ एहन रहथि जे सार्वजनिक जीवनमे रहितहुँ एतेक व्यापक साहित्यक सृजन कऽ पौलनि। हुनक अध्ययनक क्षेत्र विशाल छलनि। ओ एकहि संग पत्रकार, निबन्धकार, नाटककार-एकांकीकार, उपन्यासकार, कथाकार, गीत-गजलगो आ आलोचक छलाह। वस्तुतः ओ गम्भीर

रहितहुँ शुष्क नहि रहथि। हुनक गम्भीरता वास्तवमे अनुशासनप्रियता छल। हुनक आचार-विचार, वेश-भूषा सभसँ सरलता-सौम्यता आ शांति चूबैत छल। एहि दृष्टिसँ ओ पूर्ण स्वदेशी रहथि। ओ अत्यन्त निर्भीक, स्पष्टवादी आ दबंग रहथि। यैह कारण अछि जे ओ कोनो शासनक अधीन रहब स्वीकार नहि कएलनि। ओ कतहु एक स्थान पर स्थिर नहि रहि सकलाह। ,

गम्भीर व्यक्तित्वक धनी शेखरजी स्पष्टवादी, स्वाभिमानी ओ महत्वाकांक्षी छलाह। कतहु ककरो अनटोटल बात क्षणो भरिक लेल हुनका बर्दास्त नहि होइत छलनि। शेखरजी गुटबाजीसँ फराक, दृढ़निश्चयी, सत् साहित्य सर्जनक समर्पित पुरुष छलाह। लोक हुनका उग्र बुझैत छलनि मुदा ओ उग्र नहि स्पष्टवादी, मुँह पर जवाब देनिहार व्यक्ति छलाह। वस्तुतः एहन लोककेँ समाज मुँहफट्ट कहैत अछि। मुदा हिनक स्पष्टता ओ वाणीक प्रखरता क्षण भरिक हेतु जे अप्रिय लगौक मुदा ओहि प्रखरता-स्पष्टताक पाछाँ हुनक कोनो द्वेष-भाव नहि रहैत छल। एहन लोक प्रायः भीतरसँ ककरो अनिष्ट नहि करएवला तथा निश्छल हृदयक होइत अछि। यैह कारण छल जे एक दिस हुनक मित्रक संख्या कम छलनि तँ दोसर दिस प्रशंसक लोकनिक पैघ समुदाय। सभ प्रशंसक आ साहित्यकार हुनकर छलथिन आ ओ सभक छलाह। ओ अत्यन्त सादा-सरल जीवन व्यतीत कएलनि। हुनक मन-वचन आ कर्ममे भिन्नता नहि छल। हुनक तेजस्वी व्यक्तित्व पर संयम-अनुशासन आ गम्भीरताक स्पष्ट छाप छल। आन्तरिक रूपेँ ओ कर्मठ, दृढ़ आ आत्मविश्वासी छलाह। जहिना स्वभाव सहज-सुकोमल छलनि तहिना ओ साहित्योमे मानवताक सहज सुकोमल रूपक प्रतिष्ठा करए चाहैत छलाह। मानव-मनक विश्लेषणक अद्‌भुत क्षमता हुनकामे छलनि। हुनक व्यक्तित्वक सर्वोपरि गुण छल जे ओ नाटककारक संगहि कुशल अभिनेता, निर्देशक आ 'मेकअप मैन'क काज करथि। तकर कारण अछि जे

हुनकामे प्रतिभा छलनि, रस छलनि आ प्रवाह छलनि।
शेखरजी बजैत छलाह कम आ काज करैत छलाह अधिक। कम बजबाक स्वभावं हिनकामे शुरुएसँ छलनि। कहल जाइत अछि जे नेनामे पाँच वर्ष धरि किछु बाजले नहि छलाह। पाँच वर्षक अवस्थामे एक दिन एक गोट गणेशक मूर्तिक संग खेलाइत-खेलाइत अनायासे किछु बजलाह। आरम्भक ई प्रवृत्ति अन्त-अन्त धरि बनल रहलनि। हिनक एही प्रकृतिक कारणेँ घरक लोक अपमानित अनुभव करैत छल। कोनो अतिथिक आगमनो पर ओ सामान्यो शिष्टाचारवश हुनका नहि टोकैत छलाह। केओ आबि कऽ प्रणामो करैत छलनि तँ अभिवादनक रूपेँ बिनु मुँहसँ किछु बजने मात्र नजरि उठा कऽ ताकि दैत छलाह।

वस्तुतः शेखरजीक स्वभावे लोकसँ फराक रहएबला भऽ गेल छलनि। ओ अधिक काल किछु लिखैत-पढ़ैत अथवा चिन्तनमे मग्न रहैत छलाह।[15] जँ कोनो प्लॉट मनमे आबि जाइत छलनि तँ ओ सामनेक दृश्यकेँ नहि देखि मानसमे चलि रहल दृश्यकेँ समायोजित करबामे निमग्न रहैत छलाह।

शेखरजी धीर पुरुष छलाह। हर्ष-विषादकेँ ओ पचा लैत छलाह। बन्धु-विछोह भेलो पर ओ शान्तचित्त रहलाह, मुदा अवसर अयला पर सहजहिं हुनका आँखिसँ नोर टपकि पड़ल। पत्नीक मृत्युक उपरान्त सेहो एहने स्थिति हिनका भेलनि। पत्नीक स्मृतिक पीड़ाकेँ ओ सम्हारि नहि सकलाह। आँखिसँ अजस्र नोरक धार फूटि पड़लनि।[16]

तात्पर्य जे शेखरजीक जीवन निर्मल जल जकाँ पवित्र छलनि। हुनकामे आत्म-सम्मानक भावना एतेक प्रबल छलनि जे केओ अपन निर्णय थोपि कऽ हुनका झुका नहि सकैत छल। सहजता, संवेदनशीलता आ स्पष्टवादिता हुनक व्यक्तित्वक विशिष्ट गुण छल। ऋषितुल्य ऋजुता वा सरलतासँ ओ सम्पन्न व्यक्ति रहैथि। हुनक सम्पूर्ण व्यक्तित्व मैथिली भाषा आ साहित्यक लेल

प्रतिबद्ध छल।

शेखरजी, जीवन किंवा साहित्य, सभतरि नव बाट, नव दिशामे अग्रगामिताकेँ श्रेष्ठ मानैत छलाह। ओ अपना लेल स्वयं बाट बना ओहि पर जीवन भरि चलैत रहलाह। एहि बातक संकेत ओ आरम्भेमे दऽ देने छलाह –

"दुनियाँ के पथ से बहुत दूर
निज पथ निर्मित कर चलता हूँ।"[17]

एहि तरहेँ नव बाट पर चलब अत्यन्त कठिन होइत छैक। हुनकहुँ जीवनक बाट अति कण्टकाकीर्ण रहलनि। मुदा ओ अपन जीवनक वेदनासँ अनका व्यथित नहि करए चाहैत छलाह। शेखर जी जीवन भरि दुःख–दाहकेँ अन्तःकरणमे नुकौने अविराम गतिएँ चलैत यात्रा सम्पन्न कएलनि। ओ सफलता–असफलताक विचार नहि करैत छलाह। तेँ हुनका जीवनमे निराशाक कोनहुँ स्थान नहि छल। ओ सतत् आशा ओ दृढ़ विश्वासक संग रहैत छलाह।[18]

शेखरजी अनावश्यक व्यय करबा काल मितव्ययी छलाह तऽ आवश्यक कार्यमे कनेको कोताही नहि करैत छलाह। ओ उदार प्रवृतिक छलाह आ साहित्य मे नवीनताक पक्षधर तथा प्राचीन संस्कृतिक धरातलक प्रति अखण्ड आस्थावान सेहो छलाह। ओ जाहि सिद्धान्तक प्रतिपादक छलाह तकरा अपनो आचरणक लेल आवश्यक बूझि क्रियाशील रहैत छलाह। हुनक कथनी आ करनी मे भिन्नता नहि छलनि।[19]

### पाणिग्रहण ओ सन्तान

मानव जीवनमे गार्हस्थ्य आश्रमक महत्व अदौसँ चलि आबि रहल अछि आ रहत। सुधांशु शेखर चौधरी सेहो एकर अपवाद नहि छलाह। सताइसम वर्षमे शेखर जीक पाणिग्रहण संस्कार भेलनि। हिनक सासुर वर्तमान दरभंगा जिलाक धर्मपुर (उजान) नामक गाममे छलनि। हिनक धर्मपत्नी श्रीमती मोती देवी छलीह, जे प्रख्यात

साहित्यकार किरण जीक ज्येष्ठ वैमात्रेय पं० कौशिकी नाथ झाक कन्या छलीह। 'कृष्ण केलि माला'क लेखक नन्दीपति आ 'उषाहरण'क लेखक हर्षनाथ झा एही कुलमे उत्पन्न भेल छलाह। बीच सोतिपुराक मध्य शेखर जीक सासुर धर्मपुर छलनि, तेँ सोतिक सभ गुण (दम्भादि दुर्गुणकेँ छोड़ि) हिनकामे होएब स्वाभाविके। ओहिमे सभसँ प्रमुख अछि मनस्विता आ स्वाभिमान।

मोती देवी कुलीन कन्या, सतत् शेखर जीक अंगी-संगी बनल रहलथिन। कठिन परिस्थिति किंवा लिखबा-पढ़बा कालमे ई अनुकूलता बनौने रहैत छलीह। साहित्यकारक कुलमे मोती देवी पालित-पोषित छलीह तेँ एहन प्रवृत्ति सहजहिं हुनकामे आबि गेल छलनि। अस्तु शेखर जीक पाण्डुलिपिकेँ ई ओरिया कऽ रखैत छलीह। मोती देवी शेखर जीक हिन्दी उपन्यास (पागलखाना जे 1957 ई०मे लिखल गेल छल)क पाण्डुलिपि लाल कपड़ामे बान्हि कऽ रखने छलीह। शेखर जी ओकरा 1978 ई०मे 'ई बतहा संसार' नामसँ अनुवाद कएलनि जकरा पश्चात् मैथिली अकादमी, पटना प्रकाशित कएलक। 1980 ई०मे शेखर जीकेँ एही पोथी पर साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली पुरस्कृत कएलक। मुदा दुर्भाग्य ई जे एहिसँ पूर्वहि मोती देवी 16 दिसम्बर 1979केँ एहि नश्वर जगतसँ विदा लऽ लेने छलीह। पतिक ई सम्मान (साहित्य अकादेमी पुरस्कार) ओ स्वयं नहि देखि सकलीह।

मोती देवी परिश्रमी-मृदुभाषी आ शान्तिप्रिय महिला छलीह। ओ अपन सभ इच्छा आ मनोकामनाकेँ तिलांजलि दऽ अपन पतिक सुख-दुखक सहयोगी बनल रहलीह। सरस्वतीक साधनामे अपनाकेँ पंचाग्निक तापमे झरकबैत अपन पतिक संग देब हुनकहिसँ सम्भव छलनि। शेखर जी अपन पत्नीक धार्मिक विश्वासक आदर करैत छलाह। तेँ ई कहब स्वाभाविके जे शेखर जीक साधनाकेँ आलोक देबाक हेतु स्वयं (मोती देवी) टेमी बनि कऽ जरैत रहलीह आ हुनक जीवनकेँ सुरभित करबाक हेतु हुनक

तपस्याक यज्ञक सुगन्धित समिधा बनि जरैत रहलीह।

तैँ शेखरजीकेँ जीवनक प्रत्येक परिस्थितिमे संग देनिहार जीवन-संगिनी जखन हुनका छोड़ि विदा भऽ गेलीह तँ ओ अति मर्माहत भऽ गेलाह। लोकक सान्त्वना-स्वर नहि सोहाइत छलनि। धनसँ अधिक जनकेँ महत्व देनिहार जखन असगर पड़ि जाइत अछि तँ भेंट-घाँट कएनिहारक अभाव भऽ जाइत छैक। तैँ संघर्षमय जीवनक एहन पथिककेँ आन कोनो वस्तुमे मन नहि रमैत छैक। ओ जीवनमे विश्रामक आकांक्षी भऽ जाइत अछि। निरुद्देश्य जीवनसँ मृत्युकेँ अधिक श्रेयस्कर मानऽ लगैत अछि। उदाहरण स्वरूप शेखर जीक निम्न पंक्ति द्रष्टव्य-

'जीबि रहल छी किए ने बूझी, जीवन हे असहाय।
विश्व-धारमे एकसर नाविक, निर्बल ओ निरुपाय।।'[20]

सामान्य लोकक नजरिमे शेखर जी आत्मनिष्ठ व्यक्ति छलाह। जीवनमे व्यावहारिकताक कमी छलनि। ककरो संग बेसी गप्प-सप्प नहि करथि। टोकला पर नापल-तौलल शब्दमे उत्तर देथि। तैँ सर-कुटुम्ब सेहो हिनकासँ विशेष अपेक्षा नहि करैत छलथिन। घरोमे जे लोक अबैत छल से हिनक पत्नीएक स्वभावक कारणेँ। ओ उदार मैथिल ललना छलीह। मुदा वास्तविकता ठीक एकर विपरीत छल। शेखर जी नारिकेर फलक सदृश्य उपरसँ कठोर आ भीतरसँ कोमल छलाह। से जँ नहि होइत तँ ई अपन चाकरी (मिथिला मिहिर, साप्ताहिक) कालमे तीन गोट सार, दू टा पितियौत भाइ आ पूर्णेन्दु चौधरी (भातिज) सहित कतेको गोटाकेँ अपना डेरा पर राखि नोकरी-चाकरीक व्यवस्था नहि धरबितथि। छात्रावस्थहिमे रामदेव झा, प्रेमशंकर सिंह, विद्यानाथ झा 'विदित' आदि (आजुक शीर्षस्थ विद्वान) हुनका संग पारिवारिक माहौलमे रहि ज्ञानार्जन नहि कऽ पबितथि। मुदा एहि सब काजमे हुनक पत्नी मोती देवी हुनका बेस सहयोग करथिन।

एहन स्वनामधन्या मोती देवी चारि गोट कन्या एवं एक गोट पुत्रक जन्म देलनि। कन्याक नाम क्रमशः वीणा, मीना, रंजू ओ संजू आ बालक श्री शरदिन्दु चौधरीक नामसँ जानल जाइत छथि। शेखर जी अपन बालककेँ प्रेमसँ शरदू कहैत छलथिन। शेखर जीक पूर्वा पर परिवार साहित्यक हेतु समर्पित रहल अछि जकर ज्वलन्त प्रमाण अछि– शेखर प्रकाशन', जे ८०सँ बेसी पोथी प्रकाशित कऽ आब मैथिली जगतमे अपन विशिष्ट स्थान बना लेने अछि। स्वयं श्री शरदिन्दु चौधरी एकटा विशिष्ट लेखक आ पत्रकारक रूपमे प्रतिष्ठित छथि।

**वंशावली**

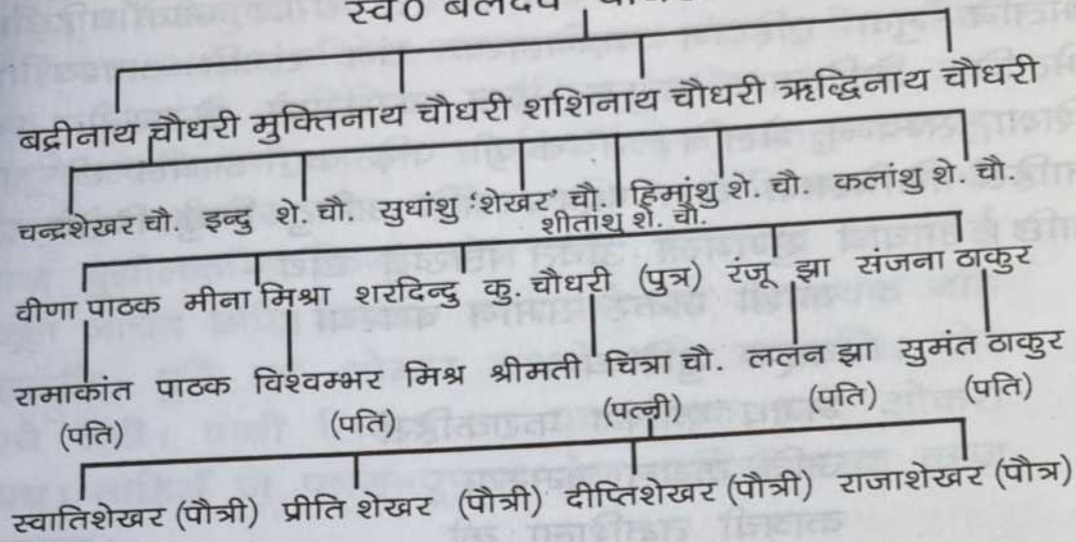
उपलब्ध स्रोतसँ ज्ञात होइत अछि जे शेखर जीक पूर्व पुरखा नरौने वत्सवार मूलक पराशर गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण पंडित काशीनाथ चौधरी छलाह। ओ दरभंगा पंचकोसीक पौना गामसँ आबि मिसरटोला (दरभंगा) महल्लामे बसि गेलाह आ ओही समयसँ हिनक वंश परम्परा एतहि चलए लागल। शेखर जीक पिताक दू गोट विवाह भेल छलनि– पहिल सौराठ आ दोसर रखवारी।

शेखर जीक पितामह, पिता ओ पित्ती लोकनिमे मिथिलाक सभ्यता–संस्कृति परम्परित रूपेँ व्याप्त छल आ ओ आधुनिकतासँ सेहो पूर्ण परिचित छलाह। ई शेखर जीक कौलिक परम्परा एवं वंशक विशेषता रहलनि।[21]

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक पूर्वज लोकनि विद्या–व्यसनी छलाह तेँ सभतरि समादृत छलाह। भैयारीमे शेखर जी तेसर छलाह। एहिमे क्रमशः चन्द्र शेखर चौधरी, इन्दु शेखर चौधरी, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, शीतांशु शेखर चौधरी, हिमांशु शेखर चौधरी आ कलांशु शेखर चौधरी। सुधांशु 'शेखर' चौधरीकेँ चारि गोट कन्या क्रमशः वीणा, मीना, रंजू ओ संजू तथा एक गोट पुत्र श्री शरदिन्दु चौधरी भेलथिन।

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक वंशावलीकेँ एहि रूपेँ देखल जा

सकैत अछि–








सुंधाशुं शेखर चौधरी आ हुनक पत्नी श्रीमती मोती देवी

वृत्तिसँ यैह तात्पर्य थिक।

उपनयनक समावर्तनक कालमे मड़बा पर बहुधा पूछल जाइछ– पढ़य जाइ छी? कतए, तँ काशी। एहिसँ स्पष्ट अछि जे काशी जाए पढ़बाक मध्यकालिक परम्परा छैक। उनैसम शताब्दीक अन्त आ बीसम शताब्दीक प्रारम्भ धरि काशी जाए पढ़बाक हेतु मैथिल छात्रक धर्रोहि लागल रहैत छल– 'काशी पढ़ि कऽ आएल छथि', एतबे परिचय पाण्डित्यक परिचायक होइत छल। जेना

'फॉरेन रिटर्न' भेनहि नव शिक्षित विशिष्ट बुझल जाइत छल।[23] मड़बा पर 'काशी पढ़ए जाइत छी' एहि वाक्यक अनुसारेँ काशीमे पढ़बाक सौभाग्य तँ शेखर जीकेँ नहि भेलनि मुदा एहिठाम पढ़निहारक संग संगति अवश्य भेलनि। मिथिलाक प्रमुख केन्द्र दरभंगामे शेखरजीक शिक्षा सम्पन्न भेलनि। तँ 'काशी पढ़ि कए आयल छी' ताहिसँ मिथिलाक कम महत्व नहि अपितु किछु विशेषे अछि। आचार्य सुमनजी उचिते लिखने छथि –

काशी जकर समान वयस्या।
वङ्ग सुशिष्या।
मगध कलिंग फराकहिसँ
जनि कयल नमस्या
कात्र्ची तक्षशिला की
सख्य जोड़वे कारण
विद्यापीठ रचल यत्नेः
नहि तुलित तदपि कण।।
वैशाली सहचारिणी
अंग अंग बनले जकर।
युग–युग ज्ञात 'त्रिभुक्ति' कहि
जय जननी मिथिला हमर।[24]

जीवन संघर्षमे प्रवेशक हेतु बाहरक हवा–पानि लगएबाक हेतु शेखर जी सतत भ्रमणशील रहलाह। एहि क्रममे ओ हजारीबाग, राँची, खूँटी, चक्रधरपुर, रायगढ़, बिलासपुर, नागपुर, कोलकाता आ जमशेदपुर आदिक भ्रमण कएलनि। सरकारी सेवाक हेतु आवश्यक शैक्षणिक प्रमाणपत्र वांछनीयता रहैत छैक तकर शेखरजीक लग अभाव छलनि। फलतः सरकारी सेवासँ ई वंचिते जकाँ रहलाह। प्रबन्ध समिति द्वारा संचालित विद्यापति हाई स्कूल, लहेरियासरायमे हिन्दीक शिक्षकक रूपमे हिनक नियुक्ति भेलनि मुदा स्वाभिमानी प्रवृत्तिक कारणेँ ई ओहि ठाम टिक नहि सकलाह। वेतन निर्धारणक प्रश्नपर मतान्तर भऽ गेलनि।

प्रायः एहन देखल जाइत अछि जे साहित्यिक प्रवृत्तिक व्यक्ति परवशताकेँ अंगीकार स्वीकार नहि करैत अछि। ओ उन्मुक्त आ स्वच्छंद रहए चाहैत अछि। कारण साहित्यक आवेश-परिवेश सतत् ओकरा टोकारा दैत रहैत छैक। शेखरजी साहित्यिक प्रवृत्तिक व्यक्ति छलाह आ ताहूमे स्वाभिमानी। एहन प्रकृतिक लोक कतहु ककरहु परवशता स्वीकार कए सकैत अछि? तेँ हिनका लोक लाख बुझौलकन्हि किन्तु मोन नहि मानबाक कारणेँ ई स्कूल जायब छोड़ि देलनि- त्यागपत्रो देब आवश्यक नहि बुझलनि। घुरि क' ओम्हर तकबो नहि कएलनि। फेर पुरने ढाठी। पोथी लिखब आ प्रकाशकक हाथे ओकरा बेचब। ताहिसँ जे पत्रम्-पुष्पम् भेल ताहिसँ घरक काज चलाएब।

पोथी बेचि कऽ घरक काज चलाएब कठिन काज छैक। ताहिसँ प्रकाशककेँ जे होइक, लेखककेँ तँ दूर्वाक्षते भेँटैत छैक। सेहो एक ठाम नहि- 'आइ ताबत एतबे लऽ जाउ। फेर बादमे देखल जएतैक।' एहन हालतिमे लेखनक बल पर केओ कतेक काल ठाढ़ रहि सकैत अछि? विभिन्न स्थानक भ्रमणक क्रममे शेखर जी जमशेदपुरमे एकटा टेलीफोनक पोल (खम्भा) बनबय बला कारखानामे सुपरवाइजरक पद पर 1946-47 ई० धरि काज कएलनि। मुदा एकटा साहित्यकारक हृदय ओहि लोहा-लक्करक कारखानामे काज करब स्वीकार नहि कएलक। जे मन स्कूलमे नहि टिकि सकल से एतय कोना टिकैत? शेखर जी फेर वैह पोथी लिखनाइ आ बेचनाइ शुरू कऽ देलनि।

जीविकाक उद्देश्यसँ 1949 ई०मे ई कलकत्ता गेलाह आ 'राजस्थान नाट्यकला निकेतन' नामक संस्थामे नौकरी करए लगलाह। ओहिमे ई कहियो अभिनयकर्त्ता तँ कहियो पात्र-पात्रीक रूप सज्जाकार आ कहियो प्रबन्धकक रूपमे रहैत छलाह। एही क्रममे हिनका राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगला आ हिन्दी आदि कतेको देशी भाषाक

रंगमंचकेँ देखबाक एवं अभिनय करबाक अवसर भेटलनि। एही कालक विभिन्न रंगमंचीय कार्य हिनका हृदयपर तेहन अमिट छाप छोड़लक जे ई नाट्य-लेखन दिस प्रवृत भऽ गेलाह। मुदा ओ नाटक सभ हिन्दीमे अछि।[25] जीविकाक कारणेँ 1955 ई० धरि शेखरजी साहित्यिक सहायकक रूपमे काज कएलनि आ एही अवधिमे ई अनेक उपन्यास आ नाटक लिखलनि जाहिमे अधिकांश प्रकाशित अछि।[26] 1957 ई० धरि हिनक लोकप्रिय हिन्दी नाटक 'तमाशा'क सात संस्करण प्रकाशित भेल आ हाथो-हाथ बिका गेल।

सन् 1955सँ 1960 ई० धरि ई 'वैदेही'क सम्पादन कएलनि। संगहि सहयोगिताक आधारपर ई 'इजोत' नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन एवं सम्पादन कएलनि। 1960 ई०मे ई पटना आबि 'मिथिला मिहिर'मे सम्पादकक रूपमे योगदान कएलनि। एहिमे योगदानक किछुए दिनक पश्चात् हिनक सम्पादन-प्रतिभा सर्वविदित भऽ गेल। ई 'मिथिला मिहिर'केँ एक नव रूप प्रदान कएलनि।

'मिथिला मिहर'क सेवासँ पूर्व शेखरजी एक ठाम स्थिर नहि रहलाह। कोनो नाटकक दृश्य जकाँ हिनक व्यक्तिगत जीवनमे सेहो नाटकीय मोड़ अबैत गेल आ ई ओहिसँ बाहर होइत गेलाह। स्वतंत्र लेखन-सम्पादनक काज चलैत रहलनि। एहिमे लहेरियासरायक 'पेपर हाउस', दरभंगाक 'ग्रन्थालय प्रकाशन' आ पटनाक 'अजन्ता प्रकाशन' प्रमुख छल जे हिनक पोथीकेँ छापि-छापि सहायता करैत रहल।

1960ई०क बाद शेखर जीक आर्थिक स्थिति सुदृढ़ छलनि। मुदा 'मिथिला मिहिर'सँ सेवानिवृत्तिक बाद कठिनाइ होएब स्वाभाविके छल। तथापि ई सत्य अछि जे शेखर जी कहियो ककरो लग हाथ नहि पसारलनि। सतत् अपन आर्थिक संतुलनकेँ जेना-तेना बनौने रहैत छलाह।

शेखरजीक वृत्तिक अवलोकनसँ ज्ञात होइत अछि जे हिनक जीवन सामान्य लोक जकाँ सपाट नहि रहलनि अपितु जीवनमे ततेक ने मोड़ अएलनि जे ई स्वयं नाटकीय प्रतीत होमए लगलाह। एकटा विचारणीय यक्ष प्रश्न अछि जे कहाँ एक साहित्यकार आ कहाँ एक लघु कारखानामे नोकरी, कहाँ हाइ स्कूलमे शिक्षक आ कहाँ एक नाटक कम्पनीमे अभिनेताक नोकरी। एक प्रकाशक, पुस्तक बिक्रेता, लेखक, कवि, नाटककार सभ किछु तेना ने मिझरा गेल अछि जे एकटा विचित्र अनुभूति होइत अछि। तथापि शेखर जी अपन जीवन (साहित्यकार)कँ सदैव उन्मुक्त रखैत कतहु शिथिल नहि होमय देलनि। ज़ेँ हिनक जीवनवृत्त नाटकीयतासँ भरल अछि तेँ हिनक साहित्यकारक व्यक्तित्वमे नाटककारक प्रतिभा सभसँ उदग्र अछि।[27]

स्थूल रूपेँ यैह जे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक जीविकाक मुख्य स्रोत साहित्य आ सम्पादने रहल। ई 'मिथिला मिहिर'क प्रधान सम्पादकक पदपर काज करैत सेवानिवृत्त भेलाह। कागज-कलम-किताब हिनक अंगी-संगी बनल रहल आ एहिसँ ई अपन आर्थिक सन्तुलन बनौने रहलाह। एही बलपर ओ जे किछु भेलाह से भेलाह। स्वाभिमानकेँ कहियो ककरो लग बन्हकी नहि रखलनि। ककरो समक्ष आत्मसमर्पण नहि कएलनि। स्वाभिमानपूर्ण जीवन बितौलनि। हँ, जकरा जीवनमे संघर्ष नहि, दुःख-दैन्य नहि आ निराशा नहि तकरा मानव-मनक पहचान नहि। जीवनमे अन्हरिया-इजोरियाक खेल जे नहि देखलनि से जीवनक मर्मकेँ की बुझताह ?[28]

## काव्य-रचनाक प्रेरणा

सुधांशु 'शेखर' चौधरी आजीवन सरस्वतीक चरण छूबाक लेल व्रती-यती बनल रहलाह। हिनक ई व्रत कहियो भंग नहि भेल। कलम-कागज आ पोथी हिनक अंगी-संगी रहल। एहि यज्ञमे हिनक पत्नी सुगन्धित

समिधा बनि पजरैत रहलीह। सरस्वतीक साधना मे, पंचाग्निक तापमे झरकैत अपन पतिक संग देब हुनकहिसँ सम्भव छल आ से उचिते-स्वाभाविके, कारण कोनो यज्ञ बिना पत्नीकेँ अपूर्ण रहि जाइछ। स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम राम सेहो निर्वासित सीताक प्रतिमा स्थापित कऽ यज्ञ पूर्ण कएने छलाह- तैँ शेखरजीक साहित्यिक साधनारूपी यज्ञमे हुनक पत्नी सहभागी भेलथिन तँ एहिमे कोनो अतिशयोक्ति-आश्चर्य नहि।

साहित्यिक प्रवृत्ति मानव मनमे सहजहि पल्लवित होइत अछि। कोनो आवश्यक नहि जे पढ़ल-लिखल लोकमे ई प्रवृत्ति रहबे करत। जखन अनपढ़ लोक उन्मुक्त वातावरणमे गीत गबैत रहैत अछि तँ ओहिमे साहित्यक नैसर्गिक चारुता देखबामे अबैत अछि। ओकरा लोकनिक एक-एक शब्द साहित्यक दिशा-दशाकेँ इंगित करैत अछि आ कवि लोकनिक साहित्यक सबल पाथेय बनैत अछि। एहीठाम यात्री जीक ई पाँती सहसा स्मरण भऽ अबैत अछि-

"हमर वीणा ध्वनि कने पहुँचैत जँ
सटल-पाँजर बोनिहारक कान मे
सफल होइत तखन ई स्वर-साधना
चिर-उपेक्षित जनक गौरव-गान मे।"

मानवकेँ जन्म कालहिसँ मायक डाँट-दुलारमे, परबोधनमे साहित्यक आवेश-परिवेश भेँटैत अछि। अस्तु आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' उचिते लिखने छथि जे-

"कोन बैसि सुनल हम प्रथमे
गुन - गुन स्वर्गिक गान
मायक ममता मे कविता की
करइत अछि आह्वान।"[29]

साहित्यकारक साहित्यिक प्रेरणाक पृष्ठभूमि आरम्भहिसँ होइत छैक, तहिना शेखर जीक सेहो ई पृष्ठभूमि अपन परिवारेसँ प्राप्त भेल छलनि। हिनक पिता सिमरिया घाट (बेगूसराय)क बोलीमे एकटा उपन्यास

लिखने रहथि। तकरा ई खूब नीक जकाँ पढ़लनि। हिनक पित्ती पं० शशिनाथ चौधरी हिन्दी-मैथिलीक विद्वान छलथिन आ 'मैथिली साहित्य परिषद्' दरभंगाक मंत्री छलथिन आ 'मैथिली साहित्य परिषद्' दरभंगाक मंत्री सेहो- ई हिनक प्रेरणाक स्रोत रहलथिन। 1942 ई०क स्वतन्त्रता आन्दोलनमे गिरफ्तारीक भयसँ फरारीक अवधिमे ई 101 हिन्दी गीत लिखलनि जे 'पथ पर' नामसँ मधुबनीसँ 1945 ई०मे प्रकाशित भेल। ओना ई अपन पहिल रचना (कविता) 1934 ई॰क भूकंप दिन मिसर टोला स्थित अपन आँगनमे बेलक गाछतर बैसि कऽ लिखने छलाह- जेना कि ओ एक दिन स्वयं अपन जीवन गाथा सुनबैत कहने छलाह। साहित्य हिनक रक्तमे छलनि। कौलिक संस्कारक रूपमे साहित्य हिनका भेटल छलनि। नेनपनेसँ ई कोनो-ने-कोनो रूपमे साहित्यसँ जुड़ल रहलाह।[30] आरम्भमे ई हिन्दीयेमे लिखलनि कारण मसिजीवी साहित्यकार होएबाक कारणेँ हिनका हेतु हिन्दीकेँ अभिव्यक्तिक माध्यम राखब अनिवार्य छलनि। तेँ मैथिलीमे नहि लिखबाक कचोटक अछैत हिन्दीमे लिखब हिनक बाध्यता छलनि।

एहि हिन्दी लिखबाक क्रममे मैथिलीक वयोवृद्ध कवि साहित्यकार आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' जीक साहचर्य प्राप्त भेलनि आ मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा हिनका हुनकहिसँ प्राप्त भेलनि। स्वयं शेखरजी कहने छथि जे- ''मैथिलीमे लिखबाक जेहन प्रेरणा भेटल सुमन जीसँ तेहन किनकोसँ नहि। हमरा सुमन जीसँ सर्वदा नीक व्यवहार भेटल। आनमे देखौआ बात रहै, हुनकामे से नहि।[31] ई सुमन जीक कथनकेँ बीज मन्त्र जकाँ मानि ओहि पर चलय लगलाह- ''मैथिलीक जे क्षेत्र छैक से एकदम खाली छैक, किछु नहि छैक, से अहाँ दिऔ।''[32] फलस्वरूप 'मिथिला मिहिर'मे आगमनक पश्चात् सम्पूर्ण शेखरजी मैथिलीक भऽ गेलाह- अनुरागी तेहन भेलाह जे हिनक लेखनीसँ बहरेलनि जे-

''ओ कपूत अछि
मातृभूमि-भाषा पर जकरा

छै ने कनिको ध्यान
ओ बिल्कुल हैवान,
हैवानो जँ कही तँ होइछ
हैवानक अपमान।''[33]

एहिसँ सहजहिं अनुमान कएल जा सकैत अछि जे शेखर जीमे मातृभाषाक प्रति केहन नैसर्गिक अनुराग छलनि। आ ई अनुराग दिन-दिन पल्लवित-पुष्पित होइत गेलनि। मैथिलीमे ओहि समय धरि वस्तुतः बड़ अभाव छलैक। शेखर जी ओहि अभावक पूर्तिक हेतु दत्तचित्त भऽ जुटि गेलाह। आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क आवेश-प्रेरणा हिनका हेतु बलवती भऽ गेलनि। ई प्रो० 'सुमन'क प्रेरणासँ मैथिलीमे प्रवेश कयलनि[34] आ माए मैथिलीक मंजूषाकेँ सजेलनि-भरलनि।

जहिना मैथिलीमे लिखबाक लेल शेखरजी, सुमन जीसँ प्रेरणा ग्रहण कएलनि तहिना साहित्यिक विषयक उपस्थापना, वातावरण-निर्माण आदिक दिशामे ई बंगला साहित्यसँ प्रभावित भेलाह। ई कलकत्ता (कोलकाता)क साहित्यिक परिवेश-आवेशसँ पूर्ण परिचित छलाह तेँ ओकर साहित्यसँ प्रभावित होएब स्वाभाविक छल। ओना बंगला साहित्यकार विशेषक प्रभाव हिनका पर नहि छलनि मुदा मिथिला आ बंगालक वातावरण जन्य सामीप्य होएबाक कारणेँ बंगला साहित्य हिनका आकृष्ट करैत छलनि। हँ, ई जाहि कोनो विधामे रचना कयलनि से विशिष्टे रहल।

## ग्रन्थ-रचनाक सूची
### (प्रकाशित ओ अप्रकाशित)

शेखर जीमे साहित्य-सर्जनाक प्रतिभा वाल्यावस्थेसँ छलनि। ई आजीवन कलमक सिपाही बनल रहलाह। एकनिष्ठ साहित्य-साधकक छवि अपन अन्तिम समय धरि बनौने रहलाह। राष्ट्रभाषा हिन्दी आ मातृभाषा मैथिलीमे हिनक प्रतिभा खूब निखरल-चमकल। शेखरजीक कृतिक

अवलोकन कएला सन्ताँ स्वतः स्पष्ट भऽ जाइछ जे ओ एकटा उच्च कोटिक कविक संगहि उत्कृष्ट गद्यकार, प्रयोगधर्मी नाटककार, एकांकीकार, निबन्धकार आ निष्पक्ष समालोचक छलाह। शेखर जी अपन दीर्घ साहित्यिक जीवनमे प्रचुर मात्रामे मैथिलीक विविध विधामे साहित्यक सृजन कऽ अपन मौलिक रचना द्वारा मैथिली वाङमयक अभावकेँ पूर्ति कएलनि। ओ सभकेँ ध्यानमे राखि धिया-पूताक हेतु बाल साहित्य, युवा वर्गक हेतु, महिला लोकनिक हेतु, सर्वसाधारण पाठकक हेतु आ विद्वत् मण्डलीक हेतु विभिन्न प्रकारक साहित्यिक कृतिक रचना कऽ प्रत्येक दृष्टिसँ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ वैभवपूर्ण बनएबाक यथासम्भव प्रयास कएलनि।[35]

अध्ययनक सुविधाक दृष्टिएँ शेखर जीक समस्त प्रकाशित एवं अप्रकाशित रचनाकेँ दू भागमे विभक्त कएल जा सकैत अछि- पहिल राष्ट्रभाषा हिन्दीमे आ दोसर मातृभाषा मैथिलीमे।

राष्ट्रभाषा हिन्दीमे शेखर जी प्रणीत काव्य, उपन्यास, नाटक आ कथा आदि निम्नलिखित अछि-

**काव्य** : 'पथ पर' (1945 ई०मे प्रकाशित)
'फूल और कलियाँ' (1952 ई०मे प्रकाशित)

**नाटक** : 'तमाशा' (1954 ई०मे प्रकाशित, कुल सात संस्करण)
निकम्मा (1956 ई०मे प्रकाशित)
नाटक (1960 ई०मे प्रकाशित)
कर्ज की मार (1961 ई०मे प्रकाशित)
मैं भी इन्सान हूँ (1961 ई०मे प्रकाशित)
कागज़ की नाव
जिन्दगी
दहेज कलंक है
एकता ही बल है

**उपन्यास** : 'महाकवि पगलेट' (1957 ई०मे प्रकाशित)
'पागल दुनियाँ' (2001 ई०मे प्रकाशित)

'जयमाला' (1950 ई०मे प्रकाशित)
एहिना मातृभाषा मैथिलीमे हिनक निम्नलिखित रचना अछि:-

उपन्यास : 'तऽर पट्टा उपर पट्टा' (1961ई०मे प्रकाशित) आ 2003मे पुस्तकाकार।
'दरिद्रछिम्मरि' (1974 ई०मे प्रकाशित)
'ई बतहा संसार' (1979 ई०मे प्रकाशित दू संस्करण) आ साहित्य अकादेमीसँ 1980 ई०मे पुरस्कृत।
'निवेदिता' (1983 ई०मे प्रकाशित, दू संस्करण)
'अंगरेजी फूलक चिट्ठी'(1961ई०मे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे प्रकाशित तथा 2003 ई०मे पुस्तकाकार शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा।)

नाटक : 'भफाइत चाहक जिनगी' (1975 ई०मे प्रकाशित अद्यावधि तीन संस्करण)
'लेटाइत आँचर' (1976 ई०मे प्रकाशित, दू संस्करण)
'पहिल साँझ' (1982 ई०मे प्रकाशित, दू संस्करण)
'लगक दूरी' (1999 ई०मे प्रकाशित, दू संस्करण)
'हथटुट्टा कुरसी' (1992 ई०मे प्रकाशित, दू संस्करण)

काव्य : 'गीत ओ गजल' (1991 ई०मे प्रकाशित)

समालोचना : 'सन्दर्भ' (1981 ई०मे प्रकाशित)

सम्पादित : 'विवेचना' (1954 ई०मे प्रकाशित)

अप्रकाशित: 'हस्ताक्षर' (उपन्यास)
'कथा संग्रह'
'कविता संग्रह'
'आत्मकथा'

एकर अतिरिक्त 'शेखर जी'क विभिन्न मौलिक

रेडियो रूपक सेहो अछि। यथा–

जय सोमनाथ
बहतर
चाकरी
परिवार
सख–सिहन्ता
उड़नखटोला
उफाँटि
नव आँखि
सोनक टुकरी
आमक आम, गुठलीक दाम
कहाँ जाइत छी डगरे डगरे
पड़ल काज

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे शेखर जीक साहित्य–साधना राष्ट्रभाषा हिन्दी आ मातृभाषा मैथिलीमे निखरल–चमकल अछि।

## विभिन्न पत्र–पत्रिकामे हिनक रचना

सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिली साहित्यक एहन शिल्पी छलाह जे जखन जे चाहैत छलाह, गढ़ि लैत छलाह। तेँ हिनक रचना सभ प्रचुर मात्रामे भेटब स्वाभाविके, उचिते। मुदा सभटा पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित होएब सेहो सम्भव नहि, तेँ हिनक कतिपय रचना सभ पत्र–पत्रिकामे प्रकाशित भेल अछि। जेना–

**कथा :** फूलदीदी
चिनगी
सरस गल्प
भारती
एक सिंघारा : एक चाय
छोट–छीन बात
पुरान बात

युगधर्म
जिनगीक बाट
सिनेहक आश्वस्ति

एकर अतिरिक्त हिनक कैक गोट कथा छद्मनामसँ सेहो प्रकाशित भेल छनि। कविक रूपमे शेखर जीक नाम आदरणीय एवं प्रशंसनीय अछि। 'गजल ओ गीत' कविता संग्रहक अतिरिक्त हिनक शताधिक कविता ओ गजल 'कामरूप' छद्मनामसँ 'मिहिर'मे प्रकाशित भऽ चुकल अछि।[36]

शेखर जी 1960 ई०सँ 1982 ई० धरि 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक रहलाह। एहि अवधिमे ई अनेक सम्पादकीय टिप्पणी आ विभिन्न प्रकारक स्थायी स्तम्भक रचना कएलनि आ ओ प्रकाशित भेल जे जन-जनक कंठहार बनल, लोकानुरंजन करएबामे सर्वथा समर्थ भेल। सुमन जीक रोपल, अंकुराएल ओ जनमाओल गाछकेँ विशाल वृक्षक स्वरूप दैत, डारि-पात फुटबैत फूल आ फल लगएबाक श्रेय शेखरजीकेँ छनि।[37]

आजीवन शेखर जी मसिजीवी बनल रहलाह। ई सर्वदा लिखैत-लिखबैत, पढ़ैत-पढ़बैत रहलाह तेँ हिनक रचना स्फुट रूपसँ कतिपय पत्रिका सभमे विभिन्न छद्म नामसँ सेहो प्रकाशित होइत रहल। एहू रचना सभकेँ अपन सत्ता-महत्ता छैक जकर निश्चित लेखा-जोखा उपस्थित करब सहज-सम्भव नहि।

## उपाधि एवं सम्मान

"स्तुति निन्दा मे भेद न मानल
रिपु हित बूझल समाने।
पटबथि बा काटथि दूहू केँ
छाया सँ सम्माने।"[38]

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' एहिठाम 'तरू'क विषयमे कहलनि अछि मुदा ई पंक्ति जँ सुधांशु 'शेखर'

चौधरीक हेतु दोहराओल जाए तँ अतिशयोक्ति-आश्चर्य नहि कहाओत। अपन एहि गुणक कारणेँ ओ महामानव जकाँ बुझल जाइत रहलाह। जाहि स्तरक ओ त्याग-तपस्याक आदर्श उपस्थित कऽ गेल छथि से अवर्णनीय अछि। 'अर्थकरी विद्यासँ आत्मज्ञान कथमपि नहि भऽ सकैत अछि आओर आत्मज्ञानक अभावमे कर्त्तव्यपरायणते, कतए? अर्थकरी विद्यामे हमरा अपन पेटक लेल झूठ बाजए पड़ैत अछि, अपन गौरवकेँ लात मारए पड़ैत अछि आओर एहि वितृष्णामे अपनाकेँ निर्बल पाबि सत्यक नामपर असत्यक झंडा फहरबइत छी।''[39] शेखरजी विद्याकेँ अर्थकरी नहि बुझलनि आ अपन कर्त्तव्यक प्रति सचेष्ट रहलाह। ओ कठोर परिश्रमक पक्षधर छलाह। ओ वस्तुतः निस्पृह छलाह। धनलिप्साक बीमारीसँ ओ ग्रस्त नहि छलाह। शेखरजीक एहन व्यक्तित्वक प्रसंग ई पाँती सहसा स्मरण भऽ उठैछ-

''कामना नहि जखन मन मे तखन चिन्ता कोन?
लुब्ध नहि यदि चित्त, सभ अछि रत्न रज वा सोन
यदि न हीनक भावना व हो न इर्ष्या भाव
निज प्रवृत्ति विरोध यदि नहि तँ न क्रोध प्रभाव।''[40]

वस्तुतः शेखरजी आजीवन एकर पर्याय बनल रहलाह। ओ उपाधि आओर सम्मानक परवाहि कहियो नहि कएलनि। नामक आखिर नांगरि जोड़ैक पाछाँ ओ कहियो अपस्याँत नहि रहलाह।

एहन निस्पृह विद्वानकेँ कोनो संगठन-संस्थान सम्मान-उपाधि दऽ अपनाकेँ गौरवान्वित बुझैत छल। किछु प्रमुख संस्था द्वारा शेखरजीकेँ सम्मान उपाधि देल गेल तकर लेखा-जोखा एहि प्रकारे अछि-

1950 ई०मे हिन्दी साहित्य परिषद्, नागपुर (म० प्र०) द्वारा साहित्याचार्यक उपाधिसँ सम्मानित कएल गेल छलाह।

1980 ई०मे 'ई बतहा संसार' उपन्यासपर साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत भेलाह।

1987 ई०मे चेतना समिति, पटना द्वारा सेहो सम्मानित कएल गेलाह।

एहि सभ सम्मानसँ विशेष महत्त्वपूर्ण सम्मान भेटलनि समाज आ साहित्यकार-समीक्षकक द्वारा। काव्य-प्रयोजनक एक गोट अभिप्रेत 'यश' सेहो रहल अछि आ एकरे ध्यानमे राखि निस्पृह साहित्यकार काव्यक सृजन करैत छथि जे ओकर अक्षय यशक मेरुदंड बनल रहैत अछि। शेखरजी अपन काव्य-रचनाक माध्यमसँ समाजमे साहित्यकारक बीच पर्याप्त यश अर्जित कऽ गेल छथि। आ, एहिसँ बढ़ि कए दोसर सम्मान-उपाधि रुच्छ-तुच्छ होएब स्वाभाविके अछि।

मैथिली आन्दोलनमे सेहो हिनक योगदान बिसरबाक वस्तु नहि थिक। 'मिथिला मिहिर'क सम्पादकीय टिप्पणीमे मैथिलीक छोट-पैघ सभ समस्याकेँ ई स्वर दैत रहलाह अछि, सरकारक निन्न तोड़ैत रहलाह अछि आ समय-समय पर मार्गदर्शन सेहो करैत रहलाह अछि।[41] ईहो हिनक कीर्तिवल्लरी बनल अछि।

शरीर समाप्त भेलो सन्ताँ शेखर जी आइयो अपन कीर्तिक कारणेँ जीबैत छथि आ सदा जीबैत रहताह। हिनक रचनासँ मैथिली साहित्य चिर दिन धरि उद्भाषित होइत रहत।

'कीर्ति यस्य स जीवति' उचिते कहल गेल अछि।

## महायात्रा

आधुनिक कालमे सेहो मिथिलाभूमिकेँ ई सौभाग्य प्राप्त भेल छैक जे जाहिठाम शाश्वत गुणसँ परिप्लावित सद्गुण सम्पन्न व्यक्ति अवतरित भेल छथि ओ महापुरुष अपन यश-कीर्तिध्वज चतुर्दिक प्रसारित कऽ अपना संग-संग मातृभूमिक नाम उजागर करैत छथि। एहने ज्योतिपुंज महामानव छलाह सुधांशु 'शेखर' चौधरी। जन्म-मरण तँ ध्रुवसत्य छैक मुदा शाश्वत गुणगान होइते रहैत छैक आ यैह ओहि व्यक्तिक अजरता-अमरता बनौने रहैत छैक।

शेखर जीक 'गजल ओ गीत'मे एहनो रचना अछि

जे हुनक जीवनक अन्तिम कालक बोध करबैत अछि। पत्नीक मृत्युक उपरान्त ओ असहाय जकाँ भऽ गेलाह, जीवनमे विश्रामक आकांक्षी जकाँ भऽ गेलाह, निरुद्देश्य जीवनसँ मृत्युकेँ अधिक श्रेयस्कर बुझलनि। हुनकहि शब्दमे–

"जीबि रहल छी किए ने बूझी, जीवन ई असहाय
विश्व धारमे एकसर नाविक, निर्बल ओ निरुपाय ?

तेँ ओ जगत–नियन्तासँ निवेदनपूर्वक कहैत छथि–

"सांसारिक लक्ष्यक पाछाँ हम रहलहुँ बहुत बेहाल
भेटल बहुत, बहुतमे हुसलहुँ संघर्षक बहुजाल।[42]
अतः हे जगतक सूत्रधार! आब एहि सभसँ मुक्ति
दियऽ। सूत्रधारक सामर्थ्य आब नहि, संघर्षक नहि बेर।
अभिलाषा एतबे, ने नचाबी एहि जीवनकेँ फेर।

कवि अपन एहि समस्त परिस्थिति ओ मानसिकताक आलोकमे अपनाकेँ सम्पूर्ण रूपसँ समर्पित करैत कहैत छथि–

"नीक बेजाय क्षणक दीअरि पर अहिंक सिनेहक टेम
अहिंक देल ई संचित धन अछि, अछि खिपटा वा हेम।"[43]

कविकेँ पूर्ण आस्था ओ विश्वास छनि जे नियन्ता हुनक उपेक्षा नहि करथिन। ओ एक गोट प्रौढ़ तपस्वी जकाँ मृत्युकेँ 'मरण केर हार' कहैत छथि। मृत्युसँ घबराइत नहि छथि, अपितु ओकरा जयमाला जकाँ स्वीकारबा लेल तत्पर छथि–

"नै आबथि से असम्भव अछि, एहन ने निठुर निर्मोही,
ओ अपने हाथ पहिरैता मरण केर हार, हम बैसल छी।"[44]

आ, से सुधांशु 'शेखर' चौधरी 28 मार्च 1990केँ मृत्युक जयमालाकेँ स्वीकार–अंगीकार कऽ लेलनि। नियन्ता अपनहि हाथे 'मरण केर हार' पहिरा गेलथिन। महामनीषी शेखरजी जीक महायात्रा एतहि (28 मार्च 1990 क) ठमकि गेल–विलमि गेल, मुदा हुनक 'कीर्ति रेख स्थिरा भवेत्' रहि गेल आ रहत।

## संदर्भ सूची


1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ॰ दिनेश कुमार झा, पृष्ठ - 122.
2. तपसा वैः गंगा - विनोद विहारी वर्मा, पृष्ठ -12.
3. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डॉ॰ दिनेश कुमार झा, पृष्ठ - 126.
4. तत्रैव, पृष्ठ -1.
5. बिहार चित्रांश विभूति स्मृति विशेषांक। स्मारिका, 1994 (पटना)।
6. ऋग्वेद : मंडल 10, सूक्त 90, मंत्र 10-12
   आर्य साहित्य मंडल, अजमेर, 1959.
7. सुधांशु शेखर चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ-10.
8. शारान्तिधा - प्रो० राधाकृष्ण चौधरी, पृष्ठ -67.
9. मिथिला भाषा रामायण - चन्दा झा, पृष्ठ -28.
10. आनन्द - मन्दाकिनी, पृष्ठ -107, साहित्यिकी सरिसव-पाही, मधुबनी, प्रकाशन वर्ष 2000.
11. प्रारम्भिक मनोविज्ञान : डा० इन्दु भूषण, भारती भवन, पटना, नवम संस्करण, 1969 ई०।
12. यात्री काव्य विवेचन - डा० यशोदा नाथ झा, पृष्ठ-5.
13. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ- 66-67.
14. तत्रैव, पृष्ठ - 67
15. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ -14.
16. तत्रैव, पृष्ठ - 17
17. 'पथ पर' - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, 1945 ई०मे प्रकाशित, सम्प्रति अनुपलब्ध।
18. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 75.
19. तत्रैव, पृष्ठ - 18.
20. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 67.
21. तत्रैव, पृष्ठ -10
22. नालन्दा विशाल शब्द सागर, 1297 साल.
23. कवि सुमनक गद्य रचनाक आयाम - यदुनाथ लाल दास (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)
24. अर्चना - सुरेन्द्र झा सुमन, पृष्ठ - 40
25. 'नाटककार शेखर' - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ- 30.
26. तत्रैव, पृष्ठ - 31
27. साक्षात्कारक दर्पणमे सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ -1
28. शारान्तिधा - प्रो० राधा कृष्ण चौधरी, पृष्ठ - 28

29. चित्रा : यात्री जी, पृष्ठ - 9.
30. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 18
31. तत्रैव।
32. तत्रैव, पृष्ठ - 19
33. तत्रैव, पृष्ठ - 19 से
34. परिचायिका - डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ - 139.
35. साक्षात्कार दर्पण मे सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 4
36. परिचायिका - डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ - 141
37. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 73
38. प्रतिपदा - सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ - 38
39. निकष-सं० डा० शैलेन्द्र मोहन झा "सा विद्या या विमुक्तये" शीर्षक।
40. पतन - उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास', पृष्ठ - 10
41. परिचायिका - डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ - 142
42. सुधांशु 'शेखर' चौधरी- शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 67-68.
43. तत्रैव, पृष्ठ - 68
44. तत्रैव।



# कृति–विवेचन

## उपन्यास

व्यंजना–अभिव्यंजना काव्यक मुख्य तत्व कहल जाइछ। उक्ति–वैचित्र्य उद्‌भट–सुभाषितक सूत्र बुझल जाइछ। अनुकृति–अनुवृत्ति नाट्य–रचनाक स्रोत मानल जाइछ। परन्तु आख्यान–आख्यायिका, कथा–कादम्बरी, उपन्यास–नवलिका, गल्प– जल्प– जे अभिधान दिऔक– ओ तँ इतिवृत्त– घटना चरित्र व्यक्तित्व, आवेश–परिवेश, स्थायी–संचारी सभक समन्वयसँ गढ़ल जाइछ।

व्यक्ति यदि समाजसँ कटल रहए, समस्या यदि समाधानसँ हटल रहए, प्रकृति केवल विकृतिसँ भरल रहए अथवा कृति संस्कृतिसँ छँटल रहए, तखन ने कथावस्तुक बितान तानल जा सकैछ आ ने कथानके कथ्य तथ्यसँ संपृक्त राखल जा सकैछ।[1]

जहिना बिना कल्पनाक शक्तिक विकास असंभव होइछ तहिना कविता बिनु साहित्य सेहो रूच्छ–छुच्छ। मुदा कल्पनाक सार्थकता तखनहि संभव अछि जखन ओहिपर अमल हो आ कवितो तखनहि गुणकर, चित्रकर, अग्रसर भऽ सकैछ, जखन गद्यक व्यापक वृतमे ओ केन्द्रित हो। गद्यक भूमि जतेक उर्वर–जोतल–कोड़ल तैयार रहत, कविताक जजात ततेक बेसी मोती देत, गद्यक उपवन जतेक आर्द्र सजाओल–पटाओल रहत, कविताक लता–वृक्ष ताही अनुपातेँ फूले लदल, सौरभेँ महमह–गमगम करैत देखब। चिन्तन ओ कर्म, सहृदयता ओ अनुशासन, हृदय ओ मस्तिष्कक योगायोगमे जेना जीवनक सफलता सार्थकता निहित अछि, तहिना गद्य–पद्यक संगत संयोगेमे साहित्यक उच्च मानमूल्य, शीर्षता ओ महत्ता संचित अछि।[2]

युगक कठोरतासँ आइ सकल साधारणसँ समाज बेसी प्रभावित अछि। केओ एकरा लौहयुग कहैछ तँ केओ कर्मयुग, विज्ञान युग, तकनीक युग, यंत्रयुग, अंतरिक्षयुग जे कहि ली, भाव यैह जे युग-जीवनक संघर्षमे अहाँक भागीदारी भेल अछि। तहिना, साहित्योमे युगक आगिक धाह कोना ने लगौक, संघर्षक तीव्र घोष कोना ने सुनल जाउक। तेँ वर्तमानकेँ गद्येक युग कहब समीचीन अछि।

मैथिलीमे, सेहो वर्त्तमान कालमे सभसँ अधिक व्याप्ति आ संस्कार पौनिहार गद्ये थिक। एतेक धरि जे नवीन काव्यधारोक भाषा गद्येमुखिए भऽ गेल अछि। कथा, शब्द-चित्र, एकांकी, निबन्ध, समीक्षा-संस्मरण जीवनी किछु लिखब, गद्येसँ सुपुष्ट होएत, इतिहास, भूगोल, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र जे लिखल जाएत, ताहिसँ गद्ये विधाक विकास होइत अछि। धरातलपर गति अनबाक हेतु गद्यहिक मंद चंचल चरण चलए पड़ैछ। एहि गद्यमे 'उपन्यास साहित्य सर्वथा रोचक प्रयोजक होएबाक कारणेँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्धतर कऽ रहल अछि।

उपन्यास शब्दक मूल अर्थ अछि कोनो वस्तुकेँ निकट राखब (उप = निकट, न्यास = राखब) मुदा आधुनिक युगमे एकर प्रयोग साहित्यक एक एहन विधा-विशेषक रूपमे होइछ जाहिमे एक दीर्घ कथाक वर्णन गद्यमे कएल जाइछ। नाट्यशास्त्रमे वर्णित प्रति मुख संधिक एक भेदकेँ सेहो उपन्यास कहल जाइत अछि। एक स्थानपर 'उपन्यास : प्रसादनम्'क उल्लेख भेटैत अछि।

आधुनिक युगमे 'उपन्यास' शब्द अंग्रेजीक 'नोभेल'क अर्थमे प्रयुक्त होइछ। ई एक दीर्घ कथात्मक गद्यरचना होइछ। ओ वृहत् आकारक गद्य आख्यान वा वृतान्त होइछ जकरा अन्तर्गत यथार्थ जीवनक प्रतिनिधित्व कएनिहार पात्र एवं कार्यक चित्रण कएल जाइछ। गुजरातमे 'नवलिका', मराठीमे 'कादम्बरी' एवं बंगलामे 'उपन्यास' शब्दक प्रयोग सेहो अंगरेजीक 'नॉभेल'क अर्थमे कएल जाइछ। एकर

नामकरणो तँ बंगालीलोकनिक कएल छनि। ई शब्द 'उपन्यास' पश्चात् एतेक ने प्रचलित तथा लोकप्रिय भेल जे हिन्दी, मैथिली तथा आनो आधुनिक आर्यभाषा सभमे एकर प्रयोग होमए लागल। आनो-आन भाषामे एहि शब्दक प्रयोग बंगालक अनुकरणे पर होमए लागल। ई अनुकरण एतेक प्रचलित भए गेल अछि जे एकरा हटाएब, परिवर्तित करब वा संशोधन करब सम्भव नहि अछि। ओना उपन्यासक आइ जे परिभाषा कएल जाइछ, रूपरेखा निर्धारित कएल जाइछ, ओ निश्चिते विदेशक प्रभावक फलस्वरूप कहल जाइछ।

सभ्यताक विकास जेना-जेना होइत जाइत अछि, प्राचीन मर्यादा आ नव आकांक्षाक मेलसँ नव जटिल मनोभूमिक निर्माण होइत रहैत अछि। ओहिना साहित्यक विकास प्रक्रियामे प्राचीन आ नवीन विधाक मेलसँ नवीन जटिल विधा सभक निर्माण होइत रहैत अछि। उपन्यास एक एहन गद्य कथानक अछि जे प्रायः सभ कथा रूपक योगसँ विकसित होइत अपन रूपाकारमे विविध रूपात्मक आधुनिक मनोभूमिक उपस्थापन करैत अछि। एकर सभ विशेषताकेँ एक सूत्रमे बान्हब कठिन अछि। ई आधुनिक जटिल यांत्रिक सभ्यताक साहित्यिक प्रक्षेपण अछि। आजुक विघटित सांस्कृतिक चेतनाक चित्रित आ ओकरा बेरि-बेरि संगठित करबाक प्रयासमे ई स्वयं बेरि-बेरि बिखरैत-पसरैत आ फेर जुटैत गेल अछि। एहिसँ एकर रूपमे प्रसार, जटिलता एवं नवीन अध्यावनक आग्रह दृष्टिगोचर होइत अछि। जेना-जेना देश एवं कालक अनुसार मानव जातिक रूपमे परिवर्तन होइत रहत, तहिना उपन्यासक विषय सेहो बदलैत रहत। तँ विषय-वस्तुक दृष्टिसँ काढ़ल गेल उपन्यासक रूपमे प्रत्येक युगमे परिवर्तित एवं परिवर्द्धित होइत रहत। एही प्रकारेँ उपन्यास-साहित्यक विकासक संगहि ओहिमे नव-नव शैलीक प्रयोग तथा नवीन शिल्पगत प्रवृत्तिक विकासो होइत रहत।

आधुनिक उपन्यास-साहित्यक रूप विधानक विकास

सभसँ पहिने यूरोपमे भेल। मुदा एकर ई तात्पर्य नहि जे प्राचीन भारतमे उपन्यासक समान साहित्यक कोनो अन्य विधाक प्रचलन नहि छल। संस्कृतक गद्यमे लिखल गेल पंचतंत्र, हितोपदेश, बैताल पंचविंशति, वृहत् कथामंजरी, वासवदत्ता, कादम्बरी एवं दशकुमार चरितमे हमरा क्रमशः औपन्यासिकताक विकास देखबामे अबैछ। पंचतंत्र एवं हितोपदेशमे पशु–पक्षीक इतिवृत्ति, बैताल पंचविंशति तथा वृहत् कथामंजरीमे मानवीय घटनाक वर्णन तँ अछि, मुदा ओहिमे अस्वाभाविकता आबि गेल अछि। अतः आधुनिक उपन्यास तथा एहिमे बहुत अधिक अन्तर अछि। किछु विद्वान कादम्बरीकेँ भारतवर्षक पहिल उपन्यास मानैत छथि। एतेक धरि जे मराठी–साहित्यमे उपन्यासक पर्यायवाची 'कादम्बरी' शब्द भए गेल, मुदा हमरा जनैत ई भ्रान्त धारणा थिक। 'कादम्बरी'मे अलौकिकता, भावात्मकता एवं आ संस्कारिकताक एतेक अधिक आग्रह अछि जे ओकरा उपन्यास कहब उपन्यास शब्दक संग अन्याय करब होएत। यथार्थतः मानव–चरित्रक स्वाभाविक चित्रण मनोवैज्ञानिक तथ्यक उद्घाटन, यथार्थवादी दृष्टिकोण एवं शैलीक स्वाभाविकताक दृष्टिएँ दशकुमार चरितकेँ हम भारतवर्षक प्रथम सफल उपन्यास कहि सकैत छी। एहिमे अनेक स्वतन्त्र कथानककेँ मूल कथा–वस्तुक क्षीण तन्तुसँ परस्पर सम्बद्ध कएल गेल अछि जे आधुनिक उपन्यासक दृष्टिसँ एक दोष कहल जाएत। मुदा एकर अन्य गुणक समक्ष ई दोष नगण्य भए जाइछ।

संस्कृत कथा–साहित्यक प्रारम्भ कहिया भेल ई कहब अत्यन्त कठिन अछि। मुदा एकर एक सुदीर्घ परम्परा देखबामे अबैछ। संस्कृतक कथा–साहित्यक प्रचार एवं प्रसार आब इराक तथा यूरोपक अनेक प्रदेशसँ लए दूर युनान धरि भेल। संस्कृतक अनेक कथाक अनुवाद मध्य–एशिया तथा यूरोपक विभिन्न भाषामे भेल ओ एकरे आधारपर अनेक पाश्चात्य विद्वान यूनान एवं यूरोपक रोमांटिक कथा–साहित्यक मूल उद्भव भारतवर्षक कथा

साहित्यसँ मानैत छथि। जहिना भारतसँ निर्यात भेल तूर एवं ऊनकेँ पाश्चात्य देश कपड़ामे परिवर्तित कए एहिठाम पठबैत छथि तहिना भारतक प्राचीन कथा-साहित्य यूरोपसँ क्रमशः रोमान्टिक कथा-साहित्य एवं उपन्यासक रूप धारण कए एहि ठाम आएल।[३]

एहि विवेचनसँ स्पष्ट अछि जे उपन्यासक उद्‌भव यूरोपमे रोमान्टिक कथा साहित्यसँ भेल जे मूलतः भारतीय प्रेमाख्यानसँ प्रेरित छल। 'रोमान्टिक'क अर्थ होइछ जाहिमे प्रेम एवं साहसक निरूपण हो। संस्कृतक वासवदत्ता, कादम्बरी तथा दशकुमारचरितमे प्रेम, साहस एवं धैर्यक चित्रण कएल गेल अछि। एहि युगक भारतीय कथा-साहित्यमे एहि सभ तत्वक एतेक प्राधान्य छल जे आचार्य रूद्रट कथा-साहित्यक लक्षण निर्धारित करैत काल प्रेम एवं साहसकेँ ओकर आवश्यक लक्षण माननलनि अछि। यूरोपमे रोमान्टिक उपन्यासक प्रचार सर्वप्रथम इट्लीमे मानल जाइत अछि। चौदहम शताब्दीक मध्य इट्लीक उपन्यासकार वोकेशियाक रचना 'डी केमरान' भेल जे व्यंग्य एवं विनोदसँ ओतप्रोत छल। सत्रहम शतकमे स्पेनक उपन्यासकार सरवन्तेक 'डानविभजोट' उपन्यासक रचना भेल। पश्चात् फ्रांसमे रोमान्टिक एवं यथार्थवादी कथा साहित्यक बहुत विकासमे उन्नति भेल। पश्चात् इंग्लैण्ड, फ्रांस, जर्मनी ओ रूसमे अनेक उच्च कोटिक उपन्यासक रचना भेल। महान-महान उपन्यासकारक आविर्भाव भेल।

एहिसँ स्पष्ट अछि जे अठारहम शदीक अन्तधरि यूरोपक विभिन्न भागमे उपन्यास साहित्यक पर्याप्त विकास भए गेल छल। मुदा भारतमे एकर आविर्भाव उन्नैसम शताब्दीक अन्तिम चरणमे भेल। एकर एकमात्र कारण अछि जे जखन पाश्चात्य सम्पर्कमे भारत आएल तखन एहिठाम उपन्यासक प्रणयन प्रारम्भ भेल। भारतक जे भूभाग एहि सम्पर्कमे पहिने आएल ओहि ठाम उपन्यासक रचना पहिने प्रारम्भ भेल तथा जे भूभाग एहि सम्पर्कमे पश्चात् आएल ओहिठाम उपन्यासक रचना विलम्बसँ

प्रारम्भ भेल। यैह कारण अछि जे बंगालमे उपन्यासक रचना सभ ठामसँ पहिने भेल। बंगालक अनेक उपन्यासकार बंकिमचन्द्र, शरतचन्द्र, रवीन्द्र आदिक उपन्यासक प्रभाव आन भाषाक उपन्यास–साहित्यपर अत्यधिक देखल जाइछ। मिथिला एहि सम्पर्कसँ बहुत दिन धरि अप्रभावित रहल तेँ एहिठाम मैथिली साहित्यमे उपन्यासक रचना बीसम शताब्दीमे प्रारम्भ भेल। कहि सकैत छी जे मैथिली साहित्यमे उपन्यास रचनाक प्रारम्भ भाषान्तरक उपन्यासक अनुवादसँ भेल।

मैथिली साहित्यमे एहि उपन्यास रचनाक सुदीर्घ परम्परा रहल अछि। इतिहासकार लोकनि किंबा सुधी समीक्षक लोकनि द्वारा उपन्यासक जे वृहत्तर लेखा–जोखा प्रस्तुत कएल गेल अछि ताहिसँ मैथिली उपन्यासक विकास–क्रम स्फुट होइत अछि। ओकरा सभक नाम गनाएब मात्र पृष्ठ–पोषण होएत। लघुकायसँ लऽ वृहत्काय रूपमे उपन्यास लिखल गेल अछि। लीली रेक 'मरीचिका' एकर ज्वलन्त प्रमाण अछि।

अस्तु ई उचिते कहल गेल अछि जे मैथिली उपन्यास 'अगिलही'केँ 'कन्यादान', 'द्विरागमन', 'मधुश्रावणी', विदागरी करैत नवतुरिया, चानोदाइ ओ पृथ्वीपुत्रकेँ 'दू कुहेसक बाट' देखबैत, बिहाड़ि पानि पाथरकेँ सहैत आदिकथा दू–पत्र लिखैत 'तऽर पट्टा ऊपर पट्टा' दैत दूधफूलकेँ सेबैत पनिपत जकाँ रंगैत सामाजिक चेतनाक भोरुकबा उगा देलक अछि।[4]

मैथिली उपन्यास साहित्यमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक अवदान उल्लेखनीय–प्रशंसनीय अछि। हिनक उपन्यासमे कलाक स्वरूप निश्चय अत्यन्त अप्रतिम अछि। शेखर जी साहित्यकेँ मनोविनोदक माध्यम नहि मानैत छलाह। अपितु ओ साहित्य–संसारक संग पएरसँ पएर मिला कऽ चलि विविध पारिवारिक, सामाजिक ओ राष्ट्रीय समस्या सभक समाधानक लेल एक गोट विशिष्ट साधन मानैत छलाह। एहि समाधानक क्रममे ओ कोनो अन्य दिशामे नहि तकैत छलाह। अपना भूमि पर अपन गाछ लगएबाक

पक्षधर छलाह। हिनक ई दृष्टिकोण एकदिस समाजकेँ अपन माटि-पानिसँ जुड़ि आधार भूमिसँ ऊर्जा ग्रहण कऽ समग्र विकासक प्रेरणा देबाक काज कएलक तँ दोसर दिस मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा-नव गति देबाक संग विकासक पथ पर अग्रसर करबामे सहायक सिद्ध भेल।[5]

शेखर जीक समस्त औपन्यासिक रचनावलीकेँ उपर्युक्त परिपेक्ष्यमे देखब उचित होएत। जँ कि साहित्य-संरचनाक उद्देश्यक प्रति हिनक दृष्टिकोण बड़ व्यापक छलनि तँ हिनक औपन्यासिक कृति सामान्यसँ किछु भिन्न प्रकारक अवश्य रहल, ओहिमे मनोवैज्ञानिकता पुट किछु बेसिए रहल। मुदा एहिसँ हिनक उपन्यासकारक छवि पर कतहुँ कोनो आघात नहि लगतनि। ओना सामान्य पाठककेँ विषयक गूढ़ता, एकहि कथानकमे अनेक उपकथानकक सन्निवेश, प्रवाह केर अभाव आदि खटकनि से सम्भव।[6] हिनक उपन्यासक कथानक प्रेमचन्द आ शरतचन्द्र जकाँ नगर आ ग्रामीण दुनू समाज पर आधारित अछि। सामाजिक स्तरक विविध मनोवृत्तिक विविध पात्रक सृष्टि हिनक उपन्यासमे भेल अछि। यथार्थवाद समाजक प्रमुख ज्वलंत समस्या तथा समकालीन मानवक घुटन एवं पीड़ाक यथार्थ चित्रणमे विश्वास करैत अछि। एकर दृष्टि तथ्यात्मक रहैत अछि। वैज्ञानिक प्रबुद्धताक आलोकमे ई कट्टर सामाजिक व्यवस्था, रूढ़ि एवं अन्धविश्वासक प्रति अनास्थाक भाव प्रकट करैत अछि। यथार्थवाद मात्र उच्चवर्गक लोक धरि अपनाकेँ सीमित नहि रखैछ। अपितु मध्य एवं निम्नवर्गीय व्यक्तिक जीवनक विविध पक्षकेँ सेहो अपन चित्रणक आधार बनबैत अछि। यथार्थवादक आदर्शवादी विचारधाराक अनुसार पात्रक जीवनकेँ अस्वाभाविक विशिष्ट मोड़ नहि प्रदान करैत अछि। ई पात्रक समस्त चारित्रिक दुर्बलताकेँ स्वीकार करैत अछि। यथार्थवाद जीवन-सत्यक चित्रण करैत अछि तथा एहि क्रममे कोनो भेदभाव नहि रखैत अछि। तथा परिवर्त्तनशील परिस्थिति एवं वैचारिक

दृष्टिकोणसँ प्रेरणा ग्रहण कऽ कलाकेँ नवीन वातावरणमे गतिशील करैत अछि।[7] शेखरजीक औपन्यासिक पात्रक एहि यथार्थवादक धरातल पर प्रतिष्ठापन भेल अछि। ओकर गुण, अवगुण, नीक-अधलाह सभक दिग्दर्शन शेखरजी अत्यन्त कुशलताक संग कएलनि अछि। एहि हेतु पात्रक भावनासँ चारित्रिक विशेषतासँ पाठकक हृदय सहजहिं तादात्म्य स्थापित कऽ लैत अछि एवं अत्यन्त निकट प्रतीत होइछ। देश-काल आ पात्रक वास्तविक योजना शेखरजीक उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक। उपन्यास पढ़लापर एहन प्रतीत होइछ जे जाहि पृष्ठभूमिमे उपन्यास लिखल गेल अछि, ओ सजीव आ प्राणवान भऽ कऽ हमर आँखिक सोझाँ नाँचि रहल अछि। हँ, एकगोट बात अवश्य जे हिनक उपन्यासक आरम्भ, मध्य आ अन्त तेना होइत अछि जे वास्तवमे नाटकीय मोड़ लेने रहैत अछि।

मैथिलीमे शेखरजीक कुल पांच गोट उपन्यास प्रकाशित छनि, से थिक क्रमशः **'तऽर पट्टा उपर पट्टा', 'दरिद्रछिम्मरि', 'ई बतहा संसार', 'निवेदिता' एवं 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी'।**

**तऽर पट्टा उपर पट्टा**

सुधांशु 'शेखर' जीक ई प्रथम प्रकाशित मैथिली उपन्यास अछि। ई मिथिला-मिहिरक 21 मई 1961 ई॰सँ 22 अक्टूबर 1961 ई॰ धरिक अंकमे कुल 22 खण्डमे प्रकाशित भेल। शेफालिका देवीक छद्मनामसँ प्रकाशित यथार्थतः एहि उपन्यासक उपन्यासकार सुधांशु 'शेखर' चौधरी थिकाह। हिन्दीमे लिखल 'दो पाटन के बीच'क रूपान्तर थिक- 'तऽर पट्टा उपर पट्टा' उपन्यास।

प्रस्तुत उपन्यास दू खण्डमे विभाजित मैथिल परिवेशक कथानकसँ युक्त अछि। मनोविश्लेषण पद्धतिमे रचित एहि उपन्यासक पहिल खण्डमे नायक परमा ओ दोसर खण्डमे नायिका गंगाक आत्मविश्लेषण अछि।

परमा एहि उपन्यासक आदर्शवादी नायक अछि। सत्यक प्रति आग्रही परमाक व्यक्तित्वमे सांगठनिक क्षमता छैक। चिन्तनशक्तिक समन्वय ओकरा चरित्रक सभसँ प्रमुख विशेषता छैक। अपन बहिन गंगाक प्रेरणासँ ओ समाजिक कुरीति ओ दुर्भावनाकेँ नष्ट कऽ ओकरा स्थान पर सामाजिक समरसता ओ सामाजिक सौहार्द्रक स्थापनाक निमित्त ग्रामीण राजनीतिमे सक्रियताक संग प्रवेश करैत अछि। अपन उद्देश्यमे सफलीभूत होएबाक लेल ओ ग्रामीण नवयुवक लोकनिक एक गोट दल बनएबामे लागि जाइत अछि। मुदा सत्य-पथक बटोही परमाक ग्रामोत्थानसँ सम्बन्धित क्रिया-कलाप समाजक ओहि वर्गकेँ नीक नहि लगैत छैक जे समाज वा गामक अधःपतनक मूल कारण अछि। एहने एक गोट पात्र छथि लीलाधर बाबू। गामक प्रभावी व्यक्ति लीलाधर बाबूकेँपरमाक समस्त क्रिया-कलाप अप्रिय लगैत छनि। सम्भवतः ओ एहि लेल चिन्तित भऽ उठैत छथि जे नवयुवक वर्गक उत्साहसँ हुनक मिथ्याभिमान, प्रभावशालिताक आडम्बर नष्ट होएबाक सम्भावना बढ़ि रहल छनि। तेँ परमाक बढ़ैत प्रभावकेँ समाप्त करबाक हेतु, ओकर आदर्श स्वरूपकेँ खण्डित करबाक हेतु ओ षडयंत्र कऽ परमाकेँ जमुनीक संग व्यभिचार करबाक मिथ्या आरोपमे फँसएबाक उद्योग करैत छथि। मुदा परमाक दूरदर्शिता ओ ओकरा द्वारा गठित दलक सजगताक फलस्वरूप जमुनीक सतीत्व भंग करैत लीलाधर बाबू स्वयं पकड़ल जाइत छथि। अभियानी दलक विजयश्रीक वरण करबामे सफल होइत अछि।[8]

एहि उपन्यासक नायिका थिकीह गंगा। परित्यक्ता गंगाक जीवन कष्ट ओ करूणासँ ओतप्रोत अछि। गंगा परित्यक्ता एहि हेतु अछि जे ओकर पति संतोषपूर्ण विदाइ नहि भेटबाक कारणेँ ओकरा छोड़ि दोसर विवाह कऽ लैत छैक आ गंगाकेँ मानसिक यातनाक अथाह समुद्रमे उबडुब करबा लेल विवश कऽ दैत अछि।

मुदा गंगा एहि सकल परिस्थितिक झंझाबातकेँ

सहितो अपना अन्तरमे सामाजिक परिवर्त्तनक ओ व्यवस्थाक परिशुद्धिक लेल दीप जरौने रहैत छथि आ तकरे परिणाम होइत अछि जे हुनक व्यक्तित्व परमाक समक्ष प्रेरणा बनि ठाढ़ होइत अछि। ई सत्य जे परमाक सक्रियता, ओकर संगठनात्मक क्षमता विलक्षण छैक मुदा ओकर ऊर्जा एहि दिशामे प्रेरित कएनिहार गंगे थिकीह। निःसन्देह हुनक व्यक्तित्वमे सामाजिक परिवर्त्तनक सूत्रधारक गुण विद्यमान छनि।[9] एहि उपन्यासक प्रसंग डा० प्रेम शंकर सिंहक कहब छनि– "एहिमे परमा एवं गंगाक सामाजिक पृष्ठभूमिक विश्लेषण उपन्यासकार मनोविश्लेषककेँ समान करबाक उपक्रम कएलनि जे आदर्शवादक स्थापत्यर्थ आदर्शवादी नायककेँ केहन मानसिक यातना भोगए पड़ैत छैक। हमर सामाजिक पृष्ठभूमि एहन अछि जे आदर्शक स्थानमे डेगे–डेग पर अनेक प्रकारक विघ्न–बाधा उपस्थित कएल जाइत अछि। उपन्यासकार नारी जीवनक व्यथा, विवशता आ करुणाक अति यथार्थ रूप प्रस्तुत करबामे सक्षम भेलाह अछि। एहि उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक जे उपन्यासकार मैथिलीमे प्रथम पात्रक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करबाक उपक्रम कएलनि तेँ एकर महत्त्व बढ़ि जाइत अछि। जतेक दूर धरि चरित्र–चित्रणक प्रश्न अछि मुख्य पात्र एवं गौण पात्रक अति सूक्ष्म विश्लेषण करबामे उपन्यासकारकेँ अतिशय सफलता भेटलनि अछि। एहि दृष्टिसँ प्रतिपाद्य उपन्यास मैथिलीमे एक नव दिशाक संकेत करैछ।[10]

डा० अमरेश पाठकक शब्दमे– "तऽर पट्टा ऊपर पट्टा"मे पात्रक मनोविश्लेषणक चेष्टा कएल गेल अछि। एहि उपन्यासक आदर्शवादी युवक परमा सामाजिक कुरीतिकेँ दूर करबाक हेतु प्रयत्नशील होइत अछि किन्तु लीलाधर बाबू ओकर प्रयासकेँ विफल करऽ चाहैत छथि। जमुनीक संग लीलाधर बाबूक सम्बन्ध तथा गंगाक मानसिक स्थितिक विश्लेषण कए लेखक सामाजिक जीवनक जे चित्र अंकित करैत छथि ताहिसँ लेखकक

दृष्टिकोणक परिचय भेंटैत अछि। चरित्र चित्रणमे स्वाभाविकता अछि।[11]

डा0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क अनुसार- ''एहिमे सामाजिक ओ मानसिक समस्याक संग-संग विलक्षण चित्रण भेल अछि तेँ एहि उपन्यासक विशेष महत्त्व अछि। चरित्र चित्रणक सूक्ष्मताक दृष्टिएँ एहि उपन्यासकेँ उत्कृष्ट कोटिक कहल जा सकैत अछि''।[12]

स्थूल रूपेँ यैह जे मनोवैज्ञानिक पद्धतिमे लिखल गेल एहि उपन्यासमे सामाजिक-मानसिक समस्याक संग नारी-व्यथा, ओकर विवशता, करूणा आदिक संग नारी शक्तिक प्रेरिका रूपक विलक्षण चित्रण उत्कीर्ण कएल गेल अछि। मैथिली उपन्यास जगतमे सूक्ष्म चरित्र-चित्रण ओ सटीक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एवम् मिथिलाक माटि-पानि ओ मैथिल वातावरणक सजीव चित्रणक लेल एहि उपन्यासक महत्व अक्षुण्ण रहत।[13] ई उपन्यास शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा मार्च 2003मे पुस्तकाकार प्रकाशित भेल अछि।

## दरिद्रछिम्मरि

मूल रूपसँ हिन्दीमे लिखित 'फटे हाल'क मैथिली रूपान्तर 'दरिद्रछिम्मरि' थिक जे मिथिला मिहिरक माध्यमे 13 जनवरी 1974 ई0सँ 25 मइ 1974 ई0 धरि धारावाहिक रूपेँ कुल 19 अंकमे 'पराशर'क छद्मनामे प्रकाशित भेल। ई उपन्यास मैथिली अकादमी, पटना द्वारा सन् 1987 ई0मे पुस्तकाकार रूपमे प्रकाशित भेल।

आत्मकथात्मक शैलीमे लिखित एहि उपन्यासकेँ शेखर जी मनकथाक संज्ञा दैत छथि। मुदा एहिमे उपन्यासक समस्त तत्व विद्यमान छैक तेँ एकरा मनकथात्मक शैलीमे रचित उपन्यास कहब उचिते-स्वाभाविके। एहि तरहेँ 'मनकथा' नामक एकटा स्वतन्त्र विधाक सृष्टि करबाक श्रेय हिनका प्राप्त छनि।[14]

एहि उपन्यासक कथानक मुख्य रूपसँ अमल केर

जीवनक इतिवृत्ति पर आधारित अछि आ अमल द्वारा व्यक्त वाणीमे मनोवैज्ञानिक परिवेशमे अभिव्यक्त अछि। एकर नामकरण मार्क्स दिस संकेत करैछ तथा मनकथा 'फ्रायड' दिस।'[15] अमलक जीवन-कथाकेँ आधार बना उपन्यासकार सामाजिक-पारिवारिक ओ वैयक्तिक विविध समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार कएलनि अछि। मूल रूपेँ निम्न-मध्यम वर्गक पारिवारिक समस्याकेँ प्रकाशित करबामे उपन्यासकार अत्यन्त सफल भेलाह अछि।

एहि समस्त समस्याक उद्‌घाटन विविध चरित्रक उपस्थापनाक माध्यमे भेल अछि। बिठ्ओ गोपाल प्रभृतिक चरित्रांकन द्वारा नगरीय समाजक तरुणवर्गक कतोक पक्षकेँ एहि मध्य उजागर कएल गेल अछि। समरक सन्दर्भमे वेतनभोगी व्यक्तिक स्त्रैण विवशता सेहो बड़ यथार्थ रीतिएँ अंकित भेल अछि। सामाजिक दुर्दैन्य प्रतिभाकेँ विकसित नहि होअए दैत छैक, एकर उदाहरण छथि शिवनाथ ओ अमल। पारिवारिक दुर्दैन्यहिक कारणेँ रोमांस ओ प्रेमक कोमल ओ मधुर भावना यथार्थ जीवनक प्रस्तरशिला पर बामि भए विनष्ट भए जाइत छैक ओ पारिवारिक पृथक्कीकरण होइछ, अमल ओ रंजनाक प्रेम-प्रकरण एकर दृष्टान्त थिक।'[16]

दरिद्रछिम्मरिक नामे ख्यात एहि उपन्यासक नायक अमल केर जीवनगाथा सहजहि परेखबाक योग्य। अमलक प्रति दृढ़ताक भावना अनबाक संगहि अन्तमे सभटा चरित्र विविध समस्याक निदान करबामे सफल होइत अछि।

उपन्यासक कथा नायकक माध्यमे लेखक अनेक मान्यताक ओझराहटिकेँ सोझरयबाक सफल चेष्टा कएलनि अछि। जेना दरिद्रछिम्मरि होएबा पर विचार करैत नायक सोचैत अछि जे ओ दरिद्रछिम्मरि अछि ताहिमे ककर दोष ? दरिद्र छिम्मरि के थिक ? आ अन्तमे निष्कर्ष पर अबैत अछि जे दरिद्र छिम्मरि मोन होइत छैक लोक नहि।'[17]

तहिना ओकर विचार-मन्थनक माध्यमे समाजक

विविध चरित्र ओ ओकर क्रिया-कलाप किंवा मानसिकताक प्रसंग सेहो विचार कएल गेल अछि। कथानायक मानसरोवरक घाट पर बैसल विचार करैत अछि जे लोक अपन स्वभावेक हिसाबे काज करैत अछि। जँ ओ राजनेता रहितए तँ मानसरोवरक दछिनबारी मोहार परक हलखोरकेँ आ पुबारी मोहारपरक खजूरबन्नीक पारीकेँ चढ़ा-बढ़ा झगड़ा लगबितए। दार्शनिक रहितए तँ पीपरक गाछमे टाङल डाबासँ चुबैत पानिकेँ देखि सत्यासत्यक विश्लेषण करैत आ कवि-साहित्यकार रहने सौन्दर्य वर्णन करैत।

सम्पूर्ण उपन्यासमे जीवन-जगतक अनेक विवाद, भ्रम आ मोह केर सत्यक उद्घाटन विविध चरित्रक विलक्षण उपस्थापना द्वारा भेल अछि। लेखकक गम्भीर दृष्टि ओ चिन्तन जीवनसँ सम्बन्धित विविध अनुभवक उपस्थापनामे दृष्टिगत होइत अछि।[18]

अन्तर्मुखी अथवा मनोविश्लेषण प्रधान यथार्थवादी मैथिली उपन्यास प्रायः बाह्यजगतक सत्ताकेँ नहि स्वीकार करैत अछि तथा मानवीय अन्तर्जगत ओकर बौद्धिकता एवं भावनात्मकता पर बेसी जोर दैत अछि। एहन उपन्यास सभमे पात्रक जीवनक बहिरंग उपन्यासकार लोकनिकेँ ओही सीमा धरि ग्राह्य भेलनि अछि जतय धरि ओ मोनक जटिल एवं विषम ग्रंथि धरि पहुँचयबामे सहायक होइत अछि। एहन उपन्यासकार लोकनिपर 'फ्रायड'क विशेष प्रभाव पड़ल छनि। 'फ्रायड'क मनोविश्लेषण सिद्धान्तमे एहन-एहन पद्धति देल गेल अछि जकरा द्वारा मनुष्यक बाह्य क्रिया-व्यापार, सम्भाषण-भंगिमा एवं कर्म-प्रेरणा द्वारा मानवक अन्तर्जगतक संश्लिष्ट विन्यासक विश्लेषण कएल जा सकैत अछि।[19] शेखर जीक 'दरिद्रछिम्मरि' एहि कोटिक उपन्यास थिक।

डा0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश'क शब्दमे- 'दरिद्र छिम्मरि'मे उपन्यासकार कतोक विलक्षण 'टिपिकल' पात्रक अवतारणा कएल अछि, जेना मामा ओ अमलक पिता। एहि

उपन्यासक प्रत्येक परिच्छेदमे जीवनक यथार्थ सत्यक अन्तर्द्वन्द्वक प्रतिपादन भेल अछि, से बड़ सूक्ष्मता, स्पष्टता ओ प्रांजलताक संग। कतहु-कतहु भाषाक चिन्त्य प्रयोग अवश्य खटकैत अछि परन्तु उपन्यासकारक अन्तर्भेदी अनुभव दृष्टि ओ तकरा रोचक शैली मे मनोवैज्ञानिक गम्भीरताक संग अभिव्यक्त करबाक कौशल कतहु अरुचि ओ एकरसता नहि आबए दैत अछि।[20] "एहि मे व्यक्तिक घुटन, पारिवारिक घुटन, समाजक विश्रृंखलता आ व्यवस्थाक अराजकताक मूलमे अर्थतन्त्रक कुंजी रहैछ, जे थाकल-ठेहिआयल जीवन-यात्रीक हृदय-समुद्रमे भयंकर बिहाड़ि आनि दैत छैक। एतेक धरि जे पति-पत्नी, माय-बाप, भाय-बन्धु, इष्ट-मित्र एही अर्थतन्त्रसँ नियमित-अनुशासित रहैछ। जहिना शेष प्रश्नमे शरत चन्द्र स्वतः एक पात्र बनि गेलाह तहिना शेखर जी अमलक रूपमे स्वतः प्रतिच्छवितमे अत्यन्त कल्पनाशील आ संवेगमय भऽ प्रश्न बरिसबैत छथि, जे समाज आ व्यवस्था पर तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। उपन्यासकार सामाजिक, पारिवारिक आ वैयक्तिक अनेक समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार कएलनि अछि। एहिमे जीवनक यथार्थ सत्यक अन्तर्द्वन्द्वक प्रतिपादनमे सूक्ष्मता, स्पष्टता, प्रांजलता अछि। सम्पूर्ण औपन्यासिक कृति जीवनक यथार्थ सत्यताक संगहि अन्तर्द्वन्द्व चारू भाग परिक्रमा करैत अछि।"[21]

कहबाक अभिप्राय जे समकालीन परिवेशमे व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक विद्रूपता आओर तकरां भोगि रहल ग्राम एवं नगरक सभ वर्गक मानवक मनःस्थिति ओकर खंडित होइत परम्पराक मूल्य, आदर्श एवं आस्था तथा ओकर स्थान पर अर्द्धविकसित, पूर्णविकसित मूल्यसँ सम्बद्ध इतिवृत्तिकेँ पल्लवित करब उपन्यासकारक जनोद्देश्य रहल होनि।

एही प्रसंग प्रसिद्ध इतिहासकार डा0 दिनेश कुमार झाक कथन छनि जे- 'समाजक कटुता, अभाव एवं संघर्षक दुर्बह बोझ तऽर पिचायल, कुहरैत मध्य एवं

निम्नवर्गक मानसिक स्तर पर भऽ रहल आस्था एवं अनास्थाक तुमुल युद्धक कथा कहैत अछि 'दरिद्र छिम्मरि।'[22]

एहिना डा० बालगोविन्द झा 'व्यथित'क कहब छनि जे- श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी 'दरिद्र छिम्मरि'मे अमलक जीवन-कथाक माध्यमसँ निम्न-मध्यमवर्गीय परिवारक कतोक समस्यापर विचार व्यक्त कएल अछि। एकर प्रत्येक परिच्छेदमे जीवनक यथार्थ सत्यक अन्तर्द्वन्द्व पूर्ण प्रतिपादित भेल अछि।[23]

उद्देश्यक दृष्टियेँ ओना तँ कतेको प्रकारक उपन्यास रचित भेल अछि। मुदा सुचर्चित ओहने कृति सभ रहल अछि जे स्वतंत्र भारतक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक विसंगतिक परिप्रेक्ष्यमे ग्राम्य एवं नगरक परिवेशमे जीबि रहल निम्न-मध्य एवं निम्नवर्गीय नर-नारीक भोगल यथार्थकेँ विविध कोणसँ देखि ओकरा वाणी प्रदान कएलक अछि। पूँजीवादी संस्कार पर प्रहार करैत एहन उपन्यास सभमे ग्रामीण परिवेशमे व्याप्त सामाजिक अत्याचार, इर्ष्या-द्वेष, छल-कपट, पारिवारिक कटुता, निम्न वर्गमे आएल चेतना, वर्ग संघर्ष, टूटैत सम्बन्ध तथा नगर परिवेशमे व्याप्त जीवनक यांत्रिकता, क्षुद्र स्वार्थ एवं संकीर्णता, चारित्रिक एवं नैतिक पतन, भ्रष्टाचार, घुसखोरी, चोरबाजारी, मँहगी, बेकारी, दिशाहीनता, लोकक कृत्रिम स्वरूप, मानसिक तनाव, बाह्य एवं अन्तःसंघर्ष आदिक कथा कहैत नर-नारीक खण्डित होइत पारम्परिक मूल्य तथा नवविकसित अर्द्धविकसित जीवन मूल्यकेँ व्यंजित करबामे अपन सोद्देश्यता स्पष्ट कएल अछि। एही कोटिमे शेखर जीक 'दरिद्रछिम्मरि' उपन्यास सेहो अछि।

अन्तमे ई कहब समीचीन होएत जे जँ सूक्ष्मतापूर्वक एहि उपन्यासकेँ देखल जाए तँ कल्पनाशीलताकेँ फराक कऽ देलाक बाद सम्पूर्ण उपन्यासमे शेखर जीक जीवनी भेटत। तखन उपन्यासकेँ मनकथा नहि कहि लेखकक आत्मकथा कही तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि होएत।[24]

## ई बतहा संसार

जेना-जेना देश एवं कालक अनुसारे मानव जातिक रूचिमे परिवर्त्तन होइत रहत, तहिना साहित्यक विषय सेहो बदलैत रहत। एकर सभ विधामे नव परिवर्तन होइत रहत जे उचिते छजतैक-जँचतैक। आ तेँ उपन्यास साहित्यमे सेहो युगानुरूप परिवर्त्तन-परिवर्द्धन होएब स्वाभाविके अछि। तेँ उपन्यास साहित्यक विकासक संगहि ओहिमे नव-नव शैलीक प्रयोग तथा नवीन शिल्पगत प्रवृत्तिक विकासो होइते रहत।

'फ्रायड'क अनुसार काम-तृप्तिक प्रबलता मानव-जीवनक मूल थिक। हुनक परवर्ती विचारक 'एडलर' मनुष्यक जीवनमे काम-वृत्तिक स्थानपर 'अहम-वृत्ति'क प्रबलता स्वीकार करैत छथि जखन कि युगक दृष्टिमे मानव-मनमे विरोधी प्रवृत्ति जेना प्रेम, आसक्ति, आकर्षण आदिक ध्रुवत्व ओकर चरित्रक नियामक थिक। एही धरातलपर मैथिली उपन्यासक जे बीया रोपल गेल, से झमटगर गाछ बनि गेल अछि। अधिकांशमे अतृप्त काम-चेष्टाक चित्र उभरि कए आएल अछि। सभठाम महिला दिस दोड़ैत संसारकेँ देखएबाक चेष्टा मैथिली उपन्यासकार लोकनि कएलनि अछि। मैथिलीमे एहनो उपन्यासक उदाहरण भेटैत अछि जाहिमे नायक छोड़ि प्रत्येक पुरुष-पात्र कोनो-ने-कोनो रूपमे सेक्स-अपराधी बनल छथि आ प्रत्येक स्त्री-पात्र, पुरुषक काम-वासनाक शिकार बनल अछि। जँ वर्णन स्वाभाविक हो, यथार्थ हो, मानव-मनकेँ स्पर्श करैत हो, समाजमे निहित घृणितजन्य परम्पराकेँ उद्वेलित करैत हो तँ से उपन्यासक उत्कृष्टताक लेल अनिवार्य थिक। मुदा मात्र सस्त लोकप्रियताक कारणे आधुनिकता एवं प्रगतिशीलताबोध करएबाक हेतु कामातुर उद्दाम वर्णनसँ कृतिक गुणवत्ता हल्लुक पड़ि जाइत छैक जे आजुक उपन्यासक प्रवृत्ति भए गेल अछि।

प्रेम ओ वासनापर प्राच्य ओ पाश्चात्य ऋषि-साहित्यकारगण अपन विचार आरम्भेसँ प्रकट करैत

रहलाह अछि। हुनका लोकनिक दृष्टिकोण लौकिक ओ पारलौकिक (देव विषयक) प्रेमकेँ फड़िछएबाक चेष्टा धरि रहलनि। ओ मानवीय प्रेम ओ वासनाकेँ सोझामे राखि विवेचन नहि कएने छथि। मुदा शेखर जी प्रेम ओ वासनाक निगूढ़ताकेँ सामान्य जीवनक परिपेक्ष्यमे राखि एकर अन्तरकेँ देखने छथि। ओ स्वयं लिखैत छथि जे- "प्रेम ओ वासनाकेँ नीक जकाँ व्याख्यायित करब सोझ काज नहि थिक किन्तु हमर ई धृष्टता होअए वा दुःसाहस जे हम अपन एहि औपन्यासिक कृतिक हेतु उक्त विषयकेँ आधार बनओलहुँ अछि। वासना अन्ततः थिक की? प्रेमक अस्तित्व वासनासँ कतेक भिन्न छैक। दुनू दू वस्तु थिक अथवा वासनाक विकसित रूप प्रेम थिक? प्रेम मात्र शरीरी होइत अछि वा अशरीरी सेहो? एतत्सम्बन्धी अनेक प्रकारक प्रश्न हमरा मनमे लेखनक क्रममे उठैत रहल अछि आ ताही सभक उत्तर तकबाक प्रयासमे ई उपन्यास अपन कलेवरमे आयल अछि"।[25] प्रेम आ वासनामे ओतबे अन्तर छैक जतेक फिल्टर कएल गेल कलक पानि आ मोरीमे बहैत भभकैत पानि। वासनाक संयमित रूपकेँ प्रेम कहल जा सकैत अछि। प्रेममे खण्ड नहि होइत छैक। वास्तवमे जे प्रेमी अछि तकर हृदयमे घृणाक निवास नहि भऽ सकैत अछि।

जहाँ धरि सांसारिक वासनात्मक प्रकृतिक बुभुक्षाक प्रश्न छैक तकर परितृप्तिक प्रसंग विचार करबाक क्रममे विद्वान लेखक स्पष्ट रूपेँ कहैत छथि- "भूख होटलक मिलावटी वस्तुसँ बनल खाद्यसँ शान्त कएल जाइए आ सड़क कातक खोंचामे पड़ल धूरा भरल भोज्य पदार्थसँ मुदा घरक भोजन सुस्वादु होएबाक संग जते स्वास्थ्यप्रद होइए ओतेक बहरिया नहि। बुद्धिमान भारत पशुतापर विजय प्राप्त कएलाक बाद प्रकृति प्रदत्त क्षुधाकेँ शान्त करबाक लेल, मनुक्खकेँ पशु जकाँ क्षुधा-निवृत्तिक प्रयत्नमे एम्हर-ओम्हर बौअयबासँ बचयबाक लेल, मनुक्खकेँ मनुष्यताक मर्यादामे रहबाक लेल वैवाहिक-प्रथा चलओने

छल। नारीकेँ पतिव्रत धर्मक शिक्षा देने छल। पुरुषकेँ पत्नीव्रतक पाठ पढ़ओने छल। होटलक भोजनक अपेक्षा घरक भोजनपर जोर देने छल। मुदा एकमात्र पशुबलमे विश्वास करऽबला, जड़-विद्याकेँ जीवन-सुखक वास्तविक साधन बूझऽबला पाश्चात्य विद्वानक मान्यताक प्रभावमे आबि हमर भारतीय रमणी अपन आदर्शकेँ ठोकरएबेमे अपन गौरव मानलनि अछि आ घरक बलिष्ठ भोजनक परित्यागकऽ भनभनाइत माँछीवला बजरूआ चाटकेँ स्वास्थ्यकर मानि ओहि दिस लालायित दृष्टिसँ देखब शुरू कयलनि अछि। एहिमे कनेको सन्देह नहि जे चोख-चहटगर स्वादक कल्पनामे हुनका मुँहमे पानि भरऽ लगलनि अछि मुदा परिणाममे हुनका डाक्टरक मुँह देखब निश्चित छनि''।[26] शेखरजी एहि प्रसंग भारतीय मर्यादित वासनात्मक क्षुधाक प्राप्तिक वैवाहिक ढंगे अधिक मानवीय मानैत छथि। पशुवत मुक्त यौनाचार मानवक मर्यादाक अतिक्रमण थिक। सृष्टिक नियमक उल्लंघन करब अन्ततः पाप थिक। सामाजिक नियम स्थान ओ काल भेदेँ भिन्न होइत छैक।

एहि उपन्यासक आरम्भ होइत अछि एक गोट बतहाकेँ धीया-पूता द्वारा ईट-पाथर मारबासँ। आ बतहा कहैत अछि- 'हम प्रकृतिकेँ सिनेह करै छिऐ। प्रकृति रचना कएलक तेँ हम ओकर सृष्टिकेँ सिनेह करैत छिऐ। चान, सुरुज, तारा, पहाड़, नदी, हवा- संसारक सभ वस्तुकेँ हम सिनेह करैत छिऐ। हम सौंसे संसारकेँ सिनेह करै छिऐ। मुदा हमरा? हम संसारक आगाँ हाथ पसारै छी तँ पाथर भेंट्रैत अछि। आखिर पाथरकेँ लोक बुझैए की? हृदयक भीतरमे जे पाथर होइ छै ताहिसँ जँ केओ मारय तँ हमरा चोटो लागत, ऐ बहरिया पाथरकेँ हम गुदानिऐ किए।'[27]

बतहा अर्थात् निरंजन माय-बापविहीन गरीब घरक लोक अछि। छात्रावस्थहिसँ श्रमकेँ महत्व देनिहार निरंजनक अध्ययन, चिन्तन ओ मनन सम्बल छैक। ओ श्रमकेँ

सुख ओ शान्तिक कुंजी मानैत अछि। अपन मेधाक बलपर ओ प्राध्यापक भऽ जाइत अछि। ओकर शान्त-संयमित व्यक्तित्वक चर्चा छात्र-समुदायमे पसरि जाइत अछि। एही क्रममे कामिनी नामक एक पैघ बापक बेटी ओकरा दिस आकृष्ट होइत छैक। यद्यपि वाह्य स्तरपर ओकरा मोनमे कोनो विकार नहि छैक मुदा अनजानेमे ओ घिंचाय लगैत अछि। ओम्हर निरंजनो ओकरा पएबाक दिशामे ततेक व्याकुल भऽ गेल जे ओ ज्वर-पीड़ित भऽ जाइत अछि। लेखकक शब्दमे हुनकर अंग-अंग तेना काँपि रहल छलनि जे ताहीसँ हुनक शरीरक तापक अनुमान कएल जा सकैत छल। हम हुनकर ई हालति देखलियनि तँ भीतर-भीतर कानि उठलहुँ, कारण चारू भर नजरि खिरओलापर चोट्टे भाँज लागि गेल जे हुनका परिवारक नामपर भरिसक केओ नहि छनि। जे केओ छनि से नोकर टा। आ दुखितावस्थामे नोकर केहन सेवा-सुश्रूषा कऽ सकैछ तकर ज्ञान हमरा छले, हम विकल भऽ उठलहुँ। मुदा तैयो गुरुजीक पएर लग बैसि हम नोकरक प्रतीक्षा करऽ लगलहुँ।[28] कामिनीएक ओहिठाम ओकर उपचार होइत छैक आ कामिनीक दैहिक भोगक बाद ओ बताह भऽ जाइत अछि। आकांक्षाक अति संयम ओ दबाव ओकरा बताह बना देलकैक।

ई कथा स्वयं कामिनी अपन ननदिकेँ प्रेम ओ वासनाक अन्तर फुटएबाक आग्रहपर कहैत अछि। कामिनी प्रेमकेँ कलक स्वच्छ जल ओ वासनाकेँ नालीमे बहैत सड़ल पानि मानैत अछि। ओकरा अनुसारेँ हृदय जकरा एक बेर देल जाइत छैक तँ विवाहोपरान्त ओ ओकर पति सुदर्शनमे पति-पत्नीक सम्बन्धो नहि भऽ पबैत अछि। आ अन्ततः जखन सुदर्शनकेँ एहि बातक भाँज लागि जाइत छैक जे ओकर पत्नी पूर्वमे ओकरहि सहपाठी मित्र बतहा अर्थात् निरंजनक संग सम्बद्ध छलैक तँ ओ दुहूक बीचसँ हटि पुरीक यात्रापर विदा भऽ जाइत अछि।

एम्हर कामिनी आन्तरिक पीड़ाकेँ दबौलासँ रुग्ण

भऽ संसारसँ विदा भऽ जाइत अछि। ओना निरंजनकेँ जखन सुदर्शन ओ कामिनीक प्रसंग जानकारी होइत छैक तँ ओ दुहूक सुखमय जीवनक कामना करैत पहिनहि चुपचाप विदा भऽ जाइत अछि।

उपन्यास प्रेम ओ वासनाकेँ लऽ सर्वाधिक उद्‌वेलित अछि। ओकर चरित्र आरम्भसँ अन्त धरि व्याप्त छैक। चानक माय ओकर नेनपनेमे मरि गेल छैक। पिता सतत् प्रयासरत रहैत छथि जे ओकरा मायक अभावक बोध नहि होइक। जाहि कारणेँ ओ थोड़ेक जिद्दी भऽ गेलीह। मुदा ओ अपन जिद्दक बल पर कोनो ताहि तरहक काज नहि करैत अछि जे अकल्याणकारक होइक। ओ बतहाकेँ अपना ओहिठाम राखि ओकर मानसिक सुधार करबाक निश्चय करैछ। ओ सोचैत अछि जे बतहाक चित्त स्थिर भऽ गेने ककरो ने ककरो उपकार अवश्य हेतैक। के जानय जे ओ महान विद्वान बहराय। आ विद्वानसँ सहजे समाजक लाभ होइत छैक। चानक सोचबाक एकटा फराके ढंग छैक। ओकर मान्यता छैक जे- जे व्यक्ति समाजक एक व्यक्तिसँ प्रेम आ दोसरसँ घृणा करैत अछि आ तैयो प्रेमी होएबाक घोषणा करैत अछि से वस्तुतः प्रेमी नहि ढोंगी होइत अछि।

अपन एही सभ तरहक मान्यताक कारणेँ चान शुरू-शुरूमे धनंजयक प्रति अनाकृष्ट रहैत अछि। मुदा पछाति जखन धनंजय चान द्वारा बेर-बेर नकारि देलाक बाद चानक दैहिक प्राप्तिक कामनासँ अनासक्त भऽ ओकर पाथरक प्रतिमा बना ओकरे प्रति आसक्त भऽ जाइत अछि, ओकर पूजा करए लगैत अछि– "एक ऊँच चौकीपर ओकर प्रतिमा स्थापित छैक, जकर ऊँचाइ करीब 3 फुट छलैक। ओहि मूर्तिमे भुतिआएल धनंजय एक दोसर आसनपर बैसल छल। वास्तवमे ओतऽ पूजाक कोनो सामग्री नहि छल। धनंजय माथ उठऔने अपलक दृष्टिसँ ओहि मूर्तिक मुख-मण्डल निहारि रहल छल।'[29] आ मूर्तिकेँ धनंजय अपन मोनक बात कहए लागल। ओ

बाजल– 'हम तोरा पाबि लेलियह चान! निःसन्देह पाबि लेलियह। जा धरि हम छलक आश्रय लेने छलहुँ, हमरा तोहर देह आ तोहर रूपे टा सुझैत छल। मुदा आब हम छलरहित भऽ गेल छी तँ हमरा तोहर आत्मा एकदम स्पष्ट देखाइ दऽ रहल अछि। आत्माक प्रति चिरन्तन स्नेहकेँ छिनबाक शक्ति छैं ककरो ! ककरो नइं, तोरो टा नइं।'[30] चान धनंजयकेँ बतहाक संज्ञासँ विभूषित करैछ। धनंजय ओकरा बताह कहैत छैक। तखनहि कतहुसँ केओ गाबि उठैत अछि–

'अपने धुनि मे सभ बताह अछि,
ई बतहा संसार।' [31]

एहीठाम उपन्यासक चरम परिणति होइत छैक। उपन्यासक समस्त तत्व एहिमे विद्यमान छैक।[32]

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे एहि उपन्यास मध्य शेखर जी निरंजन–कामिनी, अखिल–चान एवं धनंजय–चान, तीन भिन्न–भिन्न प्रकारक प्रणय–कथाकेँ एक सूत्रमे गुम्फित कऽ प्रेम ओ वासनाकेँ व्याख्यायित करबाक चेष्टा कएने छथि। तँ एकरा मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहबामे कोनो प्रकारक सन्देह नहि रहि जाइत अछि। युग–युगसँ ओझराएल विषय प्रेम ओ वासनाकेँ सोझरएबाक चेष्टा एहि उपन्यासमे कएल गेल अछि।

एहि सम्बन्धमे डा० भीमनाथ झा कहैत छथि– 'चान आ धनंजय एहि उपन्यासक मुख्य पात्र छथि। एहि दुनूक माध्यमसँ उपन्यासकार ई सिद्ध करबाक चेष्टा कएलनि अछि जे ई संसार कौतूहलक स्थली थिक आ एहि ठामक प्रत्येक पात्र कोनो–ने–कोनो रूपमे अलौकिक अछि। तँ एकक दृष्टिमे जँ दोसरक स्वभाव, क्रियाकलाप, हाव–भाव आ बात–विचार अस्वाभाविक लगैत छैक तँ दोसरोक दृष्टिमे पहिलक व्यक्तित्व ओहने असहज बूझल जाइत छैक। एहिमे एककेँ छोड़ि प्रायः सभ पात्र सम्मत अछि किन्तु ओकर कोनो–ने–कोनो व्यवहार पर पाठककेँ अलौकिकताक दर्शन होइत छैक। वासना क्षणभंगुर थिक

आ प्रेम शाश्वत। प्रेमक सम्मुख धन-सम्पति, प्रतिष्ठा-अप्रतिष्ठा सभ तुच्छ भऽ जाइछ, हेय भऽ जाइछ।[33]

यद्यपि सम्पूर्ण उपन्यासमे प्रेम, वासना सदृश युग-युगसँ ओझरायल विषयकँ सोझरएबाक चेष्टा अछि मुदा एहि मध्य सामाजिक ओ राजनीतिक अनेकानेक समस्याकँ उठाओल गेल अछि ओ तकर समाधानक मार्गदर्शन कएल गेल अछि। जीवनमे कर्मक महत्त्व ओ आर्थिक संतुलन आदिक विश्लेषण कऽ सुख ओ शान्तिक मार्ग-दर्शनमे वस्तुतः प्राचीन भारतीय जीवन-दर्शनक व्यवहारिकताकँ देखाओल गेल अछि।[34]

एहि सम्बन्धमे सुधांशु 'शेखर' जीक निम्नलिखित उक्ति द्रष्टव्य थिक- 'अपनाकँ बताह स्वीकार करबामे तोरा दुःख एहि लेल भेलह जे तोँ अपनाकँ सभ्य समाज आ सभ्य परिवारक लोक मानै छह आ अन्नक अभावमे भूखे मरैत, वस्त्राभावमे पड़ल अर्धनग्न प्राणीकँ असभ्य घोषित कऽ देब तोहर बुद्धिमानी छऽ। तोरा सभ एही फोंक बुद्धिक अहंकारक वशीभूत भऽ अपन सभ्यता आ संस्कृतिक ढोलहो पीटै छह। मुदा दमगर भोजन आ दामी वस्त्रक मायामे पड़ि मानवता तोरा सदृश लोकक लगमे नै बैसल रहै छै। ओ ओही हृदयमे जा कऽ आसन जमबैए जे अपने भूखे रहिकऽ दोसराकँ जुडबैए, जे अपने नाङ्ट रहिकऽ दोसराक लाज निवारण करैए। तोँ सभ्य छह आ हम जेना जंगलसँ बझाकऽ आनल गेल छी, तोहर आँखिसँ यैह बुझाइए जे तोँ यैह कहऽ चाहैत छह, मुदा छुच्छ सभ्यताक पुजारी बनलासँ किछुओ ने होएतह। कने अपन पोशाकपर सोचि जाह, हम तोरा सन विकसित बुद्धिक दावा कएनिहार प्रत्येक व्यक्तिसँ कहै छिऐ-. की थानसँ कपड़ा फाड़ि आ तकरा टुकड़ी-टुकड़ीमे काटि आ फेर ओहि गुदड़ीकँ सीबिकऽ अंगपर राखि लेब सभ्यता छै? आ जे तनक लाजकँ झाँपऽ लेल सूइ आ तागक आश्रए लैए आ चेफड़ी पर चेफड़ी लगबैए से सभ्य नहि अछि?'[35]

एहिना आर्थिक संतुलनक विषयमे ओ लिखैत छथि– 'ततबे द्रव्य उपार्जित करबाक चाही जाहिसँ जीवनक आवश्यकताक पूर्ति भऽ जाए। आवश्यकतासँ अधिक कामना करब अनका अधिकारसँ वंचित करब थिक। आवश्यकतानुसार उत्पन्न कएलासँ अपन काजो चलि जाइए आ समय सेहो बचैए जकरा परोपकारमे लगाओल जा सकैए। आ जे मनुक्ख अपन आवश्यकताकेँ रबर जकाँ नमरओने चलि जाइए आ द्रव्य-संग्रह मात्रकेँ जीवनक मुख्य उद्देश्य बना लैए से मनुष्यताक खाहे जते गीत गाबय, मनुष्यताक परिभाषा पर्यन्त नै जनैए। ओकर यैह आसुरी प्रवृत्ति ओकरा साम्राज्यवाद दिस धकेलैत रहै छै, जकर मूलमे स्वार्थक जारनिक संग भऽ शोषणक आगि सुनगैत रहै छै आ जकरा चलते वर्ग संघर्षक भयंकर विस्फोट होइत रहैए। मनुक्खकेँ मनुक्ख बनल रहबाक सभसँ सोझ आ सरल उपाय यैह छै जे ओ अपन आवश्यकताकेँ सीमित राखय। जीबाक हेतु जतेक वस्तुक आवश्यकता प्रतीत होइ ताहिसँ अधिकक ओ उपयोग-उपभोग नै करए आ बेसी अनका लेल छोड़ि दै। ऐ सँ ई होयतै जे आनो लोक जीवन-निर्वाह मनुक्ख जकाँ कऽ सकत। भोगक लेल जीबाक नाम जीवन नै आ भोगक लेल मरबाक नाम जीविका नै। जीविकाक चिन्ता तँ मात्र जीवन धारण करबा लेल होएबाक चाही।'[36] अर्थ जीवनक हेतु अनिवार्य होइछ, मुदा से एक सीमामे। सीमाविहीन आर्थिक भूख कष्टक कारण होइत छैक। मनुक्खक मनुक्ख बनल रहबाक सभसँ सरल ओ सोझ उपाय यैह छैक जे ओ अपन आवश्यकताकेँ सीमित राखय।

चरित्र-चित्रणमे शेखर जी अत्यधिक सफलता प्राप्त कएने छथि। बतहासँ परिचय प्राप्त कएल जाय–

'हमरा जाय दएह'– भीत स्वरमे युवती बाजलि– 'अबेर भऽ रहल अछि।'

–जयबें ? बतहा कहलकैक– 'जो मुदा जायसँ पहिने ई तँ कहि दे जे तोँ कोन पुरुषकेँ सिनेह करै

छही ?'

'हाँ' टारबाक उद्देश्यसँ कनेक उत्साहित होइत युवती कहलकैक– 'अपन स्वामीकेँ।' 'तोँ 'हँ' कहलैँ ?' बतहा जेना फानि उठल– 'तोँ अपन पतिकेँ सिनेह करै छैँ माने पुरुषकेँ सिनेह करै छैँ आ जँ पुरुषकेँ करै छैँ तँ हमरो। ओ हठात युवतीकेँ अपन बाँहिमे लऽ लेलकैक आ ओकर ठोर चूमि लेलकैक।''[37]

एहि उपन्यासक प्रसंग अनिल कुमार मिश्र लिखैत छथि– ''एहि उपन्यासकेँ देखलापर शेखर जी एक सफल नाटकीय चिन्तक रूपमे सेहो परिलक्षित होइत छथि। तकर कारण थिक 'ई बतहा संसार'। आन उपन्याससँ हटि एक भिन्न प्रकारक उपन्यास थिक ई जे अत्युत्तमक कोटिमे आबि जाइत अछि। शेखर जी 'ई बतहा संसार'क सामाजिक पृष्ठभूमिपर ताना–बाना बुनने छथि एवं एहि मध्य प्रेम एवं वासनाक नीक विश्लेषण कएने छथि। मैथिली उपन्यास–जगतमे ई अपना तरहक एक स्वतन्त्र आ एसगर रचना थिक। एकरो अन्त तेहन नाटकीय ढंगसँ भेल अछि जे पाठक दुविधामे पड़ल रहि जाइत अछि जे धनंजय ओकर नीर निवेदनकेँ स्वीकार कएलकैक अथवा नहि।

शेखरजी रेडियो रूपकक 'फ्लैश बैक'क शैलीकेँ अंगीकार कए 'ई बतहा संसार'मे कतेको बेर नाटकीय मोड़ अनलनि अछि। कामिनी आ प्रोफेसरक सम्बन्ध चान आ बतहाक सम्बन्ध तथा कामिनीक पति आ बतहाक सम्बन्ध आदिकेँ प्रदर्शित करबामे ततेक नाटकीय मोड़ आएल अछि जे एकरा एक नाटककारेक रचनाक प्रतिफलन कहबाक चाही।'[38]

एहिना डा0 दुर्गानाथ झा 'श्रीश' जी लिखैत छथि जे– ''उपन्यास निश्चये प्रेम ओ वासनाकेँ नीक जकाँ व्याख्यायित नहि कए सकल अछि, कतोक घटना एहन अछि जे विश्वसनीय नहि कहल जाए सकैत अछि; लोहाक छड़सँ पीटल गेलहुँ पर निरंजनकेँ किछु नहि

होइत छैक एवं धनंजय चानक पुतरासँ विवाह करैत अछि। आधुनिक उपन्यासमे एहि प्रकारक वर्णनकेँ हास्यास्पदे कहल जा सकैत अछि, परन्तु समग्र रूपेँ विचार कएलासँ चरित्रक सूक्ष्म विश्लेषण, घटनाक रोचक वर्णन, स्थान–स्थानपर मानसिक ऊहापोहक चित्रण, विचारक प्रौढ़ता एवं भिन्न–भिन्न प्रकारक कथाक सन्तुलित संयोजन आदि सब दृष्टिएँ एकरा मैथिलीक श्रेष्ठ उपन्यास कहल जा सकैत अछि।[39]

## निवेदिता

सुधांशु 'शेखर' जीक ई पहिल उपन्यास थिक जे ओ मात्र एक्कैस वर्षक अवस्थामे लिखने छलाह।[40] ई उपन्यास 2 अक्तूबर 1983 ई0सँ 27 नवम्बर 1983 ई0 धरि धारावाहिक रूपेँ मिथिला मिहिरमे प्रकाशित भेल; मुदा शेखर प्रकाशन, पटना द्वारा 1996 ई0मे पुस्तकाकार रूपमे आएल।

एहि उपन्यासमे रोमांसक संस्पर्श अछि, मुदा से संयमित रूपमे– सीमाक उल्लंघन नहि भेल अछि। एहिमे उपन्यासकार शेखर जीक छवि क्रान्तिद्रष्टाक रूपमे परिलक्षित होइत अछि।

दुइ गोट सभ्रान्त परिवारक कथा एहि उपन्यासमे गुम्फित अछि। ओ दुहू परिवार थिक– मुजफ्फरपुर निवासी रमा शंकर बाबूक कन्या नीलिमा ओ दरभंगाक रइस बाबू आनन्द मोहनक बालक प्रफुल्ल चरण। रमाशंकर बाबूक पैतृक सम्पत्ति छनि। बंगला अंगरेजी ढंगक, जकरा रमाशंकर बाबू स्वयं बनबओने छलाह। ओहिमे खर्च तँ ओ अपने हाथे कएने छलाह, मुदा अपन पसेनाक कमाइ नहि छलनि आ ओहिमे लगाओल फुलवारीमे मौलश्रीक चारू भर ओरहुल आ सोनहूलक पाँती लागल अछि। फुलवारीकेँ कतेको कियारीमे विभक्त कएल गेल अछि। सभ कियारीकेँ बँटबाक अभिप्रायसँ मेहदीक घेरा देल

छैक। एक भागसँ दोसर भागमे जएबा लेल बाट छोड़ि देल गेल छैक। प्रत्येक बाटक आरम्भ आ अन्तमे लोहक मेहराव बढ़ा कऽ देल गेल छैक। जे लवंगलता, माधवीलत्ता, जूही प्रभृति लता सभसँ आवेष्टित भऽ कऽ बारीक प्रत्येक भागक नाम देल गेल छल आ तदनुरूपे फूल लगएबाक चेष्टा कएल गेल छल।'[41] कटिहारमे एकटा जूट मिल सेहो छनि। आनन्द बाबूकेँ सेहो बेस पैघ पैतृक सम्पति छनि। ओ एकटा प्रकाशन सेहो चला रहलाह अछि। नीलिमा भारतीयताक प्रबल पक्षधर ओ प्रफुल्ल चरण कवि साहित्यकार थिकाह।

रमाशंकर बाबू अपन कन्या नीलिमाकेँ विवाह योग्य बूझि दरभंगाक बाबू आनन्द मोहनक बालक प्रफुल्लसँ विवाहक लेल प्रस्ताव पठबैत छथि। अपन भावी पत्नीक शील-स्वभावकेँ विवाहसँ पूर्वहि जानि लेबाक इच्छुक प्रफुल्ल घरमे बिनु ककरो किछु कहने रमाशंकर बाबूक ओहिठाम भिखारिक वेशमे पहुँचैत छथि। गर्मीक दुपहरियामे रमाशंकर बाबू लगले सुतले छलाह कि हुनका ओहिठाम प्रफुल्ल मालिक-मालिक केर हाक लगबैत छथि। काँचे निन्न टुटबाक कारणेँ रमाशंकर बाबू खौंझा कऽ प्रफुल्लकेँ रोलसँ पीटि बेहोश कऽ दैत छथि। हल्ला सूनि नीलिमा अपना कोठलीसँ आबि देखैत छथि- शोणितसँ लथपथ एकटा भिखमंगा। ओ पिताकेँ संकेतसँ बुझबैत छथि जे कोनहुना जे ई बात प्रकाशित भऽ गेल तँ नाहक झमेला भऽ जाएत। तँ एकरा (भिखमंगाकेँ) एहीठाम कोनो डाक्टरकेँ बजा देखाओल जाए। सैह होइत अछि। भिखमंगा किछु दिनमे स्वस्थ भऽ जाइत अछि। नीलिमा ओकरा अपना अन्दरमे नोकरीपर राखि लैत अछि। ओ नोकर चरणक नामे रहए लगैत अछि- "तोरा हम की कहिकऽ सोर पाड़बह? 'चरण।' संक्षिप्त उत्तर छलैक। 'देखह चरण, तोरा ओहि नोकर सभ जकाँ नै रहबाक छह जेना आओर नोकर सभ छैक। तो आइसँ हमर खास नोकर भेलह। बुझलह! जे हम कहबहु सएह करऽ पड़तह से

धरि गीरह पाड़ि लएह। मुदा पहिने तोहर जे स्थिति छह ताहिसँ तँ त्राण भेटए।'[42] किछु दिन बितलाक बाद चरण एक दिन नीलिमाकेँ जीवनसंगी ताकि लेबाक आग्रह करैत छैक- 'हम नोकर छी। हमरासँ काज लेल जाए वा नै, कहायब तँ नोकरे।' दीर्घ निःश्वास लैत चरण कहलकैक- 'आइ एतऽ छी, काल्हि कतहु अनतऽ चलि जा सकै छी। आ नोकरपर सदा विश्वास नै कएल जा सकैए। तेँ हमर राय अछि जे अहाँ विवाह कऽ लियऽ। एहन साथीकेँ ताकि लियऽ जे सुख-दुख, सभ काजमे अहाँकेँ काज आबि सकए।'[43] जकर उत्तरमे नीलिमा आवेशमे आबि चरणक गाल पर जोरसँ एक थप्पड़ मारलकैक।'[44] आ चरण नामधारी नोकर प्रफुल्ल नीलिमाक चाट खाए उदास भेल अपन घर घुरि जाइत अछि। चरण दीर्घ निःश्वास फेकि नहुँए-नहुँए फाटकसँ बहार भऽ गेल आ जनसंकुल राजपथ पर पल भरिमे विलीन भऽ गेल।[45]

मुदा प्रफुल्ल चरण बेसी काल नहि टिकैत अछि। पुनः घरसँ विदा भऽ जाइत अछि। मुदा एहि बेर घर छोड़बाक कारण भिन्न छैक। ओ अपना पएर पर ठाढ़ होमए चाहैत अछि। तेँ पिताक देलहा सभ वस्तु घरमे छोड़ि एक खंड धोती मात्र पहिरने आ ओकरे आधा ओढ़ने ओ विदा भऽ जाइत अछि। प्रफुल्ल अपना संगमे की लेअए? कुर्ता अपन कमाइक नहि। चप्पल ओ अपन पारिश्रमिकक पाइसँ किनने छल, मुदा ओकर फीता जे टुटल छलैक तकर मरम्मतिमे घरक पाइ लागल छलैक। ओ चप्पल कोना लेअए? आ धोती? ओहो घरेक छैक। मुदा तकरा बिना तँ काज चलऽबला नहि छैक। फेर की होअए? ओकरा स्मरण भऽ अएलैक, जे ओकर पारिश्रमिकक किछु कैंचा दराजमे राखल छैक। ओ देखलक तँ दू रूपैया तेरह आना छलैक। धोतीक दाम बहरा गैलैक से मात्र ओ सन्तोषक अनुभव कएलक आ ओहि कैंचाकेँ पत्रक संग राखि देलक। डाँड़मे धोतीक अतिरिक्त ओ किछु नहि लऽ सकल।'[46]

कतेको दिन धरि भूखल-पियासल यात्रा करैत एक दुपहरियामे ओकरा चाउन्ह आबि जाइत छैक। ओ बेहोश भऽ खसि पड़ैत अछि। सुनसान बाट पर केओ देखनिहार नहि छैक। एतबेमे एक भिखमंगनी ओकरा कहुना उठाकऽ लगक पीपरक गाछ तर लऽ जा अपन बार्लीबला टिनही डिब्बाक पानिक छिटका मुँह पर दैत छैक। ओ होशमे आबि केहन-काहन पानि मुँह पर देबाक लेल भिखमंगनीकेँ डँटैत अछि। भिखमंगनी चल जाइत अछि। प्रफुल्ल किछु काल ओतहि पड़ल रहैछ। 'हओ भाइ, ऐ बेचारी पर किएक गुरड़ै छहक!'- प्रफुल्लक मोनक भावकेँ पढ़ि बटोही सभमे सँ एक बाजल- एकर कोन अपराध छैक। तोँ बेहोश भऽ कऽ बाटपर पड़ल छलह आ ई बेचारी तोरा उठएबाक चेष्टा कऽ रहल छलह। ई तँ संयोग रहैक जे हमरा लोकनि जुमि गेलहुँ। नै तँ ई दुब्बरि हाथसँ भला तोड़ा उठा पबितहु?''[47] एकर पश्चात् प्रफुल्ल बनारसक यात्रा पर विदा भऽ जाइत अछि।

गाड़ीमे एक गोट खद्दरधारी सहृदय व्यक्तिसँ भेंट होइत छैक। हुनकहि आग्रहपर बनारसमे हुनक डेरापर जाइत अछि। ओ महानुभाव एकगोट आलोचक थिकाह। हुनक नाम छनि सर्वदा नन्द शर्मा। एहिठाम बनारसमे लेखक ओ प्रकाशकक शोषित-शोषकक भावकेँ देखि प्रफुल्ल अपन साहित्यिक रचनाकेँ गंगाकेँ समर्पित कऽ कटिहारक लेल प्रस्थान कऽ जाइत अछि।

एम्हर नीलिमाक पिताक निधन भऽ जाइत अछि आ तेँ कटिहारक सोमनाथक जूट मिलक प्रधान नीलिमा भऽ जाइत छथि जकर प्रबन्धकक भार अपन एकगोट सम्बन्धी (दूरक सम्बन्धमे पितियौत) मनोजकेँ दऽ ओ स्वयं पटनामे डाक्टरी पढ़ए लगैत छथि। डाक्टरी पढ़ि समाज सेवा करबाक निर्णय आ विवाह नहि करब से पिताकेँ आरम्भेमे कहि देने छलथिन। हँ, प्रफुल्लक संग विवाहक चर्च पर ओ विचार अवश्य करए लागल छलीह। कारण हुनका प्रफुल्लक कविता नीक लगैत छलनि। मुदा बीचमे चरणक आगमन सेहो

एकगोट आकर्षणक कारण छल।

ओम्हर प्रफुल्ल बनारससँ कटिहार आबि ओही सोमनाथक जूट मिलमे चरणक नामसँ नोकरी करए लगैत अछि। एहिठाम ओकर ख्याति मजदूर नेताक रूपमे भऽ जाइत छैक। समयक क्रममे मिलमे हड़ताल भऽ जाइत छैक। मजदूर स्वयं नीलिमा देवीक संग वार्त्ता करबाक इच्छा प्रकट करैत अछि। मजदूरकेँ अनकर मध्यस्थता स्वीकार नहि छैक। नीलिमा देवी पटनासँ कटिहार अबैत छथि। मजदूरक नामी नेता चरण ओ नीलिमाक बीच वार्ता होइत अछि, मुदा असफल रहि जाइत अछि। मजदूर लोकनिमे मिल बन्द भऽ जएबाक चिन्ता पसरि जाइत छैक मुदा नीलिमा तकरा अपन कुशलतासँ सम्हारि लैत छथि। मिलक प्रबन्धनमे मजदूरक सहभागितासँ एकटा बोर्ड बनएबाक हुनक निर्णयसँ मजदूरो सभक मिलमे हिस्सा भऽ जाइत छैक। मजदूरक लाभ–हानिक दायित्व एही बोर्डपर (सोमनाथ कम्पनीक प्रबन्ध बोर्ड) होयत। लाभक कतेक हिस्सा मालिककेँ देल जाइक से सभ बोर्ड निर्णय करत। मालिकक हिस्सा देलाक बाद जे लाभांश होएत से मजदूरमे बोनसक रूपमे बाँटि देल जाएत।'[48]

प्रफुल्ल समझौता करएबामे असफल भेलाक बाद नोकरी छोड़ि पुनः बनारसक लेल विदा भऽ जाइत अछि। मुदा ओम्हर नहि जा भिखमंगनीक खोजमे ओहि सुनसान स्थान दिस विदा भऽ जाइत अछि, जतय भिखमंगनी ओकर बेहोशी दूर कएने छलैक। मुदा भिखमंगनी नहि भेंटैत छैक। भेटि जाइत छैक गाय–महींस चरौनिहार बच्चा सब। प्रफुल्ल ओकरा सभसँ गप्प–सप्प कऽ ओकरा सभक निरक्षरता दूर करबाक संकल्प करैत अछि। चरबाह सभ गायो–महींस चरबैत अछि आ पढ़ितो अछि। समयक क्रममे ओहि गामक वयस्को सभ पढ़ब आरम्भ कऽ दैत अछि। एहि तरहेँ समय व्यतीत होमए लगैत अछि कि एक दिन कोम्हरोसँ घुमैत–फिरैत भिखमंगनी सेहो आबि जाइत अछि। ओ भुखलि अछि। प्रफुल्लक खोपड़ीमे एके आदमीक

खएबा जोगर चाउर छैक। प्रफुल्ल अपने भूखल रहि ओकरा खोआ दैत अछि। भिखमंगनी बाजलि– 'हमरे लेल भुखले रहबऽ से जँ सोचै छी तँ इच्छा होइए अपन देह अपने नोचि ली। एना किए कएलऽ तोँ?'[49] दुनू एकहि ठाम रहि पढ़एबाक काज करए लगैत अछि। एक दिन भिखमंगनी जकर नाम बिजली छैक अपन पितिऔतक घरसँ अपन गहना चोरा अनैत अछि। प्रफुल्ल ओहि गहनाकेँ आपस दऽ अबैत अछि। एहि क्रममे केस–मोकदमा भऽ जाइत अछि आ प्रफुल्लकेँ जहल भऽ जाइत छैक। ओ बिजलीकेँ एहि बीच समय बितएबाक लेल बनारसक ओहि आलोचक महोदयक नामे पत्र दऽ पठा दैत अछि।

जहलसँ मुक्त भेलाक बाद प्रफुल्ल बिजलीक खोजमे बनारस जाइत अछि। मुदा ओहिठाम ओ नहि भेंटैत छैक। प्रफुल्ल मन मारि ओहिठाम रहय लगैछ। अनायास एक दिन बिजली प्रफुल्लक खोज करैत ओतए अबैत अछि। दुनूकेँ भेंट होइत छैक। एहि बीच समीक्षक महोदयक ओहिठाम कटिहारसँ पत्र अबैत छनि। सभ मजदूर यूनियनक अधिकारी लोकनि 'मजदूर संसार' नामक एकगोट साप्ताहिक पत्र चलबए चाहैत छलाह। ताहि लेल एकगोट योग्य सम्पादकक अपेक्षा छलनि। समीक्षक शर्माजी एहि हेतु प्रफुल्लकेँ कहलनि। पछाति ओ बिजलीक संग कटिहार आबि पत्रक सम्पादन करए लगैछ।

एक दिन बिजलीकेँ बेहोशी आबि जाइत छैक। कोनो मजदूर नीलिमा देवी (डाक्टरनी)केँ बजा अनैत छन्हि। ओ आबि कऽ देखैत छथिन। प्रफुल्ल फीस नहि दऽ इतस्ततः करैत रहि गेल। पाछाँ फीस देबाक लाथे गेबो कएल, तँ फीस दऽ घुरि आयल। विशेष कहि–पूछि नहि सकल।

मुदा नीलिमा ओहि बाटे अबैत–जाइत बिजलीसँ भेंट–घाँट करैत रहथि। आ बिजली सेहो प्रफुल्लक आज्ञा लऽ नीलिमा देवीक ओहिठाम आएल–गेल करए।

एकदिन नीलिमा प्रफुल्लक ओहिठाम पहिनेसँ

बिजलीक संग गप्प कऽ रहलि छलीह कि प्रफुल्ल सेहो उपस्थित भऽ गेल। परस्पर दुनूक हृदयमे एक-दोसराक प्रति वैचारिक बिहाड़ि बहि रहल छलैक। एतबहिमे नीलिमा प्रफुल्लसँ कहैत छथि जे आन तँ नहि मुदा ओ दुनू गोटे सहयात्री तँ भैए सकैत छथि। दुनू गोटाक उद्देश्य सेवे करब छनि। काजक स्वरुपे टा भिन्न छैक। एहि वार्तालापक क्रंममे नीलिमा अपन हाथ चरण अर्थात प्रफुल्ल चरणक हाथमे दऽ सहयात्रिणी जकाँ ठाढ़ भऽ जाइत छथि।

एहीठाम उपन्यास समाप्त भऽ जाइत अछि। नीलिमाकेँ समाजसेविकाक रूपमे भगिनी निवेदिताक समकक्ष ठाढ़ कऽ उपन्यासकार समाजकेँ एकगोट स्पष्ट, प्रभावी ओ सफल सन्देश देबामे सफल भेलाह अछि।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे उपन्यासमे दुइ संभ्रान्त पारिवारिक कथा गुम्फित अछि जे दरभंगा, मुजफ्फरपुर, कटिहार आ बनारस धरि विस्तृत अछि। शेखर जी समाजमे प्रचलित निर्धन आ धनवान वर्गक विभेदकेँ उद्‌घाटित करैत वर्ण-वैषम्य आ औद्योगिक प्रबन्धमे मजदूर वर्गक सहभागिता सदृश ज्वलन्त प्रश्नकेँ उठौलनि जकर प्रासंगिकता वर्तमान परिवेशमे उद्‌भूत भेल अछि।

कविकेँ 'क्रान्तिद्रष्टा' अर्थात् 'भविष्यद्रष्टा' कहल गेल अछि। कवि साहित्यकार युगद्रष्टा-युगस्रष्टा होइत छथि जे सामान्य लोक नहि देखैत अछि, संगहि ओ भविष्यक स्पष्ट चित्र देखबामे सेहो सक्षम होइत छथि। एहि दृष्टिकोणसँ एहि उपन्यासमे शेखरजीक भविष्यद्रष्टाक छवि समुपस्थित होइत अछि। आइ भारतमे के कहए सम्पूर्ण विश्वमे 'चरबाहा विद्यालय' ओ 'वयस्क शिक्षा'क मुक्त कंठसँ स्वागत कएल जा रहल अछि। अनेक ठाम प्रयोग रूपमे एकर संचालनो भऽ रहल अछि। मुदा शेखरजीक दृष्टि आइसँ वर्षो पूर्व एहि परिस्थितिकेँ देखि चुकल छल। उपन्यासक नायक प्रफुल्ल चरण चरबाहा सभकेँ चरबाही करितो पढ़ाएब आ कालक्रमे वयस्को लोकनिकेँ शिक्षित करबाक कार्य एहि तथ्यक प्रमाण

कहल जा सकैत अछि। 'भिखमंगनी नहि भेटलैक, नहि सही, विद्याक याचक तँ भेटि गेलैक? की ओ बधुआकेँ निराश करत? की तिमिरपूर्ण मानस-मन्दिर सभमे ज्ञानक दीप बारलासँ ओकर हृदयक आलोक द्विगुणित नहि भऽ उठतैक? चरण मोने-मोन संकल्प कएलक जे ओ एहि गामक निरक्षरता दूर करबाक यथासाध्य प्रयत्न करत।'[50] आ, सैह भेल- "चरणक रहबा लेल खढ़क खोपड़ी निर्मित भेलैक। छौंड़ा सभकेँ बैसक लेल मचानक बेंच बनाओल गेल। चरणक आहारक निमित्त गामक प्रत्येक घरसँ सीधा आबऽ लगलैक। दू-एक दिनक बाद चरणकेँ ई प्रबन्ध नीक नहि लगलैक। कारण ई जे दोसराक अन्नसँ अपन पेट भरब ओकरा अधलाह लगैत छैक, मुदा ग्रामीणक प्रबल आग्रहकेँ टारब ओकरा लेल असंभव भऽ गेलैक।

पाठशाला दू बेर चलाबऽ पड़लैक। एक तँ दिन आ दोसर रातिमे। दिनमे छौंड़ा सभ पढ़ैत छल आ रातिमे वयस्क लोकनि।"[51]

एहि उपन्यासमे रमाशंकर बाबू तँ वास्तवमे बाबूए छलाह। गरीब-निरीहपर हुनका कनेको ध्यान नहि छलनि- "एहि धधकैत दुपहरियामे पेटक चिन्तासँ विवश भऽ गरीब, धधकैत धरतीपर तरबामे फोंका उगि अएबाक बिना परबाह कएने एतऽ-ओतऽ आबिये जा रहल अछि। हुनका ई चिन्ता कहाँ जे ओ बोनिहार मोन दू मोनक बोझ उघबाक लोभमे दिन-राति लगक चौबटिया पर टकटकी लगओने रहैत अछि। एखन कोन स्थितिमे होएत। हुनका ई चिन्ता कहाँ जे रिक्शाबला सभकेँ भोरसँ हकमैत रिक्शा हंकैत दू बजबापर आबि गेलैक अछि मुदा ततबा कैंचा नहि भेलैक अछि जे पाभरि सातु खाकऽ बेचारा दिन काटि सकैक। अपितु दूरसँ अबैत रिक्शाक टनटन स्वर सुनि कऽ बाबू साहेब ई सोचि रहल होएताह जे रिक्शाबला दृष्टिक सोझामे रहैत तँ बन्दूकमे गोली चढ़ा कऽ दागि दितिऐक। कारण जे घंटीक ओ स्वर हिनक निन्दमे बाधक जे प्रतीत

भऽ रहल छनि।'[52] सामन्तवादी विचारधारा स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित होइत अछि।

आ, एही परिवेशक प्रभावक कारणेँ श्रीसम्पन्न रहितहुँ बिजली भिखमंगनी भऽ जाइत अछि आ ओकर रूपे ओकर व्यथा कथा कहैत अछि–

''भिखमंगनी के छलि, ओ नितान्त पन्द्रह–सोलह वर्षक छौंड़ी छलि। आकृति कुरुप नहि, मैलयुक्त अवयव, दुर्गन्धपूर्ण शरीर, परिधानक एक साड़ी मात्र जे दृढ़ नहि, रंग धरतीक, आभूषण गरामे नकली मूंगाक माला, कानमे कनैलक फूल, हाथमे रंग उड़ल लहठी– सेहो कैकठाम लाहल। सम्पति–पानि पीबाक लेल टीनक एकटा डिब्बा, खएबाक लेल आलुमीनियमक पचकल बाटी, गुदड़ीक एकरा पोटरी, जकर खूंटमे भीखमे मांगल किछु अन्न, सेहो मिश्रित।''[53]

शेखरजी एहि उपन्यासमे ग्राम्य प्रकृतिक ठाम–ठाम चित्रण कएने छथि–

''जेठक दुपहरिया, तपैत धरती, तबधैत आकाश, दूर–दूर धरि कंपैत जकाँ खेत, मरीचिका, दृष्टिमे एकटा वैह बड़क गाछ। दूर, अत्यन्त दूरपर गाछीक आभास टा। नहि तँ पाँतरे–पाँतर। बड़क तरमे टिकल बटोही लोकनिक अतिरिक्त कोनो प्राणी नहि।''[54]

शेखर जी मूलतः नाटककार छलाह आ तँ नाटकीय शैलीमे एहि पोथीकेँ प्रस्तुत कएलनि अछि। ठीक जेठक दुपहरियामे एक भिखमंगाक भेषमे प्रफुल्ल कन्याक पिताक बंगलापर पहुँचैत अछि आ भीख मँगबाक अभिनय करैत अछि। मुदा भीखक बदलामे ओकरा हंटरक मारि पड़ैत छैक तँ ओ मृतप्राय भए उठैत अछि। मुदा कन्याक प्रयाससँ ओकर चिकित्साक प्रबन्ध होइत अछि आ ओ बँचि जाइत अछि। तकर बाद ओ कन्याक निरीक्षण करैत अछि। एहि तरहेँ कथाक आरम्भ भीख मँगबासँ होइत अछि। तँ ई स्पष्ट अछि जे 'निवेदिता' उपन्यास नाटकीयतेसँ आरम्भ होइत अछि। पश्चात् नाटकीय मोड़ विशेष भेटैत अछि। जेँ

कि ओहि कन्यामे लक्ष्मी-पुत्री होएबाक घमंड छलैक तैं अन्तमे ओ युवक मजदूर वर्गमे समाहित भए जाइत अछि आ एक विपक्षी नेताक रूपमे ओही कन्यासँ लड़ियो लैत अछि। एहि क्रममे एक दिन एहनो अबैत अछि जे कन्या चरण नामक प्रफुल्लकेँ चिन्हैत अछि जे ओकर बड़ प्रिय साहित्यकार छलैक तथा अपनाकेँ ओकर चरणपर निवेदित कए दैत अछि।[55] एहि प्रकारेँ देखैत छी जे शेखरजी नाटकीय शैलीमे एहि पोथीकेँ प्रस्तुत कएलनि अछि।

उपन्यासकार भावुकतामे नवयुवकोचित आदर्शवादिता एवं कथा-विन्यासमे नाटकीयता आनि अत्यन्त रोचक शैलीमे उपस्थापन कएलनि अछि।[56]

## अंगरेजी फूलक चिट्ठी

'नारी विमर्श'क विषयमे मिथिला मिहिर (1960)क महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। अंगरेजी फूलक चिट्ठी, बहिनाक वियोग, सहजोपीसीक चरखा, सोनदाइक सोहाग आदि स्तंभ नारी-विषयक ज्वलंत आ प्रभावी लेखन थिक। आश्चर्य किंवा विशेष महत्त्वक बात ई जे एकर सभक लेखक नारी नहि अपितु पुरुष छथि।[57] मैथिली लेखनमे महिला लोकनि ठीके एहिसँ पूर्व ओतेक रूचि नहि लैत छलीह। मिथिला मिहिर एहिमे तेजी अनबाक लेल अनेक प्रकारक प्रयास कएलक। परिणाम ई भेल जे बादमे कतोक लेखिका आगां अएलीह मुदा एहि क्रममे कतेको गोटे छद्मनामसँ मैथिली लेखनकेँ अपन कलमक माध्यमसँ स्त्रीगणक रूपमे दर्शओलनि।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी कहैत छथि जे- 'हम अपन पत्नी शेफालिका देवीक नामसँ अपन उपन्यास 'तऽर पट्टा उपर पट्टा' छपबौलहुँ तकर पाछां उद्देश्य ई छल जे स्त्रीगण समाजमे पढ़ल-लिखल महिला लोकनि एहिसँ प्रोत्साहन पाबि लेखनक दिशामे अग्रसर होथि। अंगरेजी फूलक नामसँ जे स्तम्भ हम चलौने छलहुँ तकरहु पाछां हमर यैह उद्देश्य छल। ओहो हमरे लिखल रहैत छल। एतय हम

स्पष्ट कऽ दी जे स्त्रीगण समाजक स्तंभमे पुरुषे लोकनि साड़ी-चूड़ी पहिरि महिला बनलाह मुदा बादमे जा कऽ हमर उद्देश्यकेँ सफलता भेटल आ स्वयं महिला लोकनि लेखनक दिशामे प्रवृत्त भेलीह।[58]

'अगरेजी फूलक चिट्ठी' स्तंभ साप्ताहिक मिथिला मिहिरमे 30 अक्टूबर 1960 ई0सँ 30 जुलाइ 1961 ई0 अंक धरि लगातार आ तकर बाद 20 अगस्त 1961 ई0क अंक मिलाकऽ कुल 41 अंकमे छपल छैक। मुदा जैँकि ई नारी समाजक स्तंभक रुपमे लिखल गेल छल तेँ एकरा ओतेक महत्त्व नहि देल गेलैक। मुदा जखन स्व0 हंसराज 1991 ई0मे वैदेहीक उपन्यास विशेषांक बहार कएलनि तँ ई स्पष्ट लिखलनि जे मिथिला मिहिर कुल 17 गोट उपन्यास प्रकाशित कएलक, जाहिमे स्तंभक अन्तर्गत अंगरेजी फूलक चिट्ठी, सहजोपीसीक चरखा एवं बहिनाक वियोगकेँ सफल उपन्यास मानइत छी। एकरहि आधार लऽ तथा शेखर जीक आत्मकथाक कथ्यक आधार लऽ शेखर प्रकाशन 3 नवंबर, 2003 ई0मे 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी' प्रकाशित कएलक, जकर लोकार्पण डा0 आनंद मिश्र 2003 ई0केँ चेतना समितिक विद्यापति पर्वक सेमिनारमे उपस्थित विद्वान लोकनिक समक्ष कएलनि।

पत्रात्मक शैलीमे लिखल गेल ई उपन्यास सेहो शेखर जीक अद्वितीय क्षमताक परिचय दैत अछि। दू गोट सखी जे 'अंगरेजी फूल'क नामसँ आपसमे मीता लगओने अछि से पत्रक माध्यमसँ एक-दोसरासँ संपर्क रखैत अछि। एकटा सखी गाममे रहैत अछि आ दोसर पटनामे। दुनू सखी एक दोसराकेँअपन व्यक्तिगत सुख-दुख, गामक हाल-समाचार, शहरी विकासक संग-संग नित्य नवीन घटि रहल घटनासँ अवगत करबैत रहैत अछि। मुदा एहि पत्रेक माध्यमसँ अनेक चरित्र ठाढ़ भऽ जाइत अछि जे एकटा औपन्यासिक गढ़निकेँ मजबूत आधार प्रदान करैत अछि-

'हय अंगरेजी फूल! एहिठाम अपन मोनक बात ककरा कहिऐक। चारूकात तँ मगहिनी सभ रहैत अछि।

सभ 'कहे हलइ', 'द हलइ', 'हलू, हलऽ', 'ही'-'हू' बजैत छइ। हय, कोनो-कोनो वस्तुक तिसना भऽ जाइत अछि, बेसी काल घोरजाउड़ि खएबाक सेहन्ता होइत अछि। ई सभ कतऽसँ आओत?'

पत्रक माध्यमसँ एहिठाम स्पष्ट कएल गेल अछि जे दूर देशमे रहनिहार अपन भाषा बजबा-भुकबाक लेल कोना बेलल्ला भऽ जाइत अछि। तहिना अपन गाम-घरक वस्तु खएबा लेल मोन सधा जाइत छैक। तकर वर्णन रोचक आ वर्णिक जकाँ भेल अछि।

पत्रक माध्यमसँ साहित्यिक विधा प्रस्तुत करबाक परिपाटी रहल अछि। 1969 ई0मे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क लिखल लघु उपन्यास 'दू पत्र'मे मात्र दू टा पत्र अछि। जाहिमे औपन्यासिक आवृति प्रस्तुत कएल गेल छल। एहि मादे व्यासजी दू पत्रक भूमिकामे लिखैत छथि जे-'मैथिली साहित्यमे ई एक नव प्रयोग थिक'।[60]

एहिना 1986 ई0मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत डॉ0 सुभद्र झा द्वारा लिखित 'नातिक पत्रक उत्तर' पत्र शैलीमे लिखल गेल छल। निबंध संग्रह मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। मुदा एहिठाम ध्यान देबाक बात ई अछि जे 1960 ई0मे लिखल गेल 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी' समीक्षकक दृष्टि पथपर एहि कारणेँ नहि आबि सकल जे ई मिथिला मिहिर साप्ताहिकमे स्त्रीगण समाज स्तंभक अंतर्गत पत्रक रूपमे प्रकाशित भेल छल।

आब जखन कि शेखर प्रकाशन द्वारा 2003 ई0मे पुस्तकाकार भऽ ई सभक सोझां आएल अछि तँ बुझना जाइछ जे ई मात्र दू गोट बहिनाक पत्राचारे नहि, समग्रतामे एकटा सफल उपन्यास थिक, जाहिमे औपन्यासिक सभ कला अपन पूर्ण निखारक संग प्रस्तुत भेल अछि। एहि उपन्यासक विलक्षणता ई अछि जे दुनू सखी अपन पत्रक भाषेसँ समस्त औपन्यासिक

चरित्रकेँ गढ़नि प्रदान कएलक अछि जे कि एहिसँ पहिने मैथिली साहित्यमे नहि भेल छल।

जेँ कि शेखर जीमे नाट्याभिव्यक्तिक अद्भुत क्षमता रहनि तेँ ओ 'अंगरेजी फूलक चिड्ठी'केँ पत्रात्मक भाषामे एकटा उपन्यासक रूप दऽ सकलाह। अतः हम ई कहि सकैत छी जे शेखर जीक ई कृति मैथिलीकेँ तेहन उपहार देलक अछि जे सदा स्मरण राखल जाएत।

## संदर्भ सूची


1. उगनाक दयादवाद – सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ– 3.
2. गद्य सौरभ – सं० डा० देवेन्द्र झा, भूमिका – डा० शैलेन्द्र मोहन झा।
3. शास्त्रीय निबन्ध – श्री जगदीश मिश्र, पृष्ठ – 19.
4. गद्य सौरभ – सं० डा० देवेन्द्र झा, पृष्ठ – 138.
5. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ –48.
6. तत्रैव।
7. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डा० दिनेश कुमार झा, पृष्ठ – 272-73.
8. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 52.
9. तत्रैव।
10. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ – 12 सँ
11. परिचायिका – डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ–140सँ।
12. तत्रैव।
13. सुधांशु 'शेखर' चौधरी– शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ– 272.
14. परिचायिका – डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ –140 सँ।
15. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ – 12सँ
16. मैथिली साहित्यक इतिहास – डा० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ – 315
17. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ –53.
18. तत्रैव।
19. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डॉ० दिनेश कुमार झा, पृष्ठ – 274.
20. मैथिली साहित्यक इतिहास – डा० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश',

पृष्ठ - 316.
21. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 13.
22. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास - डॉ० दिनेश कुमार झा, पृष्ठ - 280.
23. मैथिली भाषा आ साहित्य - डा० बाल गोविन्द झा 'व्यथित', पृष्ठ - 293.
24. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ-53.
25. ई बतहा संसार - सुधांशु 'शेखर' चौधरी - आमकथ्य।
26. तत्रैव, पृष्ठ - 47.
27. तत्रैव, पृष्ठ - 2.
28. तत्रैव, पृष्ठ - 62.
29. ई बतहा संसार - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 239.
30. तत्रैव।
31. तत्रैव, पृष्ठ- 240.
32. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 51.
33. परिचायिका - डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ - 140.
34. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 49.
35. ई बतहा संसार - श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 20.
36. तत्रैव, पृष्ठ - 52.
37. तत्रैव, घृष्ठ - 2.
38. नाट्यकार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ- 75-76.
39. मैथिली साहित्यक इतिहास - डा० श्री दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृष्ठ - 316.
40. निवेदिता - सुधांशु 'शेखर' चौधरी - प्रकाशकीयसँ।
41. निवेदिता - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ- 17-18.
42. तत्रैव, पृष्ठ - 10.
43. तत्रैव, पृष्ठ - 11.
44. तत्रैव।
45. तत्रैव, पृष्ठ - 12.
46. तत्रैव, पृष्ठ - 34.
47. तत्रैव, पृष्ठ - 40.
48. तत्रैव, पृष्ठ - 91.
49. तत्रैव, पृष्ठ - 104.
50. तत्रैव, पृष्ठ - 98.
51. तत्रैव, पृष्ठ - 99-100.
52. तत्रैव, पृष्ठ - 1.
53. तत्रैव, पृष्ठ - 44.

54. तत्रैव, पृष्ठ - 41.
55. नाट्यकार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ - 76-77.
56. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, संकलन-सम्पादन-शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 14.
57. नारी विमर्श आ मैथिली पत्रकारिता - डा० नीता झा, समय-साल (त्रैमासिक) : फरवरी- मार्च पृष्ठ- 62- 2005, स० शरदिन्दु चौधरी।
58. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, स० शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 26
59. 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी'- सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ-33
60. दू पत्र - उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास' - दू शब्दसँ



## नाटक

वाणी एवं इंगितक अतिरिक्त भाव एवं विचारक अभिव्यंजनाक एक तेसर प्रकार अनुकरण वा नकल थिक। बाल्यावस्थहिसँ लोक नकल करब सिखैत अछि एवं ओहिमे सफल भेलापर आनन्दित होइत अछि। वस्तुतः मानवक प्रारम्भिक शिक्षाक आधारो अनुकरणे थिक। ई अनुकरण ओकर भाषा, वेष एवं व्यवहारक शिक्षाक लेल अनिवार्य साधन थिक। यैह अनुकरण वा नकल करबाक प्रवृति जखन नाट्यक रूप धारण कए लैत अछि तँ रूपकक बीजारोपण होइत अछि आ यैह नाट्य-कलाक आरम्भ थिक। अतएव, कोनहु अवस्थाक अनुकरणकेँ नाट्य कहल जाइत अछि।[1]

स्वरूपक आधारपर काव्यक मुख्यतया दुइ भेद होइत अछि– श्रव्यकाव्य एवं दृश्यकाव्य। दृश्यकाव्य ओ काव्य थिक जे देखल जा सकए जाहिमे नाट्यक प्रधानता हो आ जकरा देखलापर विशेष प्रकारसँ रसक अनुभूति हो तथा जकर अभिनय कएल जा सकए। एहि दृश्यकाव्यकेँ आचार्य लोकनि 'रूपक' नाम देलनि अछि। रूपकमे अभिनय कएनिहार कोनो दोसर पात्रक रूप धारण कए ओकरे अनुसार हाव-भाव एवं बजैत अछि। प्राचीन नाट्याचार्य लोकनि रूपकक दस प्रकारक उल्लेख कएलनि अछि– नाटक, प्रकरण, भाण, प्रहसन, डिम, व्यायोग, समवकार, वीथी, अंक एवं ईहामृग।[2] एहि सभ रूपकमे नाटककेँ प्रधान मानल गेल अछि। नाट्याचार्य लोकनि एकरा नाट्य-प्रकृति सेहो कहलनि अछि। अतएव, एकरा सभ रूपकक प्रतिनिधि बुझबामे कोनो आपत्ति नहि अछि। नाटकक यैह सर्वग्राहिणी प्रकृतिक कारण आब 'नाटक' शब्द 'रूपक'क स्थानापन्न भऽ गेल अछि। वस्तुतः नाटक शब्दसँ दृश्य काव्यक समभेदक बोध भऽ जाइत अछि।[3] भारतीय जतेक रूपक उपलब्ध अछि, ओकर नाम

तथा पाण्डुलिपिक पुष्पिकामे प्रत्येक रूपककेँ नाटक कहल गेल अछि, यद्यपि नाट्यशास्त्रक शब्दावलीमे एकर अभिधा किछु दोसरे होएत।[4]

वस्तुतः मानव-जीवनकेँ संसाररूपी विशाल एवं विस्तृत रंगमंचपर होमए बला एक नाटके कहल जाइत अछि। नाटक एहि विशाल जीवन-नाटकक एक लघु गद्यात्मक अनुकरण थिक। अतएव वास्तवमे नाटकक उत्पत्ति मानव-जीवनक उत्पत्तिक संगहि संबद्ध अछि एवं मानव-जीवनक विकासक संगहि क्रमशः ओहो विकास कएने होएत। आदिमानव अपन जीवनकेँ आनन्दपूर्ण बनएबा लेल विविध माध्यम बनौने छल होएत। एहि क्रममे रूप-रंग, गति-संचलन, ध्वनि-नादक प्रेरणासँ आकस्मिक संचालन एवं नादक जन्म भेल होएत। ध्वनि एवं नाटकक आधारपर संगीतक एवं गति संचालनक आधारपर नृत्यक विकास भेल होएत। यैह कालान्तरमे विकसित भए ताल-लयाश्रित नृत्य एवं फेर भावाश्रय नृत्यक रूप धारण कए सफल होएत। बादमे नृत्यक एकरूपता एवं गतिसाम्यक संगहि अन्य भावक स्वाभाविक अभिव्यक्तिक समन्वय सेहो भेल। भाषा-ज्ञानक कमीक कारण इंगित, मुद्रा एवं विभिन्न प्रकारक भंगिमा द्वारा सम्भवतः अभिनयक विकास भेल होएत।[5]

मोटामोटी इएह जे नाटकक परम्परा प्रायः आदिमानवक आखेटक समय प्रदर्शित वीरता, भय तथा विस्मय आदिक स्वांगपूर्ण अनुकृति, वीरपूजा, स्मृति उत्सव, ऋतु परिवर्तन, पर्व आदिक विभिंन्न अवस्था सभसँ क्रमशः नृत्य, नृत्य-नाटक, नृत्य-संवादयुक्त नाटक सभसँ विकास करैत, कालान्तरमे नाटक-कला अपन पूर्णताकेँ प्राप्त कएने छल होएत।[6] अतएव नाटकक उत्पत्ति विभिन्न नृत्य एवं अभिनयक मूलमे वर्त्तमान छल।

भारतमे सेहो अन्य देशक सदृश नाटकक एक मुख्य जड़ि एहन आरम्भिक गीत-काव्यमेसँ निकलल अछि, जकर वेदसँ आरम्भ भेल छल एवं जे उपाख्यानमे

एवं पौराणिक बौद्ध एवं जैन साहित्यमे व्याप्त रहल। जाहि प्रकारक कथानकक प्रमुखता भेलासँ गीतिकाव्य सभसँ पुराण साहित्यक विकास भेल, तहिना अभिनय एवं वार्तालापक प्रमुखता भेलासँ गीति-काव्यक नाटकीय तत्वसँ नाटकक विकास भेल। संगहि भारतमे नाटकक मूल धार्मिक सम्प्रदायमे सेहो निहित रहल अछि। वेदक कर्मकाण्ड साहित्यमे अनेक एहन धार्मिक अनुष्ठानक चर्च अछि जकरा मोटामोटी नाटक कहल जा सकैत अछि। दोसर प्राचीन नाटक सभक आरम्भ मांगलिक नान्दीसँ होइत छल। एहिसँ सेहो ई प्रमाणित होइत अछि जे अनुकरणात्मक नृत्य एवं एहिसँ उद्भूत अभिनय कला धार्मिक सम्प्रदायक एक तात्विक उपादान रहल अछि।[7] तेँ ई कहल जा सकैत अछि जे भारतमे नाट्य कलाक उद्भव प्रायः सभसँ पहिने भेल।

मनन-चिन्तन कएल जाइछ, रूप-किरण देखल जाइछ, काव्य-साहित्य पढ़ल-गुनल जाइछ। किन्तु चिन्त्य, दृश्य, श्रव्य, पाठ्य यदि कतहु एकत्र होइछ तँ नाट्यहिक रंगभूमिमे; जकर प्रशस्ति मे विद्यापतिक युक्तियुक्त उक्ति अछि –

"विद्यानाटक-संज्ञिका भगवती विश्वोपकार क्षमा।"

एहि सर्वोपकार क्षमा नाट्य विधाक उपासनाक मिथिला बरोबरि सिद्धपीठ होइत आएल। कालिदास-भवभूति प्रभृति प्राचीन नाटककारकेँ छोड़ियो देल जाए तँ मध्यकालीन अनर्घ-प्रसन्न अमृतोदयी मुरारि-पक्षधर-गोकुलनाथ आदिक नाम सिद्ध-प्रसिद्ध अछि। मैथिली नाटकक प्रशस्तता तँ ज्योतिरीश्वर-विद्यापति, उमापति, नन्दीपति-रामदास-वंशमणि-शंकरदेव-मल्लनृपति प्रभृतिक शतावधि रचनासँ सुविदित अछि।[8] नाटकक एहि प्रवाहिनीमे शेखर जीक नाटक लोकानुरंजन करएबामे सर्वथा समर्थ भेल अछि।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी अपनाकेँ मूलतः नाटककार मानैत छ्लाह। हुनकहि श्रीमुखसँ निम्नलिखित शब्द द्रष्टव्य थिक- "नाटक हमर रक्तमे भीजल अछि। हमर पितामहक

समयमे हुनक भ्राता लोकनि नाट्क खेलाइत छलाह। हमर पित्ती लोकनि सेहो आ संग-संग हम आ हमर भ्राता लोकनि सेहो दुर्गा पूजा अथवा सरस्वती पूजामे बाल्येकालसँ नाट्क खेलाइत रहलहुँ अछि। हमर परवर्ती पीढ़ी सेहो नाट्क दिस प्रवृत्त अछि। अन्तर एतबे जे हमर पूर्ववर्ती वा परवर्ती अभिनेता टा भए रहि गेलाह, मुदा हमरा विशेष परिस्थिति नाटककार बना देलक।[९]

अपन नाट्क द्वारा मैथिली रंगमंचकेँ सांस्कृतिक स्तरपर ऊँच उठएबाक हिनक अभिलाषा छलनि। समकालीन युगक परिस्थिति शेखर जीकेँ मैथिली नाट्य-रचना दिस प्रेरित कएलकनि। ओ स्वयं कहने छथि- "प्रयोग जीवनमे कोनो नव वस्तु नहि अछि। विभिन्न प्रयोगसँ जहिना जीवन गतिशील बनैत अछि तहिना निरन्तर प्रयोगसँ साहित्य आगाँ बढ़ैत अछि। लोक हमरा प्रयोगधर्मा नाटककार बुझैत अछि अथवा कोनो आनधर्मा, ई लोकक काज थिकैक। हम अपन नाटकमे क्रमशः नाट्य-शिल्पमे नवीनता अनबाक प्रयास करैत रहलहुँ अछि। हमर अधिकांश मैथिली नाटकमे नाट्य शिल्पक टटका स्वाद भेटल। यैह कारण थिक जे हम बुझैत छी जे हमर नाटक लोकप्रिय भेल अछि। एकटा बात हम फेर कहैत छी जे लोक हमरा सम्बन्धमे केहन विचार रखैत अछि तकर चिन्ता हमरा कहियो नहि भेल। हम मात्र कार्यमे विश्वास करैत रहलहुँ अछि। मैथिलीक क्षेत्रमे कमसँ कम नाटककारहुक रूपमे तँ परिगणित कएल जाइत छी।[१०] ओ ने तँ संस्कृत आ ने तँ पाश्चात्य नाट्य-शैलीक अनुकरण कएलनि आ ने तँ बंगला नाट्यक समान पश्चिमी नाट्य-शैलीक अनुपालन कएलनि। ओ समन्वयात्मक बुद्धि लऽ कऽ मैथिली नाट्य-जगतमे अवतरित भेलाह। ई कहबामे कनेको अत्युक्ति नहि होएत जे हुनक रचनाशैलीमे वाह्य रूपसँ परिवर्तित भेल, किन्तु ओकर आत्मा भारतीय वा मैथिल परिवेशक अछि। ई मैथिलीमे युगप्रवर्त्तक कलाकार रहथि। ई मैथिली नाट्य साहित्यकेँ कलात्मक रूप दऽ कऽ एक

विशिष्ट परम्पराक जन्म देलनि। हिनक नाटकादि मैथिल संस्कृतिक भव्य रूप प्रस्तुत करैछ। हिनक नाटकादिमे चरित्र प्रधान अछि। चरित्र प्रधान एहि लेल जे पात्रक अन्तर्द्वन्द्व आ बहिर्द्वन्द्व, नाटकक घटना तथा परिस्थितिक निर्माण करैत अछि। हिनक नाटकक पात्रमे चरित्रक विविधता नहि एकरूपता लेने अछि। पुरुष पात्रक अपेक्षा नारी पात्रक चरित्र निर्माणमे हिनका यथेष्ट सफलता भेटलनि।

कथोपकथनक दृष्टिसँ शेखर जीक[11] नाटक अत्यन्त चुस्त, व्यवहारानुकूल, भाव-व्यंजक आ संघर्षमय अछि। नायकक अनुकूल ओहिमे विविधता अछि। ओ पात्रक मनोविश्लेषण करबामे अत्यन्त सफल भेल छथि। पात्रक चरित्र पर प्रकाश दैत- कार्य व्यापारकेँ प्रसारित करबामे सहायक होइत छथि। गम्भीर ओ संयत भाषा कथोपकथनमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

समष्टि रूपसँ हिनक नाटकपर हिनक जीवनक स्पष्ट छाप परिलक्षित होइछ। दुःखक हलाहलकेँ पीबिकऽ जहिना शेखर जी अखण्ड आनन्दक साधना कएलनि तहिना हिनक नाटक करूणाक गम्भीर टीसकेँ अपना अन्तरमे नुकौने सुखान्त बनल हिनक जीवन समानहि सुख-दुःखक रौद-छाहरिमे खेललक अछि। सुख-दुःख, संघर्ष आ समन्वयकेँ लऽ कऽ चलल अछि आ तेँ हिनक नाटक ने पूर्णतः सुखान्त अछि आ ने पूर्णतः दुखान्त। ई नाटकमे आदर्शवादी प्रतीत होइत छथि।

नाट्यकलाक दृष्टिएँ हिनक नाटक उच्च कलात्मक धरातलपर अवस्थित अछि। अंक आ दृश्यमे विभाजित कथावस्तुक योजना अत्यन्त व्यवस्थित आ क्रमबद्ध अछि। रंग-संकेतक विधान सेहो नाटककार समुचित मात्रामे कएलनि अछि। प्रत्येक पात्र अपने चरित्रक अनुरूप स्वतंत्र अस्तित्व रखैत अछि। नाटककारक चरित्रक अवतारणा मानवीय धरातल पर करैत ओ मानवोचित सामान्य गुणक प्रतिष्ठा ओकरामे कएलनि अछि। नाटकमे पात्रक भीड़-भाड़ आ

कथानक विस्तृत नहि होएबाक कारणेँ पात्रक चरित्र आपसमे ओझरायल नहि अछि। ओ दृश्यक योजना अत्यन्त कुशलतापूर्वक कएलनि अछि। पात्रक आचरण, मनोभावना, चित्तवृत्त, कार्यव्यापार, वेष-भूषा, भाषा, चालि-ढालि, संवाद, देश-काल, वातावरणक योजना सजीव आ मूर्तरूप प्रदान करबामे पूर्ण समर्थ भेलाह अछि।[12]

अपन नाटकमे शेखरजी पात्रक चरित्र पर प्रकाश देबाक हेतु, घटना-क्रमक विकासक हेतु, वातावरणक सृष्टिक हेतु, पात्रक माध्यमे अपन विचार-धारा सम्प्रेषित करबा हेतु, नाटकक मूल सन्देशकेँ सम्प्रेषित करबाक हेतु अत्यन्त सजीव आ प्रभावोत्पादक कथोपकथनक सृष्टि कएलनि। प्रत्येक कथोपकथन पात्र, देश, काल, परिस्थिति, भाव तथा रुचिक अनुकूल अछि। प्रत्येक पात्र अपन पद, योग्यता, अपन सामाजिक, राजनीतिक स्थितिक अनुरुप वार्तालाप करैछ। वस्तुतः हिनक नाटकीय पात्रसँ जाहि भाषा, जाहि शैलीक आशा करैत छी ओ ओही ढंगे अपन कथोपकथन कहैछ।[13]

शेखरजीकेँ ई अनुमान छलनि जे हिनक नाटककेँ मैथिलीमे नहि चिन्हल गेलनि अछि आ तेँ आक्रोश प्रकट करैत ओ 'पहिल साँझ'क भूमिकामे कहैत छथि- "ओना क्षमता, जे साहित्यसँ समुचित साक्षात्कार करएबाक आधार होइत अछि आ रचनाकार साहित्यगत विशेषताकेँ सामान्य पाठकक लग धरि पहुँचयबाक विश्लेषक बुद्धि प्रदान करैत अछि, से औखन धरि जेना मैथिलीमे दुर्लभ जकाँ अछि। स्वभावतः तेँ कहि सकैत छी जे नाटक सदृश सूक्ष्म विधाकेँ बुझबाक कोन कथा, चिन्हबो टाक प्रयास नहि कएल गेल अछि। अपन नाट्य-प्रयोग आ रंगमंचक दीर्घकालिक अनुभवक आधारपर हम पूर्ण विश्वास ओ आस्थाक संग कहि सकैत छी जे मैथिली नाटकमे होइत प्रयोगसँ निश्चित रूपेँ आलोचक लोकनि एकदम अनभिज्ञ छथि। नाटकक कथ्य आ शिल्पोक एहन अवदान होइत छैक जे हजारक हजार प्रेक्षककेँ रंगस्थलमे मंचावधि

पर्यन्त बान्हि रखैत अछि, मंत्रमुग्ध कएने रहैत अछि, मुदा लिखित रूपसँ कोनो नाटकक विशेषताक चर्च नहि भेटत।[14]

शेखरजी अपन 'एक कालखंडी' नाटकक प्रसंग लिखैत छथि – 'अहाँ के प्रायः 'एक कालखंडी आ फ्लैशबैक'क तात्पर्य नहि बुझबामे आएल अछि। जखने विगत जीवनकेँ 'फ्लैशबैक' पद्धतिसँ देखाओल जाएत तखने ओ एक काल-खंडी नहि रहि जाएत। कारण विगत जीवनमे जएबा लेल स्थान-भिन्नता होएबे करत आ जखने स्थान भिन्नता होएत तँ ओ एक सेटक नाटक नहि रहि जाएत। तैं हमर नाटककेँ नव प्रयोगक नहि मानब फोंक ज्ञानक आडम्बर थिक। एक काल खंडी नाटकमे एके सेट चाही, स्थानमे परिवर्तन नहि चाही, प्रवहमान कथा-उपकथाक संग घटना-उपघटनाकेँ घटित होएबामे निरन्तरता चाही, हमर नाटक सएह थिक।'[15]

अन्ततः शेखरजीक नाट्य-शिल्प वा नाट्य प्रयोग जे किछु हो मुदा एतबा अवश्य जे हिनक प्रयोग अपूर्व, अनुपम एवं चमत्कृत अछि। आ तैं हिनका एक प्रयोगधर्मी नाटककार कहल जा सकैत अछि। हिनक उपलब्ध समस्त नाट्यकृतिकेँ एही आधारपर आँकल जा सकैत अछि।

## भफाइत चाहक जिनगी

एहि नाटकक नामकरण एकर नायक महेशकेँ प्रतीक बनाय ओकरे जीवनक परिप्रेक्ष्यमे कएल गेल अछि। महेशक आन्तरिक स्वरूप ओहने अछि जेना एक भफाइत चाहक जिनगी। महेशक जीवनमे ओहि ऊर्जाक शक्तिमत्ताकेँ नीक जकाँ रूपायित कएल गेल अछि। एहि प्रसंग स्वयं शेखरजीक कथन छनि जे- "हम जे नाटकक नाम रखने छी से प्रतीकात्मक अछि। भफाइत चाहक अभिप्राय होइत अछि गरम चाह। गरम चाह दर्शएबामे दू टा प्रतीकार्थ व्यंजक शब्द अछि- गरम आ भाफ। भाफ उड़ि कऽ बिला जायबला तत्व आ सर्दक विपरीतार्थक द्योतक

अछि। तेँ हम पोथीक नाम रखबामे ई मानिकऽ चलल छी जे युवकक पूर्वक जे किछु सोचल छलैक से भाफ जकाँ उड़ि कऽ विलीन भऽ रहलैक अछि मुदा ओकर भीतरमे वर्त्तमानसँ से ठठि सकबाक गरमी छैक। अर्थात् ओ अस्तित्व-रक्षाक संघर्षक हेतु प्रस्तुत अछि।[16]



'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकक एक दृश्यमे छत्रानन्द सिंह झा, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ एक अन्य कलाकार

महेशक चाहक दोकानसँ नाटक आरम्भ होइत अछि आ अन्तो ओही ठाम होइत अछि। प्रायः अधिकांश घटनाक्रम चाहेक दोकानपर घटित होइत अछि। किंचित विद्यापति पर्वहुकेँ दोग बाटे देखएबाक प्रयास कएल गेल अछि।

नाटकक नायक महेश एकटा शिक्षित युवक अछि। ओ अपन प्रतिभाक बले एम० ए० पास कएने अछि। मुदा एहि पैरवीक युगमे ओकरा सर्वोच्च स्थान (एम० ए०मे) नहि प्राप्त होइत छैक आ अपन सहपाठिनी सरितासँ ओ पछुआ जाइत अछि। जकरा सहपाठिनी सरिता स्वयं सेहो स्वीकार करैत अछि–

...जँ तोँ हमरा अपन नोट सभ दऽ कऽ मददि नै कएने रहितऽ तँ हमरा फर्स्ट क्लास फर्स्ट भेटबाक कोन गप्प...हम फिसड्डी भऽ गेल रहितौं।''[17] चेतना समिति द्वारा आयोजित विद्यापति पर्व-समारोहमे महेश चाहक दोकान खोलैत अछि। ओकरा चाहक दोकान खोलने देखि ओकर संगी दिगम्बर दुत्कारैत छैक, मुदा महेश अपन सटीक तर्कसँ दिगम्बरकेँ सन्तुष्ट करैत ओकरा समक्ष प्रेरणा-पुरुषक रूपमे ठाढ़ होइत अछि। तखने उमानाथ अपन पत्नी चन्द्रमाक संग ओतए अबैत छथि। पाश्चात्य सभ्यतामे रंगल-जमल, मातृभाषाक आत्मगौरवसँ शून्य इंजीनियर उमानाथ हिन्दीमे चाह मंगैत छथि। मातृभाषानुरागी चाहक दोकानदार महेशक टोकलापर बिगड़ि जाइत छथि। दुहूक बीच-बचाव चन्द्रमा (इंजीनियरक पत्नी) करैत छथि जे कला-संस्कृतिसँ रूचि रखनिहार थिकीह। मातृभाषानुरागिणी चन्द्रमा महेशक पक्ष लऽ उमानाथकेँ शान्त करैत छथि। पछाति विद्यापति पर्वमे काव्यपाठक हेतु महेशक नामक घोषणा मंचसँ होइत अछि। महेश चन्द्रमाकेँ दोकान देखबाक आग्रह कऽ चलि जाइत अछि। चन्द्रमा महेशक अनुपस्थितिमे चाहक दोकान चलबए लगैत छथि जे हुनक पति उमानाथकेँ नहि नीक लगैत छनि।

महेश जखन काव्यपाठ कऽ आपस अबैत अछि तँ चन्द्रमाकेँ दोकान चलबैत देखि ओकरा पश्चाताप होइत छैक। एँही बीच महेशक सहपाठिनी सरिता सेहो ओतय आबि जाइत अछि। महेशकेँ एहि रूपमे देखि हुनका आत्मक्लेश होइत छनि। दुनू गोटे अपन परिस्थिति आदिपर गप्प करए लगैत छथि। तखने उमानाथ, जे चन्द्रमाकेँ, दोकान चलबैत देखि खिसिया कऽ चलि गेल छलाह, फेरि घुरि अबैत छथि आ महेशक संग लड़बा-भिड़बा लेल उद्यत होइत छथि। मुदा सरिता द्वारा महेशक शिक्षित होएबाक बात सुनि ओकरा प्रति श्रद्धा होइत छनि। एतहि नाटकक चरम परिणति होइत छैक।

नाटकमे कुल बारह गोट पात्र, दू गोट पात्री ओ चारि गोट डमी पात्र अछि। जाहिमे मुख्य पात्र अछि महेश, दिगम्बर ओ उमानाथ। पात्रीमे चन्द्रमा ओ सरिता थिकीह, जाहिमे चन्द्रमा प्रधान अछि। नाटकक सभ पात्रक चरित्र स्पष्ट ओ उपयुक्त अछि। एकर अतिरिक्त आधुनिक नाटकमे सजीवता अनबाक लेल संवादमे जे सुदृढ़ता ओ सुश्रृंखलता प्रयोजनीय अछि, सेहो एहिमे प्रचुर मात्रामे परिलक्षित होइत अछि। एकर कथोपकथन सेहो बड़ स्वाभाविक आ प्रभावोत्पादक भेल अछि।

एहि नाटकक कथावस्तुक मनन-चिन्तन कएलापर स्पष्ट होइत अछि जे नाटककार आजुक समाजमे व्याप्त समसामयिक जीवनक अभिव्यक्ति नीक जकाँ कएलनि अछि एवं परिस्थितिक अनुसार बुद्धिवादी सामंजस्य कराओल अछि। अर्थात भावुकतामे नहि बहि, ओहि परिस्थितिमे जे प्रत्येक बुद्धिमानकेँ व्यक्त करबाक चाही, खाहे ओ काज नैतिक हो अथवा अनैतिक। वस्तुतः समाजक अकर्मण्यता आ बेरोजगारीक समस्या एक सभ्रान्त शिक्षित व्यक्तिकेँ कतएसँ कतए पहुँचा दैत अछि, तकर स्पष्ट चित्रण एहि नाटकमे भेल अछि आ एकर ज्वलन्त उदाहरण महेश छथि। नाटकक क्षेत्रमे एकरा नवीन प्रयोग कहल जाए तँ अतिशयोक्ति नहि होएत। सुश्रृंखल ओ रंगमंचपयोगी नाटक एहिसँ पूर्व कथिते भेटत। एहि प्रसंग नाटक परक आत्मकथ्य देखल जाए- 'भफाइत चाहक जिनगी' सन् 1974क विद्यापति पर्वक अवसर पर अभिनीत भेल आ प्रायः 35 हजार मैथिल समाजक छँटल-बीछल लोक दम साधि एक-एक शब्द पीबैत रहल, एक-एक दृश्य देखैत रहल। कतहु एको बेर' 'चू' नहि। हमरा हेतु सफलताक एहिसँ बढ़ि दोसर प्रमाण की भऽ सकैत अछि?[18]

एहि नाटकमे देखैत छी जे प्रतिभा-सम्पन्न महेश परिस्थितिसँ गछाड़ल चाहक दोकान खोलि लैत अछि आ एहि हेतु ओकरा हृदयमे कोनो पछतावा नहि छैक। ओ

अपन जीविकासँ सन्तुष्ट अछि। महेशक एहि वृत्तिक लेल दिगम्बरक रूढ़िवादिता प्रकट कएलापर महेशक सशक्त एवं सटीक कथन द्रष्टव्य थिक, जकरा माध्यमसँ आजुक समाजमे व्याप्त मिथ्या आडम्बर तँ स्पष्ट होइते अछि, संगहि ई कथन आधुनिक बेरोजगार युवक लोकनिक दिशा-निर्देश सेहो करैत अछि- 'सुनू दीगू बाबू ! अहाँकेँ स्टालक ऐ कुरसीसँ भने घृणा होएय, भने अहाँ ऐ पर नै बैसी मुदा ऐ सँ अहाँक मर्यादाक रक्षा नै भऽ सकत। हमरा सभ बूझल अछि जे अहाँ कतऽ रहै छी, कोना रहै छी, की खाइ छी, कतऽ खाइ छी ? जे व्यक्ति अपने कोनो जोगरक नै रहैए सैह समाजक आ कुलशीलक झंडा नाकमे टँगने फिरैए आ जकरा अपन बाँहिक भरोसा रहै छै से घर-परिवार वा समाजक बोझ नहि बनि कऽ अपने हाथ-पयर लाड़ब पसिन्द करैए।''[19]

ओना तँ एहि नाटकमे एको संवाद एहन नहि अछि जे गूढ़ अर्थपूर्ण नहि हो, मुदा एहू मे किछु संवादक उदाहरण देखबा-गुनबा योग्य अछि- ''परिस्थिति मनुक्खकेँ सभ किछु सिखा दैत छै। जखन हम एम० ए० मे पढ़ैत रही तँ कहियो सोचनो ने रही जे चाह बना कऽ अपन निर्वाह करऽ पड़त।''[20]

एतबे नहि, महेशक असंतोषसँ अयोग्यताक चुनौती भरल एहि समाजक कुत्सित अव्यवस्थापर तीक्ष्ण यथार्थ-व्यंग्य द्रष्टव्य थिक- ''जे स्वयं भ्रष्ट अछि, जे स्वयं लुझबा आ लुटबामे व्यस्त अछि, जे स्वयं प्रतिभा आ मेधाक छातीपर सवार भऽ कऽ ताण्डव कऽ रहल अछि सैह अनका भ्रष्ट, चोर, आ निरधिन कहैए।...कहैए जे तोँ अधलाह छेँ, अधलाह काज कऽ रहल छेँ। चरित्रहीन चरित्रवानकेँ चुनौती देने अछि आ हमरासन लोक एही चुनौतीक तरमे दबा कऽ किकिया रहल अछि।''[21]

भीतरसँ दबंग ओ निष्ठावान महेशक हृदयमे मातृभाषाक प्रति अखण्ड अनुराग छैक। मैथिलीमे कवितो

लिखैत अछि आ ओ मांगि कऽ पोथी नहि पढ़ैत अछि।

एहि नाटकक प्रसंग डा० प्रेमशंकर सिंहक कथन द्रष्टव्य थिक– 'भफाइत चाहक जिनगी'क अभिनय एकहि सेटपर प्रारम्भ होइछ तथा ओही सेटपर ओ समाप्त भऽ जाइछ जे रंगमंचक दृष्टिसँ अत्यधिक स्वस्थ कहल जा सकैछ। एहि नाटकक प्रस्तुतिक प्रसंगमे लोकक धारणा अछि जे एतेक सफलतापूर्वक नाटकक प्रदर्शन पटनामे अद्यावधि नहि भेल छल।[22] एकर अतिरिक्तो श्री सिंह एहि नाटककेँ कथानक एवं दृश्य विधानक दिशामे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन मानैत छथि।[23]

सम्पूर्ण नाटकमे जीवनक प्रति नव ओ पुरान दृष्टिक, दुइ गोट युवक ओ युवतीकेँ सोझांमे राखि दू पीढ़ीक लोकक मानसिकताकेँ फड़िछाओल गेल अछि। संगहि विद्यापति पर्वक क्रममे उपस्थित जनसमुदायक मैथिलीक प्रति अनुरक्ति ओ विरक्तिक सटीक चित्र उपस्थापित कएल गेल अछि। वस्तुतः लोकक भीड़ मातृभाषाक प्रति अनुरागसँ कम, गीत–नादक आकर्षणसँ बेसी जुटैत अछि।[24] अपन मातृभाषा, सांस्कृतिक सम्पदा तथा अपन जे किछु प्राचीन अछि तकरा लोक त्यागि रहल अछि। एहि प्रवृत्तिकेँ नाटककार प्रकारान्तरसँ निन्दनीय कहैत छथि। यद्यपि एहि नाटकमे ओहि पुरान रूढ़िग्रस्त, जर्जर मान्यता पर आक्षेपक संकेत भेटैत अछि, मुदा ओकर एक सीमा अछि। की आधुनिकता मात्र मातृभाषाकेँ त्यागि देला सँ प्रदर्शित होइछ ? तेँ एहि नाटककेँ दृश्यावलोकनक पश्चात् प्रेक्षक अपना विषयमे सोचबाक हेतु विवश भऽ जाइत अछि से स्वाभाविके आ उचिते।

ई पोथी पहिल बेर चेतना समितिसँ प्रकाशित भेल। दोसर संस्करणसँ ई पोथी शेखर प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भऽ रहल अछि।

## लेटाइत आँचर

'लेटाइत आँचर' शेखरजीक दोसर नाटक थिक।

एहि नाटकक प्रथम मंचन 1975 ई0मे चेतना समिति, पटना द्वारा भेल आ एकर बाद 1976 ई0मे एही संस्थाक द्वारा प्रकाशितो भेल। दोसर संस्करणसँ ई शेखर प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भऽ रहल अछि। प्रकाशनसँ पूर्व एहि नाटकक नाम 'ढहैत देबाल' सेहो प्रचारित भेल छल। एहि नाटकक नामकरण एकर एक महत्त्वपूर्ण पात्रा बतहियाकेँ लक्ष्य कए कएल गेल अछि। जाहि बतहियाक आँचर कहियो भरलैक नहि, जकर भाग्यसँ सन्तानक अवसरे छीनि लेल गेलैक, तकर आँचर तँ सभ दिन खालिये रहतैक, सभ दिन लेटाइते रहतैक।[25] वस्तुतः एहि नाटकक नामकरण सार्थक भेल अछि। एहि नाटकमे नाटककार दहेजप्रथाक कुपरिणामकेँ चित्रित कएने छथि।

नाटकक समस्त घटनावली एकहि ठाम रमानाथ द्वारा लेल गेल किरायाक मकानमे सम्पन्न होइत अछि। कतहु कोनो दृश्य-परिवर्त्तन आदिक आवश्यकते नहि।

'लेटाइत आँचर'क मूल प्रवाह दहेज-विरोधी कथा-संचरनासँ युक्त अछि आ अन्तर-प्रवाहमे विघटित होइत परिवारक चित्र-चरित्र आएल अछि।''[26] एकर कथानक संक्षिप्त अछि। दीनानाथक एकमात्र पुत्री ममताक विवाहमे ओकर पतिकेँ मनोनूकुल दहेज एवं विदाइमे मोटरसाइकिल नहि भेटलाक कारणेँ ओ ममताकेँ त्यागि दोसर विवाह कए लैत अछि आ तेँ संतानहीन ममताकेँ तेहन आघात लगैत छनि जे ओ विक्षिप्ता भऽ जाइत छथि। मुदा एहू अवस्थामे ओकर मातृत्व सन्तानक हेतु अहुछिया कटैत रहैत अछि। दोसर दिस दीनानाथक तीन बालकमे जेठ विवाहित रमानाथ एक किरानी अछि। दोसर विवाहित पुत्र हेमनाथ इंजीनियर अछि तथा तेसर अविवाहित पुत्र मोदनाथ डॉक्टरी पढ़ि रहल अछि। घटनाक्रममे मोदनाथक विवाहक प्रसंग घटकैती होमय लगैत अछि। एकगोट प्रोफेसर अपन कन्याक विवाहक निमित्त हिनका ओतए अबैत अछि।

एम्हर-ओम्हरक गप्प भेलाक बाद हेमनाथ विषय-वस्तु पर अबैत कहैत अछि जे ई विवाह तँ आदर्श होएत, मुदा वरकेँ मोटरसाइकिल अभिष्ट छनि। पश्चात् एही बातकेँ दीनानाथ सेहो पुष्ट करैत छथि। घटक लोकनिक वरक प्रति जिज्ञासा प्रकट कएलापर जखन मोदनाथकेँ बजाओल जाइत अछि तँ दहेज लेबासँ ओ साफ इन्कार कऽ देलनि। मोदनाथकेँ अपन बहिनिक स्थिति मोन छैक। ओ होमएबला ससुरक गोरलगाइक टाका पर्यन्त घुरा दैत अछि। हुनका कथनानुसार विवाह होएत तँ आदर्श, कारण हमरा किछु नहि चाही। घटक लोकनि मोदनाथक एहि व्यवहारसँ पहिने तँ थोड़े सशंकित होइत छथि, मुदा पछाति आश्वस्त होइत छथि। नाटकक अन्त ममताक मार्मिक कथनसँ होइत अछि। नाटकमे एही वृत्तान्तकेँ विस्तारसँ देखाओल गेल छैक। ओना एहि मूल-प्रवाहक संग पारिवारिक स्नेह ओ समरसताक ढहैत देबालक अन्तःप्रवाह सेहो प्रवाहित होइत रहैछ। ममताक किछु संवाद द्वारा नाटकक चरम परिणति होइत अछि।

एहि नाटकमे कुल बारह पात्र-पात्री अछि। एहिमे पुरुष पात्रमे दीनानाथ, रमानाथ, हेमनाथ, मोदनाथ तथा स्त्री पात्रमे मुख्य रूपसँ ममता अछि तथा एकर अतिरिक्त प्रोफेसर फूदन, महेश, कमला आदिक चरित्र गौण रूपेँ विवेचनीय थिक। संक्षिप्त रूप द्वारा विशेष अर्थ प्रकट करब एहि नाटकक संवादक विशेषता अछि।

भैयारीमे सभसँ पैघ रमानाथ किरानी अछि। व्यवहारकुशल, स्पष्टवादी एवं गम्भीर व्यक्तित्वक स्वामी रमानाथक आय सीमित छैक। जाहि कारणेँ ओकरा परिवारमे पिता ओ माँझिल भाइक तिरष्कार सहए पड़ैत छैक। ओकर सहयोगसँ हेमनाथ इंजीनियर बनबामे सफल होइछ। तथापि ओकरा द्वारा कएल जाए बला अपमानकेँ रमानाथ अनठबैत रहैत अछि। मकानक किराया आदि वैह दैत अछि, मुदा हेमनाथक सुविधाक लेल अपने कष्ट सहैत अछि। एतेक भेलोपर रमानाथ पारिवारिक विघटन

नहि चाहैछ। ओकरा अन्तरमे पिता आ भाइ द्वारा मोजर नहि देबाक व्यथा सालैत रहैत छैक तथापि ओ मौनालम्बन कऽ धैर्यक परिचय दैछ।[27] रमानाथ भ्रष्टाचारक जड़ि परिवारकेँ मानैत कहैत अछि– "भ्रष्टाचार परिवारमे जन्म लैए.....परिवारसँ समाजमे जाइए आ तखन अनेक ठाम अनेक रूपमे व्यक्त होइए। आ सभसँ पैघ बात ई जे घरक मुखिये एकर जन्मदाता होइत छथि।"[28]

आर्थिक आधारपर परिवारमे भेटए बला मान्यतापर कटाक्ष करैत अपन उपर्युक्त कथनक समर्थनमे ओ कहैत अछि– "जे व्यक्ति आश्रममे बेसी दैत अछि तकरा तिलकोरक पात...दूध–दही आ जे कम देनिहार वा नै देनिहार तकरा कुर्थीक दालि।"[29]

एहि नाटकक मध्य सभसँ मार्मिक चरित्र–चित्रण ममताक भेल अछि। ई एक गोट एहन पात्रा छथि जनिक समस्त अवलोकनक पश्चात् ओ दयाक पात्रा बनि जाइत छथि। हिनका संग घटित एहि दुर्भाग्यक कारण ई अंत धरि एक दुखिया ओ विक्षिप्ताक रूपमे दृष्टिगोचर होइत छथि। एकरे प्रतिक्रिया स्वरूप नाटक मध्य ठाम–ठाम अपन संवाद द्वारा ई समाजपर, संस्कृतिपर कठोर व्यंग्य कएलनि अछि। आजुक आर्थिक युगमे पिताक विभेदक नीतिपर ममताक वास्तविकतासँ ओत–प्रोत ई कथन द्रष्टव्य थिक– "अहाँ बच्चा भैया केँ दुरदुरौने रहै छिएनि. ..लाल भैयाक लल्लो–चप्पोमे लागल रहै छी...जे काल्हि डाक्टर बनता तनिका छनन–मनन खोअबैत छिएन्हि।[30] पश्चात् ममताक एहि कथनमे कतेक कटु मुदा सत्य व्यंग्य संकेतित भेल अछि– 'सापो जीव...बेङो जीव, एक जीव दोसर जीवकेँ गीड़ि जाइ छै। किए गीड़ि जाइ छै भौजी ?'[31]

एहि नाटकमे सेहो शेखरजी पूर्ण रंगमंच–निर्देश देलनि अछि। दृश्य–संयोजनसँ लए रूप–सज्जा धरि अनेक सूक्ष्म निर्देशकेँ एहि मध्य चित्रित कएने छथि। दृश्य–विधान अत्यन्त सरल एवं सहज अछि, जकरा रंगमंचपर

सफलतापूर्वक प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि। एक कालखंडी होएबाक कारणेँ एके सेट एवं एके दृश्यमे इहो सम्पूर्ण नाटक थिक। सेट एवं दृश्यक आयोजनमे घटना, कार्य एवं प्रभावक एकता दर्शनीय अछि।[32]

स्थूल रूपेँ ग्रैह जे एहि नाटकमे समाजक एक व्यापक एवं ज्वलन्त समस्याकेँ उठाओल गेल अछि। एहि नाटकक विषयवस्तु काटर वा दहेज प्रथापर आधारित अछि। ई शेखरजीक लेखनीक चमत्कारे कहबाक चाही जे पुरानो विषयकेँ ई नव परिवेश देलनि अछि। 'लेटाइत आँचर'मे दहेज-प्रथाकेँ नीक वा अधलाह नहि कहल गेल अछि, अपितु दहेज-युक्त विवाहक कुपरिणाम एहि मध्य दर्शाओल गेल अछि। मात्र बतहियाक प्रति प्रेक्षकक हृदयमे करुणेटा जगाएब नहि, अपितु करुणाक माध्यमसँ प्रेक्षकक हृदयपर प्रबल आघात करब सेहो नाटककारक उद्देश्य बुझि पड़ैत अछि। एहि ठाम नाटककार ई आशा पोसने छथि जे एहि आघातसँ लोकपर तेहन प्रभाव पड़ए जे हृदय तथा मानसिक विचारधाराक परिवर्त्तनक दिशामे नव अंकुर प्रस्फुटित होअए।[33] एहि प्रसंग डा० श्री जयमन्त मिश्रक कथन द्रष्टव्य थिक– 'नाटककार एहिमे परित्यक्ता ममताक बिलटैत मातृत्व ओ संतानक लेल 'लेटाइत आँचर'केँ अक्षुण्ण राखल अछि तथा दहेज रूपी राक्षसपर प्रहार कएल अछि। दहेज प्रथाक दुष्परिणामकेँ चित्रित करब, समाजकेँ तकर विरोध करबामे सन्नद्ध करब, नाटककारक उद्देश्यक विषयमे ई स्वयं लिखने छथि जे– ''एहि नाटकमे नाटककारक मुख्य उद्देश्य छैक बतहियाक मानसिक घात-प्रतिघातकेँ चित्रित कऽ प्रेक्षकक हृदयमे अजस्र करुणाक सृजन करब जाहिसँ प्रच्छन्न रूपेँ समाजमे सुधारक संभावनाक पृष्ठभूमि तैयार होअए।'[34]

एकर अतिरिक्त नाटककारक लक्ष्य नाटकमे पारिवारिक विघटनकेँ दर्शाएब सेहो बुझि पड़ैत अछि। एके परिवारक लोकमे, एके आश्रममे सम्प्रति आर्थिक आधारपर व्यक्तिगत मान-दान वा अपमान भऽ रहल

अछि। जेठ भाइ यदि कम कमाइत अछि तऽ परिवारमे ओ गुदानल नहि जाइत अछि आ छोट भाइ यदि बेसी कमाइत अछि तँ आश्रममे ओकरा विशेष मान-दान होइत अछि। यद्यपि माता-पिताक दृष्टिमे सभ संतानकेँ समान होएबाक चाही, मुदा आजुक युगक आर्थिक विभीषिकाक आगाँ से होइत नहि अछि तथा यैह आगाँ विकसित भए विघटनक मूल कारण बनैत अछि। एहि प्रसंग डॉ० प्रेम शंकर सिंह लिखने छथि जे- 'मिथिला मध्य आब एहनो नवयुवकक प्रादुर्भाव भेल अछि जे परम्परागत रूढ़ि तिलक-दहेजक विरोधमे अपन अभिभावकक विरूद्धमे आवाज उठा रहल छथि। तकर स्पष्ट प्रतिबिम्ब 'लेटाइत आँचर'मे भेटैत अछि जे कोना एहि कारणेँ पारिवारिक जीवनक विघटन भेल जा रहल अछि।'[35]

एहि नाटकमे मोदनाथ सदृश एक आदर्श पात्रकेँ चित्रित क़एल गेल अछि। ओ ममताक दुःस्थितिक जड़ि दहेजकेँ चिन्हैत अछि आ तेँ अपना विवाहमे लेन-देनक मुखर विरोध करैत अछि। ओ स्पष्ट शब्दमे कहैत अछि- 'विवाहमे जँ लेन-देन भेलैक तँ विवाह रूकि जाएत।'[36]

भाइ ओ पिताकेँ दहेज लेबा लेल दुत्कारबामे ओकरा कनेको संकोच नहि होइत छैक। ओ पिताकेँ कहैत अछि- ''बाबू घरमे अछैत ममता बहिन अहाँकेँ ई बिसरा गेल, जे लेन-देनक कारणहि ओ दुर्गति भोगि रहल अछि। अहाँ बिसरि जैयौ...आजीवन हमरा ई बिसरल पार नै लागि सकैए। धर्मतः कहैत छी बाबू, जे ओकर कष्टक जड़ि छै, हम तकरा काटब, जिनगी भरि कटैत रहब।'[37]

मोदनाथकेँ मनुक्खोसँ बढ़ि टाकाक महत्त्व स्वीकारब नहि अरघैत छैक- ''आशीर्वादमे रुपैया, विवाहदानमे रुपैया. ..सभकथू मे रुपैया...जेना सभ किछु रुपैये होइ... मनुक्ख किछु ने होइए...मनुक्खक हृदय किछु ने होइ।'[38]

वस्तुतः मोदनाथक चरित्र आधुनिक युवक

लोकनिकेँ दिशा-निर्देश करैत अछि। अपन दृढ़ताक कारणेँ ओ पिताकेँ विचार बदलबामे विवश करबामे सफल होइछ आ समाजक युवकक सोझां प्रेरक बनि जाइत अछि।

दोसर जे सम्प्रति परिवारमे आर्थिक आधारपर मूल्यांकनक परम्परा सन्हिया गेल अछि, नाटककार तकरहु अपन दृष्टिपर राखि ओकर सशक्त आलोचना कएने छथि। वस्तुतः परिवार आ कार्यालयमे पर्याप्त अन्तर होइत छैक। कार्यालयक जेठ-छोटक आधारपर परिवार नहि चलबाक चाही। अपना ओहि ठामक व्यवहारमे सम्बन्धक आधारपर जेठ छोटक निर्धारणक परम्परा रहल अछि जे आइ नष्ट भऽ रहल अछि। नाटककार शेखर जीक सूक्ष्म दृष्टि वर्तमानक सोचपर एहू ढंगसँ लगसँ देखलक अछि।[39]

अन्ततः यैह जे एहि नाटकक विषयवस्तु पात्र, संवाद आदि एहि तरहक अछि जे एकर प्रभावे पाठक वा प्रेक्षक लोकनिपर सर्वव्यापी रूपेँ पड़ल अछि। कोन एहन सहृदय पाठक वा प्रेक्षक होएत जे समाजक एहि कुप्रथापर विषाद नहि करत अथवा ममताक एहि दयनीय स्थितिकेँ देखि अश्रुपात नहि करत। ई नाटक समाजक नव निर्माणक दिशामे एक प्रेरणास्रोत अछि जे सदैव लोककेँ एहि सुधारवादी भावना वा मोदनाथक सदृश आदर्श पात्र दिस प्रवृत्त होएबा लेल प्रेरित करैत रहत।[40]

## पहिल साँझ

'पहिल साँझ' शेखरजीक तेसर नाटक थिक। एहि नाटकक मंचन सर्वप्रथम चेतना समिति, पटना द्वारा 1978 ई०मे भेल आ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा ई 1982 ई०मे प्रकाशित भेल। 2007मे एकर दोसर संस्करण भेल अछि। नाटककार एहि नाटककेँ उपर्युक्त दुनू नाटकक नाट्य-शिल्पक विकसित रूप कहैत छथि।[41]

एहि नाटकमे सामाजिक रूढ़िवादिताकेँ पारिवारिक स्तरपर पूर्णतः उद्घाटित कएल गेल अछि। एहि नाटकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे वर्त्तमान समयमे एके पीढ़ीक अन्तरसँ पिता-पुत्रक बीच कतेक वैचारिक वैषम्यता आबि गेल अछि। एकरा अंग्रेजीमे 'जेनरेशन गैप' कहल जाइत अछि। एकर कथावस्तु संक्षिप्ते अछि। मात्र संक्षिप्त कैनवासपर घटनाक्रमकेँ विस्तृत एवं प्रभावोत्पादक बनएबाक प्रयास कएल गेल अछि।



*'पहिल सांझ' नाटकक दृश्यमे ललितेश, विनोद कुमार झा, मंजू चौधरी एवं प्रेमलता मिश्र।*

प्रस्तुत नाटकमे पात्र-पात्रीक संख्या अत्यल्प अछि- पिता रमाकान्त, माता भुवनेश्वरी, जेठ बालक उदयकान्त, छोट बालक उमाकान्त, उदयकान्तक मित्र गंगानाथ तथा उदयकान्तक अर्द्धांगिनी भारती।

पिता रमाकान्त ग्रामीण आवेश-परिवेशमे रहनिहार सफल गृहस्थ छथि। गाममे खेत कीनि सभसँ पैघ बनल

रहबाक प्रतिष्ठासँ हुनक चिन्तनक दिशा ओतप्रोत अछि। हुनक जेठ बालक उदयकान्त नगरमे रहि नौकरी करैत अछि जे अपन छोट भाइ उमाकान्तकेँ अपने संग राखि पढ़बैत अछि। उमाकान्त इंजीनियरिंगमे पढ़ि रहल अछि। भारती उदयकान्तक पत्नी थिकीह, जनिका वर्ष दिनुका एक गोट बच्चा छनि। रमाकान्तक खेत किनबाक लौलक साधन-स्रोत जेठ बालक उदयकान्त छथि। अफसर उदयकान्तकेँ नागरिक जीवन पसिन्न छनि। नाट्कक आरम्भ उदयकान्त द्वारा आयोजित ओकर वर्ष दिनक पहिल बेटाक जन्मोत्सवक आयोजनसँ होइत अछि। आयोजनक मध्यमे रमाकान्त अपन पत्नी भुवनेश्वरीक संग आबि जाइत छथि ओ परिवारक लोककेँ अस्त-व्यस्त देखि अकचकाइत छथि। ओ जन्मदिन मनाएब अपव्यय मानैत छथि। गाममे भूमिअर्जनक लेल उदयकान्तसँ टाका उपलब्ध होएबाक सम्भावना नहि देखि खौंझा जाइत छथि। ई आयोजन हुनका सोहाइत नहि छनि तथा असह्य भेलापर एक ठाम ओ एकर तुलना बर्खीसँ कए दैत छथि। वस्तुतः गाम-घरमे रहनिहार लोक एखनहुँ धरि एतेक रूढ़िग्रस्त छथि। रमाकान्तक ई रूढ़िवादिता सभकेँ अनसोहाँत लगैत छैक। आ अन्तमे सभसँ वाद-विवाद भऽ गेला पर रमाकान्त खिसिआएल बिलाड़ि जकाँ पहिले साँझ झोरी लऽ विदा भऽ जाइत छथि आ जन्मदिनक तैयारी तैयारिये रहि जाइछ। नाटक समाप्त भऽ जाइत अछि।

उपर्युक्त कथानकसँ रमाकान्तक चरित्रमे रूढ़िवादिता, स्वार्थलोलुपता, अशिक्षा आदि पूर्णरूपेण परिलक्षित होइत अछि। ओकर अशिक्षा ओ रूढ़िवादिता निम्न कथनमे द्रष्टव्य थिक, जाहिमे ओ अपन पौत्रक वर्षगाँठक तुलना 'बर्खी'सँ करैत अछि– 'बरसगेंठ छइ कि बर्खी, हम किछु ने बाजी सैह ने अहाँ कहै छी।'[42] पश्चात् गंगानाथक संग वार्त्तालापक क्रममे ओकर स्वार्थलोलुपता द्रष्टव्य अछि– 'एते लोक जे बाइली आमदनीसँ कोठा पीटि लेलक-ए, सभ बैमानी अछि ? हम तँ बुझै छी जे, जकरा लूरि छै

से बेस कमा लैए...घर भरि लैए, जे अलुरि अछि से मूहेँ तकैत रहि जाइए। नै?'[43]

दोसर दिस उदयकान्त शिक्षित, आधुनिक, सहनशील आदि गुणसँ समन्वित पात्र अछि। ओकर सहनशीलताक उदाहरण नाटक मध्य अनेक ठाम भेटैत अछि जे पिताक असह्य व्यवहार भेलो पर धैर्य रखैत अछि। नागरिक जीवन ओकरा पसिन्न छैक तथा नगरमे अपनाकेँ स्थापित करबाक चेष्टामे तल्लीन अछि। पिता-पुत्रक वैचारिक बिन्दु दूर स्थलपर छैक, जकर दूरी अनन्त छैक आ ओहि दुनू स्थलक बीच कोनो तरहक संचार व्यवस्था नहि छैक। भारती एवं उमाकान्त मात्र उदयकान्तक अनुसरण कएनिहार पात्र-पात्रीक रूपमे नाटकक मध्य दृष्टिगोचर होइछ। नगरक आकर्षण हुनको लोकनिकेँ आकर्षित कए चुकल अछि। गंगानाथ आ उदयकान्तक वैचारिक स्तरमे सेहो साम्यता छैक। अन्तर एतबे अछि जे उदयकान्त धैर्यवान अछि तँ गंगानाथ थोड़ेक उग्र। भुवनेश्वरी पिता-पुत्रक बीचमे पेण्डुलम जकाँ डोलि रहल छथि। अतएव, एहि नाटकमे कोनो पात्र उदण्ड नहि अछि, सभ शालीन अछि। मित्र पूरक मात्र अछि। संगहि एकर कथोपकथन, भाषा-शैली सभ सेहो सरल, स्वाभाविक ओ अभिव्यंजक भेल अछि।[44]

एहि नाटकक विवेचन-विश्लेषणक पश्चात् ई स्पष्ट परिलक्षित होइत अछि जे आइ-काल्हि एहि तथाकथित सभ्यतामे पिता-पुत्रक स्वस्थ सम्बन्ध विकृत भेल जा रहल अछि। वस्तुतः सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तरपर पिता-पुत्रक सोच-विचारमे बहुत अन्तर आबि गेल अछि। आ, तेँ कहि सकैत छी जे आब पिता-पुत्रक बीच वात्सल्य अथवा श्रद्धा-स्नेहक कतहु स्थान नहि रहि गेल अछि, पारस्परिक स्वार्थ आब ओहि सम्बन्धक आधार बनैत जा रहल अछि। ई वैषम्यता आजुक प्रगत्योन्मुख पीढ़ी आ ओहि पुरान खाढ़ीक विचारधारामे अन्तरसँ आयल अछि।

यद्यपि एहि नाटकमे कथ्यक दृष्टिसँ 'जेनरेशन गैप' देखाओल गेल अछि मुदा एहिमे ग्राम्य-जीवन आ नागरिक जीवनक प्रतिस्पर्धा सेहो देखाओल गेल अछि। एक दिस पिताक ग्राम्य-मोह आ दोसर दिस बेटा अपन शहरक मित्रवर्गक वा शुभचिन्तक वर्गक बीच अपन शहरी स्तर बढ़ाबऽ लेल कटिबद्ध अछि। ओकरा गाममे खेत बढ़एबाक कोनो प्रयोजन नहि बुझाइत छैक, तेँ ओ एहि निमित्त इच्छुको नहि अछि। ई नाटक एहू कथ्यपर आधारित अछि। समालोचक लोकनि शेखरजीक नाटक सभक प्रति जे धारणा राखथि, मुदा शेखरजी स्वयं अपन सभ नाटकमे एकरा विशेष संतुलित ओ विशेष सुगठित मानैत छथि।



'पहिल सांझ' नाटकक निदेशक एवं कलाकारक संग मंचपर सुधांशु शेखर चौधरी।

एवं प्रकारेँ एहि नाटकक अवलोकनक पश्चात् लोक समाजक रूढ़िग्रस्त विचारधाराक एहि कुरीति दिस सोचबा लेल विवश भए जाइत अछि। वस्तुतः ई रूढ़िवादिता आजुक समाजक लेल एहन वस्तु अछि जे कखनहु सामंजस्य नहि रहए दैत अछि, संगहि ई प्रगतिक मार्ग

अवरुद्ध कएने अछि। ई घुन जकाँ शनैः-शनैः प्रगतिकेँ खोधि रहल अछि। एकरे स्पष्ट करब नाटककारक उद्देश्यो बुझि पड़ैत अछि आ ई पूर्णतः अपन उद्देश्यमे सफल सेहो भेल छथि। अतएव, एहि नाटकक प्रभाव सहृदय पाठक वा प्रेक्षकपर पूर्णरूपेण पड़ल अछि एवं एकर पृष्ठभूमिमे समाजक एहि कुरीति वा कुभावनाक दिस मनन करबाक प्रेरणा भेटैत अछि।[45]

नाटक नव्यताक संगहि सांस्कृतिक सुरक्षामे सेहो सफल भेल अछि। पुतहु भारती आकि पुत्र उदयकान्त ओ उमाकान्त पितासँ भिन्न विचार रखितो कतहु मर्यादाक उल्लंघन नहि करैत छथि। शेखरजी जतए एक दिस नवीनताक आग्रही छथि ओतय दोसर दिस अपन सांस्कृतिक सुरक्षाक लेल सचेष्ट सेहो।[46]

**लगक दूरी**

मैथिली नाटकक कड़ीक रूपमे 'लगक दूरी' शेखरजीक नवीनतम नाटक छनि। एकर लेखन काल अछि मइ-जून 1986 ई० एवं एकर प्रथम मंचन 'भंगिमा' द्वारा 29-30 अप्रैल, 1987 ई० कँ कएल गेल छल।[47] शेखर प्रकाशन, पटना- 24 द्वारा 1992 ई०मे ई प्रकाशित भेल।

एहि नाटकमे पछिला नाटकक अपेक्षा पात्रक संख्या बेसी अछि। जतय पछिला नाटकमे मात्र छह गोट पात्र-पात्री छल ओतए एहिमे डमी पात्रकेँ छोड़ि बारह गोट पात्र अछि।

नाटकक प्रधान पात्र मास्टर साहेब वृत्तिऐं शिक्षक ओ उच्च कोटिक साहित्यकार छथि जनिका साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल जाइत छनि। हुनका तीन गोट पुत्र कामेश्वर, रामेश्वर ओ ज्ञानेश्वर, दुइ गोट पुत्रवधू एवम् दुइगोट पौत्र छनि। यशोदा हुनक पत्नी, आ श्रीकान्त शोधकर्त्ता आ मदन बाबू साहित्यिक मित्र छथिन। एकर अतिरिक्त गोविन्द नामक एक पात्र

अछि जकरा मकानमे मास्टर साहेब सपरिवार रहैत छथि।
नाटक श्रीकान्त द्वारा मास्टर साहेबपर शोधक निमित्त हुनकासँ भेट करबासँ आरम्भ होइत अछि। श्रीकान्तक जिज्ञासा कएलापर मास्टरसाहेब अपन अतीतमे चलि जाइत छथि– हुनका परिवारमे कुल नौ गोट सदस्य छनि। आमदनीक टाका बचाए घर बनएबाक लेल पत्नीक नामसँ ओ जमीन कीनि अपन डेरा फराक कऽ लैत अछि। छोटका बेटाकेँ पढ़बा–लिखबामे उछृंखल नहि रहबाक कारणेँ मास्टरसाहेब ओकरा खेती–पथारीक भार दऽ यशोदाक संग गाम पठा दैत छथि। लगमे रहि जाइत छनि मझिला बेटा रामेश्वर, मझिली पुतहु आ दू गोट पौत्र। मुदा रामेश्वरोक नोकरीमे पदोन्नतिक संग बदली भऽ जाइत छैक। ई स्वयं असगर रहि जाइत छथि। ई साहित्यकार थिकाह, तेँ लेखनमे व्यस्त रहैत छथि। जँ से नहि तँ कोनो चिन्तनमे मग्न रहैत छथि। मुदा लगक एहि दूरीसँ कखनो कऽ उद्वेलित भऽ उठैत छथि। एतहि नाटकक चरम परिणति होइत छैक।

वृतिये मास्टरसाहेब प्रधानाध्यापक मुदा प्रवृतिसँ साहित्यकार छथि। तेँओ साहित्यकारक एकाकीपन नहि स्वीकारैत छथि। मास्टरसाहेबक चरित्रमे एकगोट स्थितिप्रज्ञ चिन्तकक चित्र उपस्थित कएल गेल अछि। अपना बाहुबलपर विश्वास करैत– संतानक कमाइक आशा नहि करैत छथि– अनुशासनबद्ध रहैत ककरोसँ प्रायः याचना नहि करैत छथि। कारण ओ आय–व्ययमे पर्याप्त सन्तुलन बनाकऽ रखने छथि। स्वाभिमानी मास्टरसाहेब आत्मप्रचारसँ घृणा करैत छथि। सन्तानक प्रति शुभाकांक्षा रखनिहार ओ छोटका बेटा ज्ञानेश्वरक परीक्षाफल ओ जेठ बेटाक व्यवहारसँ मर्माहत भऽ उठैत छथि। मुदा दृढ़निर्णयी मास्टरसाहेब गम्भीरतासँ विचारि निर्णय लैत छथि। ओना तँ ओ अत्यन्त गम्भीर व्यक्तित्वक स्वामी छथि, मुदा कामेश्वरक घर छोड़ि देलापर आ ज्ञानेश्वरक असफलतापर विचलित भऽ उठैत छथि। एक दिस ज्ञानेश्वरक असफलतासँ छात्रलोकनि द्वारा आनल गेल मिठाइकेँ ओ बिक्ख कहैत छथि तँ दोसर

दिस कामेश्वरक घर छोड़ि देबाक कारणेँ अनमन्यस्क भऽ जाइत छथि, पढ़ब-लिखब सेहो नियमित नहि रहि जाइत छनि।

ओ दयालु आ ईमानदार लोक छथि। जाहि मकानमे किरायापर रहैत छथि तकर स्वामी अछि गोविन्द। जखन ओ अपन मकान मास्टरसाहेबक हाथे बेचबाक प्रस्ताव करैत अछि तखन ओकरो आवासक सम्बन्धमे विचार कऽ मास्टरसाहेब समुचित प्रबन्ध करैत छथि। हुनका पर गोविन्दकेँ ततेक आस्था ओ विश्वास छैक जे ओ जमीन ओ मकान ओ टाका हुनके लग जमा छोड़ि दैत अछि।

जीवनक वास्तविक आनन्द सुख-दुःखकेँ मास्टर साहेब एक समान मानैत छथि। पत्नी यशोदाक प्रति सेहो अनुराग छनि। आ, तेँ पत्नीक गोलोकवासी भेलाक बाद हुनक अभाव खटकैत छनि। मास्टरसाहेबक चरित्र तेहन छनि जे मात्र अपन स्वान्तः सुखायमे रहनिहार कामेश्वर पर्यन्त हुनक गुणगान करैत छनि। हुनक स्थितिप्रज्ञता तखन स्पष्ट होइत अछि जखन साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृतो भेलापर ओ कोनो अलभ्य लाभक अनुभव नहि करैत छथि आ अपन सन्तान लोकनिक क्रमशः लगसँ दूर होएबाक सेहो एक गोट शाश्वत प्रक्रिया मानि लैत छथि।

कामेश्वर स्वार्थी अछि। आर्थिक समृद्धिक लेल ओ सदिखन प्रयत्नशील रहैत अछि। परिवारमे रहबाक पाछाँ ओकर एकमात्र उद्देश्य छैक अर्थसंचय कऽ व्यक्तिगत सुखोपभोग करब। एहि लेल ओ अपना पत्नीकेँ सिखबैत-पढ़बैत अछि। पिता आ माताक प्रति कएल जाए बला कर्त्तव्यसँ सर्वथा फराक रहनिहार कामेश्वर अपना विवाह पर्यन्तमे पिताक विरुद्ध जा टाका गनबैत अछि आ पछाति पत्नीक नामसँ जमीन कीनि अपन डेरा फराक कऽ लैत अछि। ओकर प्रत्येक क्रिया-कलापमे वैयक्तिकता, कर्त्तव्यच्युतता देखबामे अबैछ। पिताक गुणगानोमे ओकर भविष्यक लाभार्थ पत्नीक बुझएबे भाव छैक।

एकर विपरीत एहि नाटकमे रामेश्वरक चरित्र एक आदर्श पुत्रक रूपमे चित्रित भेल अछि। ओकर व्यवहारकुशलतासँ पिता सदिखन प्रसन्न रहैत छथिन। पितासँ ओकरा आत्मिक लगाव छैक तँ पदोन्नतिक संग बदली भऽ गेला पर ओ योगदान नहि करए चाहैत अछि। पिताक यश-प्रतिष्ठाकेँ ओ अपन गौरव मानैत अछि।

पतिक सहभागिनी यशोदा पतिक गम्भीरता, निर्णय, यश आदिसँ प्रफुल्लित रहैत छथि। पतिक साहित्यिक गतिविधिक सहायिका बनलि रहनिहार यशोदा हुनक पाण्डुलिपिकेँ गहना जकाँ संजोगि कऽ रखैत अछि। ओही सहेजल पाण्डुलिपिपर मास्टरसाहेब पुरस्कृतो होइत छथि। ओ मास्टरसाहेबक तेहन ने सहयोगी रहैत छथि जे हुनका अभावमे मास्टरसाहेबकेँ घर होटल समान प्रतीत होइत छनि। हुनका जेठकी पुतहु नहि सोहाइत छनि। ओकर व्यवहार, पढ़ल-लिखल रहबाक मिथ्याभिमान, बेटाक प्रति टाका गनायब आदि नहि रूचैत छनि। समग्रतः यशोदा अपन पतिक विचारानुकूल छथि। छाया जकाँ चलनिहारि यशोदा मास्टरसाहेबक वास्तविक अर्द्धांगिनी थिकीह।

जेठकी पुतहु मिथ्याभिमानसँ ग्रस्त छथि। कारण ओ पैघ बापक बेटी छथि- पति हाकिम छथिन आ ओ अपने पढ़लि-लिखलि छथि। हुनक बात-बातमे स्वार्थ रहैत छनि। ठीक एकर विपरीत मझिली पुतहु सहनशील, परिवारकेँ अपन बुझनिहारि, गृहस्थीक सम्पूर्ण भार उघनिहारि थिकीह। ओ मास्टरसाहेबकेँ पिता मानैत छथि। हुनक बुद्धिक सराहना मास्टरसाहेब स्वयं करैत छथि आ अपन एही गुण सभक कारणेँ ओ हुनकासँ बेटी सम्बोधन पर्यन्त पएबामे सफल होइत छथि।

नाटकक 'फ्लैशबैक' शैलीमे रचनाक कारण अछि घटनास्थल ओ कालक अन्तरालक भिन्नताकेँ उजागर करबाक अनिवार्यता। एहि नाटकमे पर्याप्त रंगमंचीय निर्देश देल गेल अछि। एतेक धरि जे प्रकाश-योजना पर्यन्तक निर्देश देल गेल छैक।[48]

चरित्र–चित्रणक दृष्टिसँ नाटकमे सभटा पात्र–पात्रीक चरित्र सन्तुलित अछि, परन्तु मास्टरसाहेबक चारित्रिक उपस्थापना ततेक ने सफल ओ जीवन्त अछि जे आन सभक चरित्रकेँ छापि लैत अछि।

नाटकमे युगधर्म, पारिवारिक विश्रृंखलताक कारण, व्यक्तिक पारस्परिक बढ़ैत दूरी आदि बहुत रास समस्याकेँ सशक्त ढंगसँ उठाओल गेल अछि।[49]

शेखरजीक उपर्युक्त नाटक सभपर जखन हम विहंगमावलोकन करैत छी तँ स्पष्ट होइत अछि जे हिनक नाटकक विषय क्षेत्रक विविधता ओ व्यापकता स्पष्ट रहल अछि। कथावस्तुक चयनक दृष्टिसँ ई समाजक सामान्य जीवनसँ अपन नाटक सभक कथा ग्रहण कएलनि अछि, जाहिमे जीवनक यथार्थक संगहि जीवनक आदर्श व्यंजित भेल अछि। व्यक्ति एवं समाजक पारस्परिक सम्बन्ध, समस्या तथा व्यक्तिगत एवं समाजगत संघर्षहिक मार्मिक चित्रण हिनक नाटकमे उत्तम रीतिएँ भेल अछि। ई व्यक्तिगत संघर्षोकेँ सामाजिक पीठिकापर व्यापक दृष्टिसँ देखलनि अछि। वस्तुतः हिनक नाटकमे वर्त्तमानक सामाजिक जीवनक समस्या सभक सोझ–सोझ चित्रण भेल अछि। एकर अतिरिक्त सामाजिक यथार्थक चित्रणक आधारपर सामाजिक कुरीतिपर कठोर व्यंग्यसँ स्पर्श कए झकझोरि कए एकर समाधानक लेल किछु करबाक दृढ़संकल्प उत्पन्न करब सेहो हिनक नाटकक विशेषता अछि। वस्तुतः हिनक नाटकमे सामाजिक सुधारक चेतना तीक्ष्ण व्यंग्यक रूपमे मुखरित भेल अछि। व्यंग्य प्रायः हिनक सभ नाटकक प्राण थिक।[50]

समाजक विभिन्न क्षेत्रसँ पात्रक चयन कएल गेल अछि। पात्रक चारित्रिक विकास, कथागति एवं ओकर घात–प्रतिघातसँ स्वतः होइत चलैत अछि। हिनक नाटकक पात्र व्यक्तिगत रूपमे व्यक्ति सेहो अछि एवं सामाजिक प्राणी सेहो। ओकर जीवन संघर्ष, ओकर जीवनक अपन व्यक्तिगत एवं सामाजिक संघर्ष सेहो अछि। वस्तुतः हिनक

पात्र अपन जीवनक परिस्थितिसँ संघर्ष करैत अछि एवं ओकर संघर्षमे आशा–निराशा, हर्ष–विषादक मनोभावक मार्मिकता सेहो अछि। जाहि आदर्श दिस ई अपन पात्रकेँ उन्मुख कएल अछि ओ आदर्श सेहो ओकर चरित्रपर थोपल सदृश नहि अछि, वरन ओकर जीवन संघर्षक प्रतिफलन थिक। वस्तुतः हिनक पात्रक आदर्श यथार्थवादी आदर्श अछि। किएक तँ लेखक अपन नाटकक कथा–गठन द्वारा ओहि आदर्शक प्रतिफलन स्वाभाविक परिस्थितिक सफलताक संग निर्माण कएल अछि।[51]

कलाक दृष्टिसँ शेखरजीक नाटक सभमे पाश्चात्य कलाक पूर्ण प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। शेखरजी पाश्चात्य नाट्यकलाक सेहो रंग–निर्देश बड़ विस्तारसँ देल अछि जे पढ़बाक दृष्टिसँ तँ सुन्दर अछिए संगहि नाटकक कथाक वातावरणक सजीव भूमिका प्रस्तुत कए दैत अछि। हिनक प्रायः सभ नाटकक दृश्य–विधान अत्यन्त सरल एवं सहज अछि जकरा रंगमंचपर प्रस्तुत करबामे कोनो असोकर्य नहि होइछ। यैह हिनक नाटकीय कलाक स्वाभाविकता एवं यथार्थवादिता अछि।[52]

कतेको आलोचक शेखरजीक नाटककेँ एकांकी मानि बैसैत छथि जखन कि हिनक नाटक सभ एक पूर्ण लघु नाटक थिक, जाहिमे नाटककार पात्रक जीवनक एहन केन्द्रीय समस्याकेँ लेलनि अछि जे ओकर सम्पूर्ण जीवनकेँ उद्घाटित कऽ दैत अछि। एहि प्रसंग रामगोपाल सिंह चौहानक निम्न कथन द्रष्टव्य थिक– ''जीवनक विविध घटना तथा आधिकारिक एवं प्रासंगिक कथाकेँ नहि लए जीवनक कोनो एहन केन्द्रीय घटनाकेँ लए एक अंकमे चित्रण करब, जे पात्रक सम्पूर्ण जीवनक, ओकर चारित्रिक विशेषताकेँ उद्घाटित कए देमएबला नाटक कथा–गठनक दृष्टिसँ एके अंक वा सेटक होएबाक कारण अनेकांकीसँ भिन्न होइत अछि एवं सम्पूर्ण जीवनक उद्घाटन करबाक विशेषताक कारण एकांकीसँ सेहो भिन्न होइत अछि।

एहन नाटककेँ लघु–नाटक कहब युक्तिसंगत अछि एवं अनेकांकी तथा एकांकीसँ भिन्न पृथक नवीन प्रयोगक गौरव प्रदान कए लघु नाटकक वर्गमे रखबाक चाही। टेकनीकक दृष्टिसँ ई एक नवीन एवं सुन्दर प्रयोग अछि।''[53] अतएव, शेखरजीक नाटक सभकेँ अनेकांकी एवं एकांकीसँ भिन्न एक पूर्ण लघु नाटकक कोटिमे राखब अतिशयोक्ति नहि होएत। अपन सजग प्रतिभासँ शेखरजी एहिमे आओर कलात्मक निखार अनलनि अछि।

## मौलिक एकांकी

### हथट्टा कुरसी

एकांकी युग नवीनक स्वर आ अवकाशहीन वा व्यस्त–जीवनक उपज अछि। ई एकांकी मैथिली वा कोनहु देशी भाषा हो, ओ विशेष रूपसँ अंग्रेजी एकांकी कलासँ प्रभावित अछि। एकांकीक सम्बन्धमे एतेक धरि अवश्य कहल जा सकैत अछि जे एकांकी एके अंकक नाटक होइत अछि जाहिमे एकांकीकार एके घटनाकेँ नाटकीय चमत्कारसँ, ओहिमे औत्सुक्य, संभ्रम एवं विस्मयक सृजन कए ओकरा चरम सीमा धरि विकसित करैत अछि तथा नाटकीय विस्मयक संग ओकर एहि रूपमे अन्त करैत अछि जे एकांकीक समस्त घटना सभ एवं कथा तथा ओकर पात्र दर्शक वा पाठकक मन–प्राण आओर भावनाक संगी बनिकेँ सांकेतिक रूपसँ ओकर मनोभावक विषय बनि जाइत अछि आ ओहिमे विचार एवं भावक अदम्य उत्तेजना उत्पन्न कए दैत अछि तथा दर्शक वा पाठकक मानसिक स्नायु सभमे गुदगुदी उत्पन्न कए, ओकर मनोरंजन करैत अछि अथवा ओकरा झकझोरि ओकर मर्मकेँ स्पर्श कए ओहिमे किछु करबाक दृढ़ संकल्प उत्पन्न करैत अछि।[54]

मैथिलीक नाट्य–लेखकमे एकांकीकार लोकनिमे सधांशु 'शेखर' चौधरीक नाम उल्लेखनीय–प्रशंसनीय

अछि। हिनक एकांकी 'हथटुट्टा कुरसी' बेस ख्याति पओलक अछि। 'हथटुट्टा कुरसी' एकांकीकें सभ शर्तकेँ पूर्ण करैत अछि आ ई मैथिली नाट्य-साहित्यक एकांकी-जगतमे श्रेष्ठ स्थान रखैत अछि। ई विघटित होइत परिवारक बिन्दुपर अवस्थित अछि जे नितान्त सामयिक उतरैत अछि। वर्त्तमान समाज कतबो एकता ओ अखंडताक उच्चारण करए, बन्धुत्व ओ अपनत्वक गप्प करए, मुदा ओ वर्त्तमान आचार-विचार आ सभ्यताक देन थिकैक जे समाजक प्रत्येक व्यक्ति विघटनक दिस अग्रसर अछि। एही पारिवारिक विघटनक कथाकेँ 'हथटुट्टा कुरसी'मे देखाओल गेल अछि।

नेनमणि एकटा गृहस्थ अछि जकर जेठ बालक सेहो गृहस्थे छैक आ खेत-पथार देखैत छैक तथा दोसर बेटा हरे पढ़ि-लिखिकऽ छोट-मोट हाकिम भऽ गेलैक अछि अर्थात डिप्टी कलक्टर। हाकिम बेटा गाम-घर कम अबैत छैक, मुदा बाप आ जेठ भाइकेँ मोन ओकरे पर लटकल रहैत छैक। एकांकीक आरम्भ एहि संवादक संग होइत अछि जे फल्लाँ तिथिकेँ हाकिम बेटा गाम आबि रहल छैक आ एकर प्रतिक्रियामे आश्रम यानी घरमे दौड़बरहा होमए लगैत अछि। बाप एवं जेठ भाइ हाकिमक आगमनक तैयारीमे लागि जाइत अछि। यद्यपि जेठ बेटाक कमाइ-खटाइ पर जेँ कि हाकिम बेटा पढ़लक आ हाकिम बनल, तेँ ओ अपन बाप पर कौखन-कौखन कुनमुनाइतो अछि, मुदा अपन मोनक भावकेँ दाबिकेँ बापक आज्ञाकारी बनल रहैत अछि।

हाकिम बेटाक बाप होइतहुँ घरमे एकोटा कुर्सी नहि छनि। बाप बेटासँ कहैत छथिन जे पड़ोसियाक ओहिठामसँ एकटा बढ़िया कुर्सी लए आनऽ तँ बौआकेँ बैसबा-उठबामे असोकर्य नहि होएतनि। जेठ बेटा कुर्सी तँ अनैत अछि मुदा ओ कुर्सी हथटुट्टा होइत अछि। उपरागक स्वरमे बेटा बापसँ कहैत अछि जे नीक कुर्सीक लेल बोच बाबू बहाना बना देलनि आ ई हथटुट्टा कुर्सी दऽ देलनि।

की करितहुँ, शोणितक घोंट पीबिकऽ चलि अएलहुँ। बाप संतोष दैत कहैत छथिन जे की करबहक, माँगल वस्तु माँगले सन होइत छैक। नै मामासँ कनहा मामा नीक। कोनो तरहेँ बौआ काज चला लेताह। एतबेमे डाकपिन चिट्ठी दैत अछि आ स्वयं मूर्ख रहने ओ गृहस्थ चश्मा नहि होएबाक बहाना बना कए डाकपिनकेँ समाचार पढ़ि देमए कहैत छथि। पोस्टकार्डमे लिखल रहैत अछि– "बाबूकेँ सादर प्रणाम। हम एहू बेर नहि आबि सकलहुँ। एकटा संगी पकड़ि लेलक। सपरिवार काश्मीर जा रहल छी। घुरब तँ फेर चिट्ठी देब।'[55] अन्ततः नेनमणिक सभ तैयारी पड़ले रहि जाइत छैक आ एक उच्छ्वास ओकर मुँहसँ निकलैत छैक– 'काश्मीर! निरसू, ई काश्मीर कतऽ छैक? एहि गामसँ की ओ सुन्नर स्थान छैक?'[56] एवंप्रकारेँ एहि एकांकीक चरम परिणति होइत अछि।

ओहि गृहस्थक उच्छ्वास एवं पितृ–स्नेहक व्यथाकेँ थाहऽ लेल केहन सहृदयक आधार चाही, से सहजहि अनुमान्य अछि। एकांकीकार एहि एकांकीमे ई देखएबाक चेष्टा कएलनि अछि जे– जे अपन स्थितिसँ, अपन पारिवारिक स्तरसँ कनेको उपर उठि जाइत अछि से व्यक्ति उठले रहबाक प्रत्याशामे रहि जाइत अछि एवं जतए ओ छल, तकरा बिसरि जएबाक चेष्टा करैत अछि। ई विघटनकारी जहर सम्पूर्ण समाजमे पसरिए रहल अछि, पसरले जा रहल अछि। शेखरजीक ई एकांकी एहि दिशामे सोचबाक आ मंथन करबाक हेतु विवश करैत अछि आ यैह एकर सफलता थिक।[57] एहि एकांकीमे समसामयिक जीवनक अभिव्यक्ति संग–संग परम्परावादी मूल्यक खंडन सेहो भेल अछि।

मंचन ओ सन्देश सम्प्रेषणक दृष्टिसँ एकहि स्थानपर एकहि कालखंडमे सम्पन्न होमएबला ई एकांकी शेखरजीक सफल एकांकीकार होएबाक सबल प्रमाण अछि।[58] शीर्षक श्लेषात्मक अछि जे टुटैत परिवारक पर्याय बनि गेल अछि।[59]

## आँखिक परदा

दहेज प्रथापर लिखल गेल एहि एकांकीमे कुल सात गोट पात्र अछि। पाँच गोट पुरुष पात्र ओ दुइ गोट स्त्री पात्र।

बारह बिगहा जमीनक मालिक जित्तू अपन बेटी शोभाक विवाह दिगम्बर नामक विद्यार्थीसँ करैत छथि। विवाहसँ लऽ विदाइ धरिमे तीन हजार टाका खर्च करए पड़ैत छनि। पचास टाका महीना पढ़बाक खर्च सेहो जमाएकेँ देबए पड़ैत छनि। आ एहि हेतु खेत सभ भरनापर भरना पड़ल जा रहल छनि। घरक हालति एकदम दयनीय भऽ गेल छनि। एकमात्र बालक बिरजूक पढ़बाक हेतु काँपी-किताब आ स्कूलक फीस सन सामान्य खर्चो नहि जुटा पबैत छथि। ओ स्कूल जाएब छोड़ि महिसबारक हेड़मे रहैत छथि- खेलाइत छथि।

ओम्हर जमाए दिगम्बर जे दीगू नामे सम्बोधित होइत छथि सासुरक टाकाकेँ दोस्त-महीमक संग ऐश-मौजमे फुकैत रहैत छथि।

मुदा अन्तमे दीगूकेँ स्थितिक ज्ञान होइत छनि। ओ शिक्षक भऽ गेल छथि। एक दिन पत्नी शोभासँ अपन ससुरक जर्जर स्थितिक आ सार बिरजूक मूर्ख रहबाक बात सेहो ज्ञात होइत छनि। एहि परिस्थितिक ज्ञान भेला पर दिगूकेँ घोर पश्चाताप होइत छनि। ओ अपनाकेँ दोषी मानि पश्चाताप करए चाहैत छथि। ओ बिरजूकेँ अपना लग राखि पढ़एबाक आ जित्तू (ससुर)केँ आ अपनहि ओहिठाम राखि इलाज कराएब निश्चित करैत छथि। हुनका आँखि पर लागल परदा हटि जाइत छनि। एहि प्रसंग ओ शोभाकेँ कहैत छथि- ''हमर पापक कोनो सजाय नहि भऽ सकैए। एक हमही नै, हमरा सन-सन हजारो-लाखो दिगम्बर, हजारो-लाखो बाबूकेँ तबाह कएलकनि आ कऽ रहल छनि। हजारो-लाखो बिरजूक अधिकार छीनि हमरा सन-सन नराधम समाजमे अगुआ बनैत अछि।...आइ जे अपना समाजमे प्रोफेसर-डाक्टर...इंजीनियर

आ ने जानि, कोन-कोन पद पाबि बढ़ि रहल छथि तै मे सँ कतेको लोक ससुरेक आ सारेक सुख-सुविधाकेँ लूटि मौज मना रहल छथि।[60]

एकांकीमे दिगूक जीवनक दुइ गोट चित्र उपस्थित कएल गेल अछि- पूर्वार्द्धक छात्र जीवन ओ बादक जीवन। हुनक छात्र जीवन अवश्य ससुरक टाकापर होटल, सिनेमा ओ संगी-साथीक बीच गुलछर्रा उड़बऽ बला रहलनि, मुदा जखन वस्तुस्थितिक बोध होइत छनि तँ ओ एक गोट समाजक निर्माणकर्त्ताक रूपमे ठाढ़ होइत छथि। ओ अपन अध्यापनमे छात्र लोकनिकेँ इहो पढ़एबाक निश्चय करैत छथि जे- 'मर्द ओ जे बापक कमाइसँ पढ़ए।'[61]

सम्पूर्ण एकांकीमे मात्र जुगलक उपस्थिति थोड़े कालक लेल भेल अछि। ओ समाज मे समर्थबानो बेटाकेँ ससुरेक टाका पर पढ़बाक चर्चा तँ करैछ, मुदा स्वयं अपना लेल कोनो गुदगर असामी तकैत अछि।[62]

पाँच दृश्यमे समायोजित ई एकांकी अपन सन्देश देबामे पूर्ण सक्षम भेल अछि।

**बेलक मारल**

शेखरजी एहि एकांकीमे समसामयिक परिवेशमे नगरीय जीवनमे अति निम्न ओ मध्यवर्गीय समाजिक जीवनक सटीक चित्र उपस्थित कएने छथि।

एहिमे चारि गोट पुरुष पात्र-नारायण, कमल, सिपाही आ विनोद एवं दुइ गोट स्त्री पात्री- लक्ष्मी आ माया कुल छह गोट पात्र-पात्री अछि।

नारायण एक गोट नाङर भिखमंगा अछि जे सड़कक कातमे पर्णकुटी बनाकऽ रहि जीवन-यापन करैत अछि। लक्ष्मी ओकर पत्नी छैक। कमल एहने कीड़ा-मकोड़ा सन जीवन जिउनिहार वर्गक एकगोट पढ़ल लिखल नाटककार - दलितोद्धारक युवक अछि तथा माया आ विनोद दलितोद्धारक स्वांग रचनिहार युवती ओ युवक

अछि। सिपाही घटनाकेँ गति प्रदान करबाक ओ जोड़बाक सहयोगी पात्र अछि।

भिखमंगा नारायणकेँ कतहुसँ कुकुरक छुइल दस गोट बासि रोटीक पएबाक प्रसन्नतासँ एकांकी आरम्भ होइत अछि। नारायण अति प्रसन्नचित्तसँ दस गोट रोटी लऽ अपन घर अबैत अछि आ लक्ष्मीकेँ नहि पाबि हाक लगबैत अछि। लक्ष्मी सड़कपर खसल खुद्दी हँसोथब छोड़ि अबैत छैक। नारायण हाथक रोटीकेँ नुका ओकरा बुझौअलि बुझबैत छैक- "बाज की अनने छी?" आ लक्ष्मीक हठ कएलापर दसो रोटी ओकरा ६ रा दैत छैक। पैघ लोक जकाँ आइ ओहो फिफ्टी-फिफ्टी खाएत। दुनू प्राणी खाएब आरम्भ करैत अछि। तखने सिपाही आबि ओकरा सभकेँ ओतएसँ खोपड़ी नहि हटएबाक कारणेँ बेइज्जति करैत छैक। ओहि बाटे पैघ-पैघ अफसर, लीडर आदि चलैत छथि, तेँ तुरन्त खोपड़ी हटएबा लेल कहैत अछि। जल्दी खोपड़ी हंटा लेब से नारायण आ लक्ष्मी, सिपाहीसँ कहैत ओकरा मनबैत अछि। मुदा सिपाही नहि मानैत अछि। ओ दुनू हाथक रोटी छीनि, मोड़ीमे फेकि, लाठी ओ बूटक प्रहारसँ खोपड़ीकेँ ध्वस्त कऽ दैत छैक। लक्ष्मी आ नारायण सिपाहीकेँ सरापए लगैत छैक। सिपाही क्रोधमे लाठी चलबैत अछि जे नारायणक बैसाखी पर लगैत छैक आ नारायण खसि पड़ैछ। सिपाही दुनूकेँ लाठी ओ पैरक ठोकरसँ मारैत अछि, जाहिसँ दुहूक कपार फूटि जाइत छैक। सिपाही नारायणकेँ थाना लऽ जाइछ जकरा पाछाँ-पाछाँ लक्ष्मी सेहो कनैत-पिटैत विदा भऽ जाइत अछि।

एम्हर खोपड़ी लगक मकानसँ माया बहराइत अछि। ओ सिपाही द्वारा उनटौल-पुनटौल वस्तु-जातकेँ देखए लगैछ कि तखने ओहि ठाम कमल उपस्थित होइत अछि। माया ओ कमलक बीच सामाजिक ओ आर्थिक विषमता आदि विषय पर नोंक-झोंक होमए लगैत छैक।

माया दलितोद्धार करबाक निमित्त ''चैरीटी शो''क आयोजन करए बाली छलीह। ओही दिन मायाक सहयोगी विनोद सेहो नारायण ओ लक्ष्मीक उद्धारक हेतु ओतए आबए बला छल। अबितो अछि, मुदा ताबत ओकरा सभक दुर्दशा भऽ गेल रहैत छैक।

दुनू प्राणी थानासँ शोणिताएल घुरि अबैत अछि। माया आ विनोद ओकरा सभक प्रति फुसिआह संवेदना व्यक्त करैत अछि। जकर कमल खण्डन करैत अछि। विनोद आ कमलमे कहा-कही भऽ जाइत छैक। विनोद उत्तेजित भऽ कमलपर लपकैत अछि। ता कमल पाछां हटि जाइत अछि, जाहिसँ विनोदकेँ ओकर चद्दरि पकड़ा जाइत छैक। कमल उघार भऽ जाइत अछि। ओकर केहुनीसँ नीचा दुनू हाथक गलल चाम देखि विनोद घृणासँ भरि उठैत अछि। दलितोद्धार करबाक गप्प कहनिहार माया आ विनोद ओतएसँ प्रस्थान करैत अछि। नारायण ओ लक्ष्मी कमलकेँ पुनः चद्दरि ओढ़ा दैत अछि। लक्ष्मी जिज्ञासा करैत छैक- 'की यैह सभ आइ आबए बला छलाह ?'[63] कमल हुनका लोकनिक वास्तविकताक उद्घाटन करैत हुनक मनुष्यतापर ठहाका लगबैत अछि। एतहि एकांकीक चरम परिणति होइत छैक।

एहि प्रकारेँ सम्पूर्ण एकांकीमे मध्यवर्गीय समाजक प्रपंचपूर्ण चरित्र दृष्टिगोचर होइत अछि। विनोद तँ कमल द्वारा गप्पमे गछाड़ल गेलापर एतेक धरि कहि जाइत अछि जे- 'व्यक्तिगत रूपसँ हमरा एहि कीड़ा-मकौड़ासँ कोनो सहानुभूति नहि अछि।

शेखर जी समसामयिक परिवेश-आवेशमे समाजमे होइत मानव-मूल्यक ह्रास, अर्थक महत्ता ओ मानवताक संगहि कलापर्यन्तक कुरूप परिहासक नग्न रूप सोझांमे रखलनि अछि।

मानवताक एहिसँ अधिक उपहास की होएतैक जे, जे व्यवस्था एक दिस सड़कपर चलैत कोनो पैघ लोकक टूटल-भाड़ल खोपड़ी पर नजरि नहि पड़ैक ताहि हेतु

ककरो घर उजारैत अछि, भूखल केर हाथसँ कुकुरक छुइल रोटी छीनि फेंकैत अछि। जखन कि ककरो कुकुरो मोटरपर चलैत छैक, माछ–मांस खाइत छैक आ पलंगोपर सुतैत छैक।

ई तँ मध्यकालीन सामन्ती व्यवस्थाक चरम थिक जे वर्त्तमान स्वातन्त्र्योत्तर कालोमे विभिन्न रूपमे विद्यमान अछिए। मुदा एहिसँ गर्हित बात अछि सामाजिक सम्मानक निमित्त दलितोद्धारक स्वांग रचनिहार कलाकार वर्गक क्रिया–कलाप। वस्तुतः ई कला नहि, कलाक व्यभिचार थिक। भीतरे–भीतर अंडा–मुर्गा आ ऊपरसँ रामनाम बला संस्कृति केर विकास थिक। नहि तँ कतए एहन लाचारक पूछ छैक। ओ मरि किएक ने जाए ओकरा कतहुँ क्यो पुछनिहार नहि छैक। अस्पताल आ कि आने कोनो ठाम टके बलाक पूछ छैक। निकौड़ियाक भगवाने रक्षक।[64]

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे शेखरजी मात्राक दृष्टियेँ बड़ कम एकांकीक रचना कएलनि तथापि हिनक एकांकी विषयवस्तु एवं मंचीयताक दृष्टिसँ पूर्ण सफल भेल अछि। मैथिली एकांकीक रेखा–लेखामे हिनक 'हथटुट्टा कुरसी', 'आँखिक पर्दा' आ 'बेलक मारल' पर्याप्त ख्याति पओलक अछि। 'हथटुट्टा कुरसी'मे मिथिलाक टुटैत परिवारक यथास्थितिक सशक्त चित्रण अछि, तँ 'आँखिक पर्दा'मे मिथिलामे प्रचलित वैवाहिक कुप्रथा एवं तिलक प्रथापर तीव्र आघात कएल गेल अछि। 'बेलक मारल' एकांकीमे शोषित एवं पददलित वर्गक अति यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कएल गेल अछि, संगहि छद्मवेशी सभ्यता ओ औपचारिकताक पर्दाफाश कएल गेल अछि। आ यैह ओ बिन्दु अछि जतएसँ आधुनिक मैथिली एकांकीक एक नव दिशाक संकेत प्राप्त होइछ एवं यथार्थवादी भाव–भूमिका नव क्षितिज हुलकी मारब प्रारम्भ करैछ।[65]

अतएव, कहल जा सकैत अछि जे शेखरजीक 'हथटुट्टा कुरसी' अत्यन्त छोट होइतो मैथिली एकांकी

मध्य कथ्य, प्रस्तुति एवं मंचीय तकनीकक कारणेँ अत्यधिक लोकप्रिय अछि संगहि एकांकीक कसौटी पर सभ तरहेँ परिपूर्ण रहबाक कारणे अन्य भारतीय भाषाक एकांकीक समक्ष ठाढ़ होएबाक पूर्ण सामर्थ्य रखैत अछि।[66]

## मौलिक रेडियो रूपक

श्रव्यकाव्यक पंक्तिमे रेडियो नाटकक उल्लेखनीय स्थान अछि। जे कलाकृति पहिने रंगमंचपर दर्शक लोकनिक आँखिक समक्ष अभिनीत भऽ हुनका अभिभूत करैत छल से आब कोसो दूर स्थित स्टूडियोमे अभिनीत भऽ श्रोताक कान धरि पहुँचि जाइत अछि। रेडियोक प्रतापेँ आइ दर्शक श्रोता बनि गेल अछि तथा रेडियो सम्पन्न प्रत्येक घर नाटकक प्रेक्षागृह बनि गेल अछि।[67] रेडियो नाटकक मूल आधार ध्वनि अर्थात् मात्र श्रव्य आ पाठ्य अछि। अमूर्त्तसँ अमूर्त्त एवं सूक्ष्मसँ सूक्ष्म विचार, दृश्य, वातावरण आदि जतेक सफलतासँ रेडियोपर प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि, रंगमंचपर नहि कएल जा सकैत अछि। स्वप्न वा स्मृत्ति चित्र वा काल्पनिक चित्र वा एही तरहक अनेक जटिल दृश्य रंग नाटकक अपेक्षा रेडियो नाटक बेसी सफलतापूर्वक प्रस्तुत कएल जा सकैत अछि। एकर अतिरिक्त रेडियो नाटक जतबे कलापूर्ण होइत अछि ततबे यांत्रिक सेहो।

रेडियो नाटकमे आँखिक कार्य कानकेँ करए पड़ैत छैक। संगहि एहिमे पात्रक सशरीर नहि उपस्थित रहबाक कारणेँ ओकर चलब-फिरब, उठब-बैसब, घूमब-फिरब तथा दोसर अनन्त क्रियाक संगहि वातावरणक निर्माण, वेश-भूषाक वर्णन, दृश्यक सजावट, पात्रक आयु-स्थिति आदि सभक आभास श्रोताकेँ ,ध्वनिक द्वारा कराओल जाइत अछि। तेँ एकरा एकगोट स्वतन्त्र विधाक अन्तर्गत राखल जा सकैत अछि।

ई कोनो आवश्यक नहि जे जे व्यक्ति मंचनीय नाट्य लेखनमे अत्यन्त सफल होइत छथि ओ रेडियो

नाट्य लेखनमे सेहो पूर्णतः सफल भए जाथि। मुदा सुधांशु 'शेखर' चौधरी एकर ज्वलन्त प्रमाण छथि जे ओ मंचनीय एवं रेडियोरूपक एहि दुनू विधामे सिद्धहस्त छलाह- श्रेष्ठता प्राप्त कएने छलाह। तैं रेडियो नाटकक क्षेत्रमे सेहो शेखरजीक नाम चर्चित एवं प्रशंसित अछि।

शेखरजीक रेडियो रूपकक प्रसंग चर्चित कथाकार आ नाटकार एवं पटना आकाशवाणीक एक सेवानिवृत विशिष्ट अधिकारी डा० गंगेश गुंजन कहैत छथि जे- "शेखरजी अपेक्षाकृत सभसँ पुरान नाटककार छथि जे रंगमंच नाटक पर प्रभूत कार्य कए चुकल छथि तथा रेडियोक हेतु सेहो विलक्षण नाटक सभ लिखलनि। सामाजिक कुप्रथा एवं तकर फलस्वरूप बहए बला त्रासदीक कथानकसँ लए एक आदर्शवादी वृद्धक विक्षिप्त अन्त सदृश गम्भीर विषयपर। लगभग दर्जनोसँ उपर हिनक नाटक रेडियोसँ प्रसारित भए चुकल अछि। हिनक विषय प्रतिपादनमे अधिकांश कथानक कन्यादान समस्या लए बढ़ैत अछि, से 'आँखिक पर्दा', 'जय सोमनाथ'हि नहि अपितु हिनक अद्यतन नाटक 'चाकरी' पर्यन्त शेखरजीक ओही नाटककार दृष्टिक एकटा विकास परिलक्षित करबैत अछि। यद्यपि 'चाकरी'मे विवाह समस्या, आधुनिकतम भारतीय समस्या बेरोजगारीक प्रसंगसँ जुटि कए नवता लए लेलक अछि से वस्तुतः कएक परन्तु मूल दृष्टिमे कतहु वैह आरम्भिक व्यंग्यकार, मर्मदर्शी कलाकार आँखि खोलि कए देखि रहल अछि।[68]

आगाँ फेर शेखरजीपर प्रकाश दैत गुंजनजी कहैत छथि- "यद्यपि विवाह-दानक समस्या आइ अपन समाजक निम्नवर्गक कोनहु समस्या नहि छैक। जे कुलीन छथि, अपनाकेँ योग्य मानैत छथि। ई समस्या हुनकहि लोकनिक छनि तैं एक प्रकारसँ लेखकक सीमित लक्ष्य बूझल जा सकैत अछि जे ओ एक वर्ग विशेषहिक जीवनकेँ छुबइत अछि तथापि ई मानबासँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि जे शेखरजी यथार्थवादी दृष्टिकोणक सावधान लेखक

रहलाह अछि आओर आइयो ओ युगक अनुकूल लिखि रहल छथि।"[69]

शेखरजी पर्याप्त संख्यामे रेडियो नाटक लिखने छथि। जकरा सभकेँ अध्यावधि समेटल नहि जा सकल अछि। गुंजन जी हिनक रेडियो नाटकक संख्या बारह गोट कहैत छथि। जखन कि श्री अनिल कुमार मिश्र अपन पोथी 'नाटककार 'शेखर'मे आकाशवाणी पटनाक अधिकारी लोकनिसँ प्राप्त जानकारीक आधारपर दू सँ अढ़ाइ दर्जनक बीच मानैत छथि।

उपलब्ध तथ्यक आलोकमे शेखरजीक रेडियो नाटक सभ अछि– 'जय सोमनाथ', 'बहतर', 'चाकरी', 'आँखिक पर्दा', 'परिवार', 'सख–सिहन्ता', 'कहाँ जाइ छी डगरे–डगरे', 'सोनाक टुकड़ी', 'पड़ल काज' आदि।

रेडियो नाटक रहबाक कारणेँ जकर कथावस्तु उपलब्ध अछि तकरे हम चर्चा कऽ रहल छी।

### उड़नखटोला

एहिंमे शेखर जी हास्यक माध्यमसँ अपन कथ्यकेँ अभिव्यक्ति देलनि अछि, जे हिनक लेखन प्रवृत्तिसँ सर्वथा भिन्न अछि।

'उड़नखटोला' सरकारक बीस सूत्री कार्यक्रमपर आधारित विशुद्ध प्रचारवादी नाटक अछि। उड़नखटोला उड़ैत अछि जाहिपर एक युवक आ ओकर मामा प्रगाढ़ निन्नमे फोंफ काटि रहल अछि। भागिन जागल अछि आ संसारक घटना चक्रक अवलोकन करैत ओकर व्याख्या करैत जा रहल अछि। ओकरा मामकेँ जागल वा सूतल रहबासँ कोनो प्रयोजन नहि छैक। ओ अपनहिंमे मस्त अछि। ओना मामा बीच–बीचमे टीप–टाप छोड़ि कऽ सम्पूर्ण घटनामे ठड़रे पाड़ैत रहैत छथिन। संसारमे बढ़ैत चोरबजारी आ ओहिसँ व्याकुल जनमानसक बखान करैत भागिन जखन उड़नखटोलासँ खसैत अछि तँ ओकर निन्न टूटि जाइत छैक। कहबाक अभिप्राय जे समस्त घटना स्वप्नमे घटित होइत छैक।

एहि रेडियो नाटकमे शेखरजी जमाखोरी आ चोरबजारीक जे वर्णन कएने छथि जे अतिशय मनोरंजक भेल अछि। एहन स्थिति देखि भागिन नकियाइत अछि– ''मामा–मामा हे देखियौ, ओहि गोदाममे लाखक लाख सलाइ, बड़का बड़का डिब्बा सभ काठक झपनासँ झाँपल अछि जकरा उपरसँ पत्तर ठोकि देल गेल छैक। मुदा देखियौ, बाजारमे कोना लोक सभ छोटकी डिब्बा लेल फिफिया रहल अछि। एक दिस आँच पजारबा लेल कलहन्त मचल अछि आ एक दिस बाकसक बाकस सलाइ डीकल।'' असलमे चोरबजारी एवं नफाखोरीपर लिखल एहि प्रचारवादी नाटकमे शेखरजी प्रचारक गंध नहि आबए देलनि अछि आ हास्यक सृष्टि कए एहि नाटककेँ अतिशय मनोरंजन बना देलनि अछि। तारीफ ई अछि जे उड़नखटोला परसँ खसैत देरी निन्न टुटलापर भयसँ भागिन लगमे सुतल मामाक देह धए–धए कनैत अछि आ श्रोता भभा उठैत छथि।[70]

### उफाँटि

एहिमे पारिवारिक विभेदकेँ देखाओल गेल अछि। जाहिमे दू भैयारीक कथा अछि। जेठ भाइ किरानी अछि आ छोट भाइ हाकिम बनि गेल अछि। संयोगसँ जेठ भाइ जाहि शहरमे नौकरी करैत अछि ओहिठाम छोट भाइक बदली सेहो भऽ जाइत छैक। मुदा कहियो–कौखन ओ जेठ भाइक डेरापर नहि जाइत अछि। एक दिन अबितो अछि तँ तकर उद्देश्य रहैत छैक अपन नवका मोटरगाड़ीक माध्यमे आर्थिक– सम्पन्नता प्रदर्शन करब। जखन जेठका भाइक पत्नीकेँ मोटर पर चढ़बाक लालसा भऽ जाइत छैक तँ अपन इच्छा छोटकी देयादनीसँ कहैत अछि। मुदा हुनक ओ इच्छा पूर्णताक बाटे तकैत रहि जाइत अछि। कार्य व्यस्तताक बात कहि छोटका भाइक पत्नी प्रस्थान कऽ जाइत अछि आ जेठ भाइ दुनू प्राणी मोटर द्वारा उड़िऔल गर्दाकेँ देखैत रहि जाइत छथि। जेठ भाइक पत्नी हुनका लोकनिक अएबाक उद्देश्यकेँ स्पष्ट करैछ

जाहि पर जेठ भाइ संतोष प्रकट करैत कहैत छथि जे हुनक परिश्रम सार्थक भेलनि। ओ भने पैघलोक नहि बनि सकलाह, मुदा छोट भाइकेँ पैघलोक बनएबामे सफल भेलाह अछि।

एहि नाटककेँ फ्लैश-बैकक टेकनीकसँ ततेक व्यापकता देल गेल अछि जे ओ श्रोताकेँ ओत-प्रोत कए दैत अछि।

**नव आँखि**

ई पूर्णतया सामाजिक समस्यासँ सम्बद्ध अछि तथा एहिमे नारी-शिक्षापर विशेष जोर देल गेल अछि। एही विषयकेँ एहि रेडियो नाटकमे उपस्थापित कएल गेल अछि। एक गोट शिक्षित युवतीक विवाह तेहना ठाम होइत छैक जतए पढ़बासँ सभकेँ शत्रुते छैक। ओकर पोथी छीनि चूल्हिमे झोकि देल जाइत छैक आ पछाति पतिसँ प्रताड़िता भऽ ओ घर छोड़बाक लेल विवश भऽ जाइत अछि। घर छोड़ि ओ एकगोट एहन युवतीक ओहिठाम शरण लैत अछि जकर पारिवारिक जीवन ओकर अशिक्षिता होएबाक कारणेंविघटित भऽ रहल छैक। ओकर विवाह फुसिये मैट्रिक पास कहि कऽ देल गेल रहैत छैक। जखन ओकर निरक्षरता प्रकट होइत छैक तँ ओकर पति घर त्यागि दैत छैक। अपन शरण स्थलीक एहन दुर्दशा देखि शिक्षिता युवतीकेँ नव दृष्टि भेँटैत छैक। ओ अपना जीवनकेँ नारी शिक्षामे समर्पित करबाक संकल्प लैत ओही घरसँ एकरा कार्यरूप देबाक निर्णय करैत अछि। एहि प्रकारेँ नाटकक अन्तमे युवतीकेँ नव दृष्टि अर्थात् नव आँखि भेँटैत छैक। एहू नाटकमे पूर्ण कुशलतासँ फ्लैश बैक उपयोग कए शेखरजी चमत्कार आनि देलनि अछि।

**सोनाक टुकड़ी**

समाजमे व्याप्त ऊँच-नीच, छोट-पैघ आदि समस्याक कारणेँ उपस्थित सामाजिक विभेद आ तकर दुष्परिणामकेँ 'सोनाक टुकड़ी'मे रेखांकित कएल गेल अछि।

फल्लाँ बाबूक अत्याचारसँ पीड़ित भऽ छोट लोकक नेता–छौंड़ा सभ पैघ जातिक विरोधमे प्रतिक्रिया स्वरूप अपना ओहिठामक जनानी जातिकेँ खबासनीक काज करबासँ रोकि दैत अछि आ घोषितकऽ दैत अछि जे हमरा लोकनिक बहुआसिन लोकनिकेँ इनार–पोखरिपर आबि बासन मलैत देखए चाहैत छी आ पोखरिसँ पानि भरैत देखए चाहैत छी। फल्लाँ बाबू दू–चारि दिन तँ ई तमाशा देखैत छथि आ बादमे कुचक्र रचएमे लागि जाइत छथि। परिणामतः छोट जातिक टोलमे आगि लागि जाइत अछि। ई अगिलग्गी कोना भेल अछि, की भेल अछि से छोट लोकक छौंड़ा सभ बुझैत अछि आ ओहो सभ प्रपंच रचैत अछि जे जहिये फल्लाँ बाबू अपन खेतक आड़िपर आबथि, हुनका काटिकऽ खेतमे गाड़ि देल जाए।

दुनू दिससँ हँसेरा–हँसेरी होइछ जाहिमे शान्त सज्जन चरित्रक खबास अपने लोकक हाथेँमारल जाइत अछि। ओकरे कारणेँओ पैघ लोक बँचि जाइत छथि। हुनका अपन कृत्यपर ग्लानि होइत छनि। ओ गामक सभ वर्गक सभा बजाय ओहिमे अपन कुकृत्यकेँ स्वीकारैत खबासक मृत्युक कारण समाजमे व्याप्त विभेद रूपी विषकेँ मानैत छथि आ अपन सोनाक टुकड़ी सन पाँच बीघा खेत मृत खबासक नामपर कऽ दैत छथि। ओकर स्मारक निर्माण ओ ओकर चरित्रक अनुशरण कऽ सामाजिक सामंजस्य स्थापित करबाक बीजमन्त्र नाट्कान्तमे देल जाइत अछि। समाजमे व्याप्त एहि विषाक्त वातावरणक परिहारक मार्ग शेखरजी बड़ कौशल आ बड़ प्रभावी ढंगसँ प्रदर्शित कएने छथि।[71]

## पड़ल काज

शेखरजी व्यक्ति, परिवार, समाजक संग–संग राष्ट्रीय ओ अन्तरराष्ट्रीय विविध समस्याक प्रति सतत् जागरुक रहलाह। 'पड़ल काज' एही सन्दर्भमे लिखित शब्द–नाट्य (रेडियो नाटक) थिक। एहिमे कुल सात गोट पात्र–पात्री

अछि– गृहस्थ 'भुल्लर झा' हुनक चरबाह, 'फकिरबा' पत्नी 'गुलाब रानी' पुत्र 'ठक्कन', पुत्र वधू 'भैरबी', फकिरबाक माय 'बुधनी' आ पंचायतक मुखियाजी।

फकिरबा अपन गिरहतनी गुलाबरानीसँ चरबाहीक बाँकी बोइन मंगैत अछि। साँझक समय छैक। गिरहत-गिरहतनी बोइन देबासँ नकारि दैत छथिन। ओम्हरसँ फकिरबाक मायो आबिकऽ बोइन देबाक विरोध करैत अछि। ओ स्पष्ट करैत अछि जे फकिरबा चिनियाँ सभसँ लड़बा लेल जाय चाहैत अछि। भुल्लर ओकरा डाँटि-दबारि कऽ चुप कऽ दैत छथि। एम्हर हुनक बेटा ठक्कन कालेजक पढ़ाइ छोड़ि आबि जाइत छनि। ओ फौजमे भर्त्ती भऽ गेल अछि। भुल्लर दुनू प्राणी ओकरा मनएबाक असफल प्रयास करैत छथि आ अन्तमे अप़नो राष्ट्रहितमे काज करबाक संकल्प लऽ लैत छथि। एकर बाद मुखियाजीक अध्यक्षतामे गामक लोकक बैसार होइत अछि जाहिमे मुखियाजी ओ ठक्कन गामक प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन काज निष्ठा ओ मेहनतिसँ करैत राष्ट्र सेवामे तत्पर होएबाक सन्देश दैत छथि। ओहि सन्देशक ततेक बेसी प्रभाव होइत छैक जे भैरवी राष्ट्रहितमे अपना योग्य काजक जिज्ञासा करैत छथि। आ नर्सक काज करबाक नेयारि कऽ पति ठक्कनकेँ अपन शोणितक ठोप कऽ युद्ध करबाक लेल विदा करैत छथि।

एकर अतिरिक्त शेखरजीक रेडियो रुपक **'आँखिक पर्दा'**, **'चाकरी'** आ **'जय सोमनाथ'** नाटक सभ सेहो अति प्रसिद्ध भेल अछि।

एहि प्रकारेँ स्पष्ट होइत अछि जे शेखरजी रंग नाटक लिखथु वा रेडियो नाटक। मुदा हिनक रचना सोद्देश्य होइत छनि। यैह हिनक रचना धर्मिता बुझि पड़ैत अछि। शिल्पक चमत्कार, संवादक परिष्कार एवं मौलिकता हिनक नाटकक विशेषता अछि। प्रयोगधर्मिता हिनक प्रकृति छनि, खाहे मंचक नाटक होअए वा रेडियो नाटक, ई सभ ठाम प्रयोगरत भेँटैत छथि।[72] आ हिनक यैह गुण हिनका एक उत्तम कोटिक नाटककारक श्रेणीमे प्रतिष्ठित करैत छनि।

## संदर्भ सूची


1. रूपक रहस्य - डा० श्याम सुन्दर दास, पृष्ठ - 43.
2. दशरूपक : धनंजय, 1.8.
3. रूपक-रहस्य, पृष्ठ - 158.
4. भारतीय साहित्य का इतिहास, भाग - 3, खण्ड-1, डा० सुभद्र झा, पृष्ठ - 222.
5. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ- 6.
6. हिन्दी नाटक सिद्धान्त और समीक्षा - रामगोपाल सिंह चौहान, पृष्ठ- 21.
7. भारतीय साहित्य का इतिहास, भाग- 3, खण्ड -1, पृष्ठ - 216-219.
8. विजेता विद्यापति - कांचीनाथ झा 'किरण', भूमिका सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ - 3.
9. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ - 20.
10. तत्रैव, पृष्ठ- 23.
11. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, सं0 - शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 8.
12. साक्षात्कारक दर्पण मे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, सं० - शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 8-9.
13. तत्रैव, पृष्ठ- 9.
14. पहिल साँझ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 6-7.
15. तत्रैव, पृष्ठ - 18.
16. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ- 23-24सँ।
17. भफाइत चाहक जिनगी- सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 9.
18. तत्रैव, पृष्ठ - 3.
19. तत्रैव, पृष्ठ - 13-14.
20. तत्रैव, पृष्ठ - 15
21. तत्रैव, पृष्ठ - 44.
22. मैथिली नाटक ओ रंगमंच - डॉ० प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ-185.
23. तत्रैव, पृष्ठ - 83.
24. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 25.
25. पहिल साँझ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, भूमिका, पृष्ठ - 20.
26. लेटाइत आँचर - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, आत्मकथा, पृष्ठ-3.
27. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 26-27.
28. लेटाइत आँचर - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 30.

29. तत्रैव, पृष्ठ - 30.
30. तत्रैव, पृष्ठ - 12.
31. तत्रैव, पृष्ठ - 22.
32. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ-56.
33. तत्रैव, पृष्ठ - 57.
34. मैथिली नाटकपर संस्कृतिक प्रभाव - डा० जयमन्त मिश्र, पृष्ठ - 89.
36. पहिल साँझ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ- 20.
37. मैथिली नाटक ओ रंगमंच - डा० प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ-83.
38. लेटाइत आँचर - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 60.
39. तत्रैव, पृष्ठ - 60.
40. तत्रैव, पृष्ठ - 59.
41. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 29.
42. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ - 58.
43. पहिल साँझ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, भूमिका, पृष्ठ-20.
44. तत्रैव, पृष्ठ - 37.
45. तत्रैव, पृष्ठ - 56.
46. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ - 60
47. तत्रैव, पृष्ठ- 60-61.
48. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 31.
49. लगक दूरी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, प्रकाशकीय, पृष्ठ - 3.
50. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 34.
51. तत्रैव।
52. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ- 61.
53. तत्रैव, पृष्ठ- 62.
54. तत्रैव।
55. हिन्दी नाटक सिद्धान्त और समीक्षा - रामगोपाल सिंह चौहान, पृष्ठ- 270.
56. तत्रैव, पृष्ठ- 215-216.
57. हथटुट्टा कुरसी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 41.
58. तत्रैव।
59. नाटककार शेखर - अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ - 66.
60. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 39.
61. रंगमंच ओ एकांकी, स० डा० वासुकीनाथ झा, पृष्ठ - 111.
62. हथटुट्टा कुरसी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 14.
63. तत्रैव।
63. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ - 36.
64. हथटुट्टा कुरसी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 36.

65. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 38.
66. रंगमंच ओ एकांकी, स० डॉ० वासुकीनाथ झा, पृष्ठ – 104.
67. हथट्ठुा कुरसी – सुधांशु 'शेखर' चौधरी,प्रकाशकीय – शरदिन्दु कुमार चौधरी।
68. हथट्ठुा कुरसी – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 14.
69. सुधांशु 'शेखर चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 36.
70. हथट्ठुा कुरसी – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 36.
71. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 38.
72. रंगमंच ओ एकांकी स० डा० वासुकीनाथ झा, पृष्ठ – 104.
73. हथट्ठुा कुरसी – सुधांशु 'शेख़र' चौधरी, प्रकाशकीय –शरदिन्दु कुमार चौधरी।
74. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डा०दिनेश कुमार झा, पृष्ठ – 262.
75. मैथिली रेडियो नाटक – गंगेश्वर झा (डॉ० गंगेश गुंजन) पृष्ठ – 259.
76. तत्रैव, पृष्ठ – 260.
77. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ 72.
78. तत्रैव, पृष्ठ – 73.



## कथा

गप्प करब, अपन मनक बात कहब आ सुनब मनुष्यंक स्वभाव छैक। ताहूमे मैथिल तँ गप्पक आवेशी कने बेसिये होइत अछि। एक दोसराक सुख–दुखकेँ जनबाक मूल स्रोत यैह संवाद थिक। इतिहास कहैत अछि जे एही संवादसँ कथाक जन्म भेल। दोसरक कथा सुनबाक आ अपन कथा कहबाक यैह प्रवृति मैथिली कथाक जन्मक मूल कारण अछि। विद्वानलोकनि संस्कृत साहित्यमे कथाक स्रोत वेदक यम–यमी संवादमे पबैत छथि। तकरा बाद कथा लेखनमे एकटा मुख्य प्रस्थान–विन्दु अछि गुणाढ्यक वृहत कथा मंजरी। गुणाढ्य पैशाची भाषामे कथा लिखलनि जकर संस्कृत अनुवाद, संक्षेपमे, सोमदेव आ क्षेमेन्द्र कयलनि। विष्णुशर्माक हितोपदेश आ पंचतंत्र सेहो ओही आधारपर लिखल गेल। एहि प्रकारेँ संस्कृत साहित्यमे कथा लिखबाक परिपाटी बड़ पुरान अछि।

किन्तु मैथिलीमे कथा लेखन अपेक्षाकृत बहुत नव अछि। विद्यापति लिखित 'पुरूषपरीक्षा' नामक संस्कृतमे लिखित कथा संग्रहक मैथिली गद्यपद्यमय अनुवाद सर्वप्रथम चन्दा झा कयलनि। चन्दा झाक यैह अनुवाद ग्रंथ मैथिलीक पहिल कथा संग्रह थिक। मुदा ई पोथी मूल कथाक नहि, अनूदित कथाक संग्रह अछि। मैथिलीक पहिल मूल कथा कोन अछि ताहि संबंधमे दू प्रकारक मत अछि। किछु गोटे जीवनाथ मिश्र उर्फ पुलकित मिश्र लिखित 'मोहिनी मोहन' नामक कथाकेँ मैथिलीक पहिल प्रकाशित कथा मानैत छथि। एहि मान्यताक समर्थक छथि कुलानन्द मिश्र, मोहन भारद्वाज तथा मेघन प्रसाद। एकर विपरीत डा0 रामदेव झा 'मोहिनी मोहन'केँ उपन्यास मानैत जनार्दन झा 'जनसीदन' लिखित 'ताराक वैधव्य'केँ मैथिलीक प्रथम मौलिक कथा कहैत छथि। डा0 रमानन्द झा 'रमण' यदुनाथ झा 'यदुवर' रचित 'श्री शंकरक विवाह' नामक कथाकेँ मैथिलीक पहिल कथा मानलनि अछि।[1]

डा0 मेघन प्रसाद एहि सभ मत–मतान्तरक विस्तारसँ विवेचन करैत कुलानन्द मिश्र तथा मोहन भारद्वाजक मतक समर्थन करैत छथि।

मैथिलीक पहिल कथा जकरा मानल जाय, एतेक धरि निश्चित अछि जे मैथिलीक मौलिक कथा बीसम शताब्दीक प्रथम–द्वितीय दशकमे प्रकाशित भेल। एहि आधार पर कहि सकैत छी जे मैथिली कथाक इतिहास लगभग सय वर्ष पुरान अछि। एहि सय वर्षमे मैथिली कथाक विकास केवल मात्राक दृष्टियेँ नहि, गुणवत्ताक आधार पर सेहो महत्वपूर्ण अछि। काली कुमार दासक 'अदलाक बदला' तथा भोल झाक छद्मनामसँ लिखित कुमार गंगानन्द सिंहक कथा 'मनुष्यक मोल' मैथिलीक प्रारंभिक कालक उल्लेखनीय कथा अछि। एहिठाम एकटा विन्दुपर ध्यान देब आवश्यक अछि। मैथिलीमे पत्रिकाक जन्म भेल 1905 ई0मे। बीसम शताब्दीक तेसर दशकक समाप्त होइत–होइत तीन–चारिटा पत्रिका आबि गेल छल। 1929मे 'मिथिला' नामक पत्रिकामे हरिमोहन झाक 'कन्यादान'क पहिल खण्ड छपल। प्रारंभमे पाठक एकरा कथा बुझलक मुदा बादमे एहिमे खण्डपर खण्ड जुटैत गेल। कन्यादानक पहिल खण्ड कथासँ उपन्यास बनि गेल। मैथिली कथाक विकास एकरा बाद द्रुतगतिसँ होमय लागल। चारिम दशकमे काली कुमार दास, कुमार गंगानन्द सिंह, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', कांचीनाथ झा 'किरण' आदि अनेक रचनाकार कथा लिखब आरंभ कयलनि। मैथिलीक पहिल कथा संग्रह अछि– प्रबोध नारायण चौधरी लिखित आ कांचीनाथ झा 'किरण' द्वारा सम्पादित पोथी 'बीछल फूल'। ई पोथी काशीसँ प्रकाशित भेल आ एकर प्रकाशनक प्रेरक अथवा कत्ताधर्ता छलाह किरणजी।

बीसम शताब्दीक पाँचम दशक मैथिली कथाक इतिहासमे पहिल उल्लेखनीय कालावधि अछि। 1941सँ 1950 धरिक बीच जे मुख्य कथाकार अपन रचनासँ

कथाक विकासकेँ आगाँ बढ़ौलनि ताहिमे प्रमुख छथि– कांचीनाथ झा 'किरण', हरिमोहन झा, उपेन्द्रनाथ झा व्यास', उमानाथ झा, योगानन्द झा, मनमोहन झा आदि। यद्यपि गोविन्द झा आ सुधांशु 'शेखर' चौधरी सेहो एही दशकमे कथा लेखन शुरू कयलनि, किन्तु कथाकारक रूपमे हुनक प्रसिद्धि भेल बादक दशकमे। किरणजी 'धर्मरत्नाकर' तथा उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'क 'रूसल जमाय' एहि अवधिक महत्वपूर्ण कथा अछि। हरिमोहन झाक कथा पुस्तक 'प्रणम्य देवता', उमानाथ झाक 'रेखाचित्र' तथा मनमोहन झाक 'अश्रुकण' सेहो बेस प्रसिद्ध भेल।

पुरान पीढ़ीक एहि सभ कथाकारक संग सुधांशु 'शेखर' चौधरी, गोविन्द झा, ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म', डा० शैलेन्द्र मोहन झा आदि कथा लेखनक प्रमुख हस्ताक्षरक रूपमे छठम दशकमे प्रवेश कयलनि, ई सभ मैथिली कथाक विकासमे सेतु बनलाह। कारण, छठम दशकमे ललित, मायानन्द मिश्र, राजकमल चौधरी, लीली रे, रामदेव झा, हंसराज, आदि कथाकारक जे दल आयल से मैथिली कथाक दोसर चरणक उत्कर्षक आधार बनल। एहि सभ कथाकारमे ललितकेँ मैथिलीक कथाक दोसर चरणक सूत्रधार कहल जाइत अछि। ललितक 'रमजानी' मैथिली कथामे वस्तुतः एकटा मोड़ अनलक। कथा साहित्यक कथानक, कथ्य, शिल्प आ भाषामे परिवर्तनक जे आहट रमजानी कथामे भेटैत अछि तकर कारण स्पष्ट अछि। ई सभ कथाकार स्वतंत्र भारतमे कथा लेखन शुरू कयलनि। स्वतंत्रताक बाद भारतक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक स्थितिमे परिवर्तन आयल। जवाहर लाल नेहरू सदृश युग–पुरुषक नेतृत्वमे भारतक विकासक गाड़ी आगाँ बढ़ल। एकर प्रभाव संपूर्ण भारतक स्थितिपर पड़ल। सोच आ साहित्यपर पड़ल। स्वाभाविक अछि जे मैथिली साहित्य, विशेषतः ओकर कथा विधा सेहो एहिसँ असंपृक्त नहि रहल। रमजानी कथामे जे विकासक लालसा भेटैत अछि,

ओकर कथानक जाहि वातावरणमे बूनल गेल अछि, ओकर पात्रक जे भाषा-भंगिमा अछि, इच्छा आ विचार अछि से मैथिली कथाकेँ एकटा नव धरातलपर ठाढ़ कयलक। एहि कालक सभ कथाकार अपना-अपना ढ़ंगसँ स्वतंत्र भारतक स्वतंत्र मिथिलाकेँ देखलनि।

कहल जाइत अछि जे मिथिलामे जातिवादी कट्टरता बहुत अछि। छठम दशकक मैथिली कथामे एहिपर टिप्पणी करब शुरू भऽ गेल, मुदा एकर मुखर रूप भेटैत अछि सातम दशकक कथामे। छठम दशकक कथाकार लोकनि तँ सामाजिक समरसताकेँ कथाक माध्यमसँ प्रस्तुत कइये रहल छलाह, सातम दशकक कथाकार ओकरा गति प्रदान कयलनि। धूमकेतु, राजमोहन झा, प्रभास कुमार चौधरी, गंगेश गुंजन, जीवकांत, सुभाषचन्द्र यादव, सुकांत सोम, उपेन्द्र दोषी आदि कथाकारक पैघ हेंज मिथिलाक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आ सांस्कृतिक स्थितिकेँ नव दृष्टिकोणसँ आधुनिक परिप्रेक्षमे देखब शुरू कयलनि तकर ओहि कालक कथा सभ अछि। कथाक विश्लेषणक माध्यमसँ कथाक भाव आ भाषा, कथाकरक चेतना आ संवेदनाकेँ विस्तारसँ विवेचित करब एतय संभव नहि अछि, मुदा एकटा बात स्पष्ट अछि जे समाज आ व्यक्तिकेँ, समाजक स्थिति आ व्यक्तिक चिन्ताकेँ प्रखरताक संग प्रस्तुत करबाक जे परिपाटी 1940 ई०क धत-पतमे प्रारंभ भेल छल तकर चर्मोत्कर्ष 1980 धरिक कथामे भास्वर भऽ गेल। मैथिली कथाक विकास एतेक द्रुतगतिसँ भेल जे मैथिली साहित्यक आन सभ विधाकेँ कथा विधासँ इर्ष्या होमय लगलैक।

1980क बाद सेहो मैथिली कथामे परिवर्तन आयल अछि आ से पूर्वक विकास यात्राकेँ सघन तथा गतिमान बनौलक अछि। संक्षेपमे एतबे कहब प्रर्याप्त होयत जे बीसम शताब्दीक कथा साहित्य मैथिली साहित्यक मुकुट अछि। मैथिली कथाक माध्यमसँ मैथिली साहित्यक विकासक जे. उदाहरण भेटैत अछि से साहित्यक उपलब्धि

तँ अछिये, मैथिली भाषा-भाषी समाजक हेतु गौरवक विषय सेहो अछि। साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेश अंततः आठम अनुसूचीमे मैथिलीक समावेशसँ पूर्ण भेल। निश्चित रूपसँ मैथिली भाषाक एहि विकासयात्रामे मैथिली साहित्यक योगदान छैक आ मैथिली साहित्यक परिधिमे मैथिली कथाक सहभागिता सभसँ बेसी अछि।

एहि पृष्ठभूमिमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक कथा साहित्य पर जँ विचार कयल जाय तँ स्पष्ट होयत जे शेखरजीक कथा स्थितिक डेगमे डेग मिलबैत चलैत रहल अछि। मैथिली साहित्य संसारमे शेखरजीकेँ नाटककार तथा उपन्यासकारक रूपमे बेसी ख्याति भेटलनि से सत्य, मुदा कथाकारक रूपमे हुनक रचना अन्य विधाक रचनाक अपेक्षा कनेको कमजोर नहि अछि। सुधांशु 'शेखर' चौधरीक कथाक संबंधमे जे अस्पष्टता व्याप्त अछि तकर कारण छैक हुनक कथा सभक पुस्तकाकार संग्रह नहि होयब। शेखरजी जाहि-जाहि विधामे रचना कयलनि ताहि सभ विधाक पोथी कोनो ने कोनो रूपमे आइ प्रकाशित छनि। मुदा हुनक कथासंग्रह एखन धरि प्रकाशनक प्रतीक्षेमे अछि। एहिठाम एक तथ्यक उल्लेख होयब आवश्यक अछि। सुधांशु 'शेखर' चौधरी अपन मूल नामसँ तँ कथा प्रकाशित करबे कयलनि, ओकर अतिरिक्त कतेको अन्य नामसँ सेहो हुनक कथा प्रकाशित अछि। सुधांशु 'शेखर' चौधरी, सुधांशु, कामदेव श्रीवास्तव, कामरूप, मुखलाल मंडल, शेफालिका देवी एवं श्री कथाकार- एहि सभ नामसँ जाहि व्यक्तिक कथा प्रकाशित अछि से छथि सुधांशु 'शेखर' चौधरी[2]। एहि नामेक कथाकारक कथाकेँ एकठाम सूचीबद्ध करैत डा० मेघन प्रसाद कुल 31 गोट कथाक उल्लेख कयलनि अछि। ओ सूची एहि प्रकारक अछि-

**अकारण** : कामरूप : मिथिला मिहिर : 9सितम्बर, 1975
**अपन धर** : कथा दिशा : अगस्त, 1980
**एक अनचिन्हारक मादे** : अनामा : नवम्वर, 1979
**एक सिंघाराःएक चाय** : वैदेही : मार्च, 1955 : सं० :

कथा संग्रह : 1977
**चारि चौबटिया** : कामरूप : मिथिला मिहिर : 28 अप्रैल, 1974
**चिनगी** : (मनो. क.) श्री कथाकार : मिथिला मिहिर, 23 मइ, 1971
**छोट छीन बात** : वैदेही : जनवरी, 1956 : सं० : कथा-कुंज 196 : सं० : मैथिली कथा धारा : 1982
**जन्तर** : कामदेव श्रीवास्तव : वैदेही मार्च, 1967
**जिनगीक बाट** : मिथिला मिहिर : अक्टूबर,1988
**ज्वालाक मध्य** : कामदेव श्रीवास्तव : मिथिला मिहिर : 7 मइ, 1967
**दुर्गारक्षिणी** : कामदेव श्रीवास्तव : मिथिला मिहिर : जनवरी, 1967
**ने दौड़ि चली ने ठेसि खसी** : मुखलाल मण्डल : मिथिला मिहिर : 11 दिसम्बर, 1966
**पुरान बात** : वैदेही, अगस्त, 1959
**फूटल घैल** : रचना संग्रह : भाग-1 : 1956
**फूल दीदी** : वैदेही : जनवरी :1954 : सं० : मैथिलीक प्रसिद्ध कथा भाग-2 : 1984
**फोटो** : सं० : चारि आना कैंचा : 1954
**बसन्त** : मिथिला मिहिर : फरवरी, 1944
**बापक श्राद्ध** : मुखलाल मंडल : मिथिला मिहिर, 10 जुलाइ, 1966
**भकइजोत** : कामदेव श्रीवास्तव : मिथिला मिहिर : 29 जनवरी, 1967
**भारती** : सं० : गल्पांजलि : 1948
**भूखढेकार** : कामरूप : मिथिला मिहिर : 13 अक्टूबर1974
**युगधर्म** : मै. अ. प. अप्रैल-मइ, 1983 : सं० : मैथिली कथा सरिता : 1983
**रिनखौक** : कामरूप : मिथिला मिहिर : 10 सितम्बर, 1961
**व्यावधान** : चयनिका : 1953

**सरस गल्प** : वैदेही : जून, 1954 : सं0 : गप्पक फोरन : 1956
**साढ़े तीन हाथक पेट** : मिथिला मिहिर : 26 जुलाइ, 1952
**सिनेहक आश्वस्ति** : मिथिला मिहिर : सितम्बर, 1987
**हमर आशा छोड़िये दैह** : मुखलाल मंडल : मिथिला मिहिर, 14 अक्टूबर, 1962
**हुनक कोन दोष** : मुखलाल मंडल : मिथिला मिहिर, 19 सितम्बर, 1965
**होरिक दिन** : वैदेही मार्च, 1953

डा0 मेघन प्रसाद कथाक ई सूची अक्षरानुक्रमसँ प्रस्तुत कयलनि अछि। यद्यपि ओ अपन पुस्तकमे कथा प्रकाशनक स्थान तथा तिथिक उल्लेख सेहो कयलनि अछि, मुदा तकर सत्यापन संभव नहि भऽ सकल अछि। तैं हुनक किछु प्रमुख कथाक आधार पर हम कथाकार सुधांशु 'शेखर' चौधरीपर विचार व्यक्त करब उचित बुझैत छी। शेखरजीक पहिल प्रकाशित कथा अछि 'भारती'। एकर प्रकाशन दरभंगासँ प्रकाशित गल्पांजलि नामक कथा संग्रहमे 1948मे भेल छल। शेखरजी द्वारा लिखित पाँचम दशकक ई एक मात्र कथा अछि। ओहि समयमे भावुकता प्रधान कथा लिखबाक परिपाटी छल। लगैत अछि, शेखरजीक कथाकारकेँ बंगला कथाक ई रूप मोहि लेलकनि। 'भारती' कथा भावुकता प्रधान अछि। एकटा सुन्दर आ कंमौआ पूतक विवाह कुरूप कन्यासँ करा देल जाइत अछि। प्रो0 साहेबकेँ से व्यथित कऽ दैत छनि। ओ दोसर विवाह करबाक निर्णय करैत छथि। पिता सेहो एकर अनुमति दऽ दैत छथिन। किन्तु जखन ओ विवाह करबाक लेल जाय लगैत छथि तऽ कनिया नगहरक कलश लऽ कऽ ठाढ़ि भऽ जाइत छथिन। प्रोफेसर कनियाक नोरायल आँखिकेँ देखैत ओकर हृदय व्यथाकेँ गमि लैत छथि। कथा एतहि समाप्त भऽ जाइत अछि। एहि प्रकारेँ मिथिलामे प्रचलित

बहुविवाह प्रथाक एकटा मार्मिक क्षणकेँ कथामे अत्यन्त कुशलतासँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। कथाकार जाहि रूपमे कथाक घटना निर्माण कयलनि से स्वतः स्थितिकेँ स्पष्ट कऽ दैत अछि। शेखरजीक एहि कथामे आलोचकलोकनि एकटा मैथिलानीक त्याग आ समर्पणक भावनापर बेसी जोर देलनि अछि। मुदा एकटा बात पर ध्यान देब आवश्यक अछि। ई कथा लगभग साठि वर्ष पहिनहि लिखल गेल छल। ओहि समयमे सम्पूर्ण भारतक, आ विशेषतः मिथिलाक नारीक जे स्थिति छलैक ताहिमे ओकरा गाय जकाँ सुधंग मानल आ बुझल जाइत छल। मुदा एकैसम शताब्दीमे मिथिलोक नारी एहन नहि रहलीह अछि। ई सही अछि जे आइयो मिथिलाक ब्राह्मण समाजक पुरुष लोकनि दोसर-तेसर विवाह करैत होथि, मुदा से आब अपवादे कहल जायत। तेँ शेखरजीक 'भारती' अथवा राजकमल चौधरीक 'ललका पाग' तहिया मैथिल ललनाक त्याग तथा समर्पण लेल जतेक प्रसिद्ध भेल हो ओ आजुक मिथिलाक सामाजिक यथार्थ नहि अछि।

कथाकारक रूपमे शेखरजी भाव प्रधान कथाक रचना कयलनि। 'फूल दीदी', 'चिनगी' आदि कथामे भावुकता प्रधान तत्व अछि। हुनक एकटा प्रसिद्ध कथा अछि– 'एक सिंघाराःएक चाय'। एहि कथामे जिनगीक कटु यथार्थकेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि। तरूण अवस्थाक युवक लोकनिक कार्यकलापकेँ आधार बना कऽ फ्लैशबैक शैलीमे जीवनक यथार्थ सत्यकेँ कथाक विषय बनाओल गेल अछि। मैथिली कथा साहित्यमे अन्य महत्वपूर्ण कथा अछि– 'जिनगीक बाट'। ई कथा प्रायः सेवा निवृत्तिक बाद लिखलनि। एहिमे एकटा निम्न जातिक परिवार द्वारा जीवनक बाट तकबाक कथा कहल गेल अछि। आजुक समय एतेक भयावह भऽ गेल अछि, जीवनक आर्थिक स्थिति ततेक दारूण भऽ गेल छैक जे नारी टाका कमेबाक लेल अपन देहक उपयोग करैत अछि। टाका वाला पुरुष एहि व्यापारमे सहयोगी होइत छैक।

शेखरजी अप़न कथाक माध्यमसँ पूछड चाहैत छथि जे जिनगीक ई बाट कतेक नीक वा उचित अछि।

शेखरजीक कथापर विचार करैत काल दू–तीन टा विन्दुपर स्वतः ध्यान चलि जाइत अछि। सभसँ पहिल बात जाहिपर हुनक कथा पढ़ैत काल कोनो पाठकक ध्यान चल जाइत छैक से थिक ओकर कथ्य। भारती होथि अथवा फूलदीदी, पुरान बात हो अथवा छोट–छीन बात, युग धर्म हो अथवा जिनगीक बाट— सभ कथामे शेखरजी जिनगीक विपर्ययकेँ देखार करबाक प्रयास कयलनि अछि। मनुष्यक जीवन कतेक संकटग्रस्त, विकट आं संघर्षपूर्ण भड गेलैक अछि तकरा उजागर करब कथाकारक लक्ष्य रहैत छनि। ई बात नहि अछि जे ओ अंपन कथामे मनुष्यक जीवन आ ओकर स्थितिकेँ एकटा भावुक़ कथाकारेक नजरिसँ देखलनि अछि। हुनक भावुकता जीवन–यथार्थक ठोस धरातलसँ निकलैत अछि। तेँ कथाकारक रूपमे शेखरजी निराशावादी रचनाकार नहि छथि। जीवनक कटु यथार्थकेँ मार्मिक रूपेँ प्रस्तुत करैत ओ मनुष्यक संवेदनाकेँ उत्तेजित कड दैत छथि। अंततः मनुष्य किछु करय सैह इच्छा हुनक कथाक मूल यथार्थ बनैत अछि।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी कथाकारक रूपमे सेहो नाटककारे छथि। हुनक कथा पढ़लापर ओहिमे शेखरजीक नाटककारक छवि भेंटैत अछि। कथाक कथानक हुनक नाटककारकेँ उपस्थित कड दैत अछि। कथानकक निर्माणमे जाहि नाटकीय शैलीक उपयोग कयल जाइत अछि से कथाक प्रभावकेँ कतेक गुणा बेसी प्रभावकारी बनेबामे सफल होइत अछि। 'भारती' कथाक करूण दृश्य हो अथवा 'एक सिंघाराःएक चाय' कथाक युवक सभक अवण्डपनाक जीवन्त रूप–कथा ताहि प्रकारेँ गढ़ल जाइत अछि जे कथाकार अपन कथ्य लग सोझे पहुँच जाइत छथि। मैथिली कथा साहित्यमे एहि प्रकारक कथा–निर्माणक दक्षता बड्ड कम कथाकारमे भेंटैत अछि।

शेखरजीक कथाक तेसर मुख्य विशेषता थिक ओकर

भाषा। सभसँ पहिल बात एहि प्रसंग ई अछि जे शेखरजीक कथाक भाषा जीवनक भाषा होइत अछि, पोथीक भाषा नहि। कंहबाक अभिप्राय ई जे जेना हमसभ बजैत छी तहिना हुनक कथाक स्थिति आ पात्र सेहो बजैत अछि। एकदम सहज, सरल आ स्वाभाविक, सोझ-साझ भाषामे लिखल गेल कथाक प्रभावे दोसर होइत अछि। पाठककेँ लगैत छैक जे एहिमे हमरे समाजक बात कहल गेल अछि। एकर परिणाम ई होइत छैक जे पाठक आ कथामे एकटा आत्मीय संबंध बनि जाइत छैक। निश्चित रूपसँ कोनो कथाक लेल ई सभसँ पैघ सफलता अछि।

कथाकारक रूपमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक वास्तविक रूप अखन धरि पाठकक सोझां नहि आयल अछि। एक तँ मैथिलीमे पुरान पत्रिका भेटब कठिन अछि आ दोसर पत्रिका ताकिकऽ कथा पढ़ऽवला पाठक तऽ आरो दुर्लभ छथि। तैं आवश्यकता एहि बातक अछि जे हुनक कथा संग्रह शीघ्र प्रकाशित हो आ कथाकार सुधांशु 'शेखर' चौधरीकेँ मैथिलीक पाठक आ आलोचक सही रूपमे जानि सकथि।

## संदर्भ सूची

1. मैथिली कथा कोश – डा0 मेघन प्रसाद, भूमिका, पृष्ठ – 23
2. मैथिली कथा कोश – डा0 मेघन प्रसाद, पृष्ठ – 264



## कविता

काव्यकेँ साहित्यमे प्रवेशक पहिल सोपान मानल जाइत अछि। शेखरजीक साहित्य-यात्रा (मैथिली) कवितेसँ आरम्भ भेलनि। जाहिमे कल्पनाक उड़ानक अपेक्षा यथार्थ भावभूमिक चयन कएल गेल अछि। एकगोट साक्षात्कारक क्रममे शेखरजी स्वयं एहि तथ्यकेँस्वीकार करैत अपन प्रथम गीतक चर्चा कएने छथि। ओ कहैत छथि- ''हमरा जनैत कविता वा गीत एक स्फुलिंग जकाँ उदित होइत अछि आ चट्ट दए मिझा जाइत अछि। तेँगीत वा कविताकेँ तत्काल लिपिबद्ध कए लेब आवश्यक अछि। नहि तँ एक बेर यदि ओ ध्यानसँ गेल तँ सदाक लेल चलि गेल। दोसर गीत आ कविताक लेल आयासक प्रयोजन नहि होइत अछि, ओकर प्रादुर्भाव स्वतः होइत अछि। हमरा जनैत अपन गदह पचीसीमे सभ व्यक्ति कोमल भावनासँ ग्रस्त होइत अछि आ सभ ओहि वयसमे कवि भऽ उठैत अछि। अन्तर यैह जे जकरा प्रतिभा होइत छैक, कवित्व शक्ति होइत छैक तकर परिगणना कविमे होअए लगैत अछि मुदा जकरामे एकर अभाव रहैत छैक, से एहिना रहि जाइत अछि।

असलमे हम 1942 ई0क आन्दोलनमे अपन गाम घरसँ दूर भए गेल रही एवं हमरं जीवन नितांत एकांकी भए गेल छल। कोनो परिचित व्यक्तिक कतहु दर्शन नहि होइत छल। एहन स्थितिमे मोन लगएबाक हेतु कविता वा गीतक एकटा आधार भेटि गेल छल। एकरा संयोग कहबाक चाही जे हमर मैथिलीक प्रथम रचना गीते थिक हमरा स्मरण होइत अछि जे ओहि गीतक स्वरूप एहि प्रकारक छल-

''की हमर चेष्टा विफल थिक।
जे ने कहियो सोचि सकलहुँ,

ताहि पथ पर पयर धएलहुँ ।
की तकर ई अर्थ जे
पतने हमर निर्दिष्ट फल थिक ?
की हमर चेष्टा विफल थिक।[1]

शेखरजी प्राचीन ओ नवीन दुहू शैलीमे काव्य-रचना कएलनि। हिनक तुकान्त-अतुकान्त कविता एकर ज्वलन्त प्रमाण अछि। एहन बहुत रास कविता सभ संकलित रूपमे नहि अपितु पत्र-पत्रिकादिमे प्रकाशित अछि। कतिपय अप्रकाशितो अछि। एहन कवितामे मातृभूमि-मातृभाषाक प्रति आदर ओ समर्पणक भाव, दीन-दुखीजनक अन्तर्वेदना आदि भेटैत अछि। यथार्थ चिन्तनसँ समन्वित हुनक कवितामे तीन चित्र शीर्षक कविता द्रष्टव्य अछि, जाहिमे बाढ़िक प्रतिफ़ल संसारमे पसरैत भौतिकवाद, ईर्ष्या-द्वेष आदिक चित्र उपस्थित कएल गेल अछि-

एहन बाढ़ि कहियो नहि देखल।
इचना पोठी सन जे धारा, सेहो खल-खल हास करैए।
हू-हू-हू-हू पानि बहैए, मरण प्रलय संगीत गबैए।।
भौतिकवादक राक्षसी धारा, इच्छा नड.टे नाच नचैए।
सत्य, धर्म ओ नीति भसैए, सम्बन्धक सभ भीत खसैए।
प्रतिद्वन्द्विताक लहरि लहरैए, भेद-भाव झण्डा फहरैए।
राजनीति तँ ऊँच मचानक तऽरे तऽर कटाओ करैए।
दम्भ बान्हकेँ तोड़ि रहल छै, हृदयक प्रीति पुनीत भसैए।।[2]

युग द्रष्टा स्रष्टा कवि शेखर जीक कवितामे समसामयिक जीवनक सुन्दर अभिव्यक्ति भेल अछि।

समाजमे बढ़ैत जा रहल स्वान्तः सुखायक भावना, लोकक एक दोसरासँ संवादहीनता, पारस्परिक सम्बन्धक तिरोभाव आदिक मूल कारण कवि युगक यांत्रिकताककेँ मानैत छथि। यांत्रिक सत्ताक प्रभावमे लोकमे स्नेह,

प्रेम, भावुकता आदि गुणक अभाव भेल जा रहल छैक। एहि प्रसंग कविक अतुकान्त कविताक बानगीक रूपमे द्रष्टव्य थिक–

"यन्त्र चालित शत–सहस्र लोकक यंत्रणा
व्यक्तिगत नहि होइत छैक
तैं एक दोसर व्यक्तिक सुख–दुखसँ फराक अछि
डाकक खोलीमे हमर पत्र दस दिन, पन्द्रह दिन पड़ल रहत
पत्र पर हमर पता अछि तँनिघेस अछि अनका लेल
पत्रमे हमर पिता मुइल रहथु
माता शय्याशायी रहथु
परिवारक आन लोक आवश्यकताक अन्हड़मे
उड़ियाइत रहओ, बौआइत–औनाइत रहओ
सोह उतरल अछि, खोली लग हम नहि जाइत छी
हमरा पत्रक सूचना क्यो नहि देत
हमर व्यक्तिगत जीवन पर बज्र खसय
ओ बज्र अनका लेल बसातक हल्लुक झोंका होएत
व्यक्तिगत दुःख आ सहानुभूतिक भावुकता
यन्त्रक हेतु वर्जित अछि।"[3]

एहि विकराल परिस्थितिमे गम्भीरतासँ कविकेँ अपन शून्यता समाप्त करबाक सेहन्ता होइत छनि जे वैचारिक आदान–प्रदान करी–

'की हर्ज जे दू व्यक्तिक शून्यता एकत्र कऽ
एक दोसराक शून्यताकेँ भरि लेल जाए'।[4]

युग सत्यक धाहसँ संतप्त एहि कविता सभमे कविक स्वस्थ, स्वच्छ ओ सूक्ष्म चिन्तन छनि। हिनक तुकान्त ओ अतुकान्त दुहू प्रकारक कवितामे यथार्थ मूर्त्त रूपमे ठाढ़ अछि। अपन अभिव्यक्तिकेँ सहजताक संग फड़िच्छ रूपमे उपस्थित करबामे शेखर जी पटु छथि। कविताक यैह यथार्थ हिनका प्राचीन ओ नीवन दुहू श्रेणीक कविक नैपुण्यता दिसि दृष्टिगोचर करबैत अछि।

## गीत ओ गजल

शेखरजीक मृत्युक उपरान्त हुनक एकमात्र कविता संग्रह 'गीत ओ गजल' 1991 ई0मे शेखर प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भेल। एहि संग्रहमे शीर्षकबद्ध उन्तीस गजल ओ आठ गोट गीत संकलित अछि। संग्रहमे देश-दशा, लोकक सामाजिक प्रकृति ओ प्रवृत्तिक संग कविक जीवनपर विशेष प्रकाश देबऽबला कविता सभ समेटल गेल अछि।

शेखर जी साम्प्रतिक समाजक स्वरूपसँ, परिवर्तनसँ उदास छथि। सम्पूर्ण समाज स्वयं स्वार्थपूर्त्तिमे जमल-रमल अछि। लोकमे परोपकारक भावना नहि रहि गेलैक अछि। एक दिस अनुचित मार्गक अवलम्बनक सुखक अमार-पथार लागल छैक तँ दोसर दिस अपनहि सामाजिक, अपनहि देस-कोसक समांङ नांङट, उघार आ भूखल अछि।

समाजमे प्रपंची लोकक चलती भऽ गेलैक अछि। एहि छल-प्रपंचकेँ लूरि कहल-बूझल जाए लागल छैक। ओकर प्रतिष्ठा भऽ रहल छैक। जे एहि प्रपंचमय बुद्धि ओ आचरणसँ भिन्न अछि तकरा बकलेल-ढहलेल बूझल जाइत छैक। देशमे समान अवसरक बात कहबेटा लेल बचल अछि आ ओ व्यवहारमे निपत्ता भऽ गेल अछि-

सोझ बाट जे धरय, कहै तकरा सभ अछि ढहलेल।<br>
सोझ बात जे बाजय, बूझल जाय शुद्ध बकलेल।

"मुँहगरकेँ ऊँच मचान जतऽ<br>
लुरिगरकेँ ऊँच मकान जतऽ<br>
मुहगरकेँ घी पकवान जतऽ,<br>
अवसर सभ हेतु समान कतऽ"

सम्पूर्ण देश समाजक लोक अन्धकारमय भविष्यक बाटपर आन्हर जकाँ बढ़ल जा रहल अछि। आगाँ-पाछाँक चिन्तासँ रहित वैयक्तिक, कलुषित प्रतिस्पर्द्धामे लोकक सद्इच्छा ओंघड़या मारि रहल छैक। कलुषित लोक

सर्वत्र नंगरिया पिलुआ जकाँ सह-सह कऽ रहल अछि-

'कलुषित इच्छा केर मोरीमे सह-सह करैत नंगरिया
सद्इच्छा जिनगीक मोहार पर मारै छै औंघड़या।'

एहना स्थितिमे लोकक सद्भावनाक प्रति विकर्षण भेल जा रहल छैक। केओ नीक लोक रहि की करत? काहि काटत। हकन्न कानत। ताहिसँ लाभ? ओकर कतहु मूल्यांकन नहि होइत छैक? अनुचित क्रिया कएनिहार अपन गोल बना लेने अछि। नीचासँ ऊपर धरि गोल बनल छैक। अपनहि गोलक सर्वत्र विचार कएल जाइत छैक। अपना गोलक लोक केहनो अधलाह किएक नेहो, ओकर काज कतबो बेजाय किएक ने होइक, सभ-विचारक लोक सभ मिलि ओकर जय-जयकार करब आरम्भ कऽ दैत छैक। बिन बातक बुझने, अकानने सौंसे सम्प्रदायक लोक अनघोल शुरू कऽ दैत अछि। मुदा ओही ठाम जँ कोनो व्यक्ति जकर गोल नहि छैक, से जँ केहनो बहुमूल्य बात बाजल, कोनो विशिष्टतम काज कएलक, तकर उपेक्षा कएल जाइत छैक। ओकरा लेल कोनो सुनगुनो नहि भऽ पबैत छैक। वस्तुतः आइ निर्गुट भऽ एको डेग नहि चलल जा सकैछ-

'निर्गुटक नहि चलए आ कि डेग बढ़य एक,
गुटबाज केँ सभ किछु-किछु देअए अनिवार गोलैसी।
केहनो पहाड़ खसय आ मरि जाय बड़ अयोध,
जँ देअए बड़े जोर सँ ललकार गोलैसी।

गुटबाजीक एहि हो-हल्लामे एकान्त-शान्त क्रियावान तपस्वीक सभटा तप-निष्ठा अकारथ चलि जाइत छनि। दस गोट गुटबाज सम्पूर्ण वातावरणकेँ छपने अछि। एही गोलैसीक बलपर अयोग्यो, योग्य पद प्राप्त करबामे सफल भऽ जाइत अछि। वस्तुतः बइमान लोककेँ सभतरि पूछ छैक-

'जकर तराजू पासंङ तकरे आइ चलै व्यापार।'

आ, सत्यक बाटपर चलनिहार व्यक्तिकेँ तकनिहार कतहु क्यो नहि अछि। एहना स्थितिमे समाजक हित-चिन्ता

के करत ? पेटक लेल बेहाल रहनिहार समूहसँ देश-विदेशक चिन्ताक कोनो प्रश्ने नहि उठैत अछि।

तैँकवि शेखरक हृदयमे बेर-बेर प्रश्न उठैत छनि जे ई देश ककर? स्वार्थक आपाधापी श्वानवत पेटक लेल जिबनिहार व्यक्तिक ? की सत्ताक लेल दिल्ली-दरबारमे दौड़ लगौनिहार नेताक ?

वस्तुतः ई देश एहन ककरो नहि। देश अछि देशमाता पर अपन अन्तरक स्नेह ओ भक्ति लुटौनिहार तपःपूत निस्वार्थी सेवीपुरुषक, जे सतत् देशेक उन्नति ओ महिमा मण्डनक लेल चिन्तनशील आ साधनालीन रहैत छथि। मुदा कविक सन्दिग्ध मोन देशमे व्याप्त अनाचारकेँ देखि प्रश्न कऽ उठैत अछि जे-

"जकरा अन्तरमे राष्ट्र भक्ति, छै सहज सिनेहक अतुलशक्ति,

देशक कंण-कणकेँ अपन बुझए, लुटबए सदिखन देशानुरक्ति।

देशक उन्नति कोष जकर की देश तकर ?"

शेखरजीक जीवनमे साधनाक विशिष्ट स्थान रहलनि अछि। ओ उद्दाम जीवनक समर्थक नहि छलाह। हुनक आग्रह रहलनि जे जहिना सुघर संगीतक लेल कण्ठ-साधना ओ उद्यानक सुघरताक लेल घेरा आवश्यक छैक, तहिना सुघर जीवनक निर्माणक लेल बन्धन ओ साधना आवश्यक-

'साधल नहि जायत कण्ठस्वर, संगीत सुघर ता होयत कोना ?

बेढ़ल नहि जायत काँट लगा, उद्यान सुघर ता होयत कोना ?

दुःखक ज्वाला केर ताप बिना, जीवन-सोना नहि शुद्ध होअय।'

अधिकांश समय कष्टमय रहितहुँ शेखरजी कहियो परिस्थितिक समक्ष नहि झुकलाह, सदैव संघर्ष करैत रहलाह। जीवनक केहनो दुःस्थितिमे नोर चुअएबाकेँ पुरुषार्थक विरुद्ध बुझलनि।

वस्तुतः नोर ओकर नाम नहि छैक जे परिस्थितिक पहाड़सँ पछाड़ खाकऽ आँखिसँ चूबि जाइत अछि। नोर थिक ओ जे परिस्थितिक पहाड़सँ लड़ि-भिड़ि सफलता प्राप्त करैत अछि-

'नोर विवशता नहि थिक, लपकैत आगि थिक नोर
किछु करबा लेल भिड़ि जाइत अछि,
लड़ि जाइत अछि नोर'

जैं शेखरजीक जीवन संघर्षसँ भरल रहलनि, ओ सदिखन ओहिसँ जुझैत रहलाह, तैँसाधन ओ संघर्षक बलपर लक्ष्य प्राप्त करबामे ओ सफल भेलाह आ अपन अनुभूतिक आधारपर दुःखक ज्वाला केर 'ताप बिना जीवन-सोना नहि' शुद्ध होअए कहलनि।

एहि प्रकारेँस्पष्ट होइत अछि जे गजल ओ गीत संग्रहमे कविता सभ सामाजिक ओ राष्ट्रीय भावनासँ ओत-प्रोत अछि। एतदरिक्त एहि संग्रहमे किछु एहनो कविता सभ समाविष्ट अछि जे हुनक जीवनक अन्तिम कालक बोध करबैत अछि। जीवनक प्रत्येक परिस्थितिमे संग देनिहार जीवनसंगिनी जखन हुनका असगर छोड़ि संसारसँ विदा भऽ गेलथिन, शरीर आ मोन दुहूसँ दुर्बल भऽ गेलाह तँ बड़-बेसी मर्माहत भेलाह। लोकक सांत्वनाक स्वर नहि सोंहाइत छलनि। धनसँ अधिक जनकेँ महत्व देनिहार असगर पड़ि जाइत छथि। अपनो आन जकाँ भऽ जाइत छनि। भेट-घाँट कएनिहारक अभाव भऽ जाइत छनि। तैँसंघर्षमय जीवनक पथिककेँ आन कोनो वस्तुमे मन रमि नहि रहल छनि। ओ जीवनमे विश्रामक आकांक्षी भऽ जाइत छथि, निरुद्देश्य जीवनसँ मृत्युकेँअधिक श्रेयस्कर मानैत छथि-

'जीवि रहल छी किए' न बूझी, जीवन ई असहाय,
विश्व-धारमे एकसर नाविक, निर्बल ओ निरुपाय।'

तैँकवि जगत-नियन्तासँ निवेदनपूर्वक कहैत छथि जे-

'संसारिक लक्ष्यक पाछाँ हम रहलहुँ बहुत बेहाल,
भेटल बहुत, बहुतमे हुसलहुँ, संघर्षक बड़ जाल।'

अतः हे जगतक सूत्रधार आब एहि सभसँ मुक्ति दियऽ-,
'सूत्रधार, सामर्थ्य आब नहि, संघर्षक नहि बेर,
अभिलाषा एतबे, ने नचाबी एहि जीवनकेँ फेर।'

कवि अपन एहन समस्त परिस्थिति ओ मानसिकताक आलोकमे अपनाकेँ सम्पूर्ण रूपसँ समर्पित करैत कहैत छथि जे-

'नीक बेजाय क्षणक दीअठि पर अहिंक सिनेहक टेम,
अहिंक देल ई संचित धन अछि, अछि खिपटा वा हेम।'

कविकेँ पूर्ण आस्था ओ विश्वास छनि जे नियन्ता हुनक उपेक्षा नहि करथिन। ओ एक गोट प्रौढ़ तपस्वी जकाँ मृत्युकेँ 'मरण केर हार' कहैत छथि। मृत्युसँ घबराइत नहि छथि, अपितु ओकरा जयमाला जकाँ स्वीकारबाक लेल तत्पर छथि-

'नै आबथि से असम्मत अछि, एहन ने निठुर निर्मोही
ओ अपने हाथ पहिरौत मरण केर हार, हम बैसल छी'।[5]

हिनक काव्यक प्रसंग डा० प्रेम शंकर सिंह लिखैत छथि जे-''शेखरजी मूल रूपसँ कवि रहथि। हुनक समस्त साहित्यक अन्तःस्थलमे काव्यक गहन आ पृथुल रसधारा प्रवाहित भेल। हिनक काव्य साधनाक गंगाधार मानव जीवनक कोमल आ सरस अन्तःस्थलक भावमयी भूमिपर प्रवाहित भेल। हिनक नवीनोन्मुखी काव्य देशक नव जागरण, नव आकांक्षा आ नव चेतनाक भाव सम्पदा लऽ-कऽ चलल। हुनक व्यक्तित्व काव्य साधनामे स्पष्ट रूपेँमुखरित भेल आ जाति सुधार देश प्रेम, ग्राम-नगर तथा अन्य स्थूल आ मूर्त्त विषयक सोझ-सोझ अभिव्यक्ति हुनक कविताक आदर्श छल। प्रेम, सौन्दर्य, यौवन, मानव जीवनक सुख-दुःख, रहस्य चिन्तन हिनक काव्यक प्रतिपाद्य छल। जीवनक सामाजिक पक्षसँ तटस्थ कवि अपन आत्माक आलोड़न-विलोड़न राग-विराग,

हास्य-रूदन, प्रणय-द्वन्द्व, अतृप्ति जे अपन अभिव्यक्तिक लेल छटपटा रहल छल ओ हिनक काव्यमे मुखरित भेल। फलतः हिनक काव्य अभिव्यक्तिमे ओतबे सूक्ष्म तरल, चित्रमयी आ कल्पनाक अतुल भाव सुषमासँ मंडित अछि। हिनक काव्यमे प्राचीनता आ आधुनिकताक अपूर्व समन्वय भेल अछि। लोक कल्याण आ समाज सेवाक आदर्श प्रस्तुत करबाक लेल ओ काव्यक सृष्टि कएलनि। हिनक काव्य साधना आदिसँ अन्त धरि आदर्शवादी रहलनि अछि। हुनक आदर्शवादिता लोक मंगल व्यापक भावनासँ प्रेरित भऽ कऽ मातृभूमिक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा करब छलनि।[6] हिनक कविता किंबा गीतमे गीति-तत्वक सभ गुण विद्यमान अछि। हिनक गीत स्फूर्तिमान आ प्रेरणादायक अछि। हिनक कवितामे सामान्य जन-हृदयकेँ छूबाक शक्ति अछि। उर्दू शैलीसँ प्रभावित भऽ ओ गजलक रचना कएलनि।

काव्योत्कर्षक दृष्टिएँ प्रस्तुत संकलन 'गजल ओ गीत' उपयोगी अछि जाहिमे हुनक गीत ओ गजलक प्रतिरूप पाठककेँ उपलब्ध होइत छनि।

## संदर्भ सूची


1. सुधांशु 'शेखर' चौधरी-शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ- 68 से।
2. तत्रैव - पृष्ठ- 68 से।
3. तत्रैव पृष्ठ - 69 से।
4. सुधांशु 'शेखर' चौधरी - शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ- 67-68।
5. साक्षात्कारक दर्पणमे- सुधांशु 'शेखर' चौधरी-संकलन एवं सम्पादन- शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृ0 - 15-16।
6. सन्दर्भ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ - 182।




## समालोचना

प्रकृतिक दृष्टिसँ आलोचकक कार्य थिकैक जे कोनो रचना विशेषकेँ नीक जकाँ पढ़ब आ नीक जकाँ गुनब आ तकरा फड़िछा कऽ पाठक-सामाजिक सोझामे राखि देब।[1] यैह आलोचना किंबा समालोचना कहबैत अछि आ सुधी समालोचकक यैह कार्य होइत अछि।

मैथिली समालोचना साहित्यमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाम अति आदरक संग लेल जाइत. अछि। ओ मात्र नाटककार, उपन्यासकार, निबन्धकार आ कवियेटा नहि रहथि प्रत्युत एक नीक आलोचक सेहो रहथि। पत्रकारक रूपमे शेखरजी आलोचना साहित्यक विकासक अनुभव कएलनि। अपन एहि उद्देश्यक सफलता प्राप्त करबाक लेल पत्रकार शेखरजी आलोचकक बाना धारण कएलनि। 'मिथिला मिहिर'क पुनर्प्रकाशनक पश्चात् मैथिली आलोचना साहित्यमे गति आएल आ ओकर वास्तविक विकास भेल। शेखरजीक पत्रकारिता मैथिली आलोचना साहित्य स्तरकेँ ऊँच उठएबाक काज कएलक एवं एकरा व्यापक आ जनप्रिय बंनएबाक हेतु अपूर्व योगदान देलक। मैथिली साहित्यमे रमल-जमल शेखरजीकेँ कहियो इच्छा नहि भेलनि जे समीक्षकक रूपमे जानल जाइ। ओ तेँ सतत् गोलैसीसँ अलग रहलाह। आलोचनाक क्षेत्रमे अपन युगक आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि जाहि दृष्टिकोणकेँ ओ अपनओलनि जे पश्चात् जा कऽ आदर्श बनि गेल। हिनका समयमे समालोचना साहित्यक समुचित विकास भेल आ ओ विषयक गम्भीर प्रतिपादन कएलनि। जहिया कहियो अनटोटल स्थापना किंबा निष्कर्ष देखबामे अएलनि, तहिया समीक्षा लिखबाक हेतु सन्नद्ध भेलाह। ताहूमे जखन हिनक विचार स्थापना आदिपर वैचारिक आक्रमण होइनि, कलम लऽ ओहि विचारक मूलोच्छेद करबाक लेल सन्नद्ध होथि। साहित्यक अनेक मिथ्या मूल्यांकनकेँ अस्वीकार कऽ नव आ प्रगतिशील साहित्यक चिन्तनसँ अधिक स्वस्थ आ सबल बनौलनि। एहि सम्बन्धमे

शेखरजी स्वयं लिखैत छथि जे– "व्यक्तिगत रूपसँ हम नव लेखनक प्रति आस्थावान छी आ हमरा नव लेखनक भविष्य पर कनेको सन्देह नहि अछि। कारण, किछु रचना एहन भेल अछि जे भरोसा देयबैत अछि। मुदा ओकरा दिशाहीनता आ दृष्टिहीनताक प्रति औखन आशंकित छी। मैथिलीक नव लेखन वस्तुतः मैथिली साहित्यकेँ नव धरातल देलक अछि–ई भिन्न कथा जे नव–लेखनक मर्मकेँ बुझनिहार साहित्यकार बड़ सीमिते किएक ने होथि।[2] शेखर जीमे आत्म–सम्मानक भावना एतेक प्रबल छलनि जे केओ अपन निर्णय थोपि कऽ हुनका झुका नहि सकैत छल। सहजता, संवेदनशीलता आ स्पष्टवादिता हुनक व्यक्तित्वक विशिष्ट गुण छल। आ, यैह कारण भेल जे सुधांशु 'शेखर' चौधरी एक सफल सुधी समालोचकक रूपमे ख्यात भेलाह। आलोचनाक क्षेत्रमे 'सन्दर्भ' नामक पोथी हिनक विशिष्ट अवदानक बानगी प्रस्तुत करैत अछि।

## सन्दर्भ

मैथिलीक सर्जनात्मक साहित्यपर आधारित समालोचनात्मक निबन्धक एक मात्र संग्रह अछि 'सन्दर्भ'। ई पोथी 1981 ई0मे मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित भेल अछि। एहि पोथीक प्रसंग प्रकाशकीय वक्तव्य अछि– "ई कोनो प्राचीन वा नवीन पद्धतिक प्रचलित ढ़ाचा पर नहि प्रत्युत साहित्यक विभिन्न समस्या पर शुद्ध वैयक्तिक विचारक रूपमे लिखल गेल अछि।[3] शेखरजी लिखैत छथि जे– 'साहित्यकेँ देखबाक आ परखबाक हमरा भगवान् जे दृष्टि देलनि अछि से कतहुसँ पैंच लेल नहि अछि, हमर अपन अछि, आ ओही दृष्टिक फल थिक जे प्रस्तुत पोथी अपनेक हाथमे अछि।'[4]

सम्पूर्ण कृति (सन्दर्भ) सात भागमे विभाजित अछि यथा–नाट्य–सन्दर्भक अन्तर्गत सात, कथा–सन्दर्भक अन्तर्गत सात, औपन्यासिक–सन्दर्भक अन्तर्गत एक, नवता–सन्दर्भक अन्तर्गत छओ, आलोचना–सन्दर्भक अन्तर्गत एक, भाषा

साहित्य सन्दर्भक अन्तर्गत चारि तथा विविध सन्दर्भक अन्तर्गत चारि समालोचनात्मक आलेख संगृहीत अछि। कुल मिला कऽ तीस आलेख अछि जकर स्पष्टीकरण एकर भूमिकामे ओ स्वयं कएलनि अछि–

"पोथीक नामे सूचित कऽ दैत अछि जे सन्दर्भसँ कटल विषय वस्तुक एहिमे चर्चा नहि होयत। अर्थात् नाट्क, कथा, उपन्यास, नवकविता आदि विबिध विधाक साहित्यक प्रसंग जे समय–समयपर गोष्ठीक माध्यमे आ आनो अवसर पर चर्च–बर्च होइत रहल अछि आ ताहिमे अनटेटल आ बहबाँड़ि विचार रखबाक प्रयास होइत रहल अछि तकरे आधार बना कऽ सभ विधापर विचार कएल गेल अछि। भऽ सकैत अछि जे, हमर विचार अथवा हमर विश्लेषण बहुतो व्यक्तिकेँ अनसोहाँत वा एकांगी प्रतीत होइनि।[5]

स्थूल रूपेँ यैह जे सन्दर्भमे विविध विषयपर विशुद्ध आलोचना करबाक प्रयास कएल गेल अछि। एहि क्रममे सर्वत्र हिनक निर्भीकता ओ दू टूक गप्प करबाक प्रवृत्ति देखबामे अबैत अछि। एहि संग्रहमे शेखरजीक गम्भीर विचार मन्थन गुणकेँ फरिच्छ करैत अछि। जँ एक दिस ओ सर्जनात्मक साहित्यक रथक एकटा महारथी छलाह तँ दोसर दिस आलोचनाक लगाम धएने साहित्य रथकेँ दिगभ्रान्त होएबासँ बचएबाक लेल, पथ–च्युत होएबासँ रोकबा लेल सतत् साकांक्ष ओ सजग रहलाह।[6] एहि ग्रन्थमे व्यक्त विचार वल्लरी निश्चये मैथिली आलोचना साहित्यान्तर्गत एक प्रतिमान प्रस्तुत करैछ, से निर्विवाद अछि।[7]

## विवेचना

सुधांशु 'शेखर' चौधरी एक कुशल सम्पादक छलाह। हिनक सम्पादकत्व प्रतिभा ककरोसँ नुकाएल नहि अछि। सम्पादनकेँ ओ एक गोट कला मानैत छलाह। हुनकहि शब्दमे– "जहिना साहित्यमे औपन्यासिक कृति, कथा, कविता आदि एक कला थिक तहिना सम्पादन सेहो एक कला थिक। जे एकर कलाकार बनए चाहैत छथि से एहि

जीवनमे अयबाक प्रारम्भेसँ यश अथवा नामक अपेक्षा नहि रखैत छथि।...हम ई मानैत छी जे एहि जीवनकेँ अपनयबासँ पूर्व व्यक्तिमे अनाम पूर्वक साधना एवं अध्यवसायक चिन्ता होयबाक चाही। सम्पादन कलाक अभ्यास अथवा सम्पादन करबाक इच्छा कोनो स्थापित सम्पादकसँ लेबाक चाही।[8] शेखर जी एकर साक्षात प्रतिमूर्ति छलाह। ओ 'सुमन' जी आ 'श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार'सँ सम्पादन करब सिखने छलाह। अपने अध्यवसायसँ ओ तकरा विकसित कंएलनि। शेखरजीक सम्पादनक अवधिकेँ स्वर्णयुग कहल जाइत अछि।

'वैदेही', 'इजोत' आ 'मिथिला मिहिर'क अतिरिक्त शेखरजी कतिपय पोथीक सम्पादन कएलनि आ साहित्यक रिक्त भंडारकेँ भरलनि–सजलनि। कतिपय साहित्यकार लोकनि हिनका सम्पादक जी कहि सम्बोधित करैत छलाह।

शेखरजी जाधरि 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक रहलाह, अपन व्यक्तित्वकेँ दू भागमे विभक्त कए रखलनि। हुनक एक व्यक्तित्व छल उन्मुक्त साहित्यकारक जकरा 'मिथिला मिहिर'क सम्पादकसँ किछु लेबाक–देबाक नहि छलैक आ दोसर व्यक्तित्व छल यशस्वी संपादकक जकरा साहित्यकार शेखर जीसँ लेबाक–देबाक नहि छलैक। कोनहुँ व्यक्तिक लेल अपन व्यक्तित्वकेँ एना बाँटि कऽ रखबाक कार्य कठिन थिकैक। मुदा शेखरजी तकरा सदैव 'मेन्टेन' रखलनि। शेखरजी सम्पादक वा साहित्यकारक रूपमे सदैव निर्भीक रहलाह अछि आ हुनक निर्भीकता सदैव विद्यमान रहलनि। कतहुँ कोनो सभा सोसाइटीमे आ आने अवसरपर शेखरजी सम्पादकक रूपमे सदा प्रतिभाक अन्वेषी रहलाह। ओ नवसँ नव रचनाकारक निरादर नहि कएलनि। ओ निन्दक वा प्रशंसक ज़करामे प्रतिभा छलैक तकर रचना ई छपैत छलाह। ई ककरो प्रतिभाकेँ कुण्ठित नहि होमए देलनि।[9]

1954 ई०मे शेखरजी 'विवेचना'क सम्पादन कएलनि। एहि संग्रहमे सात गोट समालोचनात्मक निबंध अछि। एहि पोथीक भूमिकामे ई मैथिली समालोचनाक विकासपर विचार कएलनि अछि। शेखर जीक ई संग्रह आलोचना साहित्यक

विकासमे अपन पृथक महत्त्व रखैत अछि। एहि पोथीमे शेखर जीक अन्वेषी सम्पादन प्रतिभाक परिचय भेँटैत अछि। संगहि एकर भूमिका सेहो आलोचना साहित्यक इतिवृत्तिसँ परिचय करबैत अछि। 'विवेचना' वास्तवमे विवेचना अछि।

शेखरजीक सम्पादन कौशलक वैशिष्ट्य ई छल जे हुनक अन्वेषक दृष्टि सर्वत्र बनल रहलनि। हुनक अग्रलेख, सम्पादकीय टिप्पणी, वक्तव्य, श्रद्धांजलि, सामग्री संकलन, सम्पादन, प्रूफरीडिंग, विभिन्न कृत्तिक भूमिकामे वक्तव्य हुनक सम्पादन कौशलकेँ उद्घाटित करैछ। ओ सम्पादकक रूपमे जाहि उत्साहसँ मैथिलीक सेवाक व्रत लेलनि तकरा ओहि उत्साह आ दृढ़ताक संग निर्वाह सेहो कएलनि। एहन समयमे जखन कि मैथिली पत्रिकाक समक्ष कोनो आदर्श नहि छल तखन हिनक सम्पादकत्वमे प्रकाशित पत्रिकादि जन-समाजक कंठहार बनि गेल।

शेखरजी अन्य रचनाक सम्पादनक कौन कथा, ओ तँ बाइस (22) वर्ष धरि 'मिथिला मिहिर'क सम्पादक रहलाह। ओही सम्पादकीयकेँ जँ एक ठाम संकलन कएल जाए तँ एकगोट वृहद्काय इतिहासे भऽ जाएत। साहित्यक विविध विधाकेँ शेखरजी जीवनोन्मुख बनाय जीवनक विविध दिशामे व्याप्ति देओलनि।

## संदर्भ सूची

1. सन्दर्भ – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 115।
2. तत्रैव (प्रकाशकीय)।
3. सन्दर्भ – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, आत्मकथ्य, पृष्ठ – क।
4. तत्रैव पृष्ठ– क–ख।
5. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 63।
6. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी – संकलन एवं सम्पादन, शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ – 17।
7. तत्रैव, पृष्ठ – 25।
8. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ – 32-33।
9. सुधांशु 'शेखर' चौधरी– शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 15 सँ।



## पत्रकारिता

भाषा ओ साहित्यक विकास निर्भर रहैत छैक प्रचार ओ प्रसार पर। प्रचार ओ प्रसारक अनेक माध्यममेसँ एक महत्वपूर्ण माध्यम थिक पत्र-पत्रिका। आधुनिक विकासक युगकेँ पत्र-पत्रिकाक युग सेहो कहल जाइत अछि। तेँ मानव जीवनक हेतु पत्र-पत्रिकाकेँ सर्वथा रोचक-प्रयोजक उचिते कहल गेल अछि।

वस्तुकेँ बुझबाक, जनबाक उत्सुकता अनेक रूपमे प्रकट होइत अछि। ओहिमेसँ पत्र-पत्रिकाकेँ जन्मक कारण मानल जा सकैत अछि। समाचार बुझबाक प्रवृत्ति मनुष्यकेँ ताही दिनसँ रहलैक अछि जहिया तक गुफामे रहैत ओ जंगली जीवन व्यतीत करैत छल। एखनहुँ जंगली जाति, जकरा लग आइ धरि आधुनिक विकासक प्रकाश नहि पहुँचि सकलैक अछि, झुण्डबान्हिकऽ निवास करैत अछि आ समाजमे जखन कोनो तेहन घटना भऽ जाइत छैक तँ सभकेँ ओहि घटनासँ परिचय करएबाक हेतु समूहक प्रमुख व्यक्ति ढोलहो देयाकऽ सम्पूर्ण समाजकेँ अवगत करा दैत छैक। ढोलहो सुनि कऽ आबाल-वृद्ध नर-नारी एकत्र भऽ परिस्थितिसँ अवगत भऽ जाइत अछि।[1]

समयक क्रममे मनुष्यक बौद्धिक विकास जाही क्रमसँ होइत गेलैक, समाचार बुझबाक-बुझएबाक प्रक्रिया सेहो ताहिं क्रममे विकसित होइत गेलैक। जाहि समयमे यातायात एकदम सुलभ नहि छलैक, व्यापारी लोकनि एक स्थानसँ दोसर स्थान धरि झुण्डबान्हि कऽ व्यापार करैत छलाह, ओहि व्यापारी लोकनिक माध्यमसँ एक प्रान्तक समाचार दोसर प्रान्त धरि पसरैत ज़ाइत छल। एखनहुँ एहन देखल जाइत अछि जे बहुत दिनपर भेंट भेला उत्तर अथवा आनठामसँ अएला उत्तर नमस्कार-पातीक बाद सभसँ पहिल प्रश्न हमरा लोकनि यैह करैत छिऐक- 'कहू कुशल समाचार'।

प्राचीन समयमे सरकारी आज्ञा, कोनो अभियोगक निराकरणमे कएल गेल न्यायपालिका निर्णय, जन्म ओ मरणक लेखा-जोखा, ऋतु सम्बन्धी सूचना आदि जँ लोककेँ विशेष रूपसँ बुझबाक ओ जनबाक रुचि तथा उत्सुकता रहैत छलैक तँ एहि बातकेँ शासक लोकनि अपन गुप्तचरक माध्यमसँ लिखबा कऽ स्थान-स्थानपर सटबा दैत छलाह। ओही माध्यमसँ जनसाधारण सभ घटनासँ अवगत भऽ जाइत छल।

राजतन्त्रसँ लोकतन्त्र दिस सामाजिक व्यवस्था जतेक अग्रसर होइत गेल अछि, वैज्ञानिक आविष्कारक प्रसार एक देशसँ दोसर देश निकट होइत गेल अछि, समाचार-पत्रक प्रयोजनीयता ओ लोकप्रियता ततेक बढ़ल जा रहल अछि।

छपाइ-यन्त्रक आविष्कार भऽ गेला उत्तर पत्रकारिताक विकासमे अवर्णनीय प्रगति भेल। छपाइ यन्त्रहुक विकास क्रमिक होइत गेल अछि आ ओहि संग पत्रकारिताक विकास सेहो द्रुतगतिसँ भेल जा रहल अछि। आब तँ सामाजिक ओ राष्ट्रीय जीवनमे पत्रक स्थान सर्वोपरि कहल जा सकैत अछि। एही तथ्यकेँ ध्यानमे राखि कोनो कविक कहल छनि जे-

"खीचो न कमान को, न तलवार निकालो
जब तोप मोकाबिल हो तो अखबार निकालो।[2]

तँ आब केहन-केहन महान् ओ शक्तिशाली राष्ट्रक राष्ट्राध्यक्ष पर्यन्त पत्रकारक कृपाक आकांक्षी रहैत छथि। आइ-काल्हि समाज मुख्य रूपसँ प्रकाश प्राप्त करबामे ओ नीति निर्धारित करबामे पत्रे सभक माध्यमसँ सहायता प्राप्त करैत अछि। वस्तुतः पत्रकारिता समाजक पथप्रदर्शक बनि गेल अछि। जन सामान्यक समस्याकेँ सम्पूर्ण संसारक समक्ष सम्यक रूपसँ उपस्थित करबाक ई अपूर्व साधन मानल जाइत अछि अपितु वर्तमानमे यैह मुख्य साधन बनि गेल अछि।

जनसाधरणक जीवनमे पत्रक महत्त्व दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक। एहन सन भऽ गेल अछि जे दिन भरि भोजन नहियो भेटला उत्तर रहि सकैत छथि, मुदा पत्रक पन्ना बिनु उनटओने रहब कठिन बुझना जाइत छनि। बीड़ी पीबनिहार तमाकू खएनिहार, मदिरा सेवन कएनिहार लोकनिकेँ तुकपर अमलकर वस्तु नहि भेटलापर जेना अतिशय कष्टकारक भऽ जाइत छनि, तहिना समाचार पत्र पढ़निहारकेँ समयपर पत्र नहि भेटलासँ कछमछी आबि जाइत छनि। अनका हाथमे समाचार पत्र देखि संतुष्ट भऽ उठैत छथि। जागरूक ओ शिक्षित समुदायक हेतु समाचार पत्र पढ़ब प्राचीन कालक सभ ब्राह्मणक हेतु सन्ध्या वन्दन करब जकाँ अनिवार्य सन भऽ गेल अछि। कोन परिवारमे कतेक पत्र–पत्रिका कीनल जाइत अछि, एही आधारपर ओहि परिवारक बौद्धिक विकासक अनुमान कएल जाइत अछि। कोन भाषामे कतेक पत्र–पत्रिकाक प्रकाशन होइत अछि, एहि आधारपर ओहि भाषा–भाषीक जन समुदायक जागरूकता जानल जाइत अछि। आब करोड़मे नहि, संसार भरिक जनसंख्याकेँ दृष्टिमे राखि विचार कएल जाय तँ अरबक संख्यामे लोक भेटत जे समाचार पत्र अवश्य पढ़ैत अछि। आइ समाचार पत्र जातीय जीवन ओ क्षेत्रीय भाषाक विकासक मापदण्ड बनि गेल अछि।[3]

मानव जीवनसँ सम्बन्ध रखनिहार कोनो समस्याक सूचना देब, समाधानक दिशा–निर्देश करब आ ताहि प्रसंग स्वतन्त्र अभिमत व्यक्त करब पत्र–पत्रिकाक उत्तरदायित्व जकाँ भऽ गेल अछि। आहार–विहार, स्वास्थ्य–सौन्दर्य, खेल–कूद, वाणिज्य–व्यापार प्रभृतिक सूचना ज्ञात करबाक अपेक्षा प्रायः आजुक लोक पत्र–पत्रिकेक माध्यमसँ रखैत अछि।

स्वतन्त्रता प्राप्तिक पश्चात देश पर चीन ओ पाकिस्तानक दिससँ अनेक बेर आक्रमण भेलैक। ओहि युद्धक विभीषिकासँ समाजकेँ अवगत कराएब, देशक

रक्षार्थ सैनिकक मनोबलकेँ ऊपर उठाएब, देशवासीमे देशक हेतु सर्वस्व अर्पण करबाक चेतना जगाएब, देशकेँ युद्धक स्थितिक सूचना दैत रहब, एहि सभ प्रकारक उत्तरदायित्व निर्वाह पत्र-पत्रिके करैत रहल, जाहि प्रसादे देश युद्धक सामना कऽ सकल। तेँ कहल जा सकैत अछि जे आजुक युगमे सामाजिक-जीवन पर पत्रकारिताक प्रभाव सर्वोपरि होइत छैक।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहासक अवलोकनसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली पत्रकारिता एखनघरि प्रयोगात्मक प्रक्रियाक जालसँ बाहर नहि भऽ सकल अछि। दैनिक पत्रसँ पत्रकारिताक चरम विकास होइत छैक तकर आइ धरि अभावे जकाँ रहल अछि। हँ, ई अवश्य कहल जा सकैत अछि जे मैथिली पत्रकारिताक आइ धरिक उपलब्धि एकर विकासक सम्भावनाकेँ जिऔने रहल अछि। मिथिला मिहिरक अतिरिक्त छोट-पैघ पत्रिकाक सम्पादक लोकनि आजीविकाक हेतु कोनो अन्य वृत्ति करैत मातृभाषाक प्रेमवश आत्मतुष्टिक हेतु पत्रक सम्पादन ओ प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि। एहनो पत्रकार लोकनि भेलाह जेँ अपन पेट काटि डीह-डाबर बेचि मैथिलीक पत्रिका सम्पादित कएलनि। मुदा एकर मूल्यक स्वरूप मात्र प्रशंसा भेटलनि। तेँ जतबा दिन चललनि पत्रिका चलबैत रहलाह आ पुनः हाथ-पयर समेटि बैसि रहलाह। ग्राहकक दृष्टिमे बैमान बनलाह, परिवारक लोकक दृष्टिमे फुकना आ समाजक दृष्टिमे ठकना अपनाकेँ बनबैत रहलाह अछि। स्वस्थ पत्रक हेतु जतेक उपकरण चाही तकर दशांशो मैथिली पत्रिकाकेँ अद्यावधि अनुपलब्धे रहलैक अछि। एही कारणे मैथिली पत्रकारिता रूपी लत्तीमे बेसी कुम्हड़ेक बतिया देखबामे अबैत अछि जे आङुर देखओलासँ सड़ैत आबि रहल अछि।[4]

मैथिली पत्रकारिताक इतिहास अन्य बहुतो भाषाक पत्रसँ पछुआएल नहि अछि। एकर शताब्दी मनाएल गेल अछि। ठाम-ठामसँ कतिपय पत्रिका सभक प्रकाशन, मासिक,

त्रैमासिक आ अनियतकालीन रूपमे भऽ रहल अछि, ताहि मे शेखरजी एहि यात्राक लगभग एक तिहाइ भागसँ जुटल-रमल रहलाह। विशेषतः साठि ई0सँ अस्सी ई० धरिक यात्राक ई विशिष्ट नायके छलाह। सभसँ पहिने शेखरजी 'वैदेही' पत्रिकासँ जुड़लाह।

**वैदेही**

26 जनवरी 1950 ई०कँ मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे एक नवीन अध्यायक- सीतामढ़ीसँ पाक्षिक ''वैदेही'' कऽ प्रकाशनसँ सूत्रपात भेल। प्रो० कृष्णकान्त मिश्र एकर सम्पादक छलाह। एकर छओ गोट अंक सीतामढ़ीसँ प्रकाशित भेल आ 1 मई 1950 ई0सँ एकर कार्यालय सीतामढ़ीसँ दरभंगा चल आएल आ अबेर-सबेर कहुना ई प्रकाशित होइत रहल। 1950 ई०सँ 1973 ई० धरिक अन्तरालमे एहि पत्रिकाक सम्पादक मंडलमे अनेक परिवर्तन होइत रहल आ 1953 ई०क जनवरीसँ ई नियमित रूपसँ मासिक भऽ गेल।

एहि पत्रिकाकेँ सुव्यवस्थित बनएबाक हेतु 1954 ई०मे वैदेही समितिक गठन कएल गेल। एहिमे सुधांशु 'शेखर' चौधरी प्रचार मन्त्री छलाह। शेखरजी एहि सम्पादक मण्डलक एकगोट सदस्य हेबाक कारणेँ हिनक सम्पादन क्षमताक परिचय लोककेँ भेट्लैक। ई 1955 ई०क जनवरीसँ श्री सुमन जी, श्री शेखर जी ओ श्री कृष्णकान्त मिश्रक संयुक्त सम्पादकत्वमे प्रकाशित होमए लागल जे क्रम मार्च 1961 ई० धरि चलल।[5] 1960 ई० धरि शेखरजी एहि सम्पादक मण्डलमे रहलाह।

शेखरजी जखन 'वैदेही' पत्रिकाक सम्पादक मण्डलमे अएलाह तँ एकर आकार-प्रकारमे बहुत परिवर्त्तन भऽ गेल। सम्पादकीय विचारक अनुशीलनसँ ज्ञात होइत अछि जेँ प्रकाशन एवं साहित्य सर्जनाक क्षेत्रमे एक क्रान्ति आनि देबाक योजना बनल छल। ओहि योजनाक प्रतिफल छल चारि आनाकैँचा, 'गप्पक फोड़न' विवेचना आदि

पुस्तकक प्रकाशन। पत्रिकाक विभिन्न अंकमे जे गल्प प्रकाशित होइत छलैक तकर 'रीप्रिन्ट' कराकऽ पुस्तकाकार कएला उत्तर छपाइ कम लगैत छलैक आ ताहिसँ सस्त पोथी पाठककेँ उपलब्ध होइत छलनि।

एहिमे एक हास्य-व्यंग्य स्तम्भ छल- 'गोनू झाक चौपाड़ि'। एहि स्तंभमे सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक सब विषयपर समय-समयपर व्यंग्य लिखल जाइत छल। स्मर्तव्य जे जखन पटनासँ मिथिला मिहिरक प्रकाशन प्रारम्भ भेल तऽ गोनू झाक चौपाड़िक स्थान पर 'गोनू झाक चटिसार' नाम बहुतो दिन व्यंग्य स्तम्भ चलैत रहल आ जखन एहि पंक्तिक लेखक शेखरजी उक्त स्तम्भ लिखब आरम्भ कएलनि तँ ओकर शीर्षक 'धर्म ६ ाकेलानन्दक बलधिंगरो' राखल गेल। ई थिक एकर परितर्तनक प्रभाव।[6]

एहि पत्रिकाक माध्यमसँ नवयुवक साहित्यकार प्रकाशमे अएलाह ताहिमे सम्प्रति बहुतो प्रौढ़ लेखकक रूपमे मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे प्रतिष्ठित ओ स्थापित छथि। जेना, श्री ललित, श्री मायानन्द मिश्र, राजकमल चौधरी, श्री सोमदेव, डा० रामदेव झा, प्रभास कुमार चौधरी, राजमोहन झा आदि। एहि प्रकारेँ 'वैदेही' किछु स्वस्थ कथाकारकेँ क्षेत्रमे आनि मैथिली साहित्यक अभिवृद्धिमे बहुत पैघ योगदान कएलक। प्रायः कोनो विधा एहन नहि जाहिमे 'वैदेही' द्वारा योगदान नहि कएल गेल हो। 'वैदेही'क सफलता पत्रकारिताक क्षेत्रमे लोकमे साहस ओ उत्साहक संचार कएलक आ एकरा बादे 'मिथिला दर्शन', 'मिथिला सेवक' साप्ताहिक आदि प्रकाशन होमए लागल। हिन्दी-मैथिली समस्याक प्रसंग तऽ ई पूर्ण आस्थाक संग क्षेत्रमे अड़ल रहल। स्मर्त्तव्य जे ओहि समयमे पटनासँ 'पाटल' नामक मासिक पत्रिका लक्ष्मी नारायण सुधांशुक सम्पादजमे प्रकाशित होइत छल, ओहि मे हिन्दीक विख्यात विद्वान डा० राम विलास शर्मा पूर्ण शक्ति लगाए मैथिली पर प्रहार कएने छलाह जकर प्रतिवाद आर्यावर्तमे श्री

यात्रीजी कएने छलाह तथा वैदेहीमे सेहो स्वर मुखरित कएल गेल छल। एहि प्रसंग 'भ्रम एकरे कहल जाइछ' शीर्षक निबन्ध विशेष रूपेँ द्रष्टव्य अछि।[7]

ओना तँ साहित्यक सभ विद्यामे 'वैदेही'क उल्लेखनीय योगदान रहलैक अछि तथापि कथा साहित्यकेँ एहि पत्रिकाक माध्यमसँ सर्वाधिक प्रोत्साहन भेटलैक। आइ जतेक प्रौढ़ कथाकार छथि ताहिमे अधिकतर एही पत्रिकाक माध्यमसँ साहित्यक क्षेत्रमे अवतीर्ण भेल छथि।

1956ई0क कथा विशेषांक मार्च 1957 ई0मे प्रकाशित भेल। एकर मुखपृष्ठ पर इरानक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार-कथाकार डा० श्री 'शिनपातो'क चित्र छपल अछि ताहिमे हिनक 'यमदण्ड' शीर्षक कथा सेहो छपल अछि। कथाकारक परिचय लिखैत कहल गेल अछि जे डा० पातो एहि कथाकेँ बम्बइमे 'वैदेही'क हेतु विशेष रूपसँ लिखने छथि।[8]

एहि कथा विशेषांक विशेषता ई अछि जे एहिमे 'तीन रहस्य' रूसी कथा, 'ठाकुरक कूप' हिन्दी कथा 'शेफाली' बंगला कथाक अनुवाद थिक। एहि प्रकार अन्य भाषाक कथा साहित्यसँ मैथिली पाठककेँ परिचय करएबाक तथा मैथिली कथाकार लोकनिकेँ कथा साहित्यक प्रवृत्तिसँ परिचय करएबाक एक प्रयास एकरा कहल जा सकैत अछि।

1957 ई०क अन्तमे वैदेहीक आलोचना विशेषांक प्रकाशित भेल। एकर मुख पृष्ठ पर आचार्य रमानाथ झाक चित्र छनि तथा विभिन्न विषय पर विभिन्न लेखकक समीक्षात्मक ओ विश्लेषणात्मक विचार छनि।

एहिसँ पूर्व भिन्न-भिन्न अंकमे प्रकाशित आलोचनात्मक कतिपय निबन्ध 'विवेचना' नामसँ पुस्तकाकार भऽ चुकल छल। मैथिलीमे आलोचना साहित्यक अल्पता अछि। बिनु मुल्यांकन भेने स्वस्थ साहित्यक निर्माण प्रचुर मात्रामे नहि भऽ पबैत अछि। एहि सभ बिन्दुकेँ ध्यानमे राखि 'वैदेही' एहि दिशामे सुविचारित

डेग उठओने छल जे प्रकाशनसँ प्रमाणित अछि।

1958मे 'वैदेही'क एकांकी विशेषांक प्रकाशित भेल जाहिमे अमरजीक 'घरैया लूरि', हरिमोहन झाक, 'मण्डन मिश्र', गोविन्द नारायण झाक, 'कोजागराक भरिया'; हंसराजक 'न्याय', गोपेश जीक 'आदर्श वर', मणिपद्मक 'मिथिलाक तरूआरि' आ गोविन्द झाक 'जीविका' प्रमुख अछि। एकर अतिरिक्त 'मैथिली रंगमंचक विकास' शीर्षक निबन्ध अछि जाहिमे मिथिलाक ग्राम्यक्षेत्रमे कतए कोन नाटकक मंच छल वा अछि तकर इतिहासपर प्रकाश देल गेल अछि। मैथिलीक एकांकीक प्रवृत्तिपर प्रो० रामदेव झाक निबन्ध सेहो एही संगे अछि।

'वैदेही' एहि प्रयासमे लागल रहल जे किछु विशिष्ट वस्तु पाठक धरि सम्प्रेषित करए जे आन माध्यमसँ सुलभ नहि अछि। स्वाभाविक अछि जे एहि प्रकारक प्रयाससँ अन्यान्य भाषा साहित्यसँ तँ परिचय होएबे करत संगहि पारस्परिक स्नेह ओ सौजन्यमे वृद्धि सेहो होएत।

स्थूल रूपेँ इएह कहल जा सकैत अछि जे मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे 'वैदेही'क योगदान अपन विशेष महत्त्व रखैत अछि। एहि पत्रिकाक विकासमे शेखरजीक अवदान सेहो स्मरणीय-प्रशंसनीय अछि।

## इजोत

1960 ई०क वसन्त पंचमीसँ सहकारिताक आधार पर दरभंगासँ एक 'इजोत' नामक मासिक पत्रक प्रकाशन प्रारम्भ भेल।[9] एहि पत्रक सम्पादक मण्डलमे सधांशु 'शेखर' चौधरी सेहो छलाह। 'इजोत'क अंककेँ दीप कहल गेल छल। एहि प्रसंगक प्रथम दीपमे कवि चूड़ामणि काशीकान्त मिश्र 'मधुप' 'अखण्ड इजोत' शीर्षकसँ अपन शुभकामना व्यक्त करैत लिखने छलाह-

"साहित्यिक समुदायेँ सञ्चित जै मे सुरभित सत्य सिनेह।
महामहिम मृदु मिथिला माटिक मंजु मौलिसँ दीपित देह।
तमोजन्य भ्रम भंजन कारक दियै प्रभंजन केँ जे नोत।

भव्य भावना टेमी युत तै दीपक रहौ अखण्ड इजोत।।'[10]

ई पत्रिका मात्र 32 पृष्ठक छल। एकर उद्देश्य ओ कार्यक्षेत्रपर प्रकाश दैत सम्पादक मण्डल लिखैत छथि जे-

इजोतक जन्म साहित्यकार ओ साहित्यानुरागी लोकनिक द्वारा सहकारिताक आधार पर भेल अछि।

इजोत प्रत्येक मास अधिकारी विद्वानक माध्यमसँ स्वस्थ समीक्षा प्रस्तुत करबाक दिशामे सचेष्ट रहत।

इजोत जाधरि अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा संचालित पत्रिका प्रकाशनमे नहि आबि रहल अछि ताधरि ई परिषदक सन्देशवाहकक रूपमे कार्य करत।

इजोत साहित्यक गंभीर जिज्ञासु लोकनिक जिज्ञासाकेँ शान्त करबाक दिशामे यथासाध्य प्रयत्नशील रहत।

इजोत उच्चवर्गीय छात्र लोकनिक हेतु एहन पाठ्य सामग्री प्रस्तुत करत जाहिसँ हुनका लोकनिकेँ अध्ययनमे सहायता भेटनि।

इजोत मैथिली विद्वान लोकनिक हेतु विचारक आदान-प्रदानमे संगम स्थलक कार्य करत।

इजोतक उद्देश्य स्वस्थ साहित्यक निर्माण मात्र रहत।

इजोतक नीति वर्ग किंबा गुट निरपेक्ष रहत।

इजोत मैथिलीक सब लेखक ओ पाठ्क लोकनिसँ सहयोगक याचना करैत रहत। इजोतमे समीक्षा-समालोचनाक प्रमुखता रहत, किन्तु कविता ओ कथादि अग्राह्य नहि बुझल जाएत।

इजोत पैघ परिधिक कामना रखैछ, किन्तु एकर दीप माटिक, टेमी छोट, स्नेहक अल्पता तथापि सहयोगक, वरदानक आशामे ई अन्धकारक सीमाकेँ थाहै चलल अछि।[11]

ई पत्र विशुद्ध समालोचना मात्र नहि छपैत छल, किछु कविता आदिक हेतु सेहो स्थान रहैत छलैक। मैथिलीक मूर्द्धन्य साहित्यकार लोकनिक स्नेह एकरा सभ दिन प्राप्त रहलैक जेना- कविवर सीताराम झा, प्रो० हरिमोहन झा,

मधुप जी, सुमन जी, रामचरित्र पाण्डेय 'अणु', श्री गंगाधर मिश्र, श्री भुल्लेश्वर कामतिक कविता आ अमरजीक एक लोकगीत सेहो एहीमे प्रकाशित भेल।

विचार प्रधान ओ समीक्षात्मक निबन्धमे आचार्य रमानाथ झा, किरण जी, मणिपद्म जी, श्री दुर्गा नाथ झा 'श्रीश', डा० शैलेन्द्र मोहन झा, डा० श्रीकृष्ण मिश्र, प्रो० परमानन्द झा, प्रो० भक्तिनाथ सिंह ठाकुर, प्रो० बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर', प्रो० दीनेश्वर झा 'दीन' आ प्रो० लक्ष्मीकान्त झा आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। एही संग श्रीमती भारती देवी, डा० रामदेव झा तथा प्रो० रमेशचन्द्र वर्माक कथा सेहो क्रमशः तीनू अंकमे प्रकाशित अछि। पं० त्रिलोक नाथ मिश्रक प्रसंग, संस्मरण तथा हुनक खबास श्री भुल्लेश्वर कामति रचित शोकोच्छ्वास सेहो प्रकाशित अछि। उदाहरणार्थ शोकोच्छ्वासक किछु पाँति उद्धृत कएल जाइत अछि–

'हमर त्रिलोक' दिगम्बर धनी तजि मोहि कतै गेला।
झरझर झहरि नयनजल वरिसै, तरसै सुमिरि कला
भटकि–भटकि चारू दिशा तकलहुँ ओ न कतहु भेटला
जनिक अमर यश विश्व गबै अछि नितिदिन ध्यान लगा
से मणिदीप नुकैल कहाँ छथि, जग मे एक छला।
चरण–कमल–युग गहि हम सेबल केवल हृदय लगा
अन्तहु मधुर–सुधा नहि पौलहुँ छनहि गेलाह बिला।
रत्नकमल हल जग न फुलायल के पुनि देत जगा।
भुल्लेश्वर सेवक कत जाएत टूटल कल्प–लता।[12]

समीक्षात्मक पत्र रहबाक कारणेँ बहुतो व्यक्तिक चित्रमे आशंका होअए लगलनि जे एहि माध्यममे कतेकोकेँ देखार करबाक योजना बनल अछि। एकर आभास वैदेहीमे जे मत व्यक्त कएल गेल, ताहिसँ होइत अछि। एहि सम्बन्धमे 'वैदेही' लिखने छल जे–

"...विषयक सम्बन्धमे किछु कहब व्यर्थ; जखन सुमन जी स्वयं सम्पादक छथि तखन तँ विषयक चयन तँ नीके होयबे करत तकर तँ विश्वास अंछि। भय अछि जे

इहो असफल पत्रक संख्यामे एकक वृद्धि ने कऽ देअए। दोसर, समीक्षा-प्रधान ई पत्र कतेक धरि दलबन्दीसँ दूर रहत से नहि जानि। मैथिलीमे समीक्षाक युग नहि आएल अछि। उचित समीक्षा ने सामग्री अछि जे लोकमे सुनबाक सहिष्णुता अछि। तखन फुसि प्रशंसाक ढेर लगाएब अथवा वैयक्तिक मतभेदक कारणेँ दोसराकेँ दूरि करब-एहन समीक्षासँ बिनु समीक्षहिक साहित्यक विकास हो से श्रेयस्कर। रूचिक परिष्कार समीक्षाक प्रधान उद्देश्य होइछ, परन्तु जँ से समीक्षा समीचीन नहि भेल तखन तँ रूचिक परिष्कारक बदलामे भ्रष्टे भए जैबाक आशंका। आशा अछि इजोत प्रकाशन समिति एहि विषयपर पुनः विचार कए एहि पत्रकेँ विशुद्ध कहानीक पत्र बनाओत, जाहिसँ नव-नव लेखककेँ प्रकाशनक किछु सुविधा होएतनि आ ओ एकर किछु प्रचारो होएत।[13]

एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे 'इजोत'क माध्यमसँ समीक्षा विषयकेँ पुष्ट करबाक प्रयास आरम्भ भेल छल। मैथिलीमे. गंभीरो विषयक पाठक बहुत छथि जनिका हेतु सामग्री नहि भेँटैत छनि। एहि प्रकारक (इजोत समीक्षा) साहित्यक सर्जनसँ विचारक, चिन्तक, लेखक ओ पाठक यथाशीघ्र समस्त मिथिला क्षेत्र ओ मैथिली भाषी क्षेत्रमे ततबा अवश्य भेटि जेताह जनिक स्नेह धनसँ ई छोट-छीन टेमी द्वारा किछु आलोक पसारि सकत।

ई लघुकाय पत्रिकामे मात्र 19 व्यक्ति, 10 टाका जमा कऽ-कऽ इजोत परिवारक सदस्य बनलाह। एही पूँजीसँ ई मात्र तीन अंक धरि प्रकाशित भऽ अभावक बिहाड़िमे सभ दिनुक हेतु मिझा गेल। ई तीनू अंक मैथिली पत्रिकारिताक इतिहासमे अपन विशिष्ट स्थान रखैत अछि। एहिमे विषयक स्तर, क्रमिकता आदिक उपस्थापना प्रभृति शेखरजीक पत्रकारिताक दृष्टिकेँ देखार कएलक आ हिनक सम्पादन प्रतिभाक क्षमताक प्रौढ़ताक दिशा-संकेत कऽ देलक।

एही (इजोत) नामसँ 2027 संवत् भाद्रमे एक

अंक काठमाण्डूसँ सेहो प्रकाशित भेल छल, जकर प्रधान सम्पादक डा० हरिदेव मिश्र ओ सम्पादक ओम कुमार झा छलाह। एकर भाषा शिथिल होइतहु मैथिली भाषीमे मातृभाषाक प्रचार एकर प्रमुख उद्देश्य छल। एके अंकक बाद इहो बन्द भऽ गेल।

**मिथिला मिहिर**

मैथिली भाषा-भाषी किंबा मैथिलीसँ कनेको रुचि रखनिहार केओ एहन नहि होएताह जे 'मिथिला मिहिर'क नामसँ अपरिचित होथि। ई पत्रिका मिथिलेश रामेश्वर सिंहक संरक्षकतामे 1909 ई०क मकर संक्रान्तिसँ दरभंगासँ प्रकाशित होअए लागल। ई मासिक पत्रिकाक रूपमे छल।

10 सितम्बर 1960 ई०सँ सुधांशु 'शेखर' चाधरीक सम्पादकत्वमे 'मिथिला मिहिर' इण्डियन नेशन प्रेस, पटनासँ प्रकाशित होमए लागल। पटनासँ 'मिथिला मिहिर' प्रकाशित होमए लागल तकरो एक गोट पृष्टभूमि रहलैक अछि। शेखरजीक शब्दमे- ''प्रायः महाराजकेँ ई विश्वास भऽ गेल छलनि जेँ दरंभगासँ मिथिला मिहिर सुचारू रूपसँ चलाएब सम्भव नहि भऽ सकैत अछि आ पटनासँ जतऽ एक पैघ प्रकाशन संस्था अछि जे इन्डियन नेशन आ आर्यावर्तक प्रकाशन करैत अछि ततऽसँ यदि 'मिथिला मिहिर' प्रकाशन कएल जाए तँ 'मिथिला मिहिर'केँ विकसित कएल जा सकैत अछि। कारण जे प्रकाशन आ वितरणक व्यवस्था ओतहु नीक छैक। सन् 1960 ई०मे न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन लिमिटेडक दरभंगामे कोनो बैसक छलैक जाहिमे सम्पादक लोकनिक बजाहटि सेहो छलनि। ओहि अवसर पर विख्यात सम्पादक श्रीयुत् श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार, (आर्यावर्तक तत्कालीन सम्पादक)केँ महाराज 'मिथिला मिहिरक' रूपरेखा प्रस्तुत करबाक हेतु कहलथिन। जूड़िशीतलक लगभगमे श्री विद्यालंकारक रूपरेखा स्वीकृत भेल। लिखित रूपमे एकर सम्पादकक चयन विद्यालंकार मतक अनुसार होएबाक

चाही। तदनुसार 11सितम्बर 1960 ई0सँ साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर'क प्रकाशन आरम्भ भेल। एकर जे रूप, आकार एवं स्तम्भादिक स्वरूप देल गेल छल ताहिमे हमरे हाथ छल, अर्थात् हम जतेक विषयक चयन कएने छलहुँ ताहि पर श्रीकान्त ठाकुरक स्वीकृतिक मोहर लगा देलनि।'[4] ई एक मात्र पत्र छल जेँ सभ वर्गक पाठकक तोष रखैत छल। एहिमे अनेक स्तम्भ निर्धारित छल यथा– सहमति–असहमति, धार्मिक कथा, स्त्रीगण समाज, नेना भुटकाक चौपाड़ि, फिल्मलोक, देश देशान्तर, देस–कोस, क्रीड़ा जगत, साप्ताहिक राशिफल, विचार मंच, पाठकीय प्रतिक्रिया, हास्य स्तम्भक रूपमे समय–समयपर गोनू झाक चटिसार, धर्म धकेलानन्दक बलधिंगरो, बहिरा नाचए अपने ताले, 'अजगुत अनटोटल', रूचए तँ सत्त ने ते फूसि आदि। आरम्भिक कालमे स्तम्भेक रूपमे बहुतो दिन धरि 'अंग्रेजी फूलक चिट्ठी', 'सहजोपीसीक चर्खा' आदि अनेक स्तम्भ चलैत रहल। ई तँ भेल एकर विविधता, एहिमे विशेष रूपेँ कथा कविता, निबन्ध, एकांकी समीक्षा आदि सभ विधाक रचना नियमित रूपसँ प्रकाशित होइत रहल।

'मिथिला मिहिरक' माध्यमसँ उपन्यास एवं कतेको दीर्घ कथा सभ धारावाहिक रूपेँप्रकाशित भऽ चुकल अछि। यथा– नव क्रमांक 37 दिनांक 21. 5. 1961सँ छद्म नामसँ सुधांशु 'शेखर' चौधरीक लिखल 'तऽर पट्टा उपर पट्टा' नामक उपन्यास आरम्भ भेल जे क्रमांक 59 दिनांक 22. 10. 1961क समाप्त भेल। ई छद्मनाम छल श्रीमती शेफालिका देवी। क्रमांक 175सँ 186 पर्यन्त अर्थात 12. 1. 1964सँ 29. 1. 1964 धरि श्री ध ीरेन्द्रक 'भोरूकबा' पुनः 427सँ 434 अर्थात 24. 11. 1968सँ 12. 1. 1969 धरि हिनके 'कादो आ कोइला', क्रमांक 192सँ 200 अर्थात् 10. 5. 1964सँ 5. 7. 1964 पर्यन्त श्री ललितक 'पृथ्वीपुत्र', क्रमांक 210सँ 221 अर्थात् 13. 9. 1964सँ 29. 11.

1964सँ धरि श्री सोमदेवक 'ब्रह्मपिशाच', 7. 3. 1965 सँ 29. 4. 1965 धरि श्री मायानन्द मिश्रक 'खोता आ चिड़ै,' श्री ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्मक लिखल 'अर्द्धनारीश्वर' प्रथम खण्ड 15. 5. 1966सँ 12. 3. 1967 धरि आ दोसर खण्ड 10. 12. 1967सँ 7. 1. 1968 धरि, 2. 2. 1969 सँ 5. 4. 1969 धरि 'जय राजा सलहेस,' 20. 10. 1978सँ 30. 12. 1978 धरि 'भारतीक बिलाड़ि' ई तीन उपन्यास : 24. 9. 1967सँ 3. 12. 1967 धरि 'पनिपत', 29. 9. 1968 सँ 17. 11. 1968 धरि 'अगिनवान,' 21. 3. 1971सँ 6. 6. 1971 धरि 'नहि कतहु नहि' नामक जीवकान्तक उपन्यास, विनोदक 'नयनमणि' 21. 1. 1968सँ 21. 4. 1968 धरि, 14. 7. 1968सँ 11. 8. 1968 धरि श्री विद्यानाथ झा 'विदित'क 'ओ', 29. 3. 1970सँ 31. 5. 1970 धरि श्रीमती गौरी मिश्रक 'चिनगी', 7. 6. 1970सँ 2. 8. 1970 धरि 'अभिशप्त' तथा 12. 9. 1971क सम्पूर्ण अंक उपन्यास विशेषांकक रूपमे प्रभास कुमार चौधरीक दोसर उपन्यास 'युग पुरुष' 9. 1. 1972सँ 20. 2. 1972 धरि श्री शशिकान्तक गिरहकट्ट, 25. 3. 1973सँ 22. 7. 1973 धरि गंगेश गुंजनक 'पहिल लोक', 13. 1. 1974सँ 26. 5. 1974 धरि पराशर छद्मनामसँ श्री शेखरजीक 'दरिद्र छिम्मडि.', 23. 6. 1974 सँ 21. 7. 1974 धरि श्रीमती गायत्री किरण रचित बाल उपन्यास 'साहसी चिन्टु', 1. 7. 1969सँ 7. 10. 1969 धरि श्रीमती लिली रेक 'पटाक्षेप', 21. 10. 1969सँ 2. 8. 1980 धरि श्री मार्कण्डेय प्रवासीक 'अभियान' उपन्यासक अतिरिक्त श्रीमती इन्दिरां चौधरी रचित 'सपता विपता' कथा, श्रीमती लिली रेक दीर्घ कथा 'अन्तराल' तथा महात्मा गांधीक आत्मकथा 'सत्यक हमर प्रयोग' नामसँ श्री योगानन्द झा द्वारा अनूदित अंश सेहो प्रकाशित भेल अछि।[15]

ओना एकांकी-अंक, निबंध-अंक, लघु-कथा-अंक आदि अनेक विशेषांक सेहो समय-समयपर प्रकाशित भेल अछि। मुदा 'कथा-अंक' विशेष रूपेँ प्रकाशित भेल। मिथिला मिहिरमे प्रकाशित सभ कथाक जँ परिगणना कएल जाएत तँ से सभ मिलाए तीन हजारसँ अधिक कथा होएत। अतः मिहिरक माध्यमसँ मैथिली कथाक सर्वोपरि विकास भेल अछि। ओना एहि माध्यमसँ मैथिलीक सभ विधाक विकास भेल अछि।

मिथिला मिहिरमे छद्म नामसँ बहुतो रचना प्रकाशित भेल अछि। एहि सम्बन्धमे शेखरजी स्वयं कहैत छथि जे- जँ हम छद्मनामक आश्रय नहि लितहुँ तँ हमरा भय छल जे हमर लेखन प्रक्रिया बन्द भऽ जाइत एवं अन्ततः हमर अन्तरक साहित्यकारक मृत्यु भऽ जाइत। दोसर बात ई थिक जे सम्पादकक एक मर्यादा होइत छनि। जे व्यक्ति अपन सम्पादकक मर्यादाक रक्षा चाहैत छथि[16] से आत्म प्रचारसँ बचबाक चेष्टा करैत छथि। तेसर बात ई जे हमर वास्तविक नामसँ विभिन्न विधाक रचना छपैत रहैत तँ समाजक बहुत निन्दक लोकनि हमरा बदनाम करबाक चेष्टा करितथि जे पाठकपर ओ अपने रचना लादि रहल छथि, जे सम्पादकक मर्यादाक प्रतिकूल होइत। जतेक दूर धरि हमर छद्मनाम छल से स्मरणक आधार पर कहि रहल छी। ओना सभ नाम मोन नहि अछि। यथा, हमर छद्मनामावली छल- श्री कामरूप, भुवनेश्वर मंडल, ज्ञानदेव पथिक, शरदिन्दु एम० ए०, शेफालिका देवी, पराशर, चक्रधर झा, गेना लाल यादव इत्यादि।[17]

शेखरजीकेँ छद्मनामसँ लिखबाक एक मात्र उद्देश्य छलनि जे मैथिली भाषी व्यापक समाजकेँ मैथिली भाषी सभ वर्गक लोक लेखनमे प्रवृत्त होअए आओर मैथिलीक व्यापकता बढ़ए आ एहिमे शेखरजी सफल भेलाह। मैथिली साहित्यकेँ सशक्त कथाकार शशिकान्त, सुभाष चन्द्र यादव आदि भेटलैक। स्वयं महिला लोकनि सेहो लेखन दिशामे प्रवृत्त भेलीह।

शेखरजीक सम्पादकत्व समयमे शतशः नव प्रतिभाक लोक मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे अवत्तीर्ण भेलाह। एहि प्रसंग शेखरजी स्वयं कहैत छथि जे–हमर अनुमान अछि जे कमसँ कम दू–अढ़ाइ संयक बीच साहित्यकार भेलाह अछि जे मिथिला मिहिरक माध्यमसँ उच्च कोटिक साहित्य प्रस्तुत कयलनि। सम्प्रति 45 वर्षक वयस्क जतेक स्थापित साहित्यकार, कवि आदि छथि से मिथिला मिहिरक माध्यमसँ जानल गेलाह अछि। मैथिलीमे जतेक प्रकारक संग्रह प्रकाशमे आएल अछि जे खाहे कविता, कथा, निबन्ध आदि जे हो मिथिले मिहिरसँ लेल गेल अछि, ततबे नहि मिथिले मिहिरसँ विख्यात भेल साहित्यकारक रचनाक प्रकाशन, कतेको भाषामे, कतेको पत्र–पत्रिकामे अनुदित भेल अछि ताहिसँ ई विदित होइत अछि जे मैथिली साहित्यक विकासमे मिथिला मिहिरक सर्वाधिक योगदान भेलैक अछि।[18]

स्वयं शेखरजी साहित्यकार छलाह। मुदा कहियो अपन साहित्यिक मान्यताकेँ पत्रपर (मिहिर) लदबाक प्रयासो नहि कएलनि आ ने अपन कि आन कोनो व्यक्ति–विशेषक व्यक्तित्वकेँ उभारबाक किंबा आरोपित करबाक चेष्टा कएलनि जाहिसँ पत्र कोनो विशेष दिशामे झुकल सन प्रतीत नहि भेल।

शेखरजीकेँ जाहि कोनो लेखकमे प्रतिभाक कनेको बीज देखबामे अएलनि, सभकेँ समुचित स्थान दैत ओकरा विकसित करबाक चेष्टा कएलनि। प्रतिभा कतहु केहनो हो तकरा विकसित करबा काल ओ शत्रु–मित्र नहि मानैत छलाह। तेँ आजुक मैथिली साहित्यमे जे अनेकशः गणमान्य साहित्यकार छथि ताहिमे बेसी शेखरजीक निर्माण कहल जाइत अछि।

पत्रकारिताक माध्यमसँ शेखरजी समाजक विविध क्षेत्रक प्रतिभाकेँ मैथिली दिस आकृष्ट करबामे सर्वाधिक सफल भेलाह। जेना, महिला लेखिकाक अभावकेँ देखैत महिला स्तम्भ आरम्भ कएलनि, जे आरम्भमे कोनो पुरुष लेखक द्वारा लिखल जाइत छल। पछाति महिला लोकनि एहि

दिशामे आकृष्ट भऽ लिखब शुरू कएलनि। तहिना मैथिलीमे साहित्यक अतिरिक्त विभिन्न विषय पर लिखनिहार विद्वान मिहिरमे लिखब आरम्भ कएलनि।[19]

अपन सम्पादन कालमे शेखरजी मिहिरमे भाषा-शैलीक एकरूपताक स्थापना करबाक पूर्ण प्रयास कएलनि। जतेक लेखक ततेक प्रकारक भाषा-शैली। मानक स्वरूपक स्थिरीकरण नहि होएबाक कारणेँ भाषा-भाषीक बिलगाव, क्षेत्र-संकोच आदि समस्या वर्त्तमाने अछि। फलस्वरूप मिहिरक प्रकाशन एक गोट निश्चित भाषा-शैलीकेँ अपनाय आरम्भ भेल। एहि पत्रक लोकप्रियताक पाछाँ इहो एक गोट महत्त्वपूर्ण कारण भेल। शेखरजी भाषाक लिखित स्वरूपकेँ रूढ़ भऽ गेने जनसाधारणसँ कटि जएबाक प्रमुख कारण मानैत, रूढ़ भाषाक प्रयोगसँ विकासक स्रोत सुखा जएबाक सम्भावना देखैत ओ क्षेत्र-विशेष वा वर्ग-विशेषक मध्य भाषा संकोच अनुमानि भणित भाषा, जे जनसामान्य द्वारा प्रयोग कएल जाइछ तकरा अपनएबाक पक्षधर छलाह। फलतः मिहिरमे सोझ भाषा-शैलीक प्रयोग आरम्भ भेल। आ तेँ पत्र समग्र मिथिलाकेँ अपन प्रभाव-परिधिमे समेटि लेबामे सक्षम भेल। मिहिरक प्रकाशनक प्रतिक संख्या-वृद्धि ओ मैथिली विरोधी गतिविधिक शिथिलता एकर भाषा-नीतिक सफलताक रूपमे देखल जा सकैछ।

एहि हेतु अनेक समस्या रहितहुँ शेखरजी अपन दृढ़ता ओ सजगतासँ सकल समस्याक समाधानक पत्रकारिताक क्षेत्रमे जे कीर्त्तिमान स्थापित कएलनि से सर्वदा स्मरणीय आ विद्यमान रहतनि।

ओना शेखरजीकेँ एकरूपतामे छिन्न-भिन्नता देखल गेल। एहि प्रसंग शेखर जी स्वयं कहने छथि जे- हमर अवकाश-ग्रहण करबासँ प्रायः पाँच-छः वर्ष पूर्व अनावश्यक रूपसँ किछु व्यक्ति मिथिला मिहिरक सम्पादकीय विभागमे प्रवेश कएलनि। जे भाषाक स्वरूप की होइत छैक-तकर क, ख, ग, नहि जनैत छलाह। एम्हर हमर

वार्धक्य एवं हाई ब्लडप्रेशरक रोग हमरा विवश कऽ देलक जे हम सभ दिशामे पूर्व जकाँ काज कऽ सकी। ई हम गछै छी जे हमरा द्वारा देल गेल मिथिला मिहिरक भाषाक स्वरूपमे विकृति आएल अछि जकरा हम एक कलंक रूपमे स्वीकार करैत छी। प्रतिभाक धनी जतेक साहित्यकार छथि से मिथिला मिहिरक भाषाक स्वरूपकेँ अंगीकार कऽ लेलनि अछि जकरा ओ लोकनि केवल मिथिले मिहिरमे नहि, सर्वत्र प्रयोगमे आनि रहल छथि।[20]

शेखरजी सम्पादनकेँ एक गोट कला मानैत छलाह। जे एहि कलाक कलाकारक बनए चाहैत छथि से एहि जीवनमे अएबाक प्रारम्भेसँ यश अथवा नामक अपेक्षा नहि रखैत छथि। नव सम्पादक लोकनिमे पहिने यश एवं नामक सेहन्ता रहैत अछि। हुनकामे अध्यवसायक प्रवृत्ति नहिएँ टा रहैत अछि। सम्पादन कलाक अभ्यास अथवा सम्पादन करबाक इच्छा कोनो स्थापित सम्पादकसँ लेबाक चाही– एहन शेखरजीक मान्यता छलनि। शेखरजी स्वयं सम्पादन कलाक दीक्षा अथवा शिक्षा आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'सँ लेने छलाह आ हिनक सम्पादनक सूत्रधार भारतक विख्यात सम्पादक श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार भेलथिन। मुदा आब तँ शेखरजी सम्पादन–कलाक एक गोट इतिहास स्वयं भऽ गेल छथि।

ओना मिहिरक प्रथम प्रकाशनसँ लऽ अन्तिम प्रकाशन धरि अनेक यशस्वी विद्वान–साहित्यकार सम्पादकक पदकेँ सुशोभित कएलनि, जाहिमे 'सुमनजी' ओ 'शेखरजी' सर्वाधिक यश प्राप्त कएलनि। शेखरजीक सम्पादनमे मिहिर पूर्णतः मैथिलीक पत्र बनि मिथिला–मैथिल ओ मैथिलीक समग्र विकासमे दत्त–चित्त भेल। सुमनजीक रोपल आ जन्माओल गाछकेँ विशाल वृक्षक स्वरुप दैत डारि–पात–फूल आ फल लगयबाक श्रेय शेखर जीकेँ छनि।

सम्पादन तँ शेखरजी बहुत रास पोथी आदिक सेहो कएलनि। मुदा सम्पादकक रूपमे सभ दिन मिहिरेक सम्पादक कहओताह। सम्पादकीय कार्यमे ओ अपन सहयोगी लोकनिकेँ स्वायत्तता देने छलाह। ओ हुनका लोकनिक विवेक आ निर्णयक जाँच नहि करैत छलाह। एहिसँ कतेको व्यक्ति अप्रसन्न सेहो भऽ जाइत छलाह। अधिकतर साहित्यकार पीठ पाछाँ हुनकासँ असंतुष्ट बुझना जाइत छलाह मुदा सोझा-सोझी होइतहि फराक-फराक रूचिगत आत्मीयताक कारणेँ हुनकासँ घुलि-मिलि जाइत छलाह। हुनक सम्बन्धक आधार क्षेत्र बेसी व्यापक छलनि।

बहुतो गोटे शेखरजीक सम्पादन-अवधिकेँ स्वर्णकाल मानैत छथि। से एहि द्वारे जे एहिकालमे विविध प्रकारक रचना प्रकाशमे आएल। मैथिलीक विकासकेँ हिन्दी भाषी लोकनि ईर्ष्यासँ देखलनि, बादमे श्री लक्ष्मी नारायण सुधांशु, नलिन विलोचन शर्मा सदृश विख्यात हिन्दीक विद्वान लोकनिकेँ ई घोषित करए पड़लनि जे मैथिली वास्तवमे आब बोली मात्र नहि रहल, भाषा भऽ गेल अछि। एहि प्रसंग शेखरजी स्वयं कहने छथि- एहिमे कोनो सन्देह नहि जे मिथिला मिहिरक नवरूपाकारमे प्रकाशनसँ मैथिली काव्य-आन्दोलनक सूत्रपात भेल, विशेष कऽ कविता एवं कथाक क्षेत्रमे ततेक विकास भेल जे मैथिलीक चर्चा मिथिलाक अतिरिक्त बाहर, विशेष रूपसँ होमए लागल। पूर्वक इतिहास अछि जे ग्रियर्सन सदृश विद्वान मैथिलीक सामर्थ्यक अन्वेषी भेलाह। मुदा मिथिंला मिहिर जखन पटनासँ प्रकाशित होमय लागल तखन देशक अनेक विश्वविद्यालयक विद्वानकेँ मैथिलीक प्रति जिज्ञासा जगलनि, अपितु कनाडा, युगोस्लावाकिया, अमेरिका, रूस आदि देशक कतेको विद्वान मिथिला मिहिर कार्यालय पहुँचलाह। अनुसंधानक लक्ष्यसँ आ मैथिली एवं मैथिली क्षेत्रक सम्बन्धमे जिज्ञासु भेलाह। ताहिसँ अनुमान कएल जा सकैत अछि जे एकर की उपलब्धि भेलैक।[21]

एहि प्रकारेँ ई स्पष्ट होइत अछि जे शेखरजी एक गोट कुशल सम्पादक छलाह। हिनका समयमे मिथिला मिहिर मैथिलीकेँ हजारो एहन शब्द देलक अछि जे मैथिलीक अभिव्यक्तिमे उदाग्रता अनलक अछि। विशेष कए कथा-साहित्यकेँ विश्वक अन्य भाषा कथा-साहित्यक समकक्ष ठाढ़ करबाक श्रेय 'मिहिर'केँ छैक। मिथिला मिहिरक माध्यमे मात्र साहित्यिक शीर्षताकेँ नहि प्राप्त कयल गेल अपितु ओ मिथिला एवं मिथिलासँ संबद्ध आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक ओ राजनीतिक परिदृश्यकेँ सेहो वर्तमानसँ जोड़ैत नव दिशा दैत रहल। मिथिला मिहिरक पन्ना सभ ई प्रमाणित करबा लेल यथेष्ठ सामग्री देखबैत अछि जे ओ देश, राज्य आ मैथिल समाजक विषयमे सेहो सर्वदा साकांक्ष रहल आ अपन सुविचारित मंतव्य दैत रहल। कमसँ कम मिथिला मिहिरक दू सय आलेख एहन प्रकाशित भेल अछि जे एखनो मिथिला आ मैथिलक जनतब लेल आधारभूमिक काज करैत अछि। एहि सभ प्रस्तुतिमे शेखर जीक योगदानकेँ कथमपि नहि बिसरल जा सकैत अछि। शेखर जीक सम्पादकीय-कला अप्रतिम छल। एकर एक गोट स्वतंत्र अस्तित्व बुझल जाइत अछि-स्वतंत्र इतिहास लिखा सकैत छथि। ई सम्पादकजीक रूपमे चिर सिद्ध-प्रसिद्ध बुझल जाइत रहताह।

## संदर्भ सूची


1. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' पृष्ठ -4।
2. तत्रैव - पृष्ठ - 5 सँ।
3. तत्रैव - पृष्ठ - 6।
4. तत्रैव - पृष्ठ - 11।
5. तत्रैव - पृष्ठ - 195।
6. तत्रैव - पृष्ठ - 206।
7. वैदही वर्ष 4, अंक 7 जुलाई 1954 ई०।
8. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृष्ठ-209।

9. तत्रैव - पृष्ठ - 240।
10. तत्रैव - पृष्ठ - 241सँ।
11. इजोत, दीप, पृष्ठ - 2।
12. इजोत, दीप पृष्ठ - 27।
13. तत्रैव पृष्ठ - 31।
14. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी-संकलन एवं सम्पादन शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 23-24।
15. मैथिली पत्रकारिताक इतिहास - पं० चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', पृष्ठ - 307।
16. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी-संकलन एवं सम्पादन शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ - 26।
17. तत्रैव पृष्ठ - 25।
18. सुधांशु 'शेखर' चौधरी- शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ -72।
19. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी- संकलन एवं सम्पादन शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ-26।
20. साक्षात्कारक दर्पणमे - सुधांशु 'शेखर' चौधरी-संकलन एवं सम्पादन शरदिन्दु कुमार चौधरी पृष्ठ - 24-25।
21. नाटककार शेखर-अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ - 18।



तृतीय अध्याय

# हिन्दी रचना

कोनहु साहित्यकारक चिन्तन-प्रक्रिया, अभिव्यक्तिक प्रणाली, कथ्यक उत्स, रचना-प्रक्रिया आदिकेँसूक्ष्मतासँ बुझबाक हेतु ई आवश्यक अछि जे 'सर्वतो भावेन्' ओकर अध्ययन कएल जाए। जेना महाकवि विद्यापति मात्र मैथिली जगतमे नहि, अपितु विश्वभरिमे अपन पद-लालित्यक हेतु ख्यात भेलाह मुदा विद्यापतिकेँ नीक जकाँ चिन्हबाक लेल आइ हुनक प्राप्त सभ रचनाकेँ पढ़ब-गुनब आवश्यक अछि। विद्यापति मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ आदि कतेको भाषामे रचना कएलनि। ओहि सभ रचनाक आधारपर विद्यापतिकेँ आइ सम्पूर्ण रूपसँ चिन्हबाक उपक्रम भऽ रहल अछि।

शेखरजी स्वाध्यायी-स्वावलम्बी व्यक्ति छलाह। हिनकामे ज्ञानक सेहो पूर्ण जिज्ञासा ओ उत्कंठा छलनि। इएह गुण हिनका स्वाभिमानी बनबाक दिशामे अग्रसर कएलकनि। ई एक निर्भीक आ दबंग साहित्यकारक रूपमे जानल जाइत छथि। शेखर जी आरम्भमे हिन्दीमे लिखैत छलाह मुदा ओकर भावभूमि, वातावरण, प्रकृति मिथिलांचलीय अछि-मैथिलीक अछि। साहित्ये हिनक सभ किछु छल-एही लेखनपर ओ निर्भर जकाँ छलाह। तेँ हिनका हेतु हिन्दीकेँ अभिव्यक्तिक माध्यम राखब अनिवार्य छलनि। एक तँ प्रकाशकक अभाव, दोसर पोथी विक्रयक कठिनता। तेँ मैथिलीमे नहि लिखबाक कचोटक अछैत हिन्दीमे लिखबाक बाध्यता छलनि। एहि ठाम यात्री जीक कथन सहसा स्मरण भऽ अबैत अछि-

"धन्य हिन्दी जे पाँच-छओ गोटाक पेट चलइए। से हिन्दीओ मध्य लिखइ छी तएँ निमहइए, ने तँ अगबे कविवर भेने चारिओ दिनुका खोरिस की जुमइत ?"[1]

शेखर जीक अधिकांश रचना (चारिम दशकसँ छठम दशकक बीच) हिन्दीमे उपलब्ध अछि। एहिठाम अभिप्रेत अछि नाटककारक रूपमे हुनक रचना (नाटक) पर विचार करब। जीवनक सत्यताकेँ अनुभव एवं रसास्वादनक क्षमताक दृष्टिसँ समग्र काव्य भेदमे रूपक सर्वथा अभिराम तथा रमणीय अछि। भरत मुनिक कथन छनि जे– नाटक सुख–साधन, मनोविनोद तथा दुःखी व्यक्तिक हेतु विश्रान्तिदायक होइत अछि–

''दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विर्नाम्।
विश्रान्ति जननंलोके नाट्यमेतद् भविष्यति ।।''[2]

नाटक विभिन्न रूचिक लोकक मनः तुष्टि करैत अछि।[3] भवभूति नाटककेँ भव्यताक प्रतीक मानैत छथि।[4] धनंजयक कथन छनि जे– नाटक अलौकिक आनन्दक साधन अछि।[5] अभिनव गुप्त कहने छथि जे– कथामे सेहो सारणी भाव भए जाइत अछि किन्तु ओहिसँ नाटक जकाँ काव्यानन्दक अनुभूति नहि भए सकैत अछि। कथा ग्रन्थमे नाटक जकाँ चमत्कारातिशय नहि होएबाक कारणेँ चितवृत्तिक निमग्नता अर्थात् तन्मयता नहि होइत अछि।[6] बलदेव उपाध्यायक कथन छनि जे हृदयहीन व्यक्तिकेँ सहृदय बनएबाक पूर्ण क्षमता सेहो नाटकेमे अछि। जीवनक सम्पूर्ण चित्रक प्रस्तुतिकरण नाटक द्वारा सुक्ष्मतापूर्वक होइत अछि। नाटक संस्कृत साहित्यक गौरवपूर्ण अंग बनि गेल अछि। नाटकक उद्देश्य महत्त्वपूर्ण अछि। एहिसँ धर्मात्मा लोकनिकेँ धर्म दिशि प्रवृत्ति होइत छनि। विषयी लोकनिकेँ काम भेँटैत छनि।[7]

दुर्विनीति नपुंसककेँ धृष्टता, शूर तथा ज्ञानी लोकनिकेँ उत्साह, अबोधकेँ ज्ञान, पंडित लोकनिकेँ विद्वता धनिक लोकनिकेँ विलास, दुःखी लोकनिकेँ धैर्य, व्यवसायी लोकनिकेँ धन प्राप्तिक उपाय तथा घबराएल व्यक्तिकेँ धैर्य प्राप्त होइत छनि। एहिठाम नाटक सभ वर्गक लोकक लेल उपादेय अछि। नाटकक माध्यमसँ हमरा लोकनिकेँ व्यापक जीवनक झाँकी भेँटैत अछि। एरिक वेन्टली कहैत छथि

जे- नीक नाटक जे किछु प्रदर्शित करैत अछि ओहिसँ अधिक व्यंजना होइत अछि।[8] नाटकमे चुनाव-कला अधिक परिलक्षित होइत अछि। ओ एहन दृश्य चुनैत अछि जाहिसँ कथानकक तारतम्य नहि टूटए तथा संक्षेपमे पात्रक चरित्र अभिव्यंजित भए जाए तथा रसक अभिव्यक्ति होअए। नाटक एक संग मनोरंजन आओर शिक्षाक कारण बनैत अछि। नाटकमे औचित्यक निर्वाह सर्वाधिक होइत अछि। बलदेव उपाध्यायक कथन छनि जे जाहि काव्यमे जतेक औचित्य रहैत अछि ओ ततेक श्रोता तथा दर्शककेँ आनन्द उद्बोधन कए सकैत अछि।[9] महाकवि नाटकक महत्ता स्वीकार करैत एकर संज्ञा विश्वोपकार क्षमा भगवती देलनि अछि।[10]

तेँ ई स्वाभाविक अछि जे जीवनक मुखर आओर प्रत्यक्ष प्रतिच्छवि भेलाक कारणेँ नाट्य कला जीवनक विकास क्रमक निरन्तर संगिनी रहल अछि। एहि धरातल पर सभकेँ सामान्य अनुभूति देबाक विशेषताक कारणेँ ओकर प्रत्येक संस्कृति अपन श्लेषहीन सन्देशवाहक बनैत रहल अछि। हमरा सभक सांस्कृतिक दृष्टिएँ पुरातन आओर समृद्ध देश एहि कलाकेँ एतेक महत्त्व देलक जे ओ शास्त्रक पंक्तिमे आसीन भए गेल अछि। भरतक नाट्यशास्त्र, प्रयोगक स्थूलतासँ लए भावक सूक्ष्म पक्षधरि विस्तृत भए रंगमंच आओर नाट्य साहित्यक महत्ता घोषित करैत अछि। कोनहु एहन ज्ञान, कोनहु एहन शिल्प, कोनहु एहन विद्या आओर कोनहु एहन कला नहि अछि जकर प्रयोग नाट्य मे नहि भेल अछि। मूर्ति, चित्र, संगीत, नृत्य आओर काव्यकलाक अतिरिक्त भवन निर्माण, अंग-प्रसाधन, आभरण, रचना, केश विन्यास, वस्त्र रंजन, अस्त्र-शस्त्र रचना आदि अनेको शिल्पक प्रयोग रंगशिल्पी करैत छथि। एहि संसार रूपी रंगमंच पर अनादि कालसँ देव-दानव ओ मानव अपन अभिनय कए यवनिका पतन सदृश मृत्युकेँ प्राप्त कए विलीन भए जाइत छथि।

शेखरजी जीवकोपार्जनार्थ सतत् भ्रमणशील रहलाह। एहि क्रममे हजारीबाग, राँची, खूँटी, चक्रधरपुर, रायगढ़, विलासपुर, नागपुर, कलकत्ता आ जमशेदपुर आदिक भ्रमण कयलनि। हिनका लग खानापुरी वला प्रमाण-पत्रक कागतक टुकड़ियो नहि छलनि जे कोनो सरकारी जीविकाक लेल आवश्यक मानल जाइत छैक। परिणामतः हिनका कोनो नोकरी-चाकरी नहि भेटि सकलनि। पारिवारिक आर्थिक स्थितिक जर्जरता हिनका अर्थोपार्जनक हेतु बेर-बेर बाध्य करैत छलनि। मुदा उपयुक्त परिवेश-आवेशक अभाव मे नोकरी भेटियो कऽ छुटैत गेलनि। बहुतो नोकरीकेँ ई अपनो छोड़ैत गेलाह।

एही क्रममे शेखरजी कोलकाता गेलाह आ ओहिठाम 'रायल नाटक कम्पनी'मे काज करब आरम्भ कएलनि। काज प्रवृत्तिक अनुकूल छलनि। अनेक बेर ई कतेको नाटकमे भाग लऽ चुकल छलाह। तेँ नाटकक इतिवृत्तिमे शेखरजीकेँ प्रशस्त होएब स्वाभाविके। ई भूमिकासँ लऽ निर्देशन, रंगकर्म, रंगसज्जा आदि कतेको काज कएलनि। एहिसँ सहजहिं अनुमान कऽ सकैत छी जे शेखरजी केहन नाटककार छलाह। विशेष रूपसँ ई एक कुशल नाटककारक रूपमे जानल-बुझल जाइत छथि। ई अपनाकेँ मूलतः नाटककार मानैत छलाह। नाटकक तकनीकक हिनका नीक आ व्यवहारिक अनुभव छलनि तेँ हिनक सभ नाटक अभिनयक दृष्टिसँ सफलता प्राप्त कएने अछि।[11]

साहित्यक सभ विधामे शेखर जीकेँ नाटक अत्यधिक प्रिय छलनि। हिनक उपलब्ध समस्त साहित्यिक कृतिमे नाटकक संख्या सर्वाधिक अछि। ओ अपनाकेँ मूलतः नाटककारे मानितो छलाह। साहित्य अकादेमी पुरस्कार ग्रहण कएलाक बाद ओहि ठाम आयोजित भाषणमालाक क्रममे शेखरजी स्वयं बाजल छलाह जे-"हम अपनाकेँ मूलतः नाटककार मानैत छी। तेँ जँ ई पुरस्कार हमरा नाटकपर भेटल रहैत तँ बेसी प्रसन्नताक अनुभव करितहुँ।" सर्वाधिक यश सेहो हिनका एही विधामे भेटलनि।[12]

सन् 1950सँ 1960 ई०क बीच शेखरजी दर्जनो हिन्दी नाटकक प्रणयन कएलनि। जाहिमे **'तमाशा', 'निकम्मा', 'नाटक', 'मैं भी इन्सान हूँ', 'परिवार', 'कागज की नाव', 'कर्ज की मार'** आदि एहि अवधि क लिखित ओ प्रकाशित नाट्य रचना थिक। पढ़बाक लेल शेखरजी कोनो नाटक नहि लिखलनि। जखन-जखन मंचकेँ आवश्यकता भेलैक हिनकासँ नाटक लिखबाक आग्रह कएल गेलनि आ ओहि आग्रहमे पड़ि ओ प्रयोगात्मक नाटक लिखैत चलि गेलाह।

मंच नापल-जोखल नहि होइत अछि। स्थान, स्थिति एवं साधनक आधारपर नाटकक मंचन होइत अछि। भारतमे रंगमंचक ततेक विकास नहि भेल अछि जे सभ नगरमे अथवा सभ स्थानमे एक रंगात्मक मंचक व्यवस्था हो। यदि नगरमे, नहि आधुनिक तँ कमसँ कम नाटक खेलएबाक हेतु गोटेक हॉल अथवा भवनक सुविधा तँ भेटि जाइत अछि मुदा गाम-घरमे एहू विकसित युगमे बाँस गाड़ि कऽ पर्दा टाँगि कऽ आ पेट्रोमेक्स लेसि कऽ नाटकक मंचन होइत अछि। तेँ नाटकक मंचन परिस्थिति विशेष पर निर्भर करैत अछि। शेखरजीक जन्म शहरी वातावरणमे भेलनि। अतएव ओ अपन नाटकमे नागरिक जीवनकेँ विशेष प्रमुखता देलनि अछि। हिन्दी अथवा मैथिली नाटकमे गाम-घरसँ ई असम्पृक्त रहलाह।

शेखरजीक समयमे दरभंगाक रंगमंचमे पर्याप्त विकास नहि भेल छल। पारसी युगक मंच तँ प्रायः समाप्ते भऽ चुकल छल। तकर स्थानापन्न भेलाह- बंगालक प्रख्यात नाटककार द्विजेन्द्र लाल राय। दरभंगामे खाहे तँ द्विजेन्द्र लाल रायक हिन्दी अनुवादक मंचन होइत छल अथवा उत्साही रंगकर्मी लोकनि स्थान आ सुविधाक दृष्टिसँ अपने लिखल नाटकक मंचन करैत छलाह। शेखरजी जा धरि कलकत्तामे रहलाह ओ ओतए मराठी आ बंगलाक मंचक हिन्दीक अपेक्षा विशेष विकास देखलनि। एही सभसँ प्रेरित भए शेखर जी नाट्य-लेखन दिस प्रवृत्त भेलाह।[13]

**तमाशा**

शेखर जीक बहुचर्चित आ लोकप्रिय नाटकक रूपमे 'तमाशा' सेहो जानल जाइत अछि। एहिमे प्रयुक्त गीतक पाँती दर्शक-श्रोताक ठोर पर अनायासे घुरिआए लगैत अछि। 'दुनियाँ एक तमाशा बाबा, दुनियाँ एक तमाशा' प्रभृति पाँती दर्शक आ श्रोता अपन कंठमे जोगओने अछि।

शिल्पक दृष्टिसँ ई नाटक द्विजेन्द्र लाल रायक नाटकक निकट अछि मुदा अन्तर एतबे जे जतए द्विजेन्द्र लाल राय तीन अंक अथवा चारि अंकमे नाटक लिखैत छलाह आ प्रत्येक अंकमे आठसँ दस दृश्य रखैत छलाह, संगहि पात्र-पात्रीक संख्या सेहो विशेष रहैत छल, ओतए शेखरजीक 'तमाशा' दू भागमे विभक्त अछि आ पात्र-पात्रीक संख्या सेहो अत्यन्त सीमित अछि। संगहि अपन नाटक मंचन करबाक क्रममे मुख्य नाटकक संग फराकसँ किछु जोड़बाक चेष्टा नहि कएलनि जे नाटकसँ उबनिहार लोकक लेल बीच-बीचमे हँसबाक मसालाक काज करैत अछि। ओ 'तमाशा'क मुख्य नाटकक अन्तर्गति एहन पात्रक सृजन कएलनि जे एक दिस तँ हँसएबाक काज करैत अछि ओ दोसर दिस खलनायकोक काज करैत अछि।

एकर अतिरिक्त तमाशाक कथ्य पूर्णतः यथार्थवादी एवं वर्ग विभेदक अछि। जखन शेखरजी कलकत्तामे छलाह तँ एक दिन संध्यामे देखलनि जे एक बरियाती अंग्रेजी गाजा-बाजाक संग कारक पतियानीमे जा रहल छल। एहन बरियाती देखि हिनका उत्सुकता भेलनि जे के एहन प्रचण्ड अछि जे एहन अशुद्धक समयमे अपन बेटा-बेटीकेँ बियाहि रहल अछि। मुदा ज्ञात भेलनि जे एकटा सेठक कन्याक पिल्लाक विवाह ओकर सखीक पिल्लीसँ होमए जा रहल अछि। तकरे ई आडम्बर थिक। नाटककारकेँ छगुन्ता लगलनि जे यैह थिक कलकत्ता, जतए एक दिस मनुष्य कुकुरक जीवन मरैत अछि आ दोसर दिस पिल्ला-पिल्लीक विवाहक आडम्बरमे हजारो टाका बुकि देल जाइत अछि।

एहि घटनासँ शेखरजीकेँ जे प्रेरणा भेटलनि, सैह थिक तमाशाक कथ्यक उत्स, जे वर्ग चेतनासँ सम्बन्ध रखैत अछि। शेखर जीक 'तमाशा' बाँस गाड़ल मंचपर तथा दरभंगाक नगर भवनमे सेहो मंचित भेल। 'तमाशा'क मंचन दुनूठाम सफल भेल। लोकप्रियताक कारणेँ एहि नाटकक सात संस्करण प्रकाशित भेलैक।[14]

## नाटक

ई सफल रंगमंचीय सामाजिक नाटक अछि। ई 1958 ई०मे ग्रन्थालय प्रकाशन, दरभंगासँ प्रकाशित अछि। एहि नाटकमे एगारह गोट पुरुष पात्र, जेना- माधव, जीवन, मि० डालडा, अनूप, रामनाथ, सोमन, किस्मत राय, चन्दर, पाकिटमार, मेहतर आ चेनवाला एवं एकमात्र स्त्री पात्र. आशा छथि। तेरह दृश्यमे विभाजित सफल रंगमंचीय नाटकक रूपमे ई जानल गेल। एहि नाटकक गीत दर्शक आ श्रोताक लेल लोकानुरंजन करएबामे सर्वथा समर्थ भेल अछि–

"नाटक खेल रहा संसार
जिसके पास न पैसा धेला,
वह बनता है सेठ अकेला,
और सेठ जो, वह करता है
भुक्खड़ का व्यापार नाटक।।
कोई लम्बी जटा बढ़ाकर,
कोई सुन्दर सूट चढ़ाकर,
कोई धर्म को बेच-बिकाकर
लगा हुआ है भरने में
नित पेट और भंडार।
आँसू बाँट रहा है कोई
है मुस्कान लुटाता कोई
दो पैसे में बेच रहा है,
कोई दिल का प्यार
नाटक खेल रहा संसार।।"[15]

किंबा –

> "सूने घर में दीप जलाकर
> मेरे मन को किया उजाला।
> ओ ज़ीवन धन, छोड़ न देना
> दुर्दिन में तुम मुझे अकेला।
> तेरी सुधि की सिहकी आये,
> मन की कली-कली मुस्काये।
> नाच उठे अरमान, खुशी
> लग जाये, आँगन में मेला।
> ओ जीवन धन छोड़ न देना
> दुर्दिन में मुझे अकेला।"[16]

शेखरजीक ई कथन देखबा-गुनबाक योग्य अछि- "यह दुनियाँ ऐसे ही चलती है। अगर हर इन्सान एक दूसरे की जरूरतों को समझे और समय-समय पर अपनी अधिकतां से दूसरों की कमी को पूरा कर दे, तो फिर कोई झंझट ही नहीं रह जाय। लेकिन ऐसा होता कहाँ है? जब बाप-बेटे में ही धन के लिए खिंचाव-तनाव चल सकता है, फिर समता की कल्पना ही निरर्थक।"[17]

**निकम्मा**

शेखरजी मूलतः साहित्यकार छलाह। तेँ हुनका कतहु नौकरीमे मन नहि लागनि। ओ जतय जाथि नोकरी तँ भेटि जाइनि मुदा ओतए ओ रंमि नहि पाबथि। तेँ बेसीकाल घरे पर रहि लिखथि आ पोथी पूरा भेलापर ओकरा छपबावथि। आ बेचि कऽ ओहिसँ परिवारक भरण-पोषण करथि। हुनक ज्येष्ठ इन्दु शेखर चौधरीकेँ शेखरजीक ई चरित्र निक नहि लागनि। ओ कहथि जे साहित्यकार सभ निकम्मा होइत अछि। काज धंधासँ मतलब नहि रहैत छैक आ खाली बैसि कऽ रोटी तोड़य जनैत अछि। कहबाक अर्थ ई जे ओ साहित्यकारक जीवनकेँ बड़ हेय दृष्टिसँ देखल करथिन। शेखरजीकेँ ई बड़ अप्रिय लगलनि।

धीरे-धीरे ओ साहित्य आ साहित्यकारक जीवनकेँ समाजमे कोन दृष्टिसँ देखल जाइत छैक ताहि पर मनन-चिंतन करए लगलाह। साहित्यकारक एहि उपेक्षापूर्ण चिन्तनक फलाफलक रूपमे प्रकट भेल 'निकम्मा' नाटक जे अत्यंत लोकप्रिय भेल।

1955 ई.मे शेखरजी ई नाटक लिखलनि जकर प्रकाशन 16. 02. 1956 ई.केँ भेल। ई शेखर प्रकाशन, मिसर टोला, दरभंगासँ प्रकाशित अछि। सामाजिक नाटकमे एकरो स्थान उल्लेखनीय अछि। एहि नाटकमे शेखर जीक ई कथन आइयो अनुत्तरित अछि-

"आजुक साहित्यकार पंगुकेँ गति, बौककेँ हुंकृति आ आन्हरकेँ आँखि प्रदान करबामे कम सफल सिद्ध नहि भेल अछि। सोझ शब्दमे मानवताक कल्याण मार्गमे जनसाधारणकेँ आरूढ़ करबाक कार्य शुद्ध अन्तःकरणसँ जतेक एकगोट सफल साहित्यकार कएलक अछि ओतेक प्रायः कोनो सफल राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि महान वेत्ता नहि। तखन कोनो कारण नहि जे साहित्यकार सन सांस्कृतिक नेताक पद कोनो राजनीतिक, वैज्ञानिक, धार्मिक आदि नेतासँ न्यून मानल जाए। मुदा आजुक साहित्यकारक सामाजिक मान्यता छै की? की ओ वस्तुतः 'निकम्मे' थिक।"[18]

एहि नाटकमे आठ गोट पुरुष पात्र। नलिन, नरेश, मंगल, बिहारी, मगन, रसिक, मतवाला आ सोनमा तथा एकगोट महिला पात्र कामना छथि।

'निकम्मा' एकहि सेटक नाटक थिक। शेखरजीक नाटकक एक विशेषता इहो अछि जे शिल्प अथवा नाट्य प्रयोगक संग-संग ई वास्तविक घटनापर आधारित रहैत अछि। ई भिन्न कथा जे ओ व्यक्ति वास्तविक जीवनमे भिन्न नामसँ जानल जाएत आ नाटकमे ओकर नाम भने भिन्न भए जाएत। शेखरजी कतहु पढ़ने छलाह जे हिन्दीक ख्यात कवि 'निराला'क ओतए किछु प्राध्यापक हुनकापर अनुसंधान करबाक निमित्त पहुँचलाह। निराला

लग हुनक आतिथ्य लेल किछु नहि छलनि। ओ पाव भरि चीकस पैंच माँगए एक साहित्यकारक ओहिठाम गेलाह। संयोग जे ओ साहित्यकार स्वयं जीविकाक हेतु किछु कए नहि रहल छल तेँ आश्रममे अकर्मण्य बुझल जाइत छल। ओ बेचारा कतएसँ चीकसक प्रबन्ध करत? तथापि ओ निरालाकेँ हतोत्साहित नहि कएलकनि, अखबार बेचि लगक दोकानसँ चीकसक प्रबन्ध कए देलकनि। शेखरजी निरालाक संग घटित एहि घटनाकेँ जीवनक प्रति कठोर व्यंग्य पओने छलाह। ओहि घटनाकेँ 'निकम्मा' नाटकक रूपमे ग्रन्थित कएने छथि।[19]

एहि नाटकमे प्रयुक्त गीत किंबा कविता समसामयिक जीवनक अभिव्यक्ति करबैत अछि–

'जीवन का हर तार अकेला ही बजता संसार में।
तारों की न कमी दिखती पर एक–एक बेमेल है
इसीलिए संगीत बेसुरा जग में ठेलमठेल है
प्रति हिंसा की झंकृति अनुपल जन–मनहृदय–सितार में।
दया कहीं भी मिल पाती क्या बिन आँसू के मोलपर?
मिलता है विश्वास कहीं क्या मुख के सीधे बोल पर?
बिकता है ईमान शान से आज सरे बाजार में।
संवेदन की बाढ़ किन्तु गँदला होता उसका पानी
हिय में इर्ष्या की आँधी, मुख में रहती निर्मल बानी
घृणा और विद्वेष लहरता बातों मे व्यवहार में।''[20]

आ अन्तमे नाटककार कहैत छथि– ''यही है हमारा देश, जहाँ विद्या और संस्कृति में प्राचीन होने का डंका पीटा जाता है, और यही हैं हमारे देश के आधुनिक साहित्य के संस्कृति के प्रतिनिधि जो आधा सेर आटे के लिए तुम्हारे दरवाजे पर आये थे।''[21]

एहि नाटकमे सर्वांशतः साहित्यकारक प्रति सामाजिक दृष्टि–बोधकेँ दुत्कारल गेल अछि।[22] एहि नाट्य कथासँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे ई नाटक एकांकी नहि अछि, कारण एहिमे एके मुख्य कथा–धारा नहिं अछि। ओहिमे एक उपधारा सेहो अछि। संग–संग ओहिमे एके

चरित्रपर प्रकाश नहि पड़ैत अछि। अनेक चरित्रक विकास भेल अछि। अनेक चरित्रक जीवन पक्षपर नीक जकाँ आलोक पड़ैत अछि। ओ परिभाषा अनुसार एकांकी तँ किन्नहु नहि भए सकैत अछि।

**कर्ज की मार**

नाट्य-रचनाक सभसँ पैघ कठिनता होइत छैक ओकरा मंचोपयोगी बनायब। मंचक अनुभवहीन व्यक्ति द्वारा लिखित नाटक आन सभ प्रकारक सफल भेलाक पश्चातो मंचक जटिलताक कारणेँ सफल नहि भऽ पबैत अछि। शेखर जीक नाटक एकर अपवाद अछि। स्वयं नाटककारकेँ विभिन्न मंचक अपूर्व अनुभव छलनि, तेँ हिनक नाटक सफल मंचोपयोगी भेल।

जीवन जगत्सँ परिचित करबैत 'कर्ज की मार' सेहो एक गोट सफल मंचोपयोगी नाटक अछि। इहो नाटक सन् 1950सँ 1960 ई०क बीच लिखल गेल अछि।

**परिवार**

इहो एक गोट सफल सामाजिक नाटक थिक। एहि नाटकक नामहिसँ विशेष रूपेँ सामाजिक इतिवृत्तिक संकेत भेटैत अछि।

**मैं भी इन्सान हूँ**

शेखरजीक ई नाटक अत्यधिक लोकप्रिय भेल अछि। साहित्यकारकेँ केन्द्रमे राखि इहो नाटक लिखल गेल अछि। एहि नाटकक मुख्य पात्र एक गोट चरित्रवान लेखक छथि जे अपन आर्थिक स्थितिसँ उबिया कऽ समाजक लेल सत् साहित्यक सर्जनक मार्ग छोड़ि सस्ता साहित्य लिखबाक लेल उद्यत होइत छथि। मुदा हुनक आश्रयदाता एकटा मूढ़ही बेचनिहार एहन करबासँ रोकि दैत छनि।[23]

तीन अंकमे विभाजित एहि नाटकमे पाँच गोट पुरुष पात्र चेतन, मदन, रामधन, गोपाल एवं पालिशवला

छथि एवं दू गोट स्त्री पात्र बन्दना आ अलका छथि। मानवमे मानवता नहि रहि गेल अछि। एहि दिसि नाटककार दृष्टिपात करबैत छथि– "जबतक इन्सान के वेष में भेड़िया घूमते नजर आयेंगे तब तक कुछ भी सम्भव नहीं है। इन भेड़ियों ने ही कलियों से गमकती फुलवारी को जंगल बना रखा है...इन्सानियत के निर्मल सरोवर में गन्दगी फैला रखी है...सहभावना की चन्दन कटोरी में स्वार्थ का कीचड़ घोल रखा है। जब तक ये भेड़िये जियेंगे, जिन्दगी की बहती धारा को गन्दा किये रहेंगे...तब तक अंधेरा रहेगा...तब तक दीये की लौ कुछ कम नहीं कर सकेगी।"[24] नाटककार इन्सानक प्रवृत्ति दिस इंगित करबैत छथि।

बहुधा समाज द्वारा उपेक्षित ओ तिरस्कृत पात्र साहित्यकार हिनक नाटकमे अपन लक्ष्यसँ विचलित नहि होइत अछि। ओ सतत् संघर्ष करैत सन्मार्गपर चलैत रहैत अछि। समाजमे चेतनाक शंख फूंकैत रहैत अछि।[25] ई नाटक मुख्यतः समस्या मूलक थिक।

ई नाटक सेटपर खेलाएबला अछि। जे व्यक्ति पृथ्वी थियेटर्सक नाटक 'पठान', 'दीवार' आदि देखने होएताह से सेटकेँ नीक जकाँ बुझि सकैत छथि। शेखरजी अपन तीन सेटक 'मैं भी इन्सान हूँ'मे यथार्थक निस्सन धरातलपर ठाढ़ छथि।

शेखरजीक सामाजिक नाटकमे 'कागज की नाव', 'नरक के कीड़े', 'एकता ही बल है' और 'दहेज कलंक है' सेहो उल्लेखनीय नाटक अछि। नाटकक नामहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे शेखरजी समसामयिक जीवन जगतसँ पूर्ण रूपसँ परिचित छलाह। परिवेश–आवेशकेँ निरखने–परखने छलाह। जकरा ओ अपन रचनाक माध्यम बनौलनि – नाटक लिखलनि। नाटक जगत्मे हिनक ख्याति पसरल–चमकल। नाटकमे प्रयुक्त गीत सभ लोककंठमे अनुगुंजित होमय लागल।

शेखरजीकेँ राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगला

आ हिन्दी आदि कतेको देशी भाषाक रंगमंचकेँ देखबाक-अभिनय करबाक अवसर भेटलनि। आ, ओ हिनका हृदयपर तेहन अमिट छाप छोड़लक जे ई नाट्य लेखन दिसि प्रवृत्त भऽ गेलाह। मुदा ओ नाटक सभ हिन्दीमे अछि।[26] नाट्य साहित्यमे शेखर जी पूर्ण सफल भेलाह से उचिते।

**शेखरजी उपन्यासकारक रूपमे**

पद्य कल्पनाक आँखि-पाँखि भने आकाशमे उड़ान भरओ मुदा धरातलपर गति लएबाक हेतु गद्यहिक मंद चंचल चरण चलबए पड़ैछ। आधुनिक युग गद्यक आग्रही-संग्रही अछि। ई गद्य युग कहबैत अछि। एहि गद्य साहित्यमे उपन्यास सर्वथा रोचक-प्रयोजक अछि।

युगक गतिशील पृष्ठभूमिपर सहज शैलीमे स्वाभाविक जीवनक पूर्ण व्यापक चित्र अंकित कएनिहार महाकाव्य-उपन्यास कहबैछ। ओना तँ नाटक, उपन्यास आ महाकाव्य तीनूमे जीवनकेँ सम्पूर्ण रूपमे उपस्थित कएल गेल रहैछ मुदा एहि तीनूमे सुलभ आ प्राकृतिक रूप उपन्यासेक रहैछ। नाटक आ महाकाव्य सदृश बन्धन उपन्यासक हेतु नहि होइछ। एहिमे लेखक स्वच्छन्द भए जीवनक विभिन्न चित्रकेँ अंकित करैत छथि। नाटक आ महाकाव्य जकाँ उपन्यासक हेतु कठिनता, बन्धन एवं पृष्ठभूमिक प्रयोजन नहि होइछ। उपन्यास कथा साहित्यक सरल स्वाभाविक रूप थिक आ तेँ आधुनिक कालमे एकर अत्यधिक विकास भए रहल छैक।[27]

सुधांशु 'शेखर' चौधरी सफल उपन्यासकार छलाह। हिनक उपन्यासक स्वरूप अत्यन्त भव्य आ महान अछि। भावगत ओ शैलीगत दुनू रूपमे ओ अत्यन्त उर्जस्वित उदात्त स्वरूप धारण कएने छथि। हिनक उपन्यासक कथानक नगर आ ग्रामीण दुनू समाजपर आधारित अछि। ई व्यक्ति आ समाजक मार्मिक स्थलकेँ उद्घाटित कएलनि अछि। हिनक उपन्यासक कथानकक गठन अप्रतिम भेल

अछि। घटना आ पात्रक दृष्टिएँ हिनक उपन्यासक परिधि व्यापक आ विस्तृत अछि। पात्रक सृष्टि सोद्देश्य कएलनि अछि। ई कतहु निरर्थक नहि प्रतीत्त होइत अछि। हिनक पात्र अपन विशिष्ट मनोग्रंथिसँ परिचालित अपन जीवनकेँ प्रदर्शित करैत अछि। हिनक औपन्यासिक पात्र आदर्शवादक भूमिकाक सम्पादन कएनिहार नहि, प्रत्युत यथार्थवादक धरातलपर प्रतिस्थापित भेल अछि। ओकर गुण, अवगुण, नीक-अधलाह सभक दिग्दर्शन उपन्यासकार अत्यन्त कुशलताक संग कएलनि अछि। एहि हेतु पात्रक भावनासँ, चारित्रिक विशेषतासँ पाठकक हृदय सहजहिं तादात्म्य स्थापित कऽ लैत अछि। ओ हमरासँ दूर नहि अपितु अत्यन्त निकट प्रतीत होइछ। हिनक उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक देश-काल आ पात्रक वास्तविक योजना। उपन्यास पढ़ला पर एहन प्रतिभासित होइछ जे जाहि पृष्ठभूमिमे उपन्यास लिखल गेल अछि ओ सजीव आ प्राणवान भऽ कऽ हमर आँखिक सोझा नाचि रहल अछि।[28]

शेखर जीक हिन्दीमे उपन्यास अछि- 'महाकवि पगलेट' आ 'पागलखाना'।

**महाकवि पगलेट**

ई उपन्यास मिथिला प्रकाशन, लहेरियासरायसँ 1957 ई.मे प्रकाशित भेल। ई एक प्रयोगवादी उपन्यास थिक। एहि उपन्यासक कथानक एक सत्यकथापर आधारित अछि जकर नायक महाकवि पगलेट हिनक पड़ोसी छलथिन। कोनो साहित्यकारक जीवन आर्थिक विपन्नताक कारणेँ विविध संकटसँ आक्रान्त रहैत अछि से एहि उपन्याससँ सहजहिं स्पष्ट होइत अछि। एहि उपन्यासक प्रसंगमे हिन्दीक चर्चित साहित्य-मनीषी रामवृक्ष बेनीपुरीक कथन अत्यन्त सटीक अछि - "'सुधांशु 'शेखर' चौधरी का उपन्यास 'महाकवि पगलेट' को देखकर प्रसन्नता हुई। सिर्फ इसिलिए नहीं कि हमारे कुटुम्ब में एक नए सदस्य आये, यानी बिहार के हिन्दी लेखकों की संख्या में वृद्धि हुई बल्कि

इसलिए कि चौधरी ने इस कृति द्वारा बताया है कि सुप्रसिद्ध सूक्ति 'शायर सिंह सपूत' की तरह लीक छोड़कर चलना उन्हें पसन्द है। उनका 'महाकवि पगलेट' एक ऐसे टाइप को हमारे सामने रखते हैं जिनकी संख्या में आजकल दिनानुदिन वृद्धि हो रही है और जिसे आज या कल साहित्य में स्थान पाना ही था।''[29]

एहिना श्रीकान्त ठाकुर विद्यालंकार कहैत छथि जे- 'महाकवि पगलेट' भारतीय सामाजिक जीवन का जीवन्त चित्रण है। भारत के जिस भाग के सामाजिक जीवन का चित्रण इसमें किया गया है वहाँ की भाषा की छाप भी इसमें दिखायी देती है। स्त्री-पुरुषों के जीवन की वास्तविकता दिखाने में लेखक को पूरी सफलता मिली है। हिन्दी के कथा साहित्य में यह एक अभिनव प्रयोग है।[30]

तहिना आचार्य श्री जगन्नाथ प्रसाद मिश्रक कथन छनि जे- ''उपन्यास के नायक पगलेट की जीवन-गाथा का वर्णन लेखक ने स्वयं किया है। उपन्यास का कथा-भाग एक सीमित क्षेत्र को लेकर आरम्भ होता है। पात्र-पात्रियों की संख्या भी स्वल्प है। किन्तु सीमित परिसर में ही लेखक ने अनेक सामाजिक समस्याओं पर सुतीक्ष्ण दृष्टिपात किया है और चुभते हुए व्यंग्यों द्वारा उनका वास्तविक रूप हमारे सामने खोलकर रख दिया है। उपन्यास में स्थानीय रंग भरने का जो प्रयास किया गया है उससे इसकी रोचकता बढ़ गयी है।''[31]

ई उपन्यास वार्त्तालापक शैलीमे लिखल गेल अछि। जाहिमे वार्त्ताक श्रोता स्वयं पाठक अछि। पाठककेँ पात्र बना उपन्यासक नायक महाकवि पगलेटक सम्बन्धमे सभ किछु बड़ स्वाभाविके ढंगे कहने चलि गेलाह अछि।[32]

एहि उपन्यासमे वर्णनक स्वाभाविकता देखबाक योग्य अछि- 'मिसर' शब्द का प्रयोग यों तिरहुतिये लोग जमाई के अर्थ में कर लेते हैं लेकिन सिर्फ मिश्र उपाधि धारी के लिए ही। और इस मिसर के साथ तो बीमार

और बीमारियों का जन्म-जन्मान्तर का सम्बन्ध मालूम पड़ता है। गोया, उस मुहल्ले के मिसर छूछे मिसर नहीं हैं, वैद-मिसर हैं। तभी तो धरती पर पैर देते ही सोंठ-पीपर-मरीच के गुणों से परिचित हो जाते हैं उनके बाल और गोपाल।

महल्ला मिसर टोला में बड़े-बड़े वैद-मिसर हैं। इतने बड़े-बड़े कि डाक्टर लोग उनसे हार मानते हैं। डाक्टर सिन्हा तो जनम भर अपने पाँव की गठिया का इलाज इन्हीं मिसरों से कराते रहे। बीमारी का जड़ से आराम होना उनके भाग्य में नहीं लिखा था सो दूसरी बात है, मगर आयुर्वेद और वैद्य पर जीवन की अन्तिम घड़ी तक विश्वास जमा ही रहा। रत्ती भर भी उसमें कमी नहीं हुई।''[33]

**पागलखाना**

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक इहो उपन्यास चर्चित एवं प्रशंसनीय अछि। एहिमे तीन प्रणय कथादिकेँ एक सूत्रमे गाँथि कऽ उपन्यासकार पात्रक मानसिकता, विचारादिक परिपक्वता आ सम्वादक तीव्रतासँ एक एहन कृतिक निर्माण कएलनि अछि जेँ पाठककेँ एक नव आस्वाद आ अनुभव प्रदान करैत अछि।

**शेखरजी कथाकारक रूपमे**

कथा कहबाक प्रथा मनुष्यमे तहिएसँ चललैक जहियासँ ओकरामे सामाजिकताक भावना जगलैक। दोसराक सुख-दुःखक विम्ब ओकर हृदयक दर्पणमे प्रतिबिम्बित होमए लगलैक। जा धरि ओ 'अहम' केर घेरामे घेरल-बेढ़ल रहल, ओ अपनाकेँ कविताक तुक-तुकांतमे एकान्त संगीत गबैत रहल। कथोपकथनक क्रममे 'त्वम' धरि जँ पहुँचिओ सकल तेँ रूपकक 'मन्त्रे धरि सीमित रहल। किन्तु जखन 'त्वन्चाहन्च'क चकार ओकरा तत्सत्क चमत्कार दिस संस्कारित केलकैक- कविताक श्रव्य ओ

रूपकक दृश्यसँ जी उमठि गेलैक। तखन ओ जाहि माध्यमक खोज कएलक, सैह कथा-कहानी, आख्यान-उपन्यास कहौलक।

आ ई कविता पत्रिकाक कोनमे आलोचनाक उद्धरणमे सकुचा रहल अछि। नाट्य रूपक दृश्य रेडियो-टेलीविजनक सेट पर थकुचा रहल अछि। रचनात्मक साहित्यमे कथा-उपन्यासे टा एहन अछि जे ज्ञान-विज्ञानक टोह लगएबामे, भूगोल-खगोल धरि घुमएबामे, समाजनीति-राजनीति पढ़एबामे, नीति-अनीति बुझएबामे सुकुमार पद्धतिक प्रमुख विधा बनि गेल अछि। मांसल रूप, मानस अतिमानस रस, सांस्कृतिक गंध-सौरभ ओ विचार-प्रचारक स्पर्श जेना सर्वेन्द्रिय गुणग्राहि चेतनाक स्तूप बनि गेल हो। कोनो भाषाक लोकप्रियताक तौल जेना कथेक तुला पर संभावित हो। मानवीय रूचि-चिन्तनक हेतु जेना कथा विधा सर्वसंग्राही कम्प्यूटर बनि गेल हो।

कथा पैघ हो तँ भने उपन्यास नवलिका-कादम्बरी कहबओ, छोट हो तँ कथा-कहानी-खण्ड कथा-गल्प-अल्पिका नाम भले गनबओ किन्तु 'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्' एही लक्षणवृतमे समाहित अछि।[34]

कथा अपन घटना, विन्यास तथा कार्य व्यापारक उद्‌घाटनक हेतु मनुष्यक मानसिक अन्तर्द्वन्द्वकेँ सेहो ओतबे सफलतापूर्वक चयन कऽ सकैत अछि। कथा उपन्यास नहि अछि कारण उपन्यासक क्षेत्र समग्र जीवन होइत अछि तथा कथा मनुष्यक समग्र जीवनेमेसँ कोनो एकटा मार्मिक घटनाकेँ अपन विषय बनबैत अछि। एहिना 'कथा' नाटक सेहो नहि अछि यद्यपि कथामे नाटकीय तत्व रहैत अछि तथा कोनो निर्णायक घटना सूत्रक दिस 'कथा'क कथा अनुधारित रहैत अछि। नाटकक कथाकेँ मूलतः नाटकीय होएबाक आवश्यकता रहैत अछि तथा नाटककारकेँ मात्र 'संवाद' द्वारा कार्य व्यापारक विकास तथा कथानकक उद्‌घाटन करए पड़ैत छनि। किन्तु कथाकार 'कथा'केँ अपन उद्देश्यक अनुरूप जतय चाहथि मोड़ि सकैत छथि तथा घटना एवं पात्रकेँ

वातावरणक पृष्ठभूमिक सूक्ष्म प्रभावसँ जेना चाहथि, उभाड़ि सकैत छथि।[35]

अतः 'कथा' की अछि से बुझबाक हेतु कोनो सरल परिभाषाक आश्रय ग्रहण करबाक आवश्यकता नहि अछि। तथापि एतबा कहल जा सकैत अछि जे सम्प्रति 'कथा' सूक्ष्मसँ सूक्ष्म स्थितिक परिवेशमे, क्षणिकसँ क्षणिक मानसिक उहापोहमे, क्षुद्रसँ क्षुद्र अनुभूतिक आवेगमे माँसल स्वरूप ग्रहण करबाक क्षमता सम्पन्न एकटा लोकप्रिय गद्य विधा अछि।[36] स्पष्ट अभिव्यक्तिक हेतु ई गद्यात्मक हो – मानवीय भावना, राग–विराग, हर्ष–विशाद् कोनो स्थायी संचारी भावक इर्द–गिर्द घुमैत चरितात्मक सरस कथानक हो – बस! ओकर अतिरिक्त रंग–टीप जे भरि सकिऐक, से सब सजतैक; जे किछु वसन–भूषण पहिरबिऐक, सब छजतैक।

भारतीय कथा साहित्यक आयाम वैदिक साहित्यसँ लऽ कऽ पौराणिक वार्त्ता धरि नीति कथासँ लऽ कऽ रसप्रथा धरि व्यापक रहल। जे किछु उपदेश–सन्देश अछि से कथा–सूत्रमे गँथाइत रहल। यद्यपि शैली ओकर पुरना गेलैक– आधुनिक युगक रसनाकेँ जे पाश्चात्य शैलीक चटपटी स्वाद लऽ चुकल छल, तकरा हेतु जेना बसिया गेलैक।[37]

कथा साहित्यमे सुधांशु 'शेखर' चौधरीक स्थान आदरणीय ओ प्रशंसनीय अछि। हिनक कथा संसारक विविधता आ गहनता नेने अछि। शरतचन्द्रक समान एकरसता नहि। हिनक अधिकांश कथा भावात्मक अछि। ओ अपन शिल्प विधिसँ घटनादिकेँ प्रस्तुत करबामे, चरित्र–चित्रण आ चरित्र निर्माणमे, वातावरणक अवधारणा तथा सिद्धान्तक प्रतिपादनमे ई सर्वथा मौलिक रहलाह। कल्पना, आदर्श आ अनुभूतिक समन्वय भूमि पर ई अपन चरित्रक निर्माण कएलनि। हुनक सभ पात्र भावुक, सौन्दर्यप्रेमी आ यथार्थ मानव अछि। शैलीक दृष्टिएँ पात्रक नाटकीय कथोपकथन आ वातावरणक सृष्टि हिनक कहानी कलाक मौलिकता अछि।[38]

हिन्दी-कथा जगत् मे सुधांशु 'शेखर' चौधरी चर्चित कथाकारक रूपमे जानल जाइत छथि। हिन्दीक चर्चित पत्रिका 'चाँद' जाहिमे हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ कथाकार लोकनिक कथा प्रकाशित होइत छलनि। शेखर जीक कतिपय कथा एहि पत्रिकामे प्रकाशित भेल। हिन्दीमे हिनक पहिल कथा संग्रह **'जयमाला'** 1950 ई०मे प्रकाशमे आएल। एहि कथा संग्रह पर आचार्य शिवपूजन सहायक टिप्पणी छनि जे- 'आपकी प्रतिभा अधिकाधिक विकसित होकर बिहार की गौरव वृद्धि करेगी ऐसा मेरा विश्वास है।''[39]

हिनक दोसर कथा संग्रह 'फिल्मी दुनियाँ' 1950 ई०मे प्रकाशमे आयल छल। ई दीर्घ कथा संग्रह अछि। हिनक कथाक पैघ विशेषता सरलता, सजीवता आ प्रवाह अछि।

## शेखरजी कविक रूपमे

भारतीय भाषा-साहित्यमे पहिने गद्यक अपेक्षा पद्यक प्रधानता छल। वैदिक किंबा संस्कृत साहित्यमे जे ऋचा अछि से तत्कालीन लोकक कंठहारे जकाँ बनल छल। इहो ऋचा मानवक अन्तः सलिलासँ निःसृत छल।

कविताक क्षेत्र अत्यन्त व्यापक अछि। स्वयं मानव जीवनक सदृश एकर विस्तार सेहो अत्यधिक अपरिमित अछि। गर्भाधानसँ मृत्यु पर्यन्तक सभ प्रक्रिया एहिमे समाविष्ट रहैत अछि। जीवनक प्रायः प्रत्येक क्षण एहि मे मुखरित होइत अछि। जाहि-जाहि ठाम मानवक वास-निवास रहैत अछि ओहिठामक भूमि, आकाश मंडल, वन, पर्वत, नदी, जलाशय आदि सभ कवितामे कोनो ने कोनो रूपमे गुंजायमान भऽ उठैत अछि। मानवक सम्पूर्ण जीवन गीतमय- कवितामय कहल जा सकैत अछि। आकाशलोकमे स्वच्छन्द विहार करएवाला पक्षीक समूह सदृश ई कविता मानव जीवनक आकाशमे सतत् कलरव करैत अछि। पावसक घनघोर घटामे, बिजुरीक छटामे, शरदक शीतल

शुभ्र ज्योत्स्नामे, मधुमासक अलस बसातक मन्द-मन्द सिहकीमे, भ्रमरक गुंजारमे तथा ग्रीष्मक तपनक तापमे कविताक विभिन्न रूप दृष्टिगोचर होइत अछि। एहि कविताक भाव आओर भाषामे लोक़जीवनक वृत्ति अपन प्राकृतिक रूपमे मुखरित होइत अछि। ई कविता मानव जीवनक हेतु कखनो उल्लासक वरदान लऽ अबैत अछि तँ कखनो धार्मिक सनेस लऽ कऽ, कखनो ई शिशुकेँ क्रीड़ा करबाक प्रेरणा दैत अछि तँ कखनो वयस्ककेँ काज करबाक प्रोत्साहन। कखनो ई सभक हेतु मंगलकामना लऽ कऽ अबैत अछि तँ कखनो समस्त जीवनक गाथा लऽ कऽ अबैत अछि। ई कवितामे मनुष्यक जीवनक कोना-कोना गुंजायमान भऽ उठल अछि। मानव जीवनमे नीरसताकेँ हटाय सरसताक संचार करैत अछि- भावभूमिकेँ सजलता सरसता प्रदान करैत अछि, संगहि निराशाक तिमिराच्छिन्न निशाकेँ तिरोहित कऽ आशाक आलोक विकीर्ण कऽ दैत अछि। एहि कविताक माध्यमसँ मानव लोकनिक शारीरिक एवं मानसिक कष्टक विमोचन सुलभ आओर सुन्दर बनि जाइत अछि। आ तेँ गोस्वामी तुलसीदासक ई उद्घोषणा-

"स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा
भाषा निबंध मति मंजुलमातनोति।"[40]

सर्वथा सार्थक प्रतीत होइत अछि।

कविता कविक मानसकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। समाजक घात-प्रतिघातकेँ वास्तविक रूपमे व्यक्त करैत अछि। सम्पूर्ण समाजक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। जगत आओर जीवनक सुचिन्तित नियोजित चित्रण करैत अछि। एकर वास्तविक उद्घाटन जतेक कविताक माध्यमसँ होइत अछि ओतेक अन्य कोनो विधासँ नहि। यैह कारण अछि जे मानव जीवनक विभिन्न स्थिति परिस्थिति-संस्कृति प्रभृतिक चित्रण कवि कर्ममे उपलब्ध होइत अछि। लोक मानससँ सतत् जीवन शक्ति प्राप्त होएबाक कारणेँ एहिमे रसमयता आओर हृदयस्पर्शिताक अद्भुत सामंजस्य भेटैत

अछि। जनजीवन अत्यन्त हर्ष ओ उल्लाससँ ग्रहण करैत अछि। कविताक स्वच्छन्द प्रवाह जीवन सरिता सदृश अबाध गतिसँ चलैत रहैत अछि, जाहि कारणेँ मानव समुदायक जीवन सर्वदा रसार्द्र आओर आस्वाद्य बनल रहैत अछि।

गद्य साहित्य हो किंवा पद्य साहित्य, ओ हमर कौतूहल आओर जिज्ञासाकेँ शान्त करैत अछि। जठरानलसँ उद्विग्न मानव जेना अन्नक एक-एक कणक हेतु लालायित रहैत अछि, ओही प्रकारेँ मस्तिष्क सेहो क्षुधाग्रस्त होइत अछि, ओकर भोजन साहित्यसँ प्राप्त करैत अछि। कविताक द्वारा हम अपन राष्ट्रीय इतिहास, देशक गौरव गरिमा, संस्कृति आओर सभ्यता, पूर्वजक अनुभूत विचार प्रभृति प्राप्त करैत छी। हमर पूर्वजक श्लाघ्य कृत्य आइयो कविताक माध्यमसँ हमर जीवन अनुप्राणित होइत अछि। कवि वाल्मीकिक पवित्र वाणी आइयो हमर हृदय मरुस्थलमे मंजुल मन्दाकिनी प्रवाहित कऽ दैत अछि। गोस्वामी तुलसीदासक अमर काव्य आइ अन्हारमे भटकैत असंख्य भारतीयकेँ आकाश-दीपक भाँति पथ प्रदर्शन कऽ रहल अछि। कालिदासक अमर काव्य आजुक शासन सत्ताक समक्ष रघुकुलक लोकप्रिय शासनक आदर्श उपस्थित करैत अछि।

जीवन जँ शरीर तँ कविता ओकर निसृत वाणी एवं उर्वर भाव भूमि थिक। एहि उर्वर भाव भूमिक द्वारा मानव जीवन ज्ञानार्जन करैत अछि- हृदयमे एक गोट नैसर्गिक लालसाकेँ अपन भावना आ विचारक माध्यमसँ प्रगट करैत अछि। अतः जेहन भावना होएत, कविता सेहो ओहने होएत। यदि समाजमे धार्मिक भावना अधिक प्रचलित रहत, कविता ओहि भावनासँ अलग नहि रहि सकैत अछि, जँ समाजमे विलासिताक साम्राज्य रहत तँ कविता शृंगारिक होएत, कारण कवि लोक भावनाक प्रतिनिधित्व करैत अछि। कविक प्रतिभा-नैपुण्य प्रभाव-प्रसार मानव जीवनपर पड़ैत अछि। तोप-तलवारसँ अधिक-शक्ति

कवितामे निहित अछि। कवि विद्यापति कविताक प्रभावे राजा शिव सिंहकेँ बन्दीगृहसँ स्वतन्त्र करओने छलाह। एक गोट साम्राज्यक विस्तृत भू-भाग दान स्वरूपमे स्वीकार कएने छलाह।

कविताक कार्य पाठकक समक्ष एक एहन संवेदनात्मक जगतकेँ प्रस्तुत करब थिक जकर सम्पर्कमे आबि कए ओकर रागात्मक चेतना उद्‌बुद्ध भऽ कविक अनुभूतिक अनुवर्तिनी बनि जाए, कविकेँ अपन भावक अनुरूप बिम्ब स्थापित करबाक क्षमता होएबाक चाही। कविता जीवन आओर जगतक विभिन्न रूप आओर व्यापारकेँ संश्लिष्ट आ योजनाबद्ध करैत अछि। मैथ्यू ऑर्नोल्ड कविताक मूलमे जीवनक आलोचना माननलनि अछि।[41]

केवल शब्दार्थक माटि-पानिसँ अभ्यासक चाकपर किछु-किछु बर्त्तन-वासन गढ़ि लेने कोनो कुम्हार कलाकार नहि बनि सकैछ। ओहि पद-पंक्तिकेँ प्राप्त करबा लेल ओकरा चिन्तन-मनन पूर्वक कोनो रूप-सौन्दर्यक अवधारणा करए पड़ैछ; ओ तदनुरूपे गढ़नि सेहो देबए पड़ैछ। मूल साहित्यक अवधारणा रस सर्जनासँ सम्बन्ध रखैछ। कल्पना ओ अनुभूतिसँ मधुकोश संचित करैछ। तखन शिल्पगत नैपुण्य ओकर वाह्य आकृति, कला अनुकृति रंग रूपक गढ़नि दैछ जे साहित्यिक विधा कहबैछ। पद्य वा गद्य अथवा काव्य-नाटक, कथा, आख्यायिका, गीत, मुक्तक जे कोनो व्यष्टि नाम दिऔक, साहित्यक समष्टिकेँ पुष्टि दैछ। मैथिली भाषा साहित्यक जे विविध विधा अछि ताहिमे पद्यक महत्त्व शीर्ष स्थानीय अछि। गुण ओ संख्या दुहूमे बलिष्ट अछि, वयस ओ यश दुहू दृष्टिएँ यावतो साहित्य विधामे वरिष्ठ ओ विशिष्ट अछि।[42]

कवि कर्मक चेतनामे जीवनहिक चेतना होइत अछि। एकरहि द्वारा हम जीवनक घनिष्ठ सम्पर्कमे अबैत छी। एकर अध्ययन-मनन हम एहि हेतु करैत छी जे एकर माध्यमसँ जीवनक जटिल तथ्य आओर परिस्थितिक अनुभूति होइत अछि। कवि स्वयं युगद्रष्टा आओर

युगस्रष्टा होइत छथि, आ ओ ओहि बोधकेँ व्यक्त करैत छथि। कविताक माध्यमसँ जीवनक अभिव्यक्ति होइत अछि। आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क शब्दमे– "जीवन–वनमे विविध भावक तरु–लता पतझर ओ वसन्तक डाँट–दुलारमे–प्रचण्ड पछबाक आघात ओ कोमल मलय–समीरणक सिहरनमे– जे द्वन्द्व अनुभूति कऽ धूप छाँही प्राप्त करैछ ओ मन्जरित होइछ कोमल काव्य–रसाल फलक भूमिकाक रेखाक रूपमे।

हर्ष ओ संघर्ष, अनुरक्ति ओ विरक्ति साफल्य ओ वैफल्य– जीवन रेखाक जे दुइ अवलम्बी बिन्दु अछि, ओ संस्कारवश जखन वृत्ताकार रूप धारण करैछ तखन ओकर अन्तरालमे कविताक परिधि लेखा प्रस्तुत होइछ।[43] डा० शैलेन्द्र मोहन झा लिखैत छथि जे– कविता सरितामे जीवन रागक विविध तान–तरंग उमड़ैत अछि। ओकर जल दर्पणमे प्रकृतिक चारु छटा मोहक रंग ढंगक दिव्य दर्शन होइत अछि, ओहिमे अवगाहन कएलासँ केहनो श्रान्त–क्लान्त तन–मनकेँ नूतन उमंग–स्फूर्ति भेटैत छैक, व्यक्तिक सुषुप्त उत्साह आ कर्त्तव्यक प्रेरणा पुनः जागि उठैत छैक।[44]

शेखर जीक सशक्त लेखनीमे पद्य कल्पनाक उड़ान सेहो चलि उड़ल अछि। पूर्वार्द्धमे शेखरजी साहित्य जगतमे हिन्दी कविता लऽ प्रवेश कएलनि आ कविक रूपमे ख्यात भेलाह। हिनक कवितामे कल्पनाक उड़ानक अपेक्षा यथार्थक भावभूमि दृष्टिगोचर होइत अछि– मानव जीवनक कोमल आ सरस अन्तःस्थलक वर्णन भेल अछि। हिनक नवीनोन्मुखी काव्य देशक नवजागरण, नव आकांक्षा आ नव चेतनाक भाव सम्पदा लऽ कऽ चलल। हुनक व्यक्तित्व काव्य–साधनामे स्पष्ट रूपेँ मुखरित भेल। जाति सुधार, देशप्रेम, ग्राम्य जीवन तथा अन्य स्थूल आ मूर्त विषयक सोझ–सोझ अभिव्यक्ति हुनक कविताक आदर्श छल। प्रेम, सौन्दर्य, यौवन, मानव जीवनक सुख–दुःख, रहस्य, चिन्तन हिनक काव्यक प्रतिपाद्य विषय छल। जीवनक

सामाजिक पक्षसँ तटस्थ कवि अपन आत्माक आलोड़न–विलोड़न, राग–विराग, हास्य–रूदन, प्रणय–द्वन्द्व, अतृप्ति जे अपन अभिव्यक्तिक लेल छटपटा रहल छल ओ हिनक काव्यमे मुखरित भेल। फलतः हिनक अभिव्यक्तिक लेल ओतबे सूक्ष्म, तरल, चित्रमयी आ कल्पनाक अतुल भाव सुषमासँ मण्डित अछि। हिनक काव्यमे प्राचीनता आ आधुनिकताक अपूर्व समन्वय भेल अछि। लोक कल्याण आ समाज सेवाक आदर्श प्रस्तुत करबाक लेल ओ काव्यक सृष्टि कयलनि। हिनक काव्य–साधना आदिसँ अन्त धरि आदर्शवादी रहल अछि। हुनक आदर्शवादिता लोकमंगलक व्यापक भावनासँ प्रेरित भऽ कऽ मातृभूमिक संस्कृतिक प्रतिष्ठा करब छलनि। गीति तत्वक सभ गुण हिनक गीतमे विद्यमान अछि। हिनक गीत स्फूर्तिमान आ प्रेरणादायक अछि। लोकगीतक समान ओहिमे सामान्य जन–हृदयकेँ छूबाक शक्ति अछि। उर्दू शैलीसँ प्रभावित भऽ ओ गजलक रचना सेहो कएलनि।[45]

हिन्दीमे हिनक कविता संग्रह ‘पथ पर’ आ ‘फूल और कलियाँ’ प्रकाशित अछि।

**पथ पर**

शेखर जीक ई पोथी 1945 ई०मे प्रकाशित भेल। शीर्षक रहित 101 गीत एहि पोथीमे संकलित अछि। शीर्षकक स्थानपर गीतक संख्या अंकित अछि। एकर प्रत्येक गीतकेँ आत्मगीत अथवा जीवनगीत कहब समीचीन अछि। एहि पोथीक प्रसंग स्वयं शेखर जीक उक्ति द्रष्टव्य थिक– “असलमे हम 1942 ई० क आन्दोलनमे अपन गामघरसँ दूर भए गेल रही एवं हमर जीवन एकाकी भए गेल छल। कोनो परिचित व्यक्तिक दर्शन कतहु नहि होइत छल। एहन स्थितिमे मोन लगएबाक हेतु कविता वा गीतक एकटा आधार सेहो भेटि गेल छल। तेँ यदि अहाँ हमर ‘पथ पर’क कविता अथवा गीत पढ़ब तँ ओहिमे कल्पनासँ अधिक जीवनक अनुभूति भेटत।”[46]

शेखरजीक एहि पोथीक गीत सभक मनन-चिन्तनसँ स्पष्ट होइत अछि ओ सभतरि नव बाट, नव दिशामे अग्रगामिताकेँ श्रेष्ठ मानैत छलाह। ओ अपना लेल स्वयं बाट बना ओहिपर जीवन भरि चलैत रहलाह। हुनकहि शब्दमे निम्न पंक्ति अवलोकनार्थ अछि-

मैंने पथ में सीख लिया है
हँसना भी, रोना भी
तभी धूप में राह किनारे
आमों की छाया में रहना।
छाया-पथ से कभी निकलकर
हँसते मरू-ज्वाला में दहना।
कभी नींद से उचट जगाना
चलते में सोना भी।
मिले सहारा पाकर चलना,
चोट लगे गिरकर पछताना
कभी गगन भरना पुकार से
हँस-हँस कदम बढ़ाते जाना
कभी परायी निधि को पाना,
अपना धन खोना भी।[47]

एहि तरहेँ शेखर जी जीवनक बाटपर चलब सीखि लेने छलाह। हुनक जीवनक बाट अतिकण्टकाकीर्ण रहलनि। ओकरा ओ स्वीकार करैत रहलाह। एहि संबधमे शेखरजी स्वयं कहैत छथि-

"भैया, अभी हुआ क्या रोते?
बढ़ना है तो संकट झेलो,
चुन चुन पथ से काँटे ले लो,
ऐसे तलबे में ही चुभते
कुछ चुभते कुछ होते।
भैया अभी हुआ क्या रोते?
........... ........... ..........
पथ में किसका कौन हुआ है ?
बढ़ना भी बस एक जुआ है,

जीवन को रख दो बाजी पर
फिर होते सो होते
भैया, अभी हुआ क्या रोते ?''[48]

शेखर जीकेँजीवन पथपर कहियो विश्रामक अवसर नहि भेटलनि आ तकर पूर्वाभास हिनका छलनि। ओ जीवन भरि दुःख दाहकेँ अन्तःकरणमे नुकौने अविराम गतिएँ चलैत अपन यात्रा सम्पन्न कएलनि। ओ सफलता–असफलताक विचार नहि करैत छलाह। तेँ हुनका जीवनमे निराशाक कोनो स्थान नहि छलैक। सतत् आशा ओ विश्वास संग रहैत छलनि।[49] आ अन्त समयमे एहि पथकेँ ओ छोड़बाक हेतु इच्छुक छथि जे चिरन्तन सत्य अछि–

'तेरे पथ को छोड़ रहा हूँ।
तूने था जब मुझे बुलाया,
मैं भी हँसता-रोता आया,
आया तो पर कौन अधूरा ?
जो मैं नाता तोड़ रहा हूँ ?
तेरे पथ को छोड़ रहा हूँ।
रोकर पहला कदम बढ़ा था,
रोकर ही मैं महल चढ़ा था,
हँसकर और आज 'मिट्टी' से
अपना रिश्ता जोड़ रहा हूँ।[50] तेरे पथ...

एहन सन लगैत अछि जे 'पथपर' गीत–संग्रह मानव जीवनक सफल पाथेय हो। एकर भूमिकामे उचिते लिखल गेल अछि जे पथपर चलनिहारक हेतु पाथेय रहब परमावश्यक अछि। एहि संकलन पर डा० अमरनाथ झाक सम्मति अछि जे– "पथपर पढ़लहुँ, पढ़ि प्रसन्न भेलहुँ। पद भावपूर्ण अछि।[51]

## फूल और कलियाँ

शेखर जीक ई दोसर गीत संग्रह अछि जे 1952 ई०मे प्रकाशित भेल अछि। एहिमे कवि लिखैत छथि– 'इन कलियों में सुरभि नहीं है, मानता हूँ, पर इनके

अल्हड़ अन्तर में जो नादानी है, संगीत है, मस्ती है, उसे निरख-परख कर रसिक भ्रमर झूम उठेंगे, यही विश्वास अन्तर्मन में है।'[52] लघु आकारक एहि पोथी मे एगारह गोट छोट-छोट गीत छैक जकर शीर्षक अछि क्रमशः जीवन संगीत, जीवन ज्योति, जीवन दीप, मेरे गीत, बादल को बधाई, वर्षा गीत, अपना गीत, मिट्टी की पूजा, जीवन गान, नवीन से अछि।

एहि संग्रहक किछु गीत द्रष्टव्य अछि-

"कोई मिट्टी से आता है
कोई मिट्टी में जाता है
कोई मिट्टी के लिए रात-दिन
खून-पसीना करता है।
तू भी मिट्टी पर व्यर्थ खड़ा
दुनियाँ के नियमों में जकड़ा
मुट्टी भर मिट्टी की खातिर
मोती का सौदा करता है।"[53]

एहिना नवयुगक आह्वान करैत शेखर जी लिखैत छथि-

नवीन बुद्धि-बुद्धि के
प्रसस्त मार्ग पर चलो।
जले अखण्ड ज्योति
दिग्विदिक प्रकाशमान हो,
गहन तिमिर-हृदय विदीर्ण
कर नया विहान हो,
प्रबुद्ध मानवी उषा
प्रसुप्त दानवी निशा
कि विश्व पा सके निखिल
सुशान्ति की नयी दिशा
नवीन ज्ञान, ज्ञान की
प्रदीप्त ज्योति ले चलो!"[54]

एहि गीत सभमे साहित्य जे रहौक मुदा हृदयक निर्मलता उछलैत-उमड़ैत प्रतीत होइत अछि।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे हिन्दी साहित्यमे सुधांशु

'शेखर' चौधरीक विविध आयाम अछि। गद्य–पद्य दुहू विधामे हिनक लेखनी अबाध गतिएँ चलैत अछि। कथा, उपन्यास, नाटक आ कविताक पाठक किंबा समालोचक लोकनिसँ प्रशंसित चर्चित भेल अछि।

## शेखरजीक अप्रकाशित कृतिक विवेचन, सीमांकन ओ संदर्भ

बहुआयामी व्यक्तित्वक धनी सुधांशु 'शेखर' चौधरीक अवदान हिन्दी आ मैथिली साहित्यमे अनेक दृष्टिएँ मूल्यांकित भेल। चारिम दशकसँ छठम दशकक बीच शेखरजीक हिन्दीक सभ रचना उपलब्ध नहि अछि। विशेषतः कथाक शीर्षकोक सूचना नहि उपलब्ध भऽ सकल अछि। कथा, नाटक ओ उपन्यास हिनक मुख्य लेखन क्षेत्र रहलनि। दोसर ई जे मिथिला मिहिरमे अनेक छद्मनामसँ विविध विधामे लिखलनि। हिन्दीक प्रतिष्ठित पत्रिका चाँद, मनोहर कहानियाँ, माधुरी, संगम, प्रभृतिमे हिनक रचना प्रकाशित होइत रहल अछि। आवश्यकता छैक ओहि रचना सभक संकलन आ सम्पादनक।

साहित्य तँ शेखरजीकेँ रक्तमे भीजल छलनि तेँ विभिन्न प्रकारक रचना लिखबाक हिनका सतत् अभिलाषा रहैत छलनि विशेष कऽ नाटक ओ उपन्यास। एहि प्रसंग ओ स्वयं कहने छथि– "हमरासँ एकटा आओर बढ़िया नाटक एवं एकटा आओर श्रेष्ठ उपन्यास लिखा जाइत यदि से भऽ जाइत अछि तँ संतोष होइत।"[55]

शेखरजीक पुत्रसँ प्राप्त सूचनासँ ज्ञात होइत अछि जे शेखरजीक निम्नलिखित कृति अप्रकाशित अछि– हस्ताक्षर (उपन्यास), कथासंग्रह, कविता संग्रह एवं आत्मकथा।

ओना साहित्य रचना संसारमे कोनो साहित्यकारक अप्रकाशित रचनाक बहुलता रहिते अछि। प्रकाशन जन्य कठिनताक कारणेँ सभ रचना प्रकाशित नहि भऽ पबैत अछि।

# संदर्भ सूची


1. 'पृथ्वी ते पात्रम्'; वैदेही : सितम्बर 1954 ई०।
2. नाट्यशास्त्र, अध्याय – 1, लोक 114.
3. कालिदास ग्रन्थावली, द्वितीय खण्ड, मालविकाग्निमित्र, पृष्ठ–265.
4. मालती माधब, टीकाकार : रामकृष्ण गोपाल भण्डारक, पृष्ठ–16.
5. हिन्दी दशरूपक – सं० भोला शंकर व्यास, पृष्ठ – 3.
6. हिन्दी अभिनव भारती, पृष्ठ – 185.
7. संस्कृत आलोचना, पृष्ठ – 69.
8. हवाट इज थियेटर? एरिक बेन्टलीज, पृष्ठ – 16.
9. संस्कृत आलोचना, पृष्ठ– 68.
10. पुरुष परीक्षा – विद्यापति (नृत्यविद्य कथा), पृष्ठ – 97.
11. परिचायिका – डा० भीमनाथ झा, पृष्ठ – 138.
12. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 76.
13. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ – 36.
14. तत्रैव, पृष्ठ – 37.
15. नाटक – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 2.
16. तत्रैव, पृष्ठ – 56–57.
17. तत्रैव, पृष्ठ – 96.
18. निकम्मा – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 3.
19. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ – 38.
20. निकम्मा – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 45–46.
21. तत्रैव, पृष्ठ – 55.
22. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 76.
23. मैं भी इन्सान हूँ – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 20.
24. तत्रैव, पृष्ठ – 21.
25. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 6.
26. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ – 30.
27. शास्त्रीय निबन्ध – जगदीश मिश्र, पृष्ठ– 8–9.
28. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी– संकलन-संपादन शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ 10–11.
29. महाकवि पगलेट – सुधांशु 'शेखर' चौधरी
30. तत्रैव।
31. तत्रैव।
32. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 75.
33. महाकवि पगलेट – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 11–12.

34. धरती माता – श्री रामदेव झा, पुरोवचन – श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ – 1.
35. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डा० दिनेश कुमार झा, पृष्ठ – 293.
36. तत्रैव।
37. धरती माता – श्री रामदेव झा, पुरोवचन – श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन', पृष्ठ – 2.
38. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी– संकलन–संपादन – शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ–14
39. तत्रैव।
40. रामचरित मानस – तुलसीदास (बालकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018 वि० स०)
41. कला एवं साहित्य : प्रकृति और परम्परा – प्रो० विश्वनाथ प्रसाद, पृष्ठ – 51.
42. मैथिलीक पद्य–साहित्य – सुरेन्द्र झा 'सुमन', गद्य सौरभ, सं० डा० देवेन्द्र झा, पृष्ठ– 33.
43. प्रतिपदा – सुरेन्द्र झा 'सुमन' – रेख लेखा।
44. गद्य सौरभ – सं० डा० देवेन्द्र झा, भूमिका – डा० शैलेन्द्र मोहन झा
45. साक्षात्कार दर्पणमे सुधांशु 'शेखर' चौधरी – संकलन–संपादन– शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ–15–16.
46. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ–18.
47. पथ पर – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 114.
48. तत्रैव, पृष्ठ– 57.
49. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक, पृष्ठ – 75.
50. पथ पर – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ – 132.
51. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी – संकलन–संपादन –शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ–16.
52. फूल और कलियाँ – श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ– 6.
53. तत्रैव, पृष्ठ – 38.
54. तत्रैव, पृष्ठ – 45.
55. नाटककार शेखर – अनिल कुमार मिश्र, पृष्ठ – 25.



# उपसंहार

मसिजीवी साहित्यकार सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिली साहित्यमे शेखर जीक उपनामसँ ख्यात छथि आ 'सम्पादकजी'क नामसँ जानल जाइत छथि। ओ अहर्निश साहित्य सेवामे लागल रहलाह। अपन जीवन जीबाक लेल ओ संघर्ष पथक चयन कएलनि आ स्वयंकेँ समाजक समक्ष अभिव्यक्त करबाक निमित्त साहित्यकेँ माध्यम बनौलनि। सिखबा कालक हिनक मानसिकताक प्रसंग एकगोट घटना अछि जे एक बेर श्री उदय चन्द्र झा 'विनोद' (मैथिलीक कवि) हिनकासँ भेंट करबाक निमित्त मिहिर कार्यालय गेलाह। सामनेमे सम्पादकजी (शेखरजी) अपना टेबुल पर बैसल बामा हाथे किछु लिखि रहल छलाह। विनोद जी किछु काल तक थकमकाएल ठाढ़ रहलाह। ओ अपन लेखनमे तल्लीन रहथि। थोड़े काल प्रतीक्षा कऽ विनोद जी कक्षमे प्रवेश कएलनि। विनोदजी हाथ जोड़ि अपन उपस्थितिक सूचना देबाक स्वरमे कहलथिन– प्रणाम। हम उदय चन्द्र झा 'विनोद'। मुदा ओ तकबो नहि कएलथिन। विनोद जी पुनः कहलथिन 'अपने बहुत व्यस्त छिऐ की?' एहि बेर ओ नजरि उठा कऽ तकलथिन– अवश्य, मुदा पुनः लिखबामे लीन भऽ गेलाह। बीचमे एक बेर लिखबाक क्रम बन्दो भेलनि तँ चिन्तनमे डूबल रहलाह।

माने लिखबाक समयमे शेखरजी सामान्य मनःस्थितिमे नहि रहि जाइत छलाह। ओ जाहि धरातलक वस्तु लिखैत रहैत छलाह, सम्पूर्णतः ओही भावलोकमे विचरण करैत रहैत छलाह। कोनो कारणेँ सामान्य होएबामे समय लगैत छलनि तँ अनेक बेर अनेक व्यक्तिकेँ हिनक ई स्वभाव अखड़ि जाइत छलनि। मुदा हिनका लेल धन सन।[1]

शेखरजीक ई तन्यमता एकटा एहन मिसाल कायम कयलक जे प्रायः कोनो साहित्यकारकेँ नहि प्राप्त

भेल होयतनि। ओ मोनेमे लेखनक विषयकेँ कांट–छांट कऽ लैत छलाह आ जखन मन–मस्तिष्कमे 'फेयर' भऽ जाइत छलनि तँ ओकरा कागतपर उतारैत छलाह। तेँ हुनक लेखन जे कागतपर होइत छल, ताहिमे जीवनमे कतहु कांट–छांट नहि होइत छल अर्थात एक बेरमे 'फेयर'। ओ कोनो वस्तुकेँ दोबारा सेहो नहिये लिखलनि आ तेँ आइ हुनक अनेक रचना जे प्रकाशित नहि भेल से अनुपलब्ध अछि।

शेखरजीक स्पष्टता ओ वाणीक प्रखरता कनेक कालक लेल जे अप्रिय लगौक, मुदा ओहि स्पष्टता ओ प्रखरताक पाछाँ हुनक कोनो द्वेष–भाव नहि रहैत छल। सोझांमे जे आएल ठाँहि–पठाँहि कहि देलनि। एहन लोक प्रायः भीतरसँ मैल नहि होइत अछि। शेखरजी भीतरसँ साफ लोक छलाह। तेँ जँ एक दिस मित्रक संख्या कम छलनि तँ प्रशंसकक पैघ समुदाय छलनि।

सभटा प्रशंसक साहित्यकार हिनकर छलनि आ ई सभक छलाह। एक बेर आकाशवाणी पटना केन्द्रक निदेशक हिनका बजा किछु साहित्यकारक नाम पुछने रहथिन। तकर उत्तरमे ई कहने रहथि– हमरा 'मिथिला मिहिर'मे जे साहित्यकार छपैत छथि सभ हमर थिकाह। तात्पर्य जे हिनका ककरो संग सामीप्य ओ दूरी नहि छलनि। सभसँ समान रूपेँ सम्बन्धित छलाह।

एकर मूल कारण छल हिनक स्वतंत्र विचारधारा। ई पूर्वापर वादक प्रति आस्था रहितहुँ नववाद चलयबाक प्रयास कएलनि। ओ हिनक ई वाद छल मातृभाषावाद अथवा मैथिलीवाद। तेँ जाहि साहित्यकारमे ओ प्रतिभा वा क्षमता देखथि, आदर करथि। ताहिमे जाति, वर्ग आदि पर कोनो विचार नहि करथि। कविता, कथा, निबन्ध आदिक कारणेँ अन्तर नहि आबनि।

यैह कारण भेलैक जे 'मिथिला मिहिर'क हिनक सम्पादन कालमे लेखकक एक गोट विशाल सेना तैयार भऽ गेल। नवोदित साहित्यकार लोकनिकेँ प्रोत्साहन ओ

प्रेरणा भेटलनि। विभिन्न वर्गक लोकके साहित्यमे स्थान भेटलैक। मैथिलीक रचना दिसि धावित भेल। शेखर जीकेँ साहित्यकारक संग उठबा-बैसबामे कतहु भाङठ नहि होइत छलनि। कतहु ककरो संग चाह पीबि लेब आ कि पान खा लेब हुनक साहित्यकारक व्यक्तित्वकेँ प्रभावित नहि करैत छलनि। तात्पर्य जे शेखरजीक जीवन खतिऔल छलनि। कतहु फेँट-फाँट नहि।

सुधांशु 'शेखर' चौधरी सफल निबन्धकार सेहो छलाह। हिनक पत्रकार निबन्ध साहित्यक पुनर्जन्म देलक। मैथिली निबन्ध साहित्यक स्तरकेँ ऊँच उठएबाक हेतु आ मैथिली भाषाकेँ व्यापक ओ जनप्रिय बनएबाक हेतु ई अपूर्व योगदान देलनि। हिनक अधिकांश निबन्ध जे समसामयिक विषयसँ सम्बन्धित अछि जे मिथिला मिहिरक सम्पादकीयसँ स्पष्ट अछि।

शेखरजी मिथिला मिहिरक माध्यमसँ लेखक लोकनिक बीच आकर्षणक केन्द्र बनि गेलाह। ई श्रेय वस्तुतः 'मिथिला मिहिर'केँ छैक जे एकर लेखक लोकनिकेँ पारिश्रमिक देबाक परम्पराक प्रथमे प्रथम मैथिलीमे श्रीगणेश भेलैक। ओहि समयमे मिथिला मिहिरमे नव-पुरान लेखकक रचना प्रकाशित होएब प्रतिष्ठाक विषय बुझल जाइत छल। एतय ई कहब अतिशयोक्ति नहि होएत जे ई श्रेय शेखरजीक सम्पादकत्वमे प्रकाशित 'मिथिला मिहिर'केँ छैक जे मैथिली साहित्य सर्वतोमुखी समुत्थानार्थ एवं लेखक मण्डल, नव-नव गद्यकार, कविताकार, एकांकीकार, उपन्यासकार, नाटककार, समालोचकक निर्माण करबामे हिनक सेवा चिरस्मरणीय रहत। हमरा जनैत मैथिलीक कोनो अन्य पत्रिकाक सम्पादक द्वारा यद्यपि ई सम्भव नहि भऽ सकल अछि तैँ ई श्रेय हिनकहि छनि।

शेखरजी अपन पत्रकार जीवनमे सभसँ महत्त्वपूर्ण काज कएलनि जे सहस्त्राधिक नव लेखककेँ प्रकाशमे अनलनि। नवोदित साहित्यकारक लेखककेँ उचित संशोधनोपरान्त 'मिथिला मिहिर'मे प्रकाशमे अनलनि। संशोधन कार्यमे हुनका

अथक परिश्रम करए पड़लनि। मुदा मैथिलीक सेवाहित हुनका अन्य कोनो चिन्ता नहि छलनि। कोना मैथिली साहित्यक भण्डार अधिकसँ अधिक लेखकक विविध विषयपर प्रणीत रचना द्वारा पुष्ट बनाए तकरे चिन्ता रहैत छलनि। शेखरजी तरु समान नवोदित साहित्यकार लोकनिकेँ प्रोत्साहित करैत रहलाह। स्थान-मान दैत रहलाह आ मैथिली साहित्यक भंडार, पुष्ट होइत गेल। विविध वर्गक साहित्यकार मैथिलीकेँ भेटलैक। आइ जे मैथिली साहित्यमे जानल-मानल साहित्यकार बुझल जाइत छथि ताहिमे शेखर जीक सहयोग अविस्मरणीय रहत। शेखरजीक सम्बन्धक आधार क्षेत्र बेसी व्यापक छलनि। तेँ नवोदित साहित्यकार लोकनिककेँ प्रोत्साहन ओ प्रेरणा भेटलनि। मैथिली साहित्यमे हिनक अवदान निश्चित रूपेँ मिलक पाथरक काज कएलक। परवर्ती साहित्यकार लोकनिकेँ प्रेरणा भेटलनि आ भेँटैत रहतनि।

कोनहु लेखक वा साहित्यकारक चिन्तन प्रक्रिया अभिव्यक्तिक प्रणाली, कथ्यक उत्स, रचनाक-प्रक्रिया आदिकेँ सूक्ष्मतासँ बुझबाक लेल ई आवश्यक अछि जे सर्वतोभावेन ओकर अध्ययन कएल जाए। जेना-कवि कोकिल विद्यापति मात्र मैथिलीए जगतमे नहि अपितु विश्व भरिमे अपन पदलालित्य लएकेँ ख्यात भेलाह। तहिना शेखरजी अपन शैलीक कारणेँ हिन्दी किंबा मैथिली जगतमे ख्यात छथि। बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न शेखरजीक लेखनी कोनो विशेष विधासँ बान्हल नहि छलनि। ई चर्वित-चर्वणाक पक्षपाती नहि छलाह। हिनकामे कारयित्री ओ भावयित्री दुहू प्रतिभा छलनि। कहल गेल अछि जे- प्रज्ञा 'नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभामता।' अर्थात् जे ज्ञानकेँ नव-नव दृष्टि देअए से प्रतिभा थिक।

शेखरजी जाहि कोनो विधामे कलम चलौलनि ओहिमे सर्वथा हिनक नवीन दृष्टि देखबामे अबैत अछि। आलोचना सदृश शास्त्रीय विषयहुमे सर्वत्र हिनक मौलिकता परिलक्षित होइत अछि। ई शास्त्रीय विषयकेँ

उठाय पूर्व आचार्य लोकनिक मतक व्याख्या अपना ढंगे प्रस्तुत कएने छथि।

मैथिली साहित्यमे कवीश्वर चन्दा झा द्वारा प्रवाहित गद्य धाराकेँ वेगवती बनएबामे आधुनिक युगक अनेक साहित्यकार अपन महत्त्वपूर्ण योगदान देलनि, जाहिमे शेखर जी सेहो एक गोट प्रमुख साहित्य मनीषी थिकाह जनिक विविध रचनावली मैथिली साहित्यकेँ उर्वर बनएबामे महत्त्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कएलक। हिनक गद्य रचना सभ मैथिली साहित्यमे विशिष्ट स्थान रखैत अछि, जाहिमे मिथिलाक सांस्कृतिक चेतना ओ युग धर्मक स्वर मुखरित भेल छैक।

सुधांशु 'शेखर' चौधरीक उपलब्ध प्रकाशित रचना सभकेँ देखलासँ सर्वत्र हमरा सरल आ सुबोध भाषाक दिग्दर्शन होइत अछि। अपन भाषाकेँ व्यवहारिक रूप देबाक हेतु ओ साधारण बोलचालक भाषाक प्रयोग कएलनि। एक शिल्पीक समान ओ अपन भाषा-शैलीकेँ गढ़बाक प्रयास नहि कएलनि। हिनक भाषा सर्वत्र साहित्यिक सौन्दर्यसँ अभिभूत अछि। ई अपन रचनादिमे एहन शब्दकेँ स्थान नहि दऽ कऽ भाषाक अत्यधिक व्यवहारिक आ परिमार्जित रूपकेँ स्थान देलनि। एहि प्रवृतिक कारणेँ हुनक भाषा कतहु अव्यवस्थित, व्याकरणक दृष्टिए अशुद्ध नहि भऽ पओलनि। ओ शब्दकेँ तोड़ि-मड़ोरिक विकृत नहि कएलनि आ ने मनगढ़न्त शब्दक प्रयोग कएलनि। हुनक भाषाक रसधारा सर्वथा स्वच्छन्द आ स्वाभाविक रूपेँ प्रवाहित भेल। हुनक भाषामे सभ प्रकारक भावक प्रकाशनक क्षमता विद्यमान अछि। भावक अनुकूल चुनल शब्दक सुव्यवस्थित पदावली हुनक रचनामे प्रेक्षणीय अछि। लोकोक्ति आ मोहावराक प्रयोगसँ हुनक भाषामे सौन्दर्यक अपूर्व अभिवृद्धि भेल अछि। हिनक भाषा नैसर्गिक, रसाद्र आ भावपूर्ण अछि जाहिमे तन्मयता, सार्थकता आ स्वाभाविकताक सहज समावेश अछि।[2]

एकांकीक मंचपर कार्य एवं कार्यान्तक द्रुतगामिताक तथा घटना-उपघटनाक क्षिप्रताकेँ नाटकक कथा-उपकथाक विस्तारक संग समन्वित कए शेखर जी नाट्य साहित्यमे

तेहन मानदण्ड स्थापित कऽ देलनि अछि जे ई मैथिली भाषामे अन्यतम भऽ गेल अछि। वस्तुतः नाट्य प्रयोगक ई चमत्कारिता शेखरजीक सदृश साधक नाटककारसँ सम्भव भऽ सकल अछि। शेखरजीक स्वतंत्र चिन्तन अथवा स्वतंत्र साधना प्रायः कदाचिते भेटत। अतएव ई कहबामे कनेको असौकर्य नहि होइछ जे मैथिली नाट्य शिल्प ओ नाट्य प्रयोगक क्षेत्रमे शेखर जी अपन स्वतन्त्र अस्तित्व रखैत छथि। शेखरजी 'पहिल साँझ'क भूमिकामे लिखने छथि जे– "अपन नाट्य प्रयोग आ रंगमंचक दीर्घकालिक अनुभवक आधार पर हम पूर्ण विश्वास आ आस्थाक संग कहि सकैत छी जे मैथिली नाटकमे होइत प्रयोगसँ निश्चित रूपसँ आलोचक लोकनि एकदम अनभिज्ञ छथि। नाटकमे कथ्य आ शिल्पक एहन अवदान होइत छैक जे हजारक हजार प्रेक्षककेँ रंग स्थल मे मंचावधि पर्यन्त बान्हि रखैत अछि। मंत्र मुग्ध कएने रहैत अछि मुदा लिखित रूपसँ कोनो नाटकक विशेषताक चर्चा नहिं भेटत"।[3]

शेखरजी हिन्दीसँ विकसित रूप लए मैथिलीमे प्रवेश करए चाहैत छलाह, मुदा अपन विलम्बक कारण जनबैत आ कठिनता व्यक्त करैत शेखरजी 'पहिल साँझ'क भूमिकामे कहैत छथि जे– "ई हम स्वीकार करैत छी जे शिल्प–चिन्तन हमर बहुत समय लेलक आ कही तँ हम कहि सकैत छी जे नव शिल्प हमरा अपन मानसिकता मन्थनसँ प्राप्तो भऽ चुकल छल मुदा ताहि शिल्पकेँ ग्रहण कऽ बहुत समय धरि तारतम्येमे रहि गेलहुँ। तकर कारण छल मैथिल संस्कार। मैथिल व्यवहार किछु ताहि तरहक रहल अछि जकरा ओहि शिल्पक अन्तर्गत खपाएब, निश्चय, एक तरहेँ मैथिल संस्कृतिपर आघाते होइत जे हमरा कोनो तरहेँ स्वीकार्य नहि छल। असलमे मैथिल लोक–व्यवहारमे मिलन बिन्दुक कोनो स्थले नहि अछि। अर्थात् आश्रममे एहन कोनो स्थान नहि होइत अछि जतऽ परिवारक एक–एक व्यक्ति स्त्रीगण आ पुरुषे किएक नहि होअए, एतेक धरि जे भावहु आ

भेंसुरे किएक नहि होअए, अवांछित रूपसँ आबि जा नहि सकैत अछि, तेँ घटनाकेँ बढ़ैत जनएबाक लेल आ अपन बात खुलि कऽ कहऽ लेल जतऽ परिवारक सभ क्यो जुटि सकय तेहन स्थान कतहु अछिये नहि। विवेकक रोक-छेक तँ ततेक अवश्य अछि जे घर-आङन, दरबाजा वा कोनो स्थानमे चुनब हमरा लेल पैघ समस्या छल। हमर शिल्पक अनुसार घटना एके स्थल पर घटित होएबाक छलैक जतऽ सभ लोक स्वतन्त्रतापूर्वक आबि-जा सकैत छल। जे किछु, सहजेँ एहि समस्याकेँ सोझरएबामे हमरा अपेक्षासँ अधिक समय लागल। मुदा देरी खाहे जतबा लागल होअए, अन्ततः नाटकक स्थिति-विशेष तकबामे हम सफल भेबे कएलहुँ आ अपन सफलताक पूर्ण दर्शन तखन संभव भेल जखन हमर पहिल मैथिली नाटक प्रेक्षककेँ पसिन्न भेलैक, सभ ओकर अतिशय प्रशंसा कएलक।[4]

शेखरजीक मैथिली नाटककेँ एक काल खंडी कहल गेल अछि। नाटककार शेखरजी सेहो एहि बातकेँ स्वीकार करैत छथि। ओ कहैत छथि जे- "एक काल खण्डी नाटकमे एके सेट चाही, स्थान परिवर्तन नहि चाही, प्रवहमान कथा-उपकथाक संग घटना-उपघटनाकेँ घटित होएबामे निरन्तरता चाही। हमर नाटक सैह थिक"।

शेखरजीक नाटकीय भाषा सबल शक्ति सम्पन्न आ स्थिर अछि। नाटकीय भाषाकेँ निश्चित रूप प्रदान कऽ ई गद्य परम्पराक प्रवर्तन कएलनि। ओ संस्कृतक तत्सम् शब्दक स्थान पर तद्भव शब्दक प्रयोग कएलनि। ओ जन सामान्यमे प्रचलित शब्दक प्रयोग कएलनि आ जतय विचारक अभिव्यक्तिक लेल उपयुक्त शब्दावलीक अभाव रहलनि ततय संस्कृत शब्दक प्रयोग कएलनि। तद्भव रूपक प्रयोगक कारणेँ हिनक भाषामे माधुर्य आ प्रवाह आबि गेल अछि। भाषापर हुनका ततेक व्यापक अधिकार छलनि जे हुनक रचनादिककेँ देखलासँ स्वतः स्पष्ट भऽ जाइत अछि। हुनक भाषामे अपूर्व लाक्षणिक सौन्दर्यक समावेश भेल अछि तथा भाव व्यंजनाक प्रवाह भेंटैत अछि। भाषाक सम्बन्धमे हुनक विचार अत्यन्त

उदार आ प्रगतिशील छल। हुनक व्यंग्यात्मक शैलीक भाषा सेहो व्यावहारिक होइत छल। हुनक शैलीमे सजीवता आ प्रवाह दृष्टिगत होइत अछि। हिनक रचनाक भाषा विषयानुकूल अछि। हिनक भाषा शैली सहज प्रकृति रूपमे अछि। शब्दाडम्बर आ भाषाक कूद-फान ओहिमे कतहु नहि अछि। ई भाषा द्वारा सर्कसक व्यायाम आ दृढ़ योगीक आसन करबाक पक्षमे नहि रहथि। हिनक भाषामे मूर्तिमत्ता अछि। भावचित्रकेँ ठाढ़ करबाक अद्‌भुत क्षमता हुनक भाषामे उपलब्ध होइत अछि। भाषाक मूर्तिमत्ताक लेल ई अलंकार योजना सेहो कएलनि। हिनक वाक्य-योजना अत्यन्त पुष्ट आ प्रवाहपूर्ण होइत छल। छोट-छोट संकेत वाचक समुच्चय बोधक द्वारा ओ अपन भाषाकेँ अत्यन्त स्फूर्तिमान आ बलवती बनौलनि। हिनक गद्य साहित्यमे वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, भावनात्मक आ हास्य-व्यंग्य शैलीमे सेहो हिनक व्यक्तित्व बजैत अछि। हुनक व्यक्तित्वक समानहि शैली सेहो बाहरसँ गम्भीर आ भीतरसँ सरस अछि। जाहिमे आलोचनात्मक मस्तिष्क आ कविक हृदय विद्यमान अछि।

शेखर जीक काव्य-साधना आदिसँ अन्त धरि आदर्शवादी अछि। ई लोक मंगलक व्यापक प्रभावसँ प्रेरित भऽ मातृभूमिक सांस्कृतिक प्रतिष्ठा कएलनि। गीति तत्वक सभ गुण हिनक कवितामे विद्यमान अछि। स्फूर्तिमान आ प्रेरणादायक सेहो अछि। उर्दू शैलीसँ प्रभावित भऽ ओ गजलक रचना कएलनि। हिनक काव्य शैली भव्य अछि। कल्पनाक अतुल भाव सुषमासँ मंडित अछि।

आदिकालसँ आधुनिक काल धरि मैथिली साहित्यक विकास यात्रामे बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध स्वर्णिम युगक रूपमे ख्यात अछि। एकर आरम्भिक चरणमे मैथिली साहित्यक क्षितिजपर कतिपय प्रतिभा सम्पन्न साहित्य मनीषीक अभ्युदय भेल। एहिमे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाम सेहो उल्लेखनीय अछि।

तरू समान शेखरजी मैथिली साहित्यकारमे बढ़लाह।

रिपु-हितकेँ समाने बुझैत रहलाह। हितोपदेशक-महोपदेशक बनल रहलाह। अपना धरतीक सुगन्धि ओ सामाजिक मान-मर्यादाक रक्षा करैत साहित्यक माध्यमसँ समाजमे होइत परिवर्त्तनक क्रमकेँ रेखांकित कएलनि। शेखरजी साहित्यक विविध विधामे अपन मौलिक कृति द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं मातृभाषा मैथिलीक कुशल गद्य शिल्पीक रूपमे एक विशिष्ट उपन्यासकार, सफल नाटककार, प्रखर आलोचक एवं कुशल सम्पादकक रूपमे पत्रकारिताकेँ नव दिशा प्रदान कएलनि। ओ व्यक्ति नहि एकगोट संस्था छलाह, परवर्ती साहित्य ओही भव्य प्रासाद पर टिकल अछि। हुनक साहित्य चिर नवीन आ चिर शाश्वत अछि। हुनक साहित्य जनसामान्यक साहित्य थिक। जाधरि मानव हृदयमे राग-विराग, दुःख, द्वन्द्व आ अनुभूति जीवित रहत ताधरि हिनक साहित्य अजर-अमर आ अक्षुण्ण रहत! हिनक समस्त रचना सामाजिक चेतनासँ अनुप्राणित अछि। हिनक साहित्यिक कृति मानवताक अचल भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित अछि। मिथिला मिहिरक सम्पादक होएबाक कारणेँ ई जनसामान्यक सहयोग पाबिकऽ मैथिली भाषा आओर साहित्यकेँ समृद्धिक सोपान पर चढ़ौलनि। ई एहि पत्रिकाक माध्यमे मैथिली भाषा आ साहित्यक कायाकल्प कएलनि तथा ओकर उन्नयन आ प्रचार-प्रसारमे व्यापक सहयोग देलनि। जा धरि ओ मिथिला मिहिरक सम्पादक रहलाह, सभ साहित्यकारकेँ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ प्रभावित कएलनि। मैथिलीक हेतु ई स्तुत्य कार्य कएलनि।

ओ विकासवादी छलाह। मुदा विकासक नामपर देशान्तरसँ आयातित विधर्मिताक पक्षपाती नहि छलाह। मिथिलाक सभ्यता ओ संस्कृति हिनक नस-नसमे रसल-बसल छल। एहि धरातलपर ओ युगानुरूप भवनक निर्माता छलाह। हिनक समस्त साहित्य एकर ज्वलन्त प्रमाण बनल अछि। खाहे एकल कालखण्डी नाटक हो वा मनकथा शैलीमे लिखित उपन्यास सभ एक गोट अभिनव प्रयोग थिक। जकरा परम्परित आन नाटक ओ उपन्याससँ फराक करएबला तत्त्वक अन्तरकेँ फुटा कऽ देखनिहारक दृष्टिवन्त विद्वानक

अपेक्षा छैक। आरम्भेसँ नाट्कक सम्पर्कमे आबि गेलाक कारणेँ शेखरजी एवं रंगमंचकेँ फराक कऽ नहि देखि सकलाह। रंगमंचक लेल नीक नाट्क लिखब, यैह नाट्य रचनाक हिनक प्रमुख ध्येय रहलनि। एहि सभ अनुभवसँ लाभ उठा शेखर जी अपन नाट्ककेँ बहुत दूर धरि रंगमंच, रचना शिल्प तथा गढ़बाक दृष्टिसँ निर्दोष बनएबाक प्रयास कएलनि। यैह कारण थिक जे हिनक नाट्कमे अपूर्व अभिनेयता तथा भाषामे सरलता, प्रवाहशीलता एवं नाट्कीयता अछि।

हिनक रचनामे विशेष कऽ नाट्कमे पाखंड, रूढ़िवाद, जर्जर परम्परापर कठोर व्यंग्य सेहो मुखरित भेल अछि। तेँ हिनक नाट्कमे, कथामे जीवनसँ बेसी निकटता, स्वाभाविकता, प्रभावशीलता एवं यथार्थता पाओल जाइछ।

मैथिली नाट्य साहित्यकेँ देखला पर स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली नाट्य साहित्यमे एके सेट एवं एके दृश्य विधानमे समाप्त भऽ जाए बला लघु नाट्कक 'टेकनीक' हिनक (शेखर जीक) मौलिक आ अनुपम प्रयोग थिक जकर पुनरावृति एखन धरि नहि भऽ सकल अछि। हिनक सेट ओ दृश्यक आयोजनमे घटना, कार्य एवं प्रभावक एकता दर्शनीय अछि। हिनक नाट्कमे कलाक कसाव एवं विकास, संवादक चुस्ती तथा तीव्रता, कथा अभीष्टकेँ स्पष्ट करब तथा वातावरण सृजनक संग-संग पात्रक चारित्रिक विशेषता सभकेँ स्पष्ट करबाक क्षमता, दृश्य विधानक सरलता, वातावरणक उपयुक्तता तथा रंगमचीयता अपूर्व भेल अछि। तेँ हिनक नाट्कमे अभिनय तत्व प्रायः सभसँ बेसी अछि। नाट्कसँ अतिरिक्तो रचनामे नाट्कीयता परिलक्षित होइत अछि।

शेखरजी अपने समुचित ओ व्यवस्थित शिक्षासँ वंचित रहि गेलाह, मुदा ओ अपन रचनाक माध्यमे समाजक समक्ष सफल शिक्षक किंबा मार्ग निर्देशकक छवि लऽ उपस्थित भेलाह।

विषय आ घटनावलीक चयन ई अपन लग पाससँ करैत रहलाह। वर्णनमे कल्पनाक उड़ान नहि, मुख्य

स्थान यथार्थक रहलैक। यथार्थकेँ कल्पनाक सहयोगसँ उपस्थित कएलनि। तेँ शेखर जीक लेखनीसँ सामाजिक विषय वस्तु सहजहि उद्घाटित होइत रहल अछि। तेँ स्वाभाविक हिनक रचना जनमानसपर अमिट छाप छोड़बामे पूर्ण सफल भेल अछि।

स्थूल रूपेँ यैह जे मैथिली आ हिन्दी साहित्यमे शेखरजीक अवदान चर्चित एवं प्रशंसनीय अछि। हिनक साहित्य-दर्शन साहित्यकारक विकृत मनोविकारक रुझानक डटि कऽ विरोध कएलक तथा मैथिली साहित्यक उन्नयनक सही मार्ग प्रशस्त कएलक। अस्तु शेखरजी आधुनिक मैथिली साहित्यक सफल नाटककार, कथा-उपन्यासकार, कवि-निबन्धकार, समीक्षक आ कुशल सम्पादक छलाह, जनिकर साहित्य तत्कालीन समाजक चित्रावली होएबाक संगहि ओ समाजकेँ नव दिशा-निर्देश करैत विकासक पथपर अग्रसर करबामे सहायक सिद्ध भेल अछि। हिनक रचनावलीसँ मैथिली साहित्य उद्भासित होइत रहत।

## सन्दर्भ सूची


1. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी – संकलन एवं सम्पादन – शरदिन्दु कुमार चौधरी, पृष्ठ – 18।
2. पहिल साँझ-सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पृष्ठ- 6-7।
3. तत्रैव – पृष्ठ- 15-16।
4. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी – संकलन एवं सम्पादन – शरदिन्दु कुमार चौधरी।




परिशिष्ट

# सहायक ग्रंथ एवं पत्रिकाक सूची


1. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास – डा० दिनेश कुमार झा
2. तपसा वैः गंगा – विनोद विहारी वर्मा
3. बिहार चित्रांश विभूति स्मृति विशेषांक स्मारिका, 1994(पटना)।
4. ऋग्वेद : मंडल 10, सूक्त 90, मंत्र 10-12 आर्य साहित्य मंडल, अजमेर, 1959.
5. सुधांशु 'शेखर' चौधरी – शिवाकान्त पाठक
6. शारान्तिधा – प्रो0 राधाकृष्ण चौधरी
7. मिथिला भाषा रामायण – चन्दा झा
8. आनन्दमन्दाकिनी, साहित्यिकी, सरिसव-पाही,मधुबनी, प्रकाशन वर्ष 2000.
9. प्रारम्भिक मनोविज्ञान, डा० इन्दु भूषण, भारती भवन, पटना, नवम संस्करण, 1969 ई०।
10. यात्री काव्य विवेचन – डा० यशोदा नाथ झा
11. 'पथ पर' – सुधांशु 'शेखर' चौधरी, 1945 ई०मे प्रकाशित, सम्प्रति अनुपलब्ध।
12. नालन्दा विशाल शब्द सागर, 1297 साल.
13. कवि सुमनक गद्य रचनाक आयाम – यदुनाथ लाल दास (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)
14. अर्चना – सुरेन्द्र झा 'सुमन'
15. 'नाटककार शेखर' – अनिल कुमार मिश्र
16. साक्षात्कारक दर्पणमे – सुधांशु 'शेखर' चौधरी,–स० शरदिन्दु कुमार चौधरी
17. चित्रा – वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'
18. परिचायिका – डा० भीमनाथ झा
19. 'निकष'– सं० डा० शैलेन्द्र मोहन झा
20. पतन – उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'
21. 'पृथ्वी ते पात्रम्'; वैदेही : सितम्बर 1954 ई०।
22. नाट्यशास्त्र, अध्याय– 1, लोक 114.
23. कालिदास ग्रन्थावली, द्वितीय खण्ड, मालविकाग्निमित्र
24. मालती माधव, टीकाकार : रामकृष्ण गोपाल भण्डारक
25. हिन्दी दशरूपक – स० भोला शंकर व्यास
26. हिन्दी अभिनव भारती
27. संस्कृत आलोचना
28. ह्वाट इज थियेटर ? एरिक बेन्टलीज

29. संस्कृत आलोचना
30. पुरुष परीक्षा - विद्यापति (नृत्य विद्य कथा)
31. निकम्मा - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
32. मैं भी इन्सान हूँ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
33. शास्त्रीय निबन्ध - जगदीश मिश्र
34. महाकवि पगलेट - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
35. धरती माता - श्री रामदेव झा
36. रामचरित मानस - तुलसीदास (बालकाण्ड, गीता प्रेस, गोरखपुर, 2018 वि० स०)
37. कला एवं साहित्य : प्रकृति और परम्परा - प्रो० विश्वनाथ प्रसाद
38. मैथिलीक पद्य-साहित्य - सुरेन्द्र झा 'सुमन'
39. प्रतिपदा - सुरेन्द्र झा 'सुमन' - रेख लेखा।
40. गद्य सौरभ- सं० डा० देवेन्द्र झा
41. फूल और कलियाँ - श्री सुधांशु 'शेखर' चौधरी
42. उगनाक दयादवाद - श्री सुरेन्द्र झा 'सुमन'
43. मैथिली भाषा आ साहित्य - डा० बाल गोविन्द झा 'व्यथित'
44. ई बतहा संसार - सुधांशु 'शेखर' चौधरी - उपन्यास।
45. निवेदिता - सुधांशु 'शेखर' चौधरी - प्रकाशकीयसँ।
46. समय-साल, स० शरदिन्दु चौधरी।
47. 'अंगरेजी फूलक चिट्ठी'- सुधांशु 'शेखर' चौधरी
48. दू पत्र - उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'
49. रूपक रहस्य - डा० श्याम सुन्दर दास
50. दशरूपक : धनंजय
51. भारतीय साहित्य का इतिहास
52. हिन्दी नाट्क सिद्धान्त और समीक्षा - रामगोपाल सिंह चौहान
53. विजेता विद्यापति - क़ांचीनाथ झा किरण
54. पहिल साँझ - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
55. भफाइत चाहक जिनगी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
56. मैथिली नाटक ओ रंगमंच - डा० प्रेम शंकर सिंह
57. लेटाइत आँचर - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
58. मैथिली नाट्क पर संस्कृतक प्रभाव - डा० जयमन्त मिश्र
59. हथटुट्टा कुरसी - सुधांशु 'शेखर' चौधरी
60. रंगमंच ओ एकांकी, स० डा० वासुकीनाथ झा
61. मैथिली रेडियो नाटक - गंगेश्वर झा (डा० गंगेश गुंजन)
62. वैदेही
63. इजोत






**डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'**

**जन्म** : रहिका, मधुबनी (बिहार)

**तिथि** : 29 सितम्बर 1948

**शिक्षा** : एम.ए. (मैथिली), एम.एड्

**व्यवसाय** : +2 व्याख्याता (अवकाशप्राप्त) बाँकीपुर राजकीय बालिका द्वादशीय विद्यालय, गोलघर, पटना-800001

**प्रकाशित पोथी** : ओ दिन ओ पल (संस्मरण)
एगो छलीह सिनेह (कथा संग्रह)

**अभिरुचि** : अभिनय। एखन धरि लगभग दू सए नाटक तथा अनेक मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी फीचर फिल्म, टेलीफिल्म आ धारावाहिक से अभिनय। एकर अतिरिक्त आकाशवाणी, पटनासँ कथा-वार्ताक वाचनक संगहि रेडियो नाटकमे सहभागिता तथा उद्घोषणा-कम्पीयरिंग।

**पद** : चेतना समिति, भंगिमा, अरिपन, मैथिली महिला संघ, बिहार संगीत नाटक अकादमी, वंदना रानी केन्द्र आदि संस्थाक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष रूपमे समय-समय पर कार्यरत।

**सम्मान** : चेतना समिति, पटना / अरिपन, पटना/ मिथिला विकास परिषद् कलकत्ता / अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली/बिहार आर्ट थियेटर,पटना/प्रांगण, पटना/विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा/ मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग/भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन, पटना, बिहार / पटना रोटरी क्लब आदि द्वारा अभिनंदित ओ सम्मानित।

**सम्पर्क** : एल 2/33, पी.आइ.टी. कॉलोनी,
कंकड़बाग, पटना – 800 020

**दूरभाष : 0612-2351976**

**मोबाइल : 9931024819**

# शेखर प्रसंग

डॉ. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

250/- टाका